اصولِ حدیث پر نہایت جامع کتاب

# اصطلاحات حدیث

اردو ترجمہ

## تیسیر مصطلحات الحدیث

مؤلف
ڈاکٹر محمود الطحان

(اردو ترجمہ)
علامہ مفتی محمد صدیق ہزاروی مدظلہ
شیخ الحدیث جامعہ ہجویریہ لاہور

مکتبہ اہلسنّت
جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری گیٹ لاہور

Marfat.com

# Maktaba Tul Ishaat

تمام فنون کے کتب ہمارے ویب سائٹ اور پلے سٹور سے فری ڈاون لوڈ کریں۔ ہم روزانہ کی بنیاد پر اس میں مزید نئے کتب شامل کر رہے ہیں نئے شامل شدہ کتب لیے روزانہ ہمارے پلے سٹور اور ویب سائٹ کو باقاعدگی سے چیک کیا کریں۔

## اپنی کتاب کو ہمارے ویب سائٹ پر شائع کرنے کے لیے رابطہ کریں

| | | |
|---|---|---|
| تفاسیر | خطبات | منطق |
| احادیث | سیرت | معانی |
| فقہ | تاریخ | تصوف |
| سوانح حیات | صرف | تقابل ادیان |
| درس نظامی | نحو | تجوید |
| لغت | فلسفہ | نعت |
| فتاوی | حکمت | تراجم |
| اصلاحی | بلاغت | تبلیغ ودعوت |
| آڈیو دروس | مناظرے | تمام فنون |

Contact Us: maktaba.tul.ishaatofficial.com

اصولِ حدیث پر نہایت جامع کتاب

# اصطلاحاتِ حدیث

اردو ترجمہ

# تیسیر مصطلحات الحدیث

مؤلف

ڈاکٹر محمود الطحان

(اردو ترجمہ)

علامہ مفتی محمد صدیق ہزاروی مدظلہ

شیخ الحدیث جامعہ ھجویریہ لاھور

ناشر

مکتبہ اہلسنت ٥ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور

﴿جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں﴾

نام کتاب ......................اصطلاحات حدیث ترجمہ تیسیر مصطلحات الحدیث

مؤلف ......................ڈاکٹر محمود الطحان

مترجم ......................علامہ مفتی محمد صدیق ہزاروی

تصحیح ......................مولانا محمد افضل عباسی

کمپوزر ......................محمد اکرام اللہ بٹ (0300-6212350)

تعداد ......................1100

صفحات ......................312

قیمت ......................

تاریخ اشاعت ...................... جون 2013ء/رجب المرجب ۱۴۳۴ھ

ناشر ......................مکتبہ اہلسنت، جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور

ملنے کے پتے

☆......مکتبہ اہل سنت جامعہ نظامیہ رضویہ لوہاری گیٹ لاہور۔

☆......مکتبہ علامہ فضل حق خیرآبادی دربار مارکیٹ لاہور

☆......نظامیہ کتاب گھر زبیدہ سنٹر اردو بازار لاہور

☆......مکتبہ اہل سنت مکہ سنٹر لوئر مال روڈ نزد تھانہ لوئر مال لاہور

☆......رضا بک شاپ، فوارہ چوک نزد بی ڈویژن تھانہ گجرات

# حُسنِ ترتیب



| صفحات | موضوع | نمبر شمار |
| --- | --- | --- |
| 34 | معروضہ (از مترجم) | 1 |
| 37 | سببِ تالیف (از مصنف) | 2 |
| 40 | میری اس کتاب میں جدت یہ ہے | 3 |
| 42 | **مقدمہ**...... علم مصطلح کی تاریخ نشأۃ اور مختلف ادوار | 4 |
| 45 | علم مصطلح میں مشہور ترین تصانیف | 5 |
| 50 | بنیادی تعریفات | 6 |
| 50 | علم مصطلح | 7 |
| 50 | موضوع | 8 |
| 50 | فائدہ | 9 |
| 50 | حدیث | 10 |
| 50 | خبر | 11 |
| 51 | اثر | 12 |
| 51 | اسناد | 13 |
| 51 | سند | 14 |
| 52 | متن | 15 |
| 52 | مسنَد | 16 |
| 52 | مُسنِد | 17 |

| | | |
|---|---|---|
| 18 | محدِّث | 52 |
| 19 | حافظ | 53 |
| 20 | حاکم | 53 |
| 21 | **پہلا باب**......(خبر کا بیان) | 54 |
| 22 | پہلی فصل......ہم تک پہنچنے کے اعتبار سے تقسیم خبر | 54 |
| 23 | پہلی بحث......خبر متواتر | 54 |
| 24 | خبر متواتر کی شرائط | 55 |
| 25 | چار شرائط | 55 |
| 26 | متواتر کا حکم | 56 |
| 27 | متواتر کی اقسام | 56 |
| 28 | متواتر لفظی | 56 |
| 29 | متواتر معنوی | 56 |
| 30 | خبر متواتر کا وجود | 57 |
| 31 | متواتر احادیث سے متعلق چند احادیث | 57 |
| 32 | دوسری بحث......خبر آحاد | 58 |
| 33 | حکم | 58 |
| 34 | متعدد طرق کے اعتبار سے خبر احاد کی اقسام | 58 |
| 35 | خبر مشہور | 58 |
| 36 | مثال | 59 |
| 37 | خبر مستفیض | 59 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 38 | مشہور غیر اصطلاحی | 59 |
| 39 | مشہور غیر اصطلاحی کی اقسام | 60 |
| 40 | حدیث مشہور کا حکم | 61 |
| 41 | خبر مشہور کے بارے میں مشہور تصانیف | 61 |
| 42 | خبر عزیز | 62 |
| 43 | تعریف کی تشریح | 62 |
| 44 | حدیث عزیز کی مثال | 63 |
| 45 | حدیث غریب | 64 |
| 46 | تعریف کی وضاحت | 64 |
| 47 | دوسرا نام | 64 |
| 48 | اقسام | 65 |
| 49 | غریب مطلق یا فرد مطلق | 65 |
| 50 | مثال | 65 |
| 51 | غریب نسبی یا فرد نسبی | 66 |
| 52 | مثال | 66 |
| 53 | وجہ تسمیہ | 66 |
| 54 | غریب نسبی کی اقسام | 66 |
| 55 | حدیث غریب کی ایک اور تقسیم | 67 |
| 56 | حدیث غریب کے مقامات وجود | 68 |
| 57 | معروف تصانیف | 68 |

| | | |
|---|---|---|
| 58 | قوت وضعف کے اعتبار سے خبر احاد کی تقسیم | 68 |
| 59 | مقبول | 68 |
| 60 | مردود | 69 |
| 61 | دوسری فصل......خبر مقبول | 69 |
| 62 | پہلی بحث......اقسام مقبول | 69 |
| 63 | حدیث صحیح | 70 |
| 64 | تعریف کی وضاحت | 70 |
| 65 | اتصال سند | 70 |
| 66 | راویوں کا عادل ہونا | 70 |
| 67 | راویوں کا ضبط | 70 |
| 68 | عدم شذوذ | 71 |
| 69 | عدم علت | 71 |
| 70 | شرائط | 71 |
| 71 | مثال | 71 |
| 72 | حدیث صحیح کا حکم | 73 |
| 73 | ھذا حدیث صحیح اور ھذا حدیث غیر صحیح کا کیا مطلب ہے؟ | 73 |
| 74 | کیا کسی سند کو قطعی طور پر مطلقاً اصح الاسانید کہا جا سکتا ہے؟ | 73 |
| 75 | صحیح مجرد کے سب سے پہلے مصنف کون ہیں؟ | 75 |
| 76 | دونوں میں سے کون سی کتاب اصح ہے؟ | 75 |
| 77 | کیا تمام صحیح احادیث صحیح بخاری و مسلم میں ہیں؟ | 75 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 78 | کیا کچھ زیادہ یا کم صحیح احادیث تک ان دونوں کی رسائی نہیں ہوئی ؟ | 76 |
| 79 | صحیح بخاری و مسلم میں احادیث کی تعداد | 76 |
| 80 | امام بخاری اور امام مسلم کی چھوڑی ہوئی احادیث کہاں ہیں؟ | 76 |
| 81 | مستدرک، صحیح ابن خزیمہ اور صحیح ابن حبان پر کلام | 77 |
| 82 | صحیح ابن حبان | 777 |
| 83 | صحیح ابن خزیمہ | 78 |
| 84 | صحیحین پر مستخرجات | 78 |
| 85 | صحیحین پر مشہور ترین مستخرجات | 78 |
| 86 | کیا مستخرجات کے مصنفین نے الفاظ میں صحیحین کی موافقت کا التزام کیا ہے؟ | 79 |
| 87 | کیا ان کتب کی احادیث کو نقل کر کے شیخین کی طرف منسوب کیا جاسکتا ہے؟ | 79 |
| 88 | المستخرجات علی الصحیحین کے فوائد | 79 |
| 89 | ا......اسناد کی بلندی | 80 |
| 90 | ۲......صحیح کی قدر میں اضافہ | 80 |
| 91 | ۳......کثرتِ طرق کی وجہ سے قوت کا حصول | 80 |
| 92 | شیخین کی روایات جن کو صحیح قرار دیا گیا وہ کون کون سی ہیں؟ | 80 |
| 93 | مراتب صحیح | 81 |
| 94 | حدیث صحیح کے سات مراتب | 82 |
| 95 | شیخین کی شرط | 83 |

| | | |
|---|---|---|
| 96 | متفق علیہ کا مفہوم کیا ہے؟ | 83 |
| 97 | کیا صحیح حدیث کا عزیز ہونا شرط ہے؟ | 83 |
| 98 | حدیث حسن | 84 |
| 99 | خطابی کی تعریف | 84 |
| 100 | امام ترمذی کی تعریف | 84 |
| 101 | امام ابن حجر عسقلانی کی تعریف | 85 |
| 102 | مصنف کا تبصرہ | 85 |
| 103 | مختار تعریف | 86 |
| 104 | حدیث حسن کا حکم | 86 |
| 105 | حدیث حسن کی مثال | 86 |
| 106 | مراتب حدیث حسن | 87 |
| 107 | محدثین کا قول ''حدیث صحیح الاسناد'' اور ''حسن الاسناد'' کا مرتبہ | 88 |
| 108 | امام ترمذی وغیرہ (رحمہم اللہ) کا "حدیث حسن صحیح" کہنا | 89 |
| 109 | المصابیح کی احادیث میں امام بغوی کی تقسیم | 89 |
| 110 | وہ کتب جن میں حسن احادیث پائی جاتی ہیں | 90 |
| 111 | ۱......جامع ترمذی | 90 |
| 112 | ۲......سنن ابی داؤد | 90 |
| 113 | ۳......سنن دار قطنی | 91 |
| 114 | صحیح لغیرہ | 91 |
| 115 | مرتبہ و مثال | 91 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 116 | حسن لغیرہ | 92 |
| 117 | مرتبہ | 93 |
| 118 | حکم | 93 |
| 119 | مثال | 93 |
| 120 | قرائن سے ملی ہوئی مقبول خبر آحاد | 94 |
| 121 | انواع | 94 |
| 122 | دوسری بحث......خبر مقبول معمول بہ اور غیر معمول بہ | 96 |
| 123 | تعریف مختلف الحدیث | 96 |
| 124 | مختلف کی مثال | 97 |
| 125 | کیفیت جمع | 97 |
| 126 | دو متعارض احادیث کی صورت میں کیا کرنا ضروری ہے | 98 |
| 127 | اس کی اہمیت اور اس میں کامل کون ہے | 99 |
| 128 | مشہور تصنیفات | 100 |
| 129 | ناسخ اور منسوخ حدیث | 100 |
| 130 | اہمیت، مشکلات اور اس میں مشہور علماء | 100 |
| 131 | ناسخ ومنسوخ کی پہچان کیسے حاصل ہو؟ | 101 |
| 132 | ناسخ ومنسوخ سے متعلق مشہور تصانیف | 102 |
| 133 | تیسری فصل......خبر مردود | 104 |
| 134 | خبر مردود اور ردّ کے اسباب | 104 |
| 135 | خبر مردود کی اقسام اور اسباب ردّ | 104 |

| | | |
|---|---|---|
| 136 | پہلی بحث......حدیث ضعیف | 105 |
| 137 | تفاوت | 105 |
| 138 | کمزورترین سند | 106 |
| 139 | ضعیف کی مثال | 107 |
| 140 | اس کی روایت کا حکم | 108 |
| 141 | اس پر عمل کا حکم | 109 |
| 142 | ضعیف احادیث کے بارے میں مشہور تصانیف | 109 |
| 143 | دوسری بحث......سند میں سقوط کی وجہ سے مردود | 109 |
| 144 | اقسامِ سقوط | 110 |
| 145 | معلق | 111 |
| 146 | اس کی صورتیں | 111 |
| 147 | مثال | 111 |
| 148 | حکم | 112 |
| 149 | صحیحین میں معلقات کا حکم | 112 |
| 150 | مرسل......(محدثین کے نزدیک) | 113 |
| 151 | اس کی صورت | 113 |
| 152 | مثال | 114 |
| 153 | فقہاء اور اصولیوں کے نزدیک مرسل | 114 |
| 154 | مرسل کا حکم | 115 |
| 155 | مرسل کے بارے میں اقوالِ علماء | 115 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 156 | صحابی کی مرسل حدیث | 117 |
| 157 | مرسل صحابی کا حکم | 117 |
| 158 | مرسل کے بارے میں مشہور تصنیفات | 117 |
| 159 | معضل | 118 |
| 160 | مثال | 118 |
| 161 | معضل کا حکم | 119 |
| 162 | معلق کی بعض صورتوں کے ساتھ اس کا جمع ہونا | 119 |
| 163 | معضل کے مقامات | 120 |
| 164 | منقطع | 120 |
| 165 | تعریف کی وضاحت | 120 |
| 166 | متاخرین علماء حدیث کے نزدیک حدیث منقطع | 121 |
| 167 | مثال | 121 |
| 168 | حکم | 122 |
| 169 | مدلّس | 122 |
| 170 | اقسام تدلیس | 122 |
| 171 | تدلیس الاسناد | 123 |
| 172 | تعریف کی وضاحت | 123 |
| 173 | تدلیس الاسناد اور ارسال الخفی میں فرق | 124 |
| 174 | مثال | 124 |
| 175 | تدلیس التسویۃ | 125 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 176 | اس تدلیس میں مشہور راوی | 125 |
| 177 | مثال | 126 |
| 178 | تدلیس شیوخ | 127 |
| 179 | مثال | 127 |
| 180 | تدلیس کا حکم | 127 |
| 181 | تدلیس پر ابھارنے والی اغراض | 128 |
| 182 | مدلِس کی مذمت کے اسباب | 128 |
| 183 | مدلِس کی روایت کا حکم | 129 |
| 184 | تدلیس کی پہچان کس بات سے ہوگی؟ | 129 |
| 185 | تدلیس اور مدلِس کے بارے میں مشہور ترین تصنیفات | 130 |
| 186 | مرسل خفی | 130 |
| 187 | مثال | 131 |
| 188 | مرسل خفی کی پہچان کیسے ہو؟ | 131 |
| 189 | حکم | 132 |
| 190 | اس میں مشہور تصانیف | 132 |
| 191 | المعنعن اور المؤنّن | 132 |
| 192 | معنعن کی تعریف | 132 |
| 193 | مثال | 133 |
| 194 | کیا یہ متصل ہے یا منقطع؟ | 133 |
| 195 | مؤنّن کی تعریف | 134 |

| | | |
|---|---|---|
| 196 | موئن کا حکم | 134 |
| 197 | تیسری بحث......راوی پر طعن کے سبب سے مردود | 135 |
| 198 | راوی پر طعن سے مراد | 135 |
| 199 | راوی پر طعن کے اسباب | 135 |
| 200 | حدیث موضوع | 136 |
| 201 | اس کی روایت کا حکم | 136 |
| 202 | حدیث گھڑنے میں وضاعین کے طریقے | 137 |
| 203 | موضوع حدیث کی پہچان کیسے ہوتی ہے؟ | 137 |
| 204 | وضع کی وجوہات اور وضاعین کی اقسام | 138 |
| 205 | د......حکمرانوں کا قرب حاصل کرنے کے لئے | 139 |
| 206 | ھ......کمائی اور حصول رزق کے لئے | 140 |
| 207 | ز......شہرت مقصود ہو | 140 |
| 208 | وضع حدیث کے بارے میں کرامیہ کا مذہب | 140 |
| 209 | موضوع احادیث ذکر کرنے میں بعض مفسرین کی خطاء | 141 |
| 210 | موضوع احادیث کے بارے میں چند مشہور تصانیف | 141 |
| 211 | حدیث متروک | 142 |
| 212 | ا......تعریف | 142 |
| 213 | ۲......راوی پر جھوٹ کی تہمت کے اسباب | 142 |
| 214 | ۳......مثال | 143 |
| 215 | ۴......حدیث متروک کا مقام | 143 |

| | | |
|---|---|---|
| 216 | حدیث منکر | 144 |
| 217 | منکر اور شاذ میں فرق | 145 |
| 218 | پہلی تعریف کی مثال | 145 |
| 219 | دوسری تعریف کی مثال | 146 |
| 220 | حدیث منکر کا مرتبہ | 146 |
| 221 | معروف حدیث | 147 |
| 222 | مثال | 147 |
| 223 | معلل حدیث | 147 |
| 224 | علت کی تعریف | 148 |
| 225 | اصطلاحی معنی کے علاوہ پر علت کا اطلاق | 148 |
| 226 | پہلی نوع | 149 |
| 227 | دوسری نوع | 149 |
| 228 | معرفت علل کی جلالت و دقت اور کون اس پر قادر ہے؟ | 149 |
| 229 | تعلیل کس سند میں داخل ہوتی ہے؟ | 149 |
| 230 | علت کے ادراک پر کن امور سے مدد لی جاتی ہے؟ | 150 |
| 231 | معلل کی معرفت کا طریقہ | 150 |
| 232 | علت کہاں واقع ہوتی ہے؟ | 150 |
| 233 | کیا سند میں علت کا وقوع متن میں خرابی کا سبب ہے؟ | 151 |
| 234 | معلل سے متعلق مشہور کتب | 151 |
| 235 | ثقات کی مخالفت | 152 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 236 | حدیث مدرج | 153 |
| 237 | اقسام اور اس کی صورتیں | 153 |
| 238 | مثال | 153 |
| 239 | مدرج المتن | 154 |
| 240 | مثالیں | 155 |
| 241 | ادراج کے اسباب | 157 |
| 242 | ادراج کا ادراک کیسے ہو؟ | 157 |
| 243 | ادراج کا حکم | 157 |
| 244 | ادراج سے متعلق مشہور ترین تصنیفات | 158 |
| 245 | حدیث مقلوب | 158 |
| 246 | اقسام | 158 |
| 247 | قلب پر ابھارنے والے اسباب | 160 |
| 248 | قلب کا حکم | 161 |
| 249 | اس میں مشہور ترین تصنیفات | 161 |
| 250 | المزید فی متصل الاسانید | 162 |
| 251 | مثال | 162 |
| 252 | اس مثال میں اضافہ کی وضاحت | 162 |
| 253 | اضافہ کے رد کے لئے شرط | 163 |
| 254 | وقوع زیادتی کے دعویٰ پر وارد ہونے والے اعتراضات | 163 |
| 255 | اس میں مشہور ترین تصنیف | 164 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 256 | مضطرب | 164 |
| 257 | تعریف کی تشریح | 164 |
| 258 | اضطراب کے ثبوت کے لئے شرائط | 165 |
| 259 | مضطرب کی اقسام | 165 |
| 260 | مضطرب السند | 165 |
| 261 | مضطرب المتن | 166 |
| 262 | اضطراب کس سے واقع ہوتا ہے؟ | 167 |
| 263 | مضطرب کے ضعف کا سبب | 167 |
| 264 | اس کے بارے میں مشہور ترین کتاب | 167 |
| 265 | مصحف | 167 |
| 266 | اہمیت اور باریکی | 168 |
| 267 | تقسیمات | 168 |
| 268 | تصحیف السمع | 169 |
| 269 | حافظ ابن حجر کی تقسیم | 170 |
| 270 | کیا راوی کی تصحیف عیب ہے؟ | 170 |
| 271 | راوی سے زیادہ تصحیف کا سبب | 171 |
| 272 | اس میں مشہور ترین تصانیف | 171 |
| 273 | شاذ اور محفوظ | 171 |
| 274 | تعریف کی وضاحت | 171 |
| 275 | شذوذ کہاں واقع ہوتا ہے؟ | 172 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 276 | محفوظ | 173 |
| 277 | شاذ اور محفوظ کا حکم | 174 |
| 278 | راوی کا مجہول ہونا | 174 |
| 279 | اس کے اسباب | 174 |
| 280 | مثالیں......راوی کی کثرتِ صفات | 174 |
| 281 | مجہول کی تعریف | 175 |
| 282 | مجہول کی اقسام | 175 |
| 283 | الف......مجہول العین | 175 |
| 284 | اس کی روایت کا حکم | 176 |
| 285 | توثیق کیسے ہو؟ | 176 |
| 286 | کیا اس کی حدیث کا کوئی خاص نام ہے؟ | 176 |
| 287 | ب......مجہول الحال | 176 |
| 288 | اس کی روایت کا حکم | 176 |
| 289 | کیا اس کی حدیث کا کوئی خاص نام ہے؟ | 176 |
| 290 | ج......مبہم | 177 |
| 291 | اس روایت کا حکم | 177 |
| 292 | اگر تعدیل کے لفظ کے ساتھ ابہام کرے تو کیا اس کی روایت قبول ہوگی؟ | 177 |
| 293 | کیا اس کی حدیث کا کوئی خاص نام ہے؟ | 177 |
| 294 | اسباب جہالت سے متعلق مشہور ترین کتب | 178 |
| 295 | بدعت......راوی پر طعن کا نواں سبب | 178 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 296 | اقسام | 179 |
| 297 | بدعتی کی روایت کا حکم | 179 |
| 298 | کیا بدعتی کی روایت کا کوئی خاص نام ہے؟ | 180 |
| 299 | سوء حفظ......(یہ راوی پر طعن کا دسواں سبب ہے) | 180 |
| 300 | اقسام | 180 |
| 301 | اس کی روایت کا حکم | 180 |
| 302 | چوتھی فصل......مقبول و مردود کے درمیان مشترک حدیث | 181 |
| 303 | پہلی بحث......مسند الیہ کی طرف نسبت کے اعتبار سے خبر کی تقسیم | 181 |
| 304 | حدیث قدسی | 181 |
| 305 | حدیث قدسی اور قرآن میں فرق | 182 |
| 306 | احادیث قدسیہ کی تعداد | 182 |
| 307 | حدیث قدسی کی روایت کے صیغے | 183 |
| 308 | اس کے بارے مشہور ترین تصنیف | 183 |
| 309 | مرفوع | 183 |
| 310 | تعریف کی شرح | 184 |
| 311 | مرفوع کی اقسام | 184 |
| 312 | موقوف | 185 |
| 313 | تعریف کی وضاحت | 185 |
| 314 | مثالیں | 185 |
| 315 | موقوف کا ایک اور استعمال | 186 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 316 | فقہاء خراسان کی اصطلاح | 187 |
| 317 | وہ فروع جو حکما مرفوع سے تعلق رکھتی ہیں | 187 |
| 318 | اس کی چند صورتیں | 187 |
| 319 | کیا موقوف حدیث حجت بن سکتی ہے؟ | 190 |
| 320 | مقطوع | 191 |
| 321 | تعریف کی تشریح | 191 |
| 322 | مثالیں | 191 |
| 323 | مقطوع فعلی کی مثال | 192 |
| 324 | مقطوع حدیث کو حجت بنانا | 192 |
| 325 | مقطوع پر منقطع کا اطلاق | 192 |
| 326 | موقوف اور مقطوع کے مقامات | 193 |
| 327 | دوسری بحث...... مقبول اور مردود کے درمیان مشترک انواع | 193 |
| 328 | مسند | 193 |
| 329 | متصل | 194 |
| 330 | مرفوع متصل کی مثال | 194 |
| 331 | موقوف متصل کی مثال | 194 |
| 332 | کیا تابعی کے قول کا نام متصل رکھا جا سکتا ہے؟ | 195 |
| 333 | زیادات ثقات | 195 |
| 334 | زیادات ثقات کا مفہوم | 195 |
| 335 | زائد الفاظ کو جمع کرنے والے مشہور ترین ائمہ | 195 |

| | | |
|---|---|---|
| 336 | ان زائد الفاظ کا محل وقوع | 196 |
| 337 | متن میں زیادتی کا حکم | 196 |
| 338 | متن میں زیادتی کی مثالیں | 197 |
| 339 | سند میں زیادتی کا حکم | 199 |
| 340 | اعتبار، متابع اور شاہد | 200 |
| 341 | اعتبار تابع اور شاہد، کی قسیم نہیں ہے | 201 |
| 342 | تابع اور شاہد کے لئے ایک اور اصطلاح | 201 |
| 343 | متابعت......اقسام......مثالیں | 202 |
| 344 | متابعت تامہ | 203 |
| 345 | متابعت قاصرہ | 204 |
| 346 | شاہد | 204 |
| 347 | **دوسرا باب** ......جس کی روایت مقبول کی جائے اس کی صفت اور اس سے متعلق جرح وتعدیل | 205 |
| 348 | پہلی بحث......راوی اور اس کے مقبول ہونے کی شرائط | 205 |
| 349 | راوی کی قبولیت کے لئے شرائط | 206 |
| 350 | عدالت کیسے ثابت ہوتی ہے؟ | 206 |
| 351 | ثبوتِ عدالت کے بارے میں ابن عبدالبر کا مذہب | 207 |
| 352 | راوی کا ضبط کیسے معلوم ہو؟ | 208 |
| 353 | کیا وضاحت کے بغیر جرح وتعدیل کو قبول کیا جا سکتا ہے؟ | 208 |
| 354 | کیا ایک آدمی سے جرح اور تعدیل ثابت ہوتی ہے؟ | 209 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 355 | راوی میں جرح اور تعدیل کا اجتماع: | 209 |
| 356 | عادل راوی کی ایک شخص سے روایت | 210 |
| 357 | فسق سے توبہ کرنے والے کی روایت کا حکم | 210 |
| 358 | حدیث بیان کرنے پر اجرت لینے والے کی روایت کا حکم | 210 |
| 359 | جو شخص سستی، دوسروں سے تلقین قبول کرنے یا زیادہ بھولنے میں معروف ہو اس کی روایت کا حکم: | 211 |
| 360 | جو شخص بیان کر کے بھول جائے اس سے روایت کا حکم | 211 |
| 361 | اس کی روایت کا حکم | 212 |
| 362 | حدیث کے رد ہونے کو ان دونوں میں طعن کا سبب قرار دیا جائے یا نہ؟ | 212 |
| 363 | اس میں مشہور ترین تصنیف | 213 |
| 364 | دوسری بحث...... جرح و تعدیل سے متعلق کتب کے بارے میں عام رائے | 213 |
| 365 | تیسری بحث...... مراتب جرح و تعدیل | 215 |
| 366 | مراتب تعدیل اور ان کے الفاظ | 215 |
| 367 | ان مراتب کا حکم | 216 |
| 368 | جرح کے مراتب اور الفاظ | 217 |
| 369 | ان مراتب کا حکم | 217 |
| 370 | **تیسرا باب** روایت، اس کے آداب اور ضبط روایت کی کیفیت | 219 |
| 371 | پہلی بحث...... سماع حدیث، اس کے تحمل نیز ضبط کا طریقہ | 219 |
| 372 | کیا حدیث حاصل کرنے کے لئے اسلام اور بلوغت شرط ہے؟ | 220 |
| 373 | سماع حدیث کی ابتداء کب مستحب ہے؟ | 221 |



Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 374 | کیا بچے کی سماعت کے لئے کوئی عمر متعین ہے؟ | 221 |
| 375 | دوسری بحث...... حدیث سننے کے طریقے اور ادائیگی کے صیغے | 221 |
| 376 | شیخ کے الفاظ سے سننا | 222 |
| 377 | شیخ کے سامنے پڑھنا (قراۃ علی الشیخ) | 223 |
| 378 | اجازت دینا (الاجازۃ): | 224 |
| 379 | اس کا حکم | 225 |
| 380 | الفاظِ اداء | 225 |
| 381 | مناولہ | 225 |
| 382 | الفاظ اداء | 226 |
| 383 | کتابت | 227 |
| 384 | اسے روایت کرنے کا حکم | 227 |
| 385 | کیا خط پر اعتماد کرنے کے لئے گواہوں کی ضرورت ہے؟ | 227 |
| 386 | الفاظِ اداء | 228 |
| 387 | اعلام (خبر دینا) | 228 |
| 388 | الفاظ اداء | 229 |
| 389 | الوصیۃ | 229 |
| 390 | الوجادۃ | 229 |
| 391 | الفاظِ اداء | 230 |
| 392 | تیسری بحث...... حدیث کی کتابت، ضبط اور اس میں تصانیف | 230 |
| 393 | کتابتِ حدیث کا حکم | 230 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 394 | کتابت کے حکم میں اختلاف کا سبب | 231 |
| 395 | جواز اور ممانعت کی احادیث کو جمع کرنا | 231 |
| 396 | کاتب حدیث پر کیا لازم ہے؟ | 232 |
| 397 | موازنہ اور اس کی کیفیت | 233 |
| 398 | الفاظ اداء کی کتابت وغیرہ میں اصطلاحات | 233 |
| 399 | طلب حدیث کے لئے سفر | 234 |
| 400 | حدیث سے متعلق تصانیف کی اقسام | 235 |
| 401 | الجوامع | 235 |
| 402 | المسانید | 235 |
| 403 | السنن | 236 |
| 404 | المعاجم | 236 |
| 405 | العلل | 236 |
| 406 | اجزاء | 236 |
| 407 | اطراف | 237 |
| 408 | المستدرکات | 237 |
| 409 | المستخرجات | 237 |
| 410 | چوتھی بحث......روایت حدیث کا طریقہ | 237 |
| 411 | اس عنوان سے کیا مراد ہے؟ | 237 |
| 412 | کیا راوی اپنی اس کتاب سے روایت کرسکتا ہے جس میں سے اسے کچھ یاد نہیں؟ | 228 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 413 | اس نابینا سے روایت کرنا جو اپنی سنی ہوئی روایات کو یاد نہیں رکھتا | 238 |
| 414 | حدیث کی روایت بالمعنیٰ اور اس کی شرائط | 239 |
| 415 | حدیث میں لحن اور اس کا سبب | 240 |
| 416 | غریب الحدیث | 241 |
| 417 | اہمیت اور دشوار ہونا | 242 |
| 418 | اس کی عمدہ ترین تفسیر | 242 |
| 419 | اس میں مشہور ترین تصانیف | 243 |
| 420 | دوسری فصل......آدابِ روایت | 243 |
| 421 | پہلی بحث......آدابِ محدث | 243 |
| 422 | معروف ترین باتیں جنہیں محدِث اختیار کرے | 243 |
| 423 | جب مجلس املاء میں حاضری کا ارادہ کرے تو کون کون سے امور مستحب ہیں؟ | 244 |
| 424 | حدیث شریف میں مشغولیت کے لئے محدِث کی کتنی عمر ہونی چاہیے؟ | 245 |
| 425 | اس میں مشہور ترین تصنیفات | 245 |
| 426 | دوسری بحث......آدابِ طالبِ حدیث | 246 |
| 427 | جن آداب میں محدِث کے ساتھ شریک ہے | 246 |
| 428 | وہ آداب جن میں طالب، محدِث سے الگ ہے: | 247 |
| 429 | **چوتھا باب**......اسناد اور اس کے متعلقات | 249 |
| 430 | پہلی فصل......لطائفِ اسناد | 249 |
| 431 | اسناد عالی و نازل | 249 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 432 | تعریف | 250 |
| 433 | علو کی اقسام | 250 |
| 434 | موافقت | 251 |
| 435 | بدل | 252 |
| 436 | مساوات | 252 |
| 437 | مصافحہ | 253 |
| 438 | اقسام نزول | 254 |
| 439 | کیا علو افضل ہے یا نزول؟ | 254 |
| 440 | اس میں مشہور ترین تصنیفات | 254 |
| 441 | مسلسل | 255 |
| 442 | تعریف کی تشریح | 255 |
| 443 | اقسام | 255 |
| 444 | راویوں کی صفات کے ساتھ مسلسل | 257 |
| 445 | ان میں سے افضل | 258 |
| 446 | کیا تمام سند میں تسلسل کا پایا جانا ضروری ہے؟ | 258 |
| 447 | تسلسل اور صحت میں کوئی ربط نہیں | 259 |
| 448 | اس میں مشہور ترین تصانیف | 259 |
| 449 | اکابر کی اصاغر سے روایت | 259 |
| 450 | تعریف کی وضاحت | 259 |
| 451 | اقسام اور مثالیں | 260 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 452 | اکابر کی اصاغر سے روایت کی چند صورتیں | 261 |
| 453 | اس علم کے فوائد | 261 |
| 454 | اس میں مشہورترین تصنیفات | 261 |
| 455 | آباء کی ابناء سے روایت | 262 |
| 456 | مثال | 262 |
| 457 | اس کے فوائد | 262 |
| 458 | اس میں مشہورترین تصانیف | 262 |
| 459 | ابناء کی آباء سے روایت | 263 |
| 460 | اقسام | 263 |
| 461 | مثال | 263 |
| 46[illegible] | اس علم کے فوائد | 264 |
| 463 | اس میں مشہور تصانیف | 264 |
| 464 | المدبّج وروایۃ الاقران | 264 |
| 465 | روایۃ الاقران کی تعریف | 264 |
| 466 | مدبّج کی تعریف | 265 |
| 467 | مدبّج کی مثالیں | 265 |
| 468 | اس علم کے فوائد | 265 |
| 469 | اس میں مشہورترین تصانیف | 266 |
| 470 | سابق ولاحق | 266 |
| 471 | مثال | 266 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 472 | اس علم کے فوائد | 267 |
| 473 | اس میں مشہور ترین تصانیف | 268 |
| 474 | دوسری فصل......راویوں کی پہچان | 268 |
| 475 | معرفت صحابہ (رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین) | 269 |
| 476 | تعریف صحابی | 269 |
| 477 | معرفت صحابہ کی اہمیت | 269 |
| 478 | صحبتِ صحابی کی پہچان کس بات کے ساتھ ہوتی ہے | 270 |
| 479 | تمام صحابہ کرام کی تعدیل | 270 |
| 480 | زیادہ احادیث والے صحابی | 271 |
| 481 | جن صحابہ کرام کی فتاوی زیادہ ہیں | 272 |
| 482 | عبادلہ کون ہیں؟ | 272 |
| 483 | صحابہ کرام کی تعداد | 273 |
| 484 | ان کے طبقات کی تعداد | 273 |
| 485 | صحابہ کرام میں افضل کون؟ | 273 |
| 486 | سب سے پہلے اسلام لانے والے | 274 |
| 487 | سب سے آخر میں فوت ہونے والے صحابی | 274 |
| 488 | صحابہ کرام کے بارے میں مشہور ترین کتب | 274 |
| 489 | تابعین کی معرفت | 275 |
| 490 | اس پہچان کے فوائد | 275 |
| 491 | طبقات تابعین | 275 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 492 | مُخَضرَمون | 276 |
| 493 | سات فقہاء | 276 |
| 494 | تابعین میں سے افضل | 276 |
| 495 | تابعیات میں سے افضل | 277 |
| 496 | تابعین کے بارے میں مشہور ترین تصنیف | 277 |
| 497 | بھائیوں اور بہنوں کی معرفت | 277 |
| 498 | اس علم کے فوائد | 278 |
| 499 | مثالیں | 278 |
| 500 | اس علم میں مشہور ترین تصنیفات | 279 |
| 501 | متفق اور مفترق کی معرفت | 279 |
| 502 | مثالیں | 280 |
| 503 | اس علم کا فائدہ اور اہمیت | 280 |
| 504 | اس کو لانا کب اچھا سمجھا جاتا ہے؟ | 281 |
| 505 | اس علم کے بارے میں تصانیف | 281 |
| 506 | مؤتلف اور مختلف | 281 |
| 507 | مثالیں | 281 |
| 508 | کیا اس کے لئے کوئی ضابطہ ہے؟ | 282 |
| 509 | اس علم کا فائدہ اور اہمیت | 282 |
| 510 | اس میں مشہور ترین تصنیفات | 283 |
| 511 | متشابہ کی معرفت | 283 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 512 | مثالیں | 283 |
| 513 | اس علم کا فائدہ | 284 |
| 514 | متشابہ کی کچھ اور انواع | 284 |
| 515 | اس میں مشہور ترین تصانیف | 284 |
| 516 | مہمل کی معرفت | 285 |
| 517 | اہمال کا نقصان کب ہوتا ہے؟ | 285 |
| 518 | مثال | 285 |
| 519 | مہمل اور مبہم میں فرق | 286 |
| 520 | اس میں مشہور ترین تصنیف | 286 |
| 521 | مبہمات کی معرفت | 286 |
| 522 | اس کی بحث کے فوائد | 286 |
| 523 | مبہم کی پہچان کیسے ہو؟ | 287 |
| 524 | اس کی اقسام | 287 |
| 525 | مبہمات سے متعلق مشہور ترین تصنیفات | 288 |
| 526 | وحدان کی معرفت | 289 |
| 527 | اس کا فائدہ | 289 |
| 528 | مثالیں | 289 |
| 529 | کیا شیخین نے اپنی صحیحین میں وحدان سے روایات لی ہیں؟ | 289 |
| 530 | اس سلسلے میں مشہور ترین تصنیفات | 290 |
| 531 | ان راویوں کی معرفت جن کا ذکر ان کے ناموں یا مختلف صفات کے ساتھ ہوا | 290 |



Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 532 | اس کی مثال | 290 |
| 533 | اس علم کے فوائد | 291 |
| 534 | خطیب کا اپنے شیوخ کے بارے میں اس بات کو کثرت سے استعمال کرنا | 291 |
| 535 | اس سلسلے میں مشہور ترین تصنیفات: | 291 |
| 536 | ناموں، کنیتوں اور القاب سے مفردات کی پہچان | 291 |
| 537 | مفردات سے مراد | 291 |
| 538 | مثالیں | 292 |
| 539 | اس میں مشہور ترین تصنیفات | 292 |
| 540 | ان راویوں کی پہچان جو اپنی کنیتوں سے مشہور ہیں | 293 |
| 541 | اس بحث سے مراد | 293 |
| 542 | فوائد | 293 |
| 543 | اس کے بارے میں تصنیف کا طریقہ | 293 |
| 544 | کنیتوں والوں کی اقسام اور مثالیں | 293 |
| 545 | مشہور ترین تصنیفات | 295 |
| 546 | القاب کی پہچان | 295 |
| 547 | اس بحث سے مراد | 295 |
| 548 | اقسام......مثالیں | 296 |
| 549 | مشہور ترین تصنیفات | 297 |
| 550 | ان لوگوں کی پہچان جو اپنے باپ کے غیر کی طرف منسوب ہیں | 298 |
| 551 | اس بحث سے مراد | 298 |


Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 552 | اقسام اور مثالیں | 298 |
| 553 | مشہورترین تصنیفات | 299 |
| 554 | ان نسبتوں کی پہچان جو اپنے ظاہر کے خلاف ہیں | 299 |
| 555 | اس بحث کا فائدہ | 299 |
| 556 | مثالیں | 299 |
| 557 | مشہورترین تصنیفات | 300 |
| 558 | راویوں کی تاریخوں کی معرفت | 300 |
| 559 | یہاں کیا مراد ہے؟ | 300 |
| 560 | اس کی اہمیت اور فائدہ | 301 |
| 561 | تاریخ کی مثالیں | 301 |
| 562 | معتبر کتب حدیث کے مصنفین | 302 |
| 563 | اس موضوع سے متعلق مشہورترین کتب | 303 |
| 564 | ثقہ راویوں میں سے اختلاط والے راویوں کی پہچان | 303 |
| 565 | اختلاط کی تعریف | 303 |
| 566 | مختلطین کی اقسام | 304 |
| 567 | مختلط کی روایت کا حکم | 304 |
| 568 | اس فن کی اہمیت اور فائدہ | 304 |
| 569 | کیا شیخین نے اپنی صحیحین میں ان ثقہ راویوں کی روایات لی ہیں جو اختلاط میں مبتلا ہوئے؟ | 305 |



Marfat.com

| | | |
|---|---|---|
| 570 | اس فن میں مشہور ترین تصنیفات | 305 |
| 571 | علماء اور راویوں کے طبقات | 305 |
| 572 | اس فن کی معرفت کے فوائد | 305 |
| 573 | بعض اوقات دو راوی ایک اعتبار سے ایک ہی طبقہ سے ہوتے ہیں اور دوسرے اعتبار سے دو طبقوں میں شمار ہوتے ہیں | 306 |
| 574 | اس میں غور کرنے والے کو کیا کرنا چاہیے؟ | 306 |
| 575 | مشہور ترین تصنیف | 306 |
| 576 | راویوں اور علماء میں سے موالی | 307 |
| 577 | موالی کی اقسام | 307 |
| 578 | اس کی معرفت کے فوائد | 308 |
| 579 | اس میں مشہور ترین تصنیفات | 308 |
| 580 | ثقہ اور ضعیف راویوں کی پہچان | 308 |
| 581 | ثقہ اور ضعیف کی تعریف | 308 |
| 582 | اہمیت اور فائدہ | 309 |
| 583 | اس میں مشہور ترین صفات اور ان کی انواع | 309 |
| 584 | راویوں کے وطن اور شہروں کی پہچان | 310 |
| 585 | اس بحث سے مراد | 310 |
| 586 | اس کی معرفت کے فوائد | 310 |
| 587 | عرب و عجم والے کس کی طرف نسبت کرتے تھے | 310 |

| | | |
|---|---|---|
| 588 | جو شخص اپنے شہر سے منتقل ہو جائے اس کی نسبت کس طرح ہوگی؟ | 311 |
| 589 | جو شخص کسی شہر کے تابع بستی میں رہتا ہے وہ کیسے منسوب ہو؟ | 311 |
| 590 | کسی شہر میں کتنی مدت رہائش پذیر ہو تو اس شہر کی طرف منسوب ہو سکتا ہے؟ | 311 |
| 591 | اس میں مشہور ترین تصانیف | 312 |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |


Marfat.com

# معروضہ

محمد صدیق ہزاروی

بسم اللہ الرحمن الرحیم

احادیث مبارکہ، قرآن مجید کا بیان ہیں اور اصولِ فقہ یا ادلۂ اربعہ میں سنت رسول صلی اللہ علیہ وسلم قرآن مجید کے بعد سب سے بڑی دلیل ہے۔ اس لئے قرآن مجید کی طرح احادیث مبارکہ بھی قانونی حیثیت رکھتی ہیں کیونکہ حدیث بھی وحی الٰہی ہے اور اسے وحی غیر متلو یا وحی خفی کہا جاتا ہے۔ اور سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم کی مجلس مبارک میں جہاں مخلص، زیرک اور دانا صحابہ کرام تشریف فرما ہوتے وہاں دیہات سے آنے والے صحابہ کرام بھی مجلس میں حاضر ہوتے جن کے اخلاص میں شک وشبہ نہیں کیا جاسکتا تھا لیکن ایسا ممکن تھا کہ حدیث شریف نقل کرنے میں ان سے خطاء ہو جائے۔

اور پھر منافقین بھی شریک مجلس ہوتے جو اپنے خبثِ باطنی کی وجہ سے احادیث میں تغیر وتبدل کا ارتکاب کرتے۔

تو اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے اقوال وافعال کو محفوظ رکھنے کے لئے اہتمام فرمایا اور ملتِ اسلامیہ کے علماء کو اس طرف متوجہ کیا کہ انہوں نے حدیث کی پرکھ کے لئے اصول وضع کئے اور ان کی روشنی میں احادیث کی درجہ بندی کی یہی نہیں راویوں کے عدل وضبط کا بھی جائزہ لیا گیا چنانچہ اس حوالے سے اسماء الرجال کی بڑی بڑی کتب وجود میں آئیں۔

اصول حدیث پر بھی تاریخ اسلام کی عظیم شخصیات نے قلم اُٹھایا اور نہایت جامع کتب معرض وجود میں آئیں یہ کتاب بھی اسی سلسلے کی ایک کڑی ہے اور اس کتاب

Marfat.com

کا مطالعہ کرنے والا کوئی بھی غیر متعصب شخص یہی فیصلہ دے گا کہ اس سلسلے میں یہ کتاب نہایت جامع کتاب ہے۔ راقم کو 2005ء میں دو ماہ عالم اسلام کی عظیم وقدیم یونیورسٹی جامعہ ازہر شریف میں حاضری اور استفادہ کی سعادت حاصل ہوئی وہاں دوستوں نے بتایا کہ یہاں ہر استاذ جو اصول حدیث کی تدریس کے فرائض انجام دیتا ہے اپنی کتاب بھی مرتب کرتا ہے اور انہوں نے یہ بھی بتایا کہ ڈاکٹر محمود طحان کی کتاب "تیسیر مصطلحات حدیث" یہاں مصر میں سب سے زیادہ مقبول ہے۔

یہ بات کہاں تک سچ ہے اس کتاب کے مطالعہ سے آپ پر حقیقت واضح ہوجائے گی راقم کو اس کے ترجمہ کے دوران اس حقیقت سے آگاہی ہوئی کہ واقعی اصول واصطلاحات حدیث میں یہ نہایت جامع کتاب ہے۔

ترجمہ کے دوران راقم کو یہ دیکھ کر بہت خوشی ہوئی کہ جناب ڈاکٹر محمود طحان علماء عرب کے اس طبقہ سے تعلق رکھتے ہیں جو نہایت خوش عقیدہ حضرات ہیں چند مثالیں پیش خدمت ہیں۔ فرماتے ہیں۔

"صرف صلوۃ یا صرف سلام پر اکتفاء مکروہ ہے جس طرح (ﷺ) کی بجائے صرف "ص" یا "صلعم" مکروہ ہے مکمل ﷺ لکھا جائے"۔

یہ بات آپ نے کتابت حدیث کی بحث میں لکھی ہے ایسا لگتا ہے کہ ڈاکٹر محمود طحان اور حضرت امام احمد رضا خان فاضل بریلوی رحمہ اللہ کی سوچ میں یکسانیت ہے۔

حدیث شریف کے لئے علم نحو کی ضرورت کے سلسلے میں لکھتے ہیں:

"جو شخص حدیث طلب کرتا ہے اور علم نحو نہیں جانتا وہ اس گدھے کی مثل ہے جس پر ایک بوری ہو جس میں غلہ نہ ہو"

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کے باہم اختلافات کے بارے میں ڈاکٹر صاحب وہی

Marfat.com

بات لکھتے ہیں جو اہل سنت کا عقیدہ ہے اور یوں وہ ان لوگوں کا رڈ کرتے ہیں جو ان اختلافات کو اچھالتے ہوئے بعض جلیل القدر صحابہ کرام کے خلاف زبان طعن دراز کر کے بدبختی کو دعوت دیتے ہیں ڈاکٹر محمود طحان فرماتے ہیں صحابہ کرام تمام عدول ہیں ان میں سے جو ان فتنوں میں مبتلا ہوئے ان کے معاملے کو اجتہاد پر محمول کیا جائے گا جس پر ان کو اجر ملے گا کیونکہ ان کے بارے میں حسنِ ظن کا حکم ہے کیونکہ یہ لوگ حاملین شریعت اور خیر القرون سے تعلق رکھنے والے تھے۔

بہر حال یہ کتاب نہایت عمدہ ہے اللہ تعالیٰ مؤلف کو جزائے خیر عطا فرمائے، مکتبہ اہل سنت کی اس کاوش کو قبول فرمائے اور اس کا افادہ واستفادہ عام فرمائے۔ آمین

مُحَمَّد صِدِّیق هَزَارَوِی

12-4-2013

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

Marfat.com

# سببِ تالیف

تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لئے ہیں جس نے قرآن کریم نازل کر کے مسلمانوں پر احسان فرمایا اور قیامت تک اسے سینوں اور تحریر میں محفوظ کرنے کو اپنے ذمۂ کرم پر لیا اور سید المرسلین ﷺ کی سنت کی حفاظت کو اس کی حفاظت کا تتمہ قرار دیا۔

اور رحمت کاملہ اور سلام ہو ہمارے سردار اور ہمارے نبی حضرت محمد ﷺ پر، جن کو اللہ تعالیٰ نے قرآن حکیم کے اس حصے کو بیان کرنے کی ذمہ داری سونپی جس کے بیان کا اس نے ارادہ فرمایا، ارشادِ خداوندی ہے:

**وانزلنا الیك الذكر لتبین للناس مانزل الیھم ولعلھم یتفکرون۔(سورۃ نحل آیت:۴۴)**

ترجمہ: اور اے محبوب! ہم نے تیری طرف یہ یادگار (کتاب) اُتاری کہ تم لوگوں سے بیان کرو جوان کی طرف اتارا اور کہیں وہ دھیان کریں۔
(کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن از امام احمد رضا خان فاضل بریلوی علیہ الرحمۃ)

پس نبی اکرم ﷺ اپنے اقوال، افعال اور تقریرات کے ذریعے اس کے واضح بیان پر کمربستہ ہوئے۔

اللہ تعالیٰ صحابہ کرام سے راضی ہو جنہوں نے سنت نبویہ کو نبی اکرم ﷺ سے حاصل کیا پس اسے یاد کر لیا اور مسلمانوں کے لئے اسی طرح نقل کیا جس طرح سنا تھا اس کو تحریف اور تبدیلی کے شائبہ سے پاک رکھا۔

اور رحمت و مغفرت ان سلف صالحین کے لئے جنہوں نے سنت نبویہ کو نسل در نسل نقل کیا اور اس کے نقل و روایت کی سلامتی کے لئے نہایت دقیق قواعد و ضوابط مرتب

Marfat.com

کیے تاکہ وہ اہل باطل کی تحریف سے محفوظ رہے۔

اور جزائے خیر ہو مسلمان علماء کے ان جانشینوں کے لئے جنہوں نے سنت کی روایت کے قواعد وضوابط کو اسلاف سے حاصل کر کے ان کی تہذیب (۱) وترتیب کا فریضہ انجام دیا اور ان کو مستقل تصانیف میں جمع کیا بعد میں اِن کو مصطلحات الحدیث کہا گیا۔(۲)

امّا بعد! چند سال قبل جب مجھے مدینہ منورہ میں الجامعۃ الاسلامیہ کے کلیۃ الشریعۃ میں ''علم مصطلح الحدیث'' کی تدریس کی ذمہ داری سونپی گئی اور اس کے لئے ابن صلاح کی کتاب ''علوم الحدیث'' مقرر کی گئی پھر اس کی جگہ اس کا اختصار امام نووی کی کتاب ''التقریب'' مقرر کی گئی تو میں نے دیکھا کہ ان دونوں کتابوں کے پڑھنے میں طلباء کو مشکل پیش آرہی ہے حالانکہ یہ دونوں کتب جلیل القدر ہیں اور ان کے فوائد بہت زیادہ ہیں بشرطیکہ ان کو منظم طریقے سے پڑھایا جائے۔ ان مشکلات میں سے چند یہ ہیں:

(۱) بعض بحثیں بہت طویل ہیں خصوصاً ابن صلاح کی کتاب میں۔(۳)

(۲) اور بعض میں اختصار زیادہ ہے خصوصاً امام نووی کی کتاب میں۔(۴)

(۳) بعض جگہ بحث نامکمل ہے۔(۵)

---

(۱) تہذیب کا معنی کانٹ چھانٹ کر کے زوائد سے خالی کرنا ہے۔

(۲) اس علم کو علم الحدیث دِرایۃ بھی کہا جاتا ہے او علوم الحدیث نیز اصول حدیث بھی کہا جاتا ہے۔

(۳) جیسے سماع حدیث، حدیث حاصل کرنے اسکے ضبط کی صفت کی بحث یہ ۴۶ صفحات پر مشتمل ہے۔

(۴) جیسے ضعیف کی بحث جو نو کلمات سے تجاوز نہیں کرتی۔

(۵) جیسے امام نووی رحمہ اللہ نے مقلوب کی بحث میں صرف اس پر انحصار کیا کہ مقلوب جیسے حضرت سالم کی مشہور حدیث انہوں نے اس کو نافع سے قرار دیا تاکہ اس میں رغبت ہو اور اہل بغداد نے امام بخاری کے امتحان کے لئے ایک سو احادیث اُلٹ کردیں آپ نے ان کو اصل کی طرف لوٹا دیا تو ان لوگوں نے آپ کی فضیلت کو تسلیم کیا (تو امام نووی نے مقلوب میں یہ نامکمل بحث فرمائی)

Marfat.com

اور یہ اس اعتبار سے نامکمل ہے کہ مثلاً تعریف چھوڑ دینا، مثال سے غفلت برتنا، اس بحث کا فائدہ بیان نہ کرنا یا مشہور تصنیفات کے درج کرنے کی طرف توجہ نہ کرنا وغیرہ وغیرہ۔

میں نے اس فن سے متعلق دوسرے متقدمین کی کتب کو بھی اسی طرح پایا بلکہ ان میں سے بعض کتب تمام علوم حدیث کو شامل نہیں اور بعض کو مہذب و مرتب نہیں بنایا گیا۔

اس سلسلے میں ان کا عذر ہے کہ انہوں نے جن امور کو چھوڑا ہے ان کے خیال میں وہ واضح تھے یا ان کے زمانے کے اعتبار سے بعض بحثوں کو طویل کرنے کی ضرورت تھی یا اس کے علاوہ کچھ امور جن کو ہم جانتے یا نہیں جانتے۔

میرا خیال یہ ہوا کہ میں کلیہ شرعیہ کے طلباء کے سامنے مصطلح الحدیث اور علوم حدیث کے سلسلے میں ایک آسان کتاب رکھوں۔ تاکہ ان کے لئے اس فن کے قواعد اور اصطلاحات کو سمجھنا آسان ہو جائے وہ اسطرح کہ ہر بحث کو سلسلہ وار اور نمبر وار فقروں پر تقسیم کروں پہلے تعریف، پھر مثال اور پھر اقسام ذکر کروں۔

اور آخر میں اس فن کے سلسلے میں مشہور ترین تصنیفات کا ذکر کروں اور یہ سب کچھ آسان عبارت میں ہو نیز اسلوب علمی اور واضح ہو اس میں کوئی دشواری اور گہرائی نہ ہو۔

اور میں نے زیادہ اختلافات، اقوال اور تفصیل کی طرف توجہ نہیں دی کیونکہ میں نے اس سلسلے میں کلیات شرعیہ اور کلیات دراسات اسلامیہ کے لئے مختص قلیل اوقات (کم پیریڈ) کا خیال رکھا۔

میں نے اس کتاب کا نام "تیسیر مصطلحات الحدیث" رکھا اور میری سوچ یہ نہیں کہ یہ کتاب اس فن کے بارے میں پہلے علماء کی کتب سے بے نیاز کر دے گی میرا

Marfat.com

ارادہ یہ ہے کہ یہ ان کتب کے لئے چابی بن جائے ان کتب میں جو کچھ ہے اس کے لئے یاددہانی ہو اور ان کے معانی کو سمجھنے تک پہنچنے کو آسان کردے اور ان ائمہ وعلماء کی کتب اس فن کے علماء اور متخصصین کے لئے مرجع بن جائیں اور ایسا فیاض چشمہ ہوں جن سے لوگ سیراب ہوں۔

میں یہ بات ذکر کرنا نہیں بھولتا کہ آخری دور میں بعض محققین کی طرف سے ایسی کتب آئی ہیں جو بہت شاندار فوائد پر مشتمل ہیں خاص طور پر وہ کتب جن میں مستشرقین اور منحرفین کا رد ہے لیکن بعض کتب طویل ہیں اور بعض بہت مختصر ہیں اور بعض نے اس علم کا پوری طرح احاطہ نہیں کیا۔

لہذا میں نے ارادہ کیا کہ میری یہ کتاب طوالت اور اختصار کے درمیان ہو اور تمام بحثوں کو اپنے دامن میں سمیٹ لے۔

## میری اس کتاب میں جدت یہ ہے

(۱) تقسیم......تمام بحث کو نمبروار فقروں میں تقسیم کیا گیا تا کہ طالب علم کے لئے اس کا سمجھنا آسان ہو۔(۱)

(۲)......مختصر طور پر اس فن کی تمام بحثوں کا احاطہ کرنا۔

---

(۱)......میں نے بحث کو فقرات میں تقسیم کرنے کے سلسلے میں اپنے بڑے اساتذہ سے استفادہ کیا جیسے استاذ مصطفیٰ زرقاء نے اپنی کتاب "الفقہ الاسلامی فی ثوبہ الجدید" میں، الاستاذ الدکتور معروف الدوالیبی نے اپنی کتاب "اصول الفقہ" میں، الاستاذ الدکتور محمد زکی عبدالبر نے "مذکرہ" میں جو انہوں نے ہمارے لئے تیار کی جب ہم کلیہ شرعیہ جامعہ دمشق میں تھے اور مرغینانی کی کتاب الہدایہ پڑھی، ان حضرات نے یہ طریقہ اختیار کیا۔ پس اس جدید تقسیم کا ان علوم کو آسانی سے سمجھنے پر بڑا اثر ہے جبکہ پہلے ہم ان کو سمجھنے اور احاطہ میں بہت مشقت برداشت کرتے تھے۔

Marfat.com

باب بندی اور ترتیب کے اعتبار سے میں نے حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کے طریقے سے استفادہ کیا جو انہوں نے النخبۃ اور اس کی شرح (شرح نخبۃ الفکر) میں اختیار کی۔ کیونکہ وہ ایک بہترین ترتیب ہے جس تک وہ پہنچے، اور علمی مواد کے سلسلے میں میرا زیادہ اعتماد ابن صلاح کی کتاب ''علوم الحدیث'' اور امام نووی کی مختصر ''التقریب'' اور اس کی شرح جو امام سیوطی علیہ الرحمۃ کی ہے یعنی ''التدریب'' پر رہا۔

میں نے اس کتاب کو ایک مقدمہ اور چار ابواب پر مرتب کیا:

| | | |
|---|---|---|
| پہلا باب | ...... | خبر (حدیث) |
| دوسرا باب | ...... | جرح وتعدیل |
| تیسرا باب | ...... | روایت اور اس کے اصول |
| چوتھا باب | ...... | اسناد اور راویوں کی پہچان |

جب میں اپنی تواضع پر مبنی کوشش کو عزیز طلباء کے سامنے پیش کر رہا ہوں تو مجھے اس بات کا اعتراف ہے کہ اس علم کو کما حقہ پیش کرنے سے میں عاجز اور کوتاہ ہوں۔

اور میں اپنے آپ کو لغزش اور خطاء سے بریٔ الذمہ قرار نہیں دیتا پس جو شخص (میری) لغزش اور خطاء پر مطلع ہو وہ مجھے آگاہ کر دے میں اس کا شکر گزار ہوں گا شاید میں اس کا تدارک کر سکوں اور میں اللہ تعالیٰ سے امید کرتا ہوں کہ وہ طلباء کرام اور حدیث میں مشغول حضرات کو اس کتاب سے نفع عطا فرمائے اور اسے خالص اپنے کریم ذات کے لئے کر دے۔

(الدکتور محمود الطحان)

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

# مقدمہ

۱......علم المصطلح کی نشاءۃ کی مختصر تاریخ اوراس کے مختلف ادوار۔

۲......علم المصطلح میں مشہورترین تصنیفات۔

۳......بنیادی اصطلاحات۔

## علم مصطلح کی مختصر تاریخ اور مختلف ادوار

بحث وتحقیق کرنے والا اس بات کا خیال رکھتا ہے کہ علم روایت اورنقل اخبار کی اساسی بنیاداورارکان کتاب عزیز (قرآن مجید) اورسنت نبویہ میں موجود ہیں۔

ارشادخدواندی ہے:

یاایھا الذین امنوا ان جاء کم فاسق بنباء فتبینوا۔ (۱)

ترجمہ: اے ایمان والو! اگرکوئی فاسق تمہارے پاس کوئی خبرلائے توتحقیق کرلو۔

اورحدیث شریف میں ہے:

نضر اللہ امرء سمع منا شیئا فبلغ کما سمعہ فرب مبلغ اوعی من سامع ۔(۲)

ترجمہ: اللہ تعالیٰ اس شخص کوتروتازہ رکھے جومجھ سے کوئی بات سنے اوراسے اُسی طرح آگے پہنچادے جس طرح سنا بعض وہ لوگ جن تک حدیث پہنچائی جاتی ہے سننے والے سے زیادہ یادرکھنے والے ہوتے ہیں۔

(۱)......سورۂ حجرات آیت:۶

(۲)......جامع الترمذی کتاب العلم ۵۵۱/۲ مطبوعہ مکتبہ رحمانیہ لاہور

Marfat.com

ایک اور روایت میں ہے:

**فرب حامل فقه الی من هو افقه ورب حامل فقه لیس بفقیه ۔(۱)**

ترجمہ: پس کئی فقہ والے اپنے سے بڑے فقیہہ تک پہنچاتے ہیں اور کئی فقہ کا علم رکھنے والے خود فقیہہ نہیں ہوتے۔

اس آیت کریمہ اور اس حدیث شریف میں احادیث کو اخذ کرنے اور ان کو محفوظ کرنے کی کیفیت سے متعلق ثبوت کی بنیاد رکھی گئی اس کے بارے میں اس کو یاد کرنے اور دوسرے کی طرف نقل کرنے میں دقت نظر اور دور اندیشی سے متعلق خبردار کیا گیا۔ چنانچہ صحابہ کرام نے اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول ﷺ کے حکم کو بجالاتے ہوئے اخبار (احادیث) کو نقل کرنے اور قبول کرنے میں تحقیق سے کام لیا خاص طور پر جب ان کو نقل کرنے کی صداقت میں شک ہوتا اس بنیاد پر اسناد کے موضوع ہونے اور احادیث کو قبول یا رڈ کرنے میں اس کی اہمیت ظاہر ہوئی ہے۔

صحیح مسلم کے مقدمہ میں حضرت ابن سیرین سے منقول ہے فرماتے ہیں:

"لوگ سند کے بارے میں پوچھتے نہیں تھے جب فتنہ واقع ہوا (یعنی موضوع احادیث کا فتنہ) تو کہنے لگے ہمارے لئے اپنے رجال (راویوں) کے نام لیا کرو وہ اہل سنت کو دیکھتے تو ان سے احادیث لے لیتے اور اہل بدعت کو دیکھتے تو ان کی روایات نہ لیتے"۔(۲)

(۱)...... جامع الترمذی کتاب العلم ۲/۵۵۰ مطبوعہ مکتبہ رحمانیہ لاہور
(۲)...... مقدمہ صحیح مسلم باب ان الاسناد من الدین ۱/۱۱ قدیمی کتب خانہ کراچی

Marfat.com

اس بنیاد پر کہ سند کی معرفت کے بغیر کوئی حدیث قبول نہیں کی جا سکتی، "علم الجرح والتعدیل" ظہور پذیر ہوا۔ اور سندوں میں متصل اور منقطع کی معرفت نیز خفیہ علتوں کی معرفت ظاہر ہوئی اور بعض راویوں پر کلام (اعتراض) ظاہر ہوا لیکن وہ بہت کم تھا کیونکہ شروع شروع میں مجروح راوی کم تھے۔

پھر علماء نے اس میں وسعت پیدا کی حتی کہ حدیث سے متعلق بہت سے علوم میں بحث ظاہر ہوئی جو اس کے ضبط، حدیث لینے اور ادا کرنے کی کیفیت، ناسخ ومنسوخ کی معرفت اور حدیث غریب کی پہچان وغیرہ سے متعلق تھی لیکن علماء اسے زبانی طور پر نقل کرتے تھے۔

پھر حالات بدل گئے اور یہ علوم لکھے جانے لگے لیکن کتب میں متفرق مقام پر بکھرے ہوئے اور دوسرے علوم سے ملے ہوئے تھے۔ جیسے علم اصول، علم فقہ اور علم الحدیث اس کی مثال امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ کی کتاب الرسالہ اور کتاب الامّ ہے۔

اور آخر میں جب علوم پختہ ہو گئے اور اصطلاحات مقرر اور پکی ہو گئیں اور ہر فن دوسرے سے جدا ہو کر مستقل ہو گیا اور یہ چوتھی صدی ہجری کی بات ہے تو علماء نے علم المصطلح کو الگ مستقل کتاب میں کر دیا اور سب سے پہلے جس نے اس کے لئے الگ کتاب تصنیف کی وہ قاضی ابو محمد الحسن بن عبدالرحمٰن بن خلاد الرامھر مُزی ہیں۔ جو ۳۶۰ھ میں فوت ہوئے انہوں نے اس فن کو اپنی کتاب "المحدث الفاصل بین الراوی والواعی" میں الگ ذکر کیا، عنقریب میں اس وقت سے لے کر جب اس علم کے لئے الگ تصنیف ہوئی اب تک کی "علم المصطلح" سے مشہور ترین تصنیفات کا ذکر کروں گا۔

# علم مصطلح میں مشہور ترین تصنیفات

ا......المحدث الفاصل بین الراوی والواعی۔

یہ کتاب قاضی ابو محمد الحسن بن عبدالرحمٰن بن خلاد الرامہر مزی متوفّٰی ۳۶۰ھ کی تصنیف ہے لیکن اس کتاب میں مصطلح کی تمام ابحاث کا احاطہ نہیں کیا گیا۔ جو شخص کسی فن یا علم میں پہلی کتاب لکھتا ہے عام طور پر اس کا یہی حال ہوتا ہے۔

۲......معرفۃ علوم الحدیث۔

ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری متوفّٰی ۴۰۵ھ کی تصنیف ہے لیکن اس میں ابحاث کو مہذب نہیں بنایا اور فنی مناسب ترتیب کے مطابق ترتیب نہیں دی۔

۳......المستخرج علی معرفۃ علوم الحدیث۔

ابونعیم احمد بن عبداللہ اصبہانی متوفّٰی ۴۳۰ھ کی کتاب ہے انہوں نے اس میں امام حاکم پر استدراک کیا یعنی اس فن کے جو قواعد امام حاکم کی کتاب معرفۃ علوم الحدیث سے رہ گئے تھے ان کو جمع کیا لیکن کچھ چیزیں چھوڑ دیں تاکہ آنے والوں کے لئے بھی استدراک ممکن ہو۔

۴......الکفایہ فی علم الروایۃ۔

ابوبکر احمد بن علی بن ثابت المعروف خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ کی قلمی کاوش ہے یہ کتاب اس فن کے مسائل اور قواعد روایت کے بیان سے بھرپور ہے اور اس علم کے بڑے مصادر میں شمار ہوتی ہے۔

۵......الجامع لاخلاق الراوی وآداب السامع۔

Marfat.com

یہ کتاب بھی خطیب بغدادی کی تصنیف ہے اور اس کتاب میں آداب روایت سے بحث کی گئی ہے جیسے اس کے نام سے واضح ہے۔اور یہ اس باب میں یکتا ہے۔ اس موضوع کی ابحاث اور مشتملات میں مضبوط اور پختہ ہے خطیب بغدادی نے علوم حدیث کے ہر فن پر الگ الگ کتاب لکھی ہے اور جیسا کہ امام حافظ ابوبکر بن نقطہ نے کہا واقعی آپ اسی طرح تھے انہوں نے کہا:

جو شخص بھی انصاف پسند ہے اسے اس بات کا علم ہے کہ خطیب بغدادی کے بعد تمام محدثین ان کی کتب کے محتاج ہیں۔

۶......الالماع الی معرفۃ اصول الراویہ وتقیید السماع۔

قاضی عیاض بن موسیٰ الیحصبی متوفّٰی ۵۴۴ھ کی تصنیف ہے اس کتاب میں مصطلح کی مکمل ابحاث نہیں ہیں بلکہ یہ صرف تحمل حدیث (حدیث لینے) اور اس کی ادائیگی کے طریقے اس کے فروعات کے ساتھ خاص ہے لیکن یہ کتاب نظم ونسق اور ترتیب کے لحاظ سے اس باب میں عمدہ کتاب ہے۔

۷......مالایسع المحدث جہلہ

اس کتاب کے مصنف عمر بن عبدالمجید المیانجی متوفّٰی ۵۸۰ھ ہیں یہ ایک مختصر جزء ہے اس میں کوئی زیادہ فائدہ نہیں۔

۸......علوم الحدیث۔

ابوعمرو عثمان بن عبدالرحمٰن شہرزوری المعروف ابن صلاح متوفی ۶۴۴ھ کی کتاب ہے۔

ان کی یہ کتاب لوگوں میں مقدمہ ابن صلاح کے نام سے مشہور ہے۔اور مصطلح میں

Marfat.com

یہ عمدہ ترین کتاب ہے اس کے مؤلف نے اس میں خطیب بغدادی کی کتاب اور دیگر کتب فن جن کا پہلے ذکر ہوا میں بکھرے ہوئے مواد کو جمع کیا تو یہ کتاب فوائد سے بھر پور ہوگئی لیکن انہوں نے اسے مناسب وضع پر ترتیب نہیں دیا کیونکہ انہوں نے اس کو تھوڑا تھوڑا کر کے املاء کرایا اس کے باوجود یہ بعد میں آنے والے علماء کے لئے ایک ستون (سہارا) ہے اس کو کہیں مختصر کیا گیا کہیں نظم کی شکل دی گئی کہیں اس کا معارضہ (ٹکراؤ) کیا گیا اور کسی نے اس کی تائید میں لکھا۔

۹......التقریب والتیسیر لمعرفة سنن البشیر النذیر۔

محی الدین یحیی بن شرف النووی متوفی ۶۷۶ھ کی تصنیف ہے اور آپ کی یہ کتاب ابن صلاح کی کتاب "علوم الحدیث" کا اختصار ہے یہ عمدہ کتاب ہے لیکن بعض مقامات پر عبارت مشکل ہے۔

۱۰......تدریب الراوی فی شرح تقریب النواوی۔

حضرت امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابی بکر سیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ کی تصنیف ہے اور یہ تقریب النواوی کی شرح ہے۔جس طرح اس کے نام سے واضح ہے اس میں مؤلف علیہ الرحمۃ نے بہت زیادہ فوائد جمع کئے ہیں۔

۱۱......نظم الدُرَر فی علم الاثر۔

اس کتاب کے مصنف زین الدین عبدالرحیم بن حسین عراقی متوفّٰی ۸۰۶ھ ہیں اور یہ کتاب "الفیۃ العراقی" کے نام سے مشہور ہے انہوں نے اس میں ابن صلاح کی علوم الحدیث کو نظم کی شکل میں لکھا ہے اور اس پر اضافہ بھی کیا ہے۔یہ عمدہ اور بہت مفید کتاب ہے اس کی متعدد شروح ہیں جن میں سے دو شرح خود مصنف کی ہیں۔

Marfat.com

۱۲......فتح المغیث فی شرح الفیۃ الحدیث۔

یہ کتاب محمد بن عبدالرحمٰن سخاوی متوفّٰی ۹۰۲ھ کی تصنیف ہے اور یہ "الفیۃ العراقی" کی شرح ہے اور الفیہ کی دیگر شروح سے یہ زیادہ جامع اور عمدہ ہے۔

۱۳......نخبۃ الفکر فی مصطلح الاثر۔

یہ کتاب حافظ ابن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ کی تصنیف ہے یہ ایک نہایت مختصر جزء ہے لیکن ترتیب کے اعتبار سے تمام مختصرات سے زیادہ نفع بخش ہے۔

اس کی ترتیب وتقسیم میں مؤلف نے ایسی پہل کی ہے کہ کسی شخص نے آپ سے سبقت نہیں کی۔

مؤلف نے خود اس کی شرح نزہۃ النظر کے نام سے لکھی ہے۔ جس طرح دیگر حضرات نے اس کی شرح لکھی ہیں۔

۱۴......المنظومۃ البیقونیہ۔

عمر بن محمد بیقونی متوفّٰی ۱۰۸۰ھ کی شرح ہے اور مختصر منظومات میں سے ہے کیونکہ اس کے اشعار چونتیس سے زیادہ نہیں یہ ان مختصرات میں معتبر ہے جو نفع میں مشہور ہیں اور اس کی متعدد شروح ہیں۔

۱۵......قواعد التحدیث۔

محمد جمال الدین قاسمی متوفّٰی ۱۳۳۲ھ کی تصنیف ہے اور یہ کتاب بہت مفید ہے۔

یہاں دیگر بے شمار تصنیفات ہیں جن کا ذکر طویل ہے میں نے ان میں سے مشہور کتب کا ذکر کیا ہے۔

اللہ تعالیٰ ہماری طرف سے اور تمام مسلمانوں کی طرف سے ان سب حضرات

Marfat.com

کوجزائے خیرعطافرمائے۔آمین

اوراللہ تعالیٰ اس کتاب "تیسیر مصطلحات الحدیث" کے مصنف ڈاکٹرمحمود طحان

کوبھی جزائے خیرمرحمت فرمائے۔آمین

مترجم ......محمد صدیق هزاری

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

# بنیادی تعریفات

## علم مصطلح:

ان قواعد واصول کا علم جن کے ذریعے سند اور متن کے احوال بحیثیت قبول اور ردّ کے، پہچانے جاتے ہیں، علم مصطلح (یا اصطلاحاتِ حدیث) کہلاتا ہے۔

## موضوع:

اس علم کا موضوع قبول اور ردّ کے اعتبار سے سند اور متن ہے۔

## فائدہ:

صحیح اور ضعیف احادیث کے درمیان امتیاز کرنا ہے۔

## حدیث:

لغت میں جدید کو حدیث کہتے ہیں اس کی جمع احادیث خلاف قیاس آتی ہے۔
اصطلاحاً حدیث اس قول، فعل، تقریر یا صفت کو کہتے ہیں جو نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف منسوب ہے۔

## خبر:

لغت میں النباء (خبر دینا) اور اس کی جمع اخبار ہے اصطلاحی معنی میں تین قول ہیں۔

ا......خبر، حدیث کے مترادف ہے یعنی دونوں کا اصطلاحی معنی ایک ہی ہے۔

Marfat.com

۲......حدیث کا غیر ہے لہذا حدیث وہ ہے جو رسول اکرم ﷺ سے منقول ہو اور خبر وہ ہے جو آپ کے غیر سے نقل کی گئی ہو۔

۳......خبر، حدیث سے عام ہے یعنی حدیث وہ ہے جو رسول اکرم ﷺ سے منقول ہو اور خبر وہ ہے جو آپ سے یا آپ کے غیر سے منقول ہو دونوں پر خبر کا اطلاق ہوتا ہے۔

## اثر:

لغت میں کسی چیز سے جو باقی رہ جائے وہ اثر ہے۔ اصطلاحی تعریف میں دو قول ہیں۔

۱......یہ حدیث کے مترادف ہے یعنی اصطلاحا دونوں کا ایک ہی معنی ہے۔

۲......حدیث کا غیر ہے یعنی اثر وہ اقوال وافعال ہیں جن کی اضافت صحابہ کرام اور تابعین کی طرف ہو۔

## اسناد:

اسناد کے دو معنی ہیں۔

۱......حدیث کو سند کے ساتھ اس کے قائل کی طرف منسوب کرنا۔

۲......راویوں کا وہ سلسلہ جو متن تک پہنچاتا ہے اس اعتبار سے یہ سند کے مترادف ہے۔

## سند:

لغوی معنی......جس پر اعتماد کیا جائے یعنی سہارا۔ اور سند کو سند اس لئے کہتے ہیں

Marfat.com

کہ وہ حدیث کا سہارا بنتی ہے۔

اصطلاحی تعریف......راویوں کا وہ سلسلہ جو متن تک پہنچائے۔

## متن:

لغوی معنی ...... زمین کا سخت اور بلند حصہ۔

اصطلاحی تعریف......وہ کلام جس تک سند پہنچتی ہے۔

## مسنَد:

(نون پر فتح ہے)"اسند الشی الیہ" سے یہ مفعول کا صیغہ ہے یعنی جس کی طرف کسی چیز کو منسوب کیا جائے۔

اصطلاحا......تین معانی ہیں۔

۱......ہر وہ کتاب جس میں ہر صحابی سے مروی روایات الگ الگ جمع کی گئی ہوں۔

۲......وہ حدیث مرفوع جس کی سند متصل ہو۔

۳......اس سے سند مراد ہو اس صورت میں یہ مصدر میمی ہے۔

## مُسنِد:

(نون کے کسرہ کے ساتھ)......وہ شخص جو اپنی سند کے ساتھ حدیث روایت کرتا ہے چاہے اس کے پاس اس کا علم ہو یا وہ محض راوی ہو۔

## محدِّث:

وہ شخص جو علم حدیث میں روایتاً یا درایتاً مشغول ہوتا ہے اور وہ بے شمار احادیث

Marfat.com

اوران کے راویوں کے احوال پر مطلع ہو۔(۱)

**حافظ:**

اس میں دوقول ہیں۔

۱......اکثر محدثین کے نزدیک یہ محدث کا ہم معنی ہے۔

۲......بعض حضرات نے کہا کہ اس کا درجہ محدث سے بلند ہوتا ہے اس طرح کہ راویوں کے ہر طبقہ میں اس کی معرفت،عدم معرفت سے زیادہ ہوتی ہے۔

**حاکم:**

بعض علماء کی رائے کے مطابق حاکم اسے کہتے ہیں جو تمام احادیث کا عالم ہو حتی کہ اس سے کچھ احادیث ہی رہ جائیں۔

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

(۱)......روایت کا معنی بیان کرنا اور درایت کا معنی سمجھنا ہے ۱۲ ہزاری

Marfat.com

## پہلا باب

# خبر کا بیان

| | |
|---|---|
| پہلی فصل | ہم تک پہنچنے کے اعتبار سے خبر کی تقسیم۔ |
| دوسری فصل | مقبول خبر |
| تیسری فصل | مردود خبر |
| چوتھی فصل | مقبول اور مردود کے درمیان مشترک خبر۔ |

## پہلی فصل:

## ہم تک پہنچنے کے اعتبار سے تقسیم خبر

ہم تک پہنچنے کے اعتبار سے خبر کی دو قسمیں ہیں۔

۱......اگر ایسے متعدد طرق سے مروی ہو جن کی تعداد معین نہ ہو تو وہ خبر متواتر ہے۔

۲......اگر اس کے طرق کی تعداد معین ہو تو وہ اخبار احاد ہیں۔

نوٹ: ان دونوں قسموں کی مزید اقسام اور تفصیل ہے ان شاء اللہ ہم تفصیل سے بیان کریں گے۔

## پہلی بحث......(خبر متواتر)

تعریف......لغوی اعتبار سے یہ لفظ تواتر سے مشتق ہے یعنی تسلسل، کہا جاتا ہے ''تواتر المطر'' بارش مسلسل ہو رہی ہے۔

اصطلاحی تعریف......اصطلاحی طور پر متواتر وہ حدیث ہے جسے اتنی کثیر تعداد

روایت کرے جن کا جھوٹ پر متفق ہونا عام طور پر محال ہو۔

نوٹ: تعریف کی تشریح یہ ہے کہ وہ حدیث یا خبر جسے طبقات سند میں اتنے زیادہ راوی روایت کریں کہ ان راویوں کے اس حدیث کے اختلاف پر متفق ہونے کو عقل عادتاً محال قرار دے۔

## خبر متواتر کی شرائط:

تعریف کی تشریح سے یہ بات واضح ہوتی ہے کہ خبر میں تواتر چار شرائط کے ساتھ پایا جاتا ہے۔

## چار شرائط:

۱.....خبر متواتر کو کثیر تعداد روایت کرے۔ کم از کم کثیر تعداد کے بارے میں اختلاف ہے مختار بات یہ ہے کہ وہ دس ہوں۔(۱)

۲.....سند کے ہر طبقہ میں یہ کثرت پائی جائے۔

۳.....عادتاً ان لوگوں کا جھوٹ پر متفق ہونا محال ہو۔

۴.....ان لوگوں کی خبر کی بنیاد حس ہو (حواس بنیاد ہوں)

جس طرح ان کا یہ کہنا "سَمِعْنَا" (ہم نے سنا) "رَأَیْنَا" (ہم نے دیکھا) "لمسنا" (ہم نے چھوا) وغیرہ۔

(کیونکہ سننا، دیکھنا اور چھونا حواس کے ساتھ ہوتا ہے ۱۲ ہزاری)

اگر ان کی خبر کی بنیاد عقل ہو جیسے یہ کہنا کہ عالم حادث ہے اس صورت میں اس

---

(۱).....تدریب الراوی جلد۲ ص:۱۷۷

Marfat.com

کو خبر متواتر نہیں کہا جائے گا۔

## متواتر کا حکم:

خبر متواتر ضروری علم کا فائدہ دیتی ہے یعنی ایسا علم یقینی حاصل ہوتا ہے کہ اس کے ذریعے انسان قطعی تصدیق پر مجبور ہو جاتا ہے جس طرح انسان خود اس کا مشاہدہ کر رہا ہو تو وہ اس کی تصدیق میں کس طرح تردد کا شکار ہوگا، خبر متواتر بھی اسی طرح ہے اسی وجہ سے تمام خبر متواتر مقبول ہیں اور اس کے راویوں کے حالات سے بحث کی حاجت نہیں۔

## متواتر کی اقسام:

خبر متواتر کی دو قسمیں ہیں۔

ا......لفظی۔ ۲......معنوی۔

## متواتر لفظی:

جس کے الفاظ اور معنی تسلسل سے مروی ہوں جیسے یہ حدیث شریف:

من كذب علي متعمدا فليتبوأ مقعده من النار-(١)

ترجمہ: جو شخص جان بوجھ کر مجھ پر جھوٹ باندھے وہ اپنا ٹھکانہ جہنم میں بنائے۔

اس حدیث کو ستر سے زیادہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے روایت کیا ہے۔

## متواتر معنوی:

جس کا معنی تواتر سے منقول ہو، الفاظ میں تواتر نہ ہو جیسے دعا میں ہاتھوں کو اٹھانے

(۱)......جامع ترمذی مطبوعہ مکتبہ رحمانیہ لاہور ۵۵۱/۲

والی احادیث، نبی اکرم ﷺ سے ایک سو کے قریب احادیث مروی ہیں اوران میں سے ہر حدیث میں ہے کہ آپ نے دعا میں اپنے ہاتھوں کو اٹھایا لیکن یہ مختلف واقعات میں ہیں اور ہر واقعہ میں تواتر نہیں اوران کے درمیان قدر مشترک دعا کے وقت ہاتھ اٹھانا ہے۔

تمام طرق کے اعتبار سے اس میں تواتر ہے۔(۱)

## خبر متواتر کا وجود:

احادیث متواترہ ایک ضروری حد تک موجود ہیں۔ان میں موزوں پر مسح والی حدیث، نماز میں رفع یدین والی حدیث، دوسروں تک احادیث پہنچانے والے کے لئے تروتازگی کی دعا والی حدیث اوراس کے علاوہ بے شمار احادیث ہیں۔لیکن جب ہم احاد احادیث کو دیکھتے ہیں تو ان کے مقابلے میں متواتر احادیث بہت کم ہیں۔

## متواتر احادیث سے متعلق چند مشہور تصانیف:

علماء کرام نے احادیث متواترہ کو جمع کرنے اوران کے لئے تصنیف کا اہتمام کیا ہے تاکہ طالب علم کے لئے ان احادیث کی طرف رجوع آسان ہوجائے ان میں سے چند تصانیف درج ذیل ہیں۔

۱۔امام سیوطی رحمہ اللہ کی کتاب الازھار المتناثرہ فی الاخبار المتواترۃ اس کی ترتیب ابواب کے طور پر ہے۔

۲۔امام سیوطی رحمہ اللہ ہی کی تصنیف "قطف الازھار" یہ پہلی کتاب کی تلخیص ہے۔

---

(۱)......تدریب الراوی ۲/۱۸۰

Marfat.com

۳......محمد بن جعفر کتانی کی تصنیف "نظم المتناثر من الحدیث المتواتر -

## دوسری بحث......(خبر احاد)

تعریف......لغت میں "احاد" احد، کی جمع ہے اور اس کا معنی ہے واحد اور خبر واحد وہ (حدیث) ہے جسے ایک شخص روایت کرے۔

اصطلاحًا......وہ خبر یا حدیث جس میں خبر متواتر کی شرائط جمع نہ ہوں۔(۱)

## حکم:

خبر واحد علم نظری کا فائدہ دیتی ہے یعنی ایسا علم جو غور و فکر اور استدلال پر موقوف ہو۔

## متعدد طرق کے اعتبار سے خبر احاد کی اقسام:

اپنے طرق کی طرف نسبت کے اعتبار سے خبر احاد کی تین قسمیں ہیں۔

۱......مشہور۔۲......عزیز۔۳......غریب

نوٹ: ان تینوں کے بارے میں عنقریب مستقل بحث ہوگی۔

## خبر مشہور:

تعریف......لغوی اعتبار سے یہ اسم مفعول ہے اور یہ "شَهَرْتُ الْأَمْرَ" سے بنا ہے۔ جب تم کسی بات کا اعلان کرو یا اسے ظاہر کرو (تو کہا جاتا ہے "شھرت الامر" میں نے بات کو مشہور کر دیا۔)

اصطلاحًا......جس حدیث کو ہر طبقہ سند میں تین یا اس سے زیادہ راوی روایت

(۱)......نزھۃ النظر ص: ۲۶

Marfat.com

کریں جب تک وہ تواتر کی حد کو نہ پہنچے۔

## مثال:

حدیث شریف: انّ اللہ لا یقبض العلم انتزاعا ینتزعہ الخ(۱)

ترجمہ: اللہ تعالیٰ علم کو سینوں سے نکالنے کے ذریعے نہیں لے جائے گا۔

## خبر مستفیض:

لغوی اعتبار سے یہ "استفاض" سے اسم فاعل ہے اور یہ فاض الماء (پانی انڈیلا) سے مشتق ہے اس کے پھیل جانے کی وجہ سے اسے خبر مستفیض کہتے ہیں۔

اصطلاحا...... خبر مستفیض کی اصطلاحی تعریف میں تین قول ہیں۔

۱...... یہ خبر مشہور کے مترادف ہے۔

۲...... خبر مشہور سے خاص ہے کیونکہ خبر مستفیض میں شرط ہے کہ اس کی سند کی دونوں طرفیں برابر ہوں اور خبر مشہور میں یہ شرط نہیں ہے۔

۳...... خبر مستفیض، خبر مشہور سے عام ہے یعنی دوسرے قول کا عکس ہے۔

## مشہور...... غیر اصطلاحی

اس سے مراد وہ حدیث ہے جو لوگوں کی زبانوں پر مشہور ہو، اور اس میں شرائط کا اعتبار نہ ہو اس کی چند صورتیں ہیں۔

۱...... جس کی ایک سند ہو۔

۲...... جس کی ایک سے زائد اسناد ہوں۔

(۱)...... جامع ترمذی مطبوعہ مکتبہ رحمانیہ لاہور ۲/۵۵

Marfat.com

۳......جس کی سند بالکل نہ پائی جائے۔

## مشہور غیر اصطلاحی کی اقسام:

اس کی کئی اقسام ہیں جن میں مشہور یہ ہیں۔

۱......صرف علماء حدیث کے ہاں مشہور ہو۔

مثال......حضرت انس رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے کہ:

**قنت رسول اللّٰہ ﷺ شهرا بعد الركوع يدعو على اهل وذكوان۔(۱)**

ترجمہ: رسول اکرم ﷺ نے قبیلہ اہل اور ذکون کے خلاف دعا کرتے ہوئے ایک مہینہ رکوع کے بعد قنوت پڑھی۔

۲......محدثین، علماء اور عوام میں مشہور ہو۔

مثال......**المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده۔(۲)**

ترجمہ: (کامل) مسلمان وہ ہے جس کی زبان اور ہاتھ سے مسلمان محفوظ رہیں۔

۳......فقہاء کے درمیان مشہور ہو۔

مثال......**ابغض الحلال الى الله عزوجل الطلاق۔(۳)**

ترجمہ: اللہ تعالیٰ کے ہاں سب سے ناپسندیدہ کام طلاق ہے۔

۴......اصولیوں کے ہاں معروف ہو۔

---

(۱)......صحیح بخاری باب القنوت قبل الرکوع وبعدہ ۱/۱۳۶

(۲)......مشکوٰۃ المصابیح کتاب الایمان مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ص:۱۵

(۳)......سنن ابی داؤد کتاب الطلاق باب فی کراہیۃ الطلاق ۱/۳۱۴

Marfat.com

مثال.....رفع من امتی الخطاء والنسیان وما استکرہ ھو اعلیہ ۔(۱)

ترجمہ: میری امت سے خطاء، بھول اور جس کام پر اسے مجبور کیا گیا، کو معاف کیا گیا۔

اس حدیث کو ابن حبان اور حاکم نے صحیح قرار دیا۔

۵.....نحویوں کے درمیان مشہور ہو۔

مثال.....نعم العبد صہیب لولم یخف اللہ لم یعصہ۔(۲)

اس حدیث کی کوئی اصل نہیں۔

۶.....عام لوگوں کے درمیان مشہور ہو۔

مثال.....العجلۃ من الشیطان ۔(۳)

ترجمہ: جلدی کرنا شیطانی کام ہے۔

امام ترمذی نے اُسے روایت کیا اور حسن قرار دیا۔

## حدیث مشہور کا حکم:

حدیث مشہور اصطلاحی ہو یا غیر اصطلاحی اس کو صحیح یا غیر صحیح نہیں کہا جاتا بلکہ ان میں سے کچھ صحیح ہیں کچھ حسن اور کچھ ضعیف بلکہ موضوع بھی ہیں ۔لیکن اگر مشہور اصطلاحی صحیح ہو تو اس کی امتیازی شان ہے جو اسے عزیز اور غریب پر ترجیح دیتی ہے۔

## خبر مشہور کے بارے میں مشہور تصانیف:

ان تصانیف سے مراد لوگوں کے درمیان مشہور احادیث سے متعلق تصانیف ہیں

(۱).....کنز العمال رقم الحدیث ۱۰۳۰۷ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۴/۲۳۳

(۲) اس کے الفاظ ہی بتاتے ہیں کہ یہ بے اصل ہے اس لئے اس حدیث کے ترجمہ کی ضرورت بھی نہیں ۱۲ ہزاروی

(۳).....مشکوۃ المصابیح باب الحذر والتانی فی الامور ص:۴۲۹

اصطلاحا مشہور احادیث مراد نہیں۔ چند تصانیف یہ ہیں۔

ا......المقاصد الحسنة فیما اشتهر علی الالسنة۔ یہ امام سخاوی رحمہ اللہ کی تصنیف ہے۔

۲......کشف الخفاء ومزیل الالباس فیما اشتهر من الحدیث علی السنة الناس۔ اس کے مصنف العجلونی ہیں۔

۳......تمییز الطیب من الخبیث فیما یدور علی السنة الناس من الحدیث۔ یہ کتاب ابن الدیبع الشیبانی کی ہے۔

## خبرِ عزیز:

تعریف......لغوی اعتبار سے یہ صفت مشبہ ہے جو عَزَّ یَعِزُّ سے بنا ہے (مضارع مکسور العین ہے) کوئی چیز کم یا نایاب ہوئی۔ یا عَزَّ یَعَزُّ (مضارع مفتوح العین) سے ہے جس کا معنی ہے مضبوط اور سخت ہوا۔

اس حدیث کو عزیز اس لئے کہتے ہیں کہ اس کا وجود کم اور نادر ہوتا ہے یا اس لئے کہ دوسرے طرق سے مروی ہونے کی وجہ سے یہ قوی ہو جاتی ہے۔

اصطلاحا......عزیز وہ حدیث ہے جس کے راوی تمام طبقاتِ سند میں دو سے کم نہ ہوں۔

## تعریف کی تشریح:

یعنی سند کے کسی بھی طبقہ میں دو سے کم راوی نہ ہوں اگر سند کے بعض طبقات میں تین یا زیادہ راوی ہوں تو کوئی حرج نہیں لیکن شرط یہ ہے کہ کوئی طبقہ ایسا باقی رہے

چاہے وہ ایک ہی ہو جس میں دو راوی ہوں کیونکہ سند کے طبقات میں سے سب سے کم طبقہ کا اعتبار ہوتا ہے جیسا کہ حافظ ابن حجر عسقلانی رحمہ اللہ نے فرمایا یہ تعریف ہی راجح ہے اور بعض علماء کرام فرماتے ہیں:

عزیز وہ حدیث ہے جو دو یا تین راویوں سے مروی ہو انہوں نے بعض صورتوں میں اسے مشہور حدیث سے جدا نہیں کیا۔

## حدیث عزیز کی مثال:

شیخین (امام بخاری اور امام مسلم رحمہما اللہ) نے حضرت انس رضی اللہ عنہ کی حدیث سے اور امام بخاری رحمہ اللہ نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کی حدیث سے بھی روایت کیا کہ رسول اکرم ﷺ نے فرمایا:

**لا یؤمن احدکم حتی اکون احب الیہ من والدہ وولدہ والناس اجمعین۔(۱)**

ترجمہ: تم میں سے کوئی شخص اس وقت تک مؤمن نہیں ہو سکتا جب تک وہ اپنے والد، اپنی اولاد اور سب لوگوں سے بڑھ کر مجھ سے محبت نہ کرے۔

اس حدیث کو حضرت انس رضی اللہ عنہ سے حضرت قتادہ اور حضرت عبد العزیز بن صہیب رحمہما اللہ نے روایت کیا جبکہ حضرت قتادہ سے حضرت شعبہ اور حضرت سعید نے روایت کیا اور حضرت عبد العزیز سے اسماعیل بن علیہ اور عبد الوارث نے روایت کیا اور ان سب سے ایک جماعت نے روایت کیا۔ (رحمہم اللہ)

حدیث عزیز کے سلسلے میں علماء کرام کی کوئی خاص تصانیف نہیں ہیں اس کی ظاہر

(۱)...... بخاری شریف کتاب الایمان ۱/۷ مسلم شریف کتاب الایمان ۱/۴۹

Marfat.com

وجہ یہ ہے کہ یہ احادیث قلیل ہیں اور ان تصانیف سے کوئی فائدہ نہیں۔

## حدیث غریب:

تعریف......لغوی معنی: یہ صفت مشبہ (کا صیغہ) ہے جس کا معنی ہے تنہا یا اپنے اقارب سے دُور۔

اصطلاحی معنی......وہ حدیث جس کی روایت میں صرف ایک راوی ہو۔

## تعریف کی وضاحت:

حدیث غریب وہ حدیث ہے جس کی روایت میں ایک شخص مستقل ہو یا تو سند کے تمام طبقات میں یا سند کے بعض طبقات میں اگرچہ صرف ایک طبقہ میں ہو اور باقی طبقات میں ایک سے زیادہ راویوں میں کوئی حرج نہیں کیونکہ اعتبار سب سے کم کا ہے۔

## دوسرا نام:

بہت سے علماء، حدیث غریب پر ایک اور نام یعنی "الفرد" کا اطلاق کرتے ہیں کیونکہ دونوں (غریب اور فرد) ہم معنی ہیں۔ جب کہ بعض علماء کے نزدیک یہ ایک دوسرے کا غیر ہیں۔

اس لئے دونوں کو مستقل نوع قرار دیا گیا لیکن حافظ ابن حجر عسقلانی رحمہ اللہ دونوں کو لغوی اور اصطلاحی معنی کے اعتبار سے مترادف قرار دیتے ہیں۔

البتہ انہوں نے فرمایا کہ اہل اصطلاح نے کثرت استعمال اور قلت استعمال کے اعتبار سے دونوں کو ایک دوسرے کا غیر قرار دیا ہے وہ "فرد کا زیادہ اطلاق "فرد مطلق"

پر کرتے ہیں اور "غریب" کا زیادہ اطلاق فرد نسبی پر کرتے ہیں۔(فرد مطلق اور فرد نسبی کا ذکر آگے آرہا ہے)(۱)

## اقسام:

مقام غرابت (مقام تفرد) کے اعتبار سے حدیث غریب دو قسموں میں تقسیم ہوتی ہے۔(۱)غریب مطلق۔(۲)غریب نسبی۔

## غریب مطلق یا فرد مطلق:

غریب مطلق وہ حدیث ہے جس کی سند کے آغاز میں غرابت ہو یعنی جہاں سے سند کا آغاز ہوتا ہو وہاں ایک راوی ہو۔

نوٹ: اس سے مراد متن حدیث کو بلاواسطہ روایت کرنے والا راوی ہے مثلاً رسول اکرم ﷺ کے قول وفعل کو نقل کرنے والا صحابی رضی اللہ عنہ ۱۲ ہزاروی۔

## مثال:

حدیث......إنما الاعمال بالنیات۔(۲)

ترجمہ:اعمال (کے ثواب) کا دارومدار نیتوں پر ہے۔

اس حدیث میں حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ متفرد ہیں۔اور بعض اوقات یہ تفرد سند کے آخر تک جاری رہتا ہے اور بعض اوقات اس متفرد سے متعدد راوی روایت کرتے ہیں۔

---

(۱)......نزہۃ النظر ص:۱۸

(۲)......صحیح بخاری باب ماجاء ان الاعمال بالنیات ۱۳/۱

Marfat.com

## غریب نسبی یا فرد نسبی:

تعریف......جس حدیث کی سند کے درمیان غرابت ہو یعنی آغاز سند میں ایک سے زیادہ راوی روایت کریں پھر ان سے صرف ایک راوی روایت کرے۔

## مثال:

حضرت امام مالک حضرت امام زھری رحمہما اللہ سے اور وہ حضرت انس رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ:

نبی اکرم ﷺ (فتح مکہ کے موقع پر) مکہ مکرمہ میں داخل ہوئے تو آپ کے سر انور پر لوہے کی ٹوپی تھی۔(۱)

اس حدیث میں امام مالک حضرت زہری سے روایت کرنے والے متفرد راوی ہیں۔

## وجہ تسمیہ:

اس حدیث کو غریب نسبی کہنے کی وجہ یہ ہے کہ اس میں ایک معین شخص کی نسبت سے تفرد واقع ہوا ہے۔

## غریب نسبی کی اقسام:

غریب نسبی کے اعتبار سے غرابت یا تفرد کی کچھ اقسام ہیں کیونکہ ان میں غرابت مطلقہ نہیں بلکہ وہ غرابت کسی معین شخص کی نسبت سے ہوتی ہے اور یہ چند اقسام ہیں۔

۱......روایت حدیث میں ثقہ راوی متفرد ہو۔جیسے کہتے ہیں کہ اس حدیث کو

(۱)......صحیح بخاری باب المغفر قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۶/۲

Marfat.com

فلاں کے علاوہ کسی ثقہ نے روایت نہیں کیا۔

۲...... معین راوی سے معین راوی متفرد ہو جیسے محدثین کا قول ہے:

تفرد به فلان عن فلان ...... فلاں شخص سے فلاں شخص اس حدیث کی روایت میں متفرد ہے...... اگرچہ کسی دوسرے راوی سے متعدد طرق سے مروی ہے۔

۳...... کسی ایک شہر یا کسی ایک جہت کے راوی متفرد ہوں جیسے کہتے ہیں اس حدیث میں اہل مکہ یا اہل شام متفرد ہیں۔

۴...... کسی ایک شہر یا ایک جہت کے لوگوں سے کسی ایک شہر یا ایک جہت کے لوگ روایت کریں۔ جیسے محدثین کہتے ہیں: تفرد به اهل البصرة عن اهل المدينة (اہل مدینہ سے روایت کرنے میں اہل بصرہ متفرد ہیں۔) یا تفرد به اهل الشام من اهل الحجاز۔ (اس حدیث کو اہل حجاز سے روایت کرنے میں اہل شام متفرد ہیں۔)

## حدیث غریب کی ایک اور تقسیم:

علماء کرام نے سند یا متن کی غرابت کے اعتبار سے حدیث غریب کو چند اقسام میں تقسیم کیا ہے۔

۱...... متن اور سند (دونوں) کے اعتبار سے غریب

یہ وہ حدیث ہے جس کے متن کو روایت کرنے میں ایک راوی متفرد (تنہا) ہو۔

۲...... سند کے اعتبار سے غریب ہو متن کے اعتبار سے نہ ہو۔ جیسے کسی حدیث کا متن صحابہ کرام کی ایک جماعت راویت کرے اور اسی حدیث کو کسی دوسرے صحابی

Marfat.com

سے ایک راوی روایت کرے۔اسی کے بارے میں امام ترمذی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

غریب من ھذا الوجہ،اس سند کے اعتبار سے غریب ہے۔

## حدیث غریب کے مقاماتِ وجود

حدیث غریب کے پائے جانے کے بہت سے مقامات ہیں۔

ا......مسند بزار۔ ۲......المعجم الاوسط للطبرانی۔

## معروف تصنیفات:

حدیث غریب سے متعلق چند مشہور تصانیف درج ذیل ہیں۔

ا......امام دار قطنی رحمہ اللہ ہی کی تصنیف "غرائب مالک"

۲......امام دار قطنی رحمہ اللہ ہی کی تصنیف "الافراد"

۳......حضرت امام ابوداؤد سجستانی رحمہ اللہ کی کتاب "السنن اللتی تفرد بکل سنة منها اهل بلدة"۔

## قوت وضعف کے اعتبار سے خبر احاد کی تقسیم:

خبر احاد یعنی مشہور، عزیز اور غریب قوت وضعف کے اعتبار سے دو قسموں میں تقسیم ہوتی ہے۔

### مقبول:

جس حدیث میں خبر دینے والے کے صدق کو ترجیح حاصل ہو۔

حکم......اس سے استدلال اور اس پر عمل واجب ہوتا ہے۔

Marfat.com

**مردود:**

جس حدیث میں خبر دینے کا صدق راجح نہ ہو۔

حکم......اس حدیث سے استدلال بھی نہیں ہوسکتا۔

اور اس پر عمل واجب بھی نہیں۔ البتہ مقبول و مردود کی اقسام اور تفصیل ہے جسے ہم دو مستقل فصلوں میں ذکر کریں گے۔ ان شاء اللہ تعالیٰ۔

# دوسری فصل......خبر مقبول

پہلی بحث ...... مقبول کی اقسام۔

دوسری بحث...... وہ مقبول جس پر عمل کیا جاتا ہے اور وہ مقبول جس پر عمل نہیں کیا جاتا (معمول بہ اور غیر معمول بہ)

## پہلی بحث......(اقسام مقبول)

مراتب میں فرق کی بنیاد پر مقبول کی دو قسمیں ہیں۔

۱......صحیح۔ ۲......حسن۔

پھر ان دونوں کی دو دو قسمیں ہیں۔

۱......لذاتہ۔ ۲......لغیرہ۔

لہذا مقبول کی اقسام چار ہوئیں۔

۱......صحیح لذاتہ۔ ۲......حسن لذاتہ۔ ۳......صحیح لغیرہ۔ ۴......حسن لغیرہ

Marfat.com

## حدیث صحیح:

تعریف......لغت میں، صحیح، سقیم کے مقابلے میں ہے اور حقیقت میں اس کا تعلق جسم سے ہے حدیث اور دیگر معانی میں اس کا استعمال مجازی ہے۔

اصطلاحاً......اصطلاح میں صحیح حدیث وہ ہے جسے عادل ضابط، اپنے جیسے راوی سے نقل کرے اور سند کے آخر تک اسی طرح ہو اور اس کی سند متصل ہو نیز اس میں کوئی شاذ بھی نہ ہو اور علت بھی نہ ہو۔

## تعریف کی وضاحت:

یہ تعریف چند امور پر مشتمل ہے اور ان امور کا پایا جانا واجب ہے حتی کہ حدیث صحیح ہو جائے اور یہ امور درج ذیل ہیں۔

### ا......اتصالِ سند

اس کا معنی یہ ہے کہ ہر راوی نے اپنے اوپر والے راوی سے خود اس حدیث کو لیا ہو سند کے اول سے آخر تک اسی طرح ہو۔

### ۲......راویوں کا عادل ہونا:

ہر راوی جو دوسرے سے روایت کرتا ہے وہ مسلمان، بالغ اور عاقل ہو نہ تو فاسق ہو نہ مروت سے خالی ہو۔

### ۳......راویوں کا ضبط:

ہر راوی میں ضبط مکمل طور پر ہو یا تو ضبط صدر ہو یا ضبط کتاب۔(۱)

(۱)......یعنی حفظ کے ذریعے محفوظ کرے یا تحریر کے ذریعے۔۱۲ ہزاروی

## ۴......عدمِ شذوذ:

حدیث شاذ نہ ہو اور شذوذ کا معنی یہ ہے کہ ثقہ راوی اپنے سے زیادہ ثقہ کی مخالفت کرے۔

## ۵......عدمِ علّت:

حدیث معلول نہ ہو اور علت ایک پوشیدہ سبب ہوتا ہے جس کی وجہ سے صحت حدیث میں خرابی پیدا ہوتی ہے جبکہ ظاہر میں حدیث اس سے محفوظ ہوتی ہے۔

## شرائط:

حدیث صحیح کی تعریف کی وضاحت سے واضح ہوا کہ حدیث کے صحیح ہونے کے لئے پانچ شرائط کا پایا جانا ضروری ہے۔ اور وہ شرائط یہ ہیں۔

۱......اتصال سند۔ ۲......راویوں کا عادل ہونا۔ ۳......راویوں کا ضبط۔ ۴......عدمِ علت۔ ۵......حدیث کا شاذ نہ ہونا۔

جب ان پانچ شرائط میں سے کوئی ایک شرط نہ پائی جائے تو اس وقت حدیث کو صحیح نہیں کہا جاتا۔

## مثال:

صحیح بخاری میں ہے:

حدثنا عبد الله بن یوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن محمد بن جبیر بن مطعم عن ابیه قال سمعت رسول الله ﷺ قرأ فی المغرب بالطور۔(۱)

(۱)......صحیح بخاری کتاب الاذان باب الجہر فی المغرب ۱۰۵/۱

امام بخاری اپنی سند کے ساتھ حضرت محمد بن جبیر بن مطعم سے اور وہ اپنے باپ (حضرت جبیر بن مطعم) رضی اللہ عنہم سے روایت کرتے ہیں وہ فرماتے ہیں: میں نے رسول اکرم ﷺ سے سنا آپ نے مغرب میں سورۂ طور کی قرأت فرمائی۔ تو یہ حدیث صحیح ہے۔

ا......اس کی سند متصل ہے اس لئے کہ اس کے ہر راوی نے اس حدیث کو اپنے شیخ سے سنا۔

نوٹ: البتہ حضرت مالک، ابن شہاب اور ابن جبیر کا عنعنہ اتصال پر محمول ہے کیونکہ یہ راوی مدلس نہیں ہیں۔(۲)

۲......اس حدیث کے تمام راوی عادل اور ضابط ہیں اور علماء جرح وتعدیل کے ہاں ان کے یہی اوصاف ہیں۔

ا......عبداللہ بن یوسف......ثقہ متقن ہیں۔

ب......مالک بن انس......امام حافظ ہیں۔

ج......ابن شہاب زہری......فقیہ حافظ ہیں ان کی جلالت واتقان پر اتفاق ہے۔

د......محمد بن جبیر...... ثقہ ہیں۔

حضرت جبیر بن مطعم......صحابی ہیں۔(رضی اللہ عنہم)

۳......یہ حدیث غیر شاذ ہے کیونکہ اس سے زیادہ قوی حدیث اس کے مقابلے میں نہیں ہے۔

---

(ا)......جب کوئی راوی اپنے شیخ سے لفظ عن کے ساتھ روایت کرے تو اسے معنعن کہا جاتا ہے۔ تفصیل آگے معنعن کے بیان میں آرہی ہے۔ مدلس اسے کہتے ہیں جو سند کے عیب کو چھپاتا ہے۔ تفصیل آگے آرہی ہے۔۱۲ہزاروی

۴......علل میں سے کوئی علت اس میں نہیں۔

## حدیث صحیح کا حکم:

صحیح حدیث پر عمل واجب ہے اس پر علمائے حدیث، قابل اعتماد اصولیوں اور فقہاء کا اجماع ہے اور یہ شرعی دلائل میں سے ایک دلیل ہے کسی مسلمان کیلئے اس پر عمل نہ کرنے کی گنجائش نہیں۔

## "هذا حديث صحيح" اور "هذا حديث غير صحيح" کا کیا مطلب ہے؟

محدثین کے قول "هذا حديث صحيح" سے مراد یہ ہے کہ اس میں پانچوں مذکورہ بالا شرائط پائی جاتی ہیں یہ مطلب نہیں کہ نفس الامر (حقیقت) میں اس کی صحت قطعی ہے کیونکہ ثقہ کے بارے میں خطاء اور نسیان ممکن ہے۔

اور ان کے قول "هذا حديث غير صحيح" سے مراد یہ ہے کہ اس حدیث میں مذکورہ بالا پانچوں یا ان میں سے بعض شرائط نہیں پائی جاتیں۔ یہ مطلب نہیں کہ نفس الامر میں یہ جھوٹ ہے کیونکہ جو شخص اکثر خطا کرتا ہے ممکن ہے وہ کوئی بات صحیح کہے۔

## کیا کسی سند کو قطعی طور پر مطلقاً اصح الاسانید کہا جا سکتا ہے؟

مختار بات یہ ہے کہ کسی سند کے بارے میں قطعی طور پر نہیں کہا جا سکتا کہ یہ مطلقاً اصح الاسانید (تمام اسناد سے زیادہ صحیح) ہے کیونکہ صحت کے مراتب میں فرق کی بنیاد شرائط صحت کا سند میں پایا جانا ہے۔

Marfat.com

اور تمام شرائط میں اعلیٰ درجات کا پایا جانا نادر ہے لہذا زیادہ مناسب یہ ہے کہ کسی سند کو سب سے زیادہ صحیح سند (اصح الاسانید) کہنے سے خاموشی اختیار کی جائے بعض ائمہ سے یہ قول منقول ہے کہ انہوں نے کسی سند کو اصح الاسانید کہا ہے تو ظاہر یہ ہے کہ ہر امام نے اس سند کو ترجیح دی جو اس کے نزدیک قوی ہے۔

ان اقوال میں سے چند درج ذیل ہیں جس میں اسانید کو اصح قرار دیا گیا۔

۱......حضرت زھری کی حضرت سالم سے اور ان کی اپنے والد (حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہم) سے روایت ......اس کو حضرت اسحٰق بن راھویہ نے حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ سے نقل کیا ہے۔

۲......حضرت ابن سیرین کی روایت جو انہوں نے حضرت عبیدہ سے اور انہوں نے حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے۔

یہ بات حضرت ابن المدینی اور الفلاس (رحمہما اللہ) نے بیان کی ہے۔

۳......حضرت اعمش کی حضرت ابراہیم سے ان کی حضرت علقمہ اور ان کی حضرت عبداللہ (بن مسعود) (رضی اللہ عنہم) سے روایت۔

اس بات کو حضرت ابن معین نے بیان کیا۔

۴......حضرت زھری کی حضرت علی بن حسین سے اور ان کی اپنے والد (حضرت امام حسین) سے اور ان کی حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت۔ یہ بات حضرت ابوبکر بن ابی شیبہ رحمہ اللہ نے بیان کی ہے۔

۵......حضرت مالک کی حضرت نافع سے ان کی حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت...... یہ بات حضرت امام بخاری رحمہ اللہ سے مروی ہے۔

Marfat.com

## صحیح مجرد کے سب سے پہلے مصنف کون ہیں؟

صحیح مجرد کے بارے میں سب سے پہلی تصنیف حضرت امام بخاری رحمہ اللہ کی ہے پھر امام مسلم رحمہ اللہ کی (یعنی صحیح بخاری و صحیح مسلم) اور قرآن مجید کے بعد یہ دونوں کتابیں تمام کتب حدیث سے اصح ہیں اور ان دونوں اماموں کی کتابوں کو قبولیت کے ساتھ لینے پر تمام امت کا اتفاق ہے۔

## دونوں میں سے کون سی کتاب اصح ہے؟

ان دونوں میں سے صحیح بخاری اصح ہے اور دونوں میں سے اس کے فوائد زیادہ ہیں کیونکہ امام بخاری رحمہ اللہ کی روایت کردہ احادیث میں اتصال بہت زیادہ ہے اور اس کے راوی زیادہ ثقہ ہیں۔ علاوہ ازیں اس میں فقہی استنباط اور پر حکمت نکات ہیں جو صحیح مسلم میں نہیں ہیں۔ یاد رہے کہ صحیح بخاری کا صحیح مسلم سے اصح ہونا مجموعی طور پر ہے ورنہ مسلم میں بعض ایسی احادیث ہیں جو صحیح بخاری کی بعض احادیث سے زیادہ قوی ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ صحیح مسلم اصح ہے لیکن پہلا قول ہی درست ہے۔

## کیا تمام صحیح احادیث صحیح بخاری و مسلم میں ہیں؟

امام بخاری اور امام مسلم نے اپنی صحیحین میں تمام صحیح احادیث کو جمع نہیں کیا اور نہ ہی اس کا التزام کیا ہے امام بخاری رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

"میں نے اپنی اس جامع کتاب میں صرف صحیح احادیث کو جمع کیا ہے اور کتاب کی طوالت کے خوف سے کئی صحیح احادیث کو چھوڑ دیا ہے۔"

اور حضرت امام مسلم رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

Marfat.com

''جو احادیث میرے نزدیک صحیح ہیں میں نے ان سب کو اس کتاب میں نہیں رکھا میں نے صرف متفق علیہ کو درج کیا ہے''۔

## کیا کچھ زیادہ یا کم صحیح احادیث تک ان دونوں کی رسائی نہیں ہوئی؟

۱......حافظ ابن اخرم کہتے ہیں کہ ان دونوں حضرات سے صحیح احادیث بہت کم چھوٹی ہیں لیکن اس بات کا انکار کیا گیا ہے۔

۲......صحیح بات یہ ہے کہ ان سے بہت سی احادیث رہ گئی ہیں حضرت امام بخاری رحمہ اللہ سے منقول ہے انہوں نے فرمایا:

"ما ترکت من الصحاح اکثر" میں نے جو صحیح احادیث چھوڑی ہیں وہ بہت زیادہ ہیں اور فرماتے ہیں: میں نے ایک لاکھ صحیح اور دو لاکھ غیر صحیح احادیث یاد کی ہیں۔

## صحیح بخاری و مسلم میں احادیث کی تعداد:

۱......صحیح بخاری میں تمام احادیث سات ہزار دو سو پچھتر (7,275) احادیث تکرار کے ساتھ ہیں اور مکرر احادیث کو حذف کرنے کے بعد چار ہزار رہ جاتی ہیں۔

۲......صحیح مسلم میں تکرار کے ساتھ بارہ ہزار (12000) احادیث ہیں اور تکرار کے حذف سے چار ہزار (4000) رہ جاتی ہیں۔

## امام بخاری اور امام مسلم کی چھوڑی ہوئی احادیث کہاں ہیں؟

ہم ان احادیث کو قابل اعتماد مشہور کتب میں پاتے ہیں جیسے صحیح ابن خزیمہ صحیح ابن حبان، مستدرک حاکم اور سنن اربعہ (سنن ترمذی، سنن نسائی، سنن ابی داؤد اور سنن ابن ماجہ) سنن دار قطنی اور سنن بیہقی وغیرہ۔

Marfat.com

اوران کتب میں احادیث کے پائے جانے پر اکتفاء نہ کیا جائے بلکہ ان کی صحت کا بیان ضروری ہے مگر جس کتاب میں صرف صحیح احادیث لانے کی شرط ہے یعنی صحیح ابن خزیمہ (اس کے لئے بیان کی ضرورت نہیں)

## مستدرک، صحیح ابن خزیمہ اور صحیح ابن حبان پر کلام:

مستدرک حاکم...... کتب احادیث میں یہ بہت بڑی کتاب ہے۔اس کے مؤلف (امام حاکم) نے اس میں وہ احادیث ذکر کی ہیں جو شیخین یا ان میں سے کسی ایک کی شرط پر صحیح ہیں۔اورانہوں نے اپنی کتابوں میں ان کو ذکر نہیں کیا۔

امام حاکم نے وہ احادیث بھی ذکر کی ہیں جواُن کے نزدیک صحیح ہیں اگرچہ ان دونوں میں سے کسی ایک کی شرائط پر نہ ہوں۔

انہوں نے بتایا کہ ان کی اسناد صحیح ہیں اور بعض ایسی احادیث بھی ذکر کی ہیں جو صحیح نہیں ہیں لیکن انہوں نے اس بات سے آگاہ کردیا انہوں نے احادیث کی تصحیح میں تن آسانی اختیار کی۔

لہذا مناسب یہ ہے کہ جستجو کی جائے اوران کی احادیث پر وہ حکم لگایا جائے جوان کے حال کے لائق ہے یہ کتاب ہمیشہ تحقیق اور توجہ کی حاجت مندرہے گی۔

## صحیح ابن حبان:

اس کتاب کی ترتیب جدید ہے ابواب اور مسانید کے طریقے پر نہیں ہے اسی لئے اس کا نام "التقاسیم والانواع" رکھا ہے اور ابن حبان کی اس کتاب سے احادیث سے پردہ اُٹھانا بہت مشکل ہے۔

بعض متاخرین نے اس کو ابواب کے طریقے پر مرتب کیا ہے اس کتاب کے مصنف نے بھی صحیح احادیث کی تلاش میں تساہل اختیار کیا لیکن ان کا تساہل (سستی) امام حاکم کے تساہل سے کم ہے۔

## صحیح ابن خزیمہ:

صحیح ابن حبان کے مقابلہ میں یہ کتاب بلند مرتبہ ہے کیونکہ اس میں بہت کوشش کی گئی ہے یہاں تک کہ مصنف نے سند پر معمولی کلام کی وجہ سے بھی اس کو صحیح قرار دینے سے توقف اختیار کیا۔

## صحیحین پر مستخرجات:

مستخرج کا موضوع......اس کا موضوع یہ ہے کہ مصنف کتب احادیث میں سے کسی کتاب کی احادیث کو اپنی سند کے ساتھ بیان کرے جو اس صاحب کتاب کی سند نہیں پس یہ اس (مصنف) کے ساتھ اس کے شیخ یا اس سے اوپر والے راوی کے ساتھ جمع ہو جائے۔

## صحیحین پر مشہور ترین مستخرجات:

ا......المستخرج لابی بکر الاسماعیلی علی البخاری۔

۲......المستخرج لابی عوانہ الاسفرائینی علی مسلم۔

۳......المستخرج لابی نعیم الاصبھانی علی کل منھما (یعنی بخاری ومسلم)

Marfat.com

## کیا مستخرجات کے مصنفین نے الفاظ میں صحیحین کی موافقت کا التزام کیا ہے؟

ان کتب کے مصنفین نے الفاظ میں ان دونوں اماموں کی موافقت کا التزام نہیں کیا کیونکہ ان حضرات کا خیال تھا کہ جو الفاظ ان تک ان کے شیوخ کے طریق سے پہنچے ہیں تو ان میں بہت کم فرق ہے۔

اسی طرح جو بعض قدیم مصنفین نے اپنی مستقل تصانیف میں نقل کیا ہے جیسے امام بیہقی، امام بغوی اور اس طرح کے دیگر محدثین جو لکھتے ہیں: "رواہ البخاری" یا "رواہ المسلم" تو بعض جگہ معنی اور الفاظ میں فرق ہوتا ہے تو ان کے قول "رواہ البخاری" یا "رواہ المسلم" تو انہوں نے اس کی اصل (یعنی معنی) کو روایت کیا ہے۔

## کیا ان کتب کی احادیث کو نقل کر کے شیخین کی طرف منسوب کیا جا سکتا ہے؟

مذکورہ بالا بحث کی بنیاد پر کسی کے لئے جائز نہیں کہ مستخرجات یا جن دیگر کتب کا ابھی ذکر ہوا ان سے حدیث نقل کر کے کہے "رواہ البخاری" یا "رواہ المسلم" البتہ دو شرطوں میں سے کسی ایک شرط کے ساتھ جائز ہے۔

ا...... اس حدیث کا بخاری و مسلم کی حدیث سے موازنہ کرے۔

۲...... یا صاحب مستخرج یا دوسرا مصنف کہے کہ امام بخاری و مسلم نے انہی الفاظ کے ساتھ نقل کیا ہے۔

## المستخرجات علی الصحیحین کے فوائد

مستخرجات علی الصحیحین کے بہت فوائد ہیں جو تقریباً دس ہیں حضرت امام جلال الدین سیوطی رحمہ اللہ نے اپنی تدریب میں ان کا ذکر کیا ہے چند اہم فوائد یہ

Marfat.com

ہیں۔(۱)

ا......اسناد کی بلندی

کیونکہ مستخرج کا مصنف اگر مثلاً امام بخاری رحمہ اللہ کے طریق سے روایت کرتا ہے تو یہ اس طریق کے مقابلے میں جس سے مستخرج میں روایت کیا گیا ہے زیادہ تنزل پر ہوگی۔

۲......صحیح کی قدر میں اضافہ:

کیونکہ بعض احادیث میں زائد الفاظ کا اور بیان تتمہ کا فائدہ حاصل ہوتا ہے۔

۳......کثرتِ طرق کی وجہ سے قوت کا حصول:

اور اس کا فائدہ یہ ہے کہ ٹکراؤ کی صورت میں اس کو ترجیح حاصل ہوتی ہے۔

شیخین کی روایات جن کو صحیح قرار دیا گیا وہ کون کون سی ہیں؟

یہ بات گزر چکی ہے کہ امام بخاری اور امام مسلم رحمہما اللہ نے اپنی صحیحین میں وہ احادیث شامل کی ہیں جو صحیح ہیں۔ اور امت نے ان کو قبول کیا ہے تو یہ احادیث جن کی صحت کا فیصلہ کیا گیا اور امت نے ان کو قبولیت کے ساتھ حاصل کیا وہ کون کونسی ہیں؟

تو اس کا جواب یہ ہے کہ جن احادیث کو انہوں نے متصل سند کے ساتھ روایت کیا ہے اور ان کو صحیح قرار دیا گیا ہے۔

ا......لیکن جن کی سند کے شروع سے ایک یا زیادہ راوی حذف ہوں گے تو اس کو معلق کہتے ہیں۔

(۱)......تدریب الراوی ۱۱۵،۱۱۶/۱

معلق احادیث صحیح بخاری میں بہت زیادہ ہیں لیکن وہ تراجم ابواب اور ان کے مقدمات میں ہیں ابواب کے اندر ان میں سے کوئی چیز نہیں پائی جاتی۔

لیکن صحیح مسلم میں صرف ایک حدیث معلق ہے جو تیمم کے باب میں ہے جسے دوسری جگہ متصل ذکر نہیں کیا ان احادیث کا حکم درج ذیل ہے۔

۱......ان میں سے جو یقینی صیغہ کے ساتھ ہیں جیسے: "قال، امر، ذکر" تو مضاف الیہ(۱) تک اس کا حکم صحیح کا حکم ہے۔

۲......اور جس میں صیغہ جزم (یقینی قطعی) نہ ہو جیسے یروی، یذکر، یحکی، رُوی، ذُکر" (مجہول کے صیغے) تو اس میں مضاف الیہ تک صحت کا حکم نہیں ہوگا۔

لیکن اس کے باوجود یہاں کوئی کمزور حدیث نہیں کیونکہ یہ احادیث ایسی کتاب میں داخل ہیں جس کا نام صحیح ہے۔

## مراتب صحیح:

یہ بات گزر چکی ہے کہ بعض علماء کرام نے وہ اسناد ذکر کی ہیں جو ان کے نزدیک اصح الاسانید ہیں اس بنیاد پر اور صحت کی باقی شرائط پائے جانے کی وجہ سے کہا جاتا ہے کہ صحیح کے کئی مراتب ہیں۔

۱......سب سے اعلیٰ مرتبہ اس صحیح حدیث کا ہے جو اصح الاسانید کے ساتھ مروی ہو جس طرح حضرت مالک، حضرت نافع سے اور وہ حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت کرتے ہیں۔

۲......اس سے کم مرتبہ حدیث صحیح وہ ہے جو ایسے راویوں سے مروی ہو جن

(۱) یعنی جس کی طرف حدیث کی نسبت کی گئی۔۱۲ ہزاروی

Marfat.com

کا مرتبہ اس پہلی سند کے راویوں سے کم ہو۔

جس طرح حضرت حماد بن سلمہ، حضرت ثابت سے اور وہ حضرت انس سے روایت کرتے ہیں۔ (رضی اللہ عنہم)

۳......اس سے کم مرتبہ اس صحیح حدیث کا ہے جو ایسے لوگوں سے مروی ہو جن پر ثقہ کے اوصاف میں سے ادنیٰ وصف صادق آتا ہو۔

جس طرح حضرت سہیل بن ابی صالح، اپنے والد سے اور وہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں۔

## حدیث صحیح کے سات مراتب:

اس تفصیل کے ساتھ صحیح احادیث کی سات مراتب میں تقسیم ملتی ہے۔

۱......جس حدیث پر امام بخاری اور امام مسلم متفق ہوں۔ (یہ اعلیٰ مرتبہ ہے)

۲......پھر وہ حدیث جسے صرف امام بخاری رحمہ اللہ نے نقل کیا۔

۳......پھر وہ حدیث جو صرف امام مسلم رحمہ اللہ نے ذکر کی۔

۴......پھر وہ حدیث جو دونوں کی شرائط پر ہے لیکن دونوں اسے اپنی کتابوں میں نہیں لائے۔

۵......پھر وہ حدیث جو امام بخاری رحمہ اللہ کی شرائط پر ہے لیکن انہوں نے اس کو ذکر نہیں کیا۔

۶......پھر وہ حدیث جو امام مسلم رحمہ اللہ کی شرائط پر ہے لیکن انہوں نے اسے ذکر نہیں کیا۔

۷......پھر وہ حدیث جو ان دونوں کے علاوہ ائمہ کے نزدیک صحیح ہو جیسے ابن

Marfat.com

خزیمہ اور ابن حبان (رحمہما اللہ) لیکن ان دونوں کی شرائط پر نہ ہو۔

## شیخین کی شرط:

ان دونوں ائمہ نے صحیح حدیث کی متفق علیہ شرائط کے علاوہ کسی شرط کی وضاحت نہیں کی جو شرط انہوں نے رکھی ہو اور نہ ہی اسے معین کیا ہے۔

لیکن محقق علماء نے تحقیق وجستجو کے بعد ان کے اسلوب کو دیکھتے ہوئے اپنے اپنے طور پر کہا کہ یہ ان دونوں کے نزدیک یا ان میں سے ایک کے نزدیک شرط ہے۔

اس سلسلے میں سب سے اچھی بات جو کہی گئی ہے وہ یہ ہے کہ شیخین یا ان میں سے کسی ایک کی شرط سے مراد یہ ہے کہ حدیث ان دونوں کتب کے راویوں یا ایک کے راویوں سے مروی ہو۔ اور اس کے ساتھ ساتھ اس کیفیت کا بھی التزام کیا گیا ہو جس کا التزام شیخین نے اپنے راویوں سے روایت کرتے ہوئے کیا ہے۔

## متفق علیہ کا مفہوم کیا ہے؟

جب علماء کرام کسی حدیث کو متفق علیہ کہتے ہیں تو اس سے شیخین کا اتفاق مراد ہوتا ہے یعنی شیخین اس کی صحت پر متفق ہیں امت کا اتفاق مراد نہیں۔

البتہ ابن صلاح نے فرمایا ہے:

"لیکن اس پر امت کا اتفاق لازم آتا ہے کیونکہ امت نے اس حدیث کو قبول کرنے پر اتفاق کیا ہے جس پر ان دونوں کا اتفاق ہے"۔

## کیا صحیح حدیث کا عزیز ہونا شرط ہے؟

درست بات یہ ہے کہ صحیح حدیث کا حدیث عزیز ہونا شرط نہیں مطلب یہ کہ اس

Marfat.com

کے لئے دو سندیں ہونا ضروری نہیں لیکن صحیحین اوران کے علاوہ کتب میں ایسی صحیح احادیث پائی جاتی ہیں جو غریب ہیں (عزیز نہیں)

بعض علماء جیسے ابوعلی جبائی معتزلی اور حاکم نے اس کا دعوی کیا ہے (یعنی صحیح حدیث کا عزیز ہونا ضروری ہے) لیکن ان حضرات کا یہ قول امت کے اتفاق کے خلاف ہے۔

## حدیث حَسَن:

تعریف......لغوی اعتبار سے یہ "اَلْحُسْن" سے صفت مشبہ ہے جس کا معنی جمال ہے۔(حسن وجمال والا)

اصطلاحاً...... حسن کی تعریف میں علماء کا اختلاف ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ یہ صحیح اور ضعیف کے درمیان ہے دوسری وجہ یہ ہے کہ بعض حضرات نے اس کی دو قسموں میں سے ایک کی تعریف کی ہے۔

عنقریب میں بعض تعریفات ذکر کر کے اس تعریف کو اختیار کروں گا جو دوسری تعریفات کے مقابلے زیادہ مناسب وموافق ہے۔

## خطابی کی تعریف:

خطابی کے نزدیک حسن وہ حدیث ہے جس کا مخرج معلوم ہو اور اس کے راوی مشہور ہوں اور اس پر اکثر حدیث کا دارومدار ہو اور اسے اکثر علماء نے قبول کیا اور عام فقہاء نے اس پر عمل کیا ہو۔

## امام ترمذی کی تعریف:

ہر وہ حدیث جسے روایت کیا جائے اور اس کی سند میں ایسا راوی نہ ہو جس پر

Marfat.com

جھوٹ کی تہمت ہو یہ حدیث شاذ بھی نہ ہو اور وہ اسی طریقے پر متعدد طرق سے مروی ہو (امام ترمذی فرماتے ہیں) یہ حدیث ہمارے نزدیک حدیث حسن ہے۔

## امام ابن حجر عسقلانی کی تعریف:

آپ فرماتے ہیں جب خبر احاد کو عادل، تام الضبط راوی نقل کرے اور سند متصل ہو، وہ حدیث معلل اور شاذ نہ ہو تو یہ صحیح لذاتہ ہے اور اگر ضبط میں کمی ہو تو حسن لذاتہ ہے۔(۱)

## مصنف کا تبصرہ:

میں (ڈاکٹر محمود طحان) کہتا ہوں:

گویا حضرت امام ابن حجر عسقلانی کے نزدیک حدیث حسن وہ صحیح حدیث ہے جس کے راوی میں ضبط کم ہو اور حسن کی تمام تعریف میں سے یہ تعریف سب سے بہتر ہے۔

جہاں تک امام خطابی (رحمہ اللہ) کی بیان کردہ تعریف کا تعلق ہے اس پر بہت زیادہ تنقید کی گئی ہے۔

اور امام ترمذی رحمہ اللہ کے نزدیک حسن کی ایک قسم یعنی حسن لغیرہ کی تعریف کی گئی ہے۔

اور اس کی تعریف میں اصل بات یہ ہے کہ حسن لذاتہ کی تعریف کی جائے کیونکہ حسن لغیرہ اصل میں حدیث ضعیف ہے وہ حسن کے درجہ تک اس وقت پہنچتی ہے جب متعدد طرق سے اس کے ضعف کو ختم کیا جائے۔

---

(۱)..... گویا حدیث صحیح لذاتہ کی ایک شرط راوی کا تام الضبط ہونا نہ پائی جائے باقی شرائط موجود ہوں تو یہ حسن لذاتہ ہے ۱۲ ابزاروی

Marfat.com

## مختار تعریف:

ممکن ہے کہ حسن کی تعریف، حضرت ابن حجر (رحمہ اللہ) کی بیان کردہ تعریف کے مطابق کی جائے یعنی

وہ حدیث جس کی سند متصل ہو اور اسے وہ عادل راوی نقل کرے جس کا ضبط (حافظہ) کمزور ہو اور وہ اپنے جیسے راوی سے روایت کرے اور یہ سلسلہ آخر تک اسی طرح پہنچے اور یہ حدیث شاذ اور معلل بھی نہ ہو۔

## حدیث حسن کا حکم:

استدلال کے اعتبار سے یہ حدیث صحیح حدیث کی طرح ہے اگرچہ قوت میں اس سے کم ہے۔ تمام فقہاء نے اس سے استدلال کیا اور اس پر عمل کیا۔

اور بڑے بڑے محدثین اور اصولی بھی اس کو دلیل بنانے کے قائل ہیں البتہ کچھ سخت مزاج لوگ شاذ ہیں (الگ تھلگ ہیں)

بعض سہل پسند (غیر محقق) محدثین نے اسے حدیث صحیح کی قسم قرار دیا جیسے امام حاکم، ابن حبان اور ابن خزیمہ (رحمہم اللہ)

لیکن اس کے باوجود وہ اس بات کے قائل ہیں کہ یہ حدیث حسن، مذکور حدیث صحیح سے کم درجہ میں ہے۔

## حدیث حسن کی مثال:

امام ترمذی رحمہ اللہ نے ایک حدیث نقل کی ہے:

حدثنا قتيبة حدثنا جعفر بن سليمان الضبعي عن ابي

Marfat.com

عمران الجونی عن ابی بکر بن ابی موسی الاشعری قال سمعت ابی بحضرة العدو یقول قال رسول اللہ ﷺ ان ابواب الجنة تحت ظلال السیوف۔(۱)

حضور ﷺ نے فرمایا: جنت تلواروں کے سائے میں ہے۔

اس حدیث کے بارے میں حضرت امام ترمذی رحمہ اللہ فرماتے ہیں ـھـذا حدیث حسن غریب، تو یہ حدیث اس لئے حسن ہے کہ اس حدیث کے چار راوی ثقہ ہیں سوائے جعفر بن سلیمان ضبعی کے کیونکہ ان کی حدیث حسن ہوتی ہے اس وجہ سے اس حدیث کا درجہ صحیح سے حسن کی طرف اتر گیا۔

مراتب حدیث حسن:

جس طرح صحیح حدیث کے کچھ مراتب ہیں جن کی وجہ سے بعض صحیح احادیث دوسری بعض صحیح سے مختلف (درجہ میں) ہوتی ہیں۔

اسی طرح حدیث حسن کے بھی کچھ مراتب ہوتے ہیں امام ذہبی نے ان کو دو مرتبوں میں تقسیم کیا ہے۔

۱......اعلیٰ مرتبہ:...... حضرت بہز بن حکیم، اپنے والد سے وہ ان کے دادا سے، اسی طرح حضرت عمرو بن شعیب اپنے والد سے اور وہ ان کے دادا سے، یوں ہی ابن اسحاق، حضرت تیمی سے اور اس طرح کی دیگر اسناد جن کے بارے میں کہا گیا ہے کہ یہ صحیح ہے اور صحیح کے کم ترین مرتبہ میں ہے۔

۲......دوسرا مرتبہ......اس کے بعد حدیث حسن جن کی تحسین اور تضعیف

(۱)......جامع ترمذی، ابواب فضائل الجہاد ۱/۲۹۳

Marfat.com

میں اختلاف ہے (یعنی یہ حسن ہے یا ضعیف؟) جس طرح حضرت حارث بن عبداللہ کی روایت نیز عاصم بن ضمرہ اور حجاج بن ارطاۃ وغیرہ کی روایات۔

## محدثین کا قول ''حدیث صحیح الاسناد'' اور ''حسن الاسناد'' کا مرتبہ

۱......محدثین کا قول "ھذا حدیث صحیح الاسناد" ان کے قول ''ھذا حدیث صحیح'' سے کم مرتبہ میں ہے۔

۲......ان کا قول "ھذا حدیث حسن الاسناد" کا مرتبہ "ھذا حدیث حسن" سے کم ہے کیونکہ بعض اسناد صحیح یا حسن ہوتی ہیں لیکن متن صحیح نہیں ہوتا کیونکہ اس (متن حدیث) میں شذوذ یا علت ہوتی ہے۔

گویا محدث جب کہتا ہے ''ھذا حدیث صحیح'' تو ہمارے لئے اس حدیث میں صحت کی پانچوں شرائط کے پائے جانے کی ذمہ داری لیتا ہے۔

لیکن جب کہتا ہے "ھذا حدیث صحیح الاسناد" تو صحت کی شرائط میں سے صرف تین کی ذمہ داری اٹھاتا ہے اور وہ (۱) اتصال سند، (۲) راویوں کی عدالت اور (۳) راویوں کا ضبط۔

لیکن شذوذ اور علت کی نفی کی ذمہ داری نہیں اٹھاتا کیونکہ اس کے پاس ان دونوں کا ثبوت نہیں ہوتا۔ لیکن جب حافظ اور قابل اعتماد محدث صرف یہ بات کہے ''ھذا حدیث صحیح الاسناد'' اور اس کی کوئی علت ذکر نہ کرے تو ظاہر یہ ہے کہ اس کا متن صحیح ہے کیونکہ اصل بات علت اور شذوذ کا نہ ہونا ہے (گویا علت اور شذوذ ہوتا تو محدث وضاحت کرتا۔۱۲ اعزازی)

Marfat.com

## امام ترمذی وغیرہ (رحمہم اللہ) کا "حدیث حسن صحیح" کہنا:

ان کی یہ عبارت بظاہر مشکل ہے کیونکہ حدیث حسن کا درجہ حدیث صحیح سے کم ہوتا ہے تو کس طرح ان دونوں (حسن اور صحیح) کو جمع کیا جاسکتا ہے جب کہ دونوں کے مرتبہ میں تفاوت ہے۔

تو حضرت امام ترمذی رحمہ اللہ کی اس عبارت کے علماء کرام نے متعدد جوابات دیئے ہیں سب سے اچھا جواب حضرت امام ابن حجر رحمہ اللہ نے دیا ہے اور امام جلال الدین سیوطی رحمہ اللہ نے اسے پسند کیا ہے جس کا خلاصہ درج ذیل ہے۔

۱......اگر ایک حدیث کی دو یا زیادہ سندیں ہوں تو مطلب یہ ہوگا کہ ایک سند کے اعتبار سے حسن ہے اور دوسری سند کے اعتبار سے صحیح ہے۔

۲......اگر سند ایک ہو تو ایک جماعت کے نزدیک حسن ہے اور دوسروں کے نزدیک صحیح ہے۔

گویا قائل (امام ترمذی وغیرہ) نے اس بات کی طرف اشارہ کیا ہے کہ اس حدیث کے حکم میں علماء کرام کے درمیان اختلاف ہے یا ان (امام ترمذی) کے نزدیک کسی ایک حکم (صحیح یا حسن) کو ترجیح نہیں ہے۔

## المصابیح کی احادیث میں امام بغوی کی تقسیم:

امام بغوی رحمہ اللہ نے اپنی کتاب "المصابیح" میں اپنی خاص اصطلاح کے مطابق احادیث درج کی ہیں وہ اس طرح کہ جو احادیث صحیحین (دونوں میں) یا ان میں سے ایک میں ہیں ان کی طرف اپنے قول "صحیح" کے ساتھ اشارہ کرتے ہیں۔

• اور جو احادیث سنن اربعہ میں ہیں ان کی طرف لفظ "حسن" کے ساتھ اشارہ

کرتے ہیں یہ اصطلاح محدثین کے مطابق درست نہیں ہے کیونکہ سنن اربعہ میں صحیح حسن، ضعیف اور منکر (تمام قسم کی) احادیث ہیں۔

اس بات سے ابن صلاح اور امام نووی نے آگاہ کیا ہے۔لہذا کتاب المصابیح کے قاری کے لئے مناسب ہے کہ کتاب کی احادیث کے بارے میں بغوی کی اصطلاح یعنی "صحیح" یا "حسن" سے آگاہ رہے۔

## وہ کتب جن میں حسن احادیث پائی جاتی ہیں:

علماء کرام نے خاص احادیث حسن کے بارے میں تصنیف نہیں فرمائی جس طرح صرف صحیح احادیث سے متعلق مستقل کتب لکھی ہیں لیکن کچھ کتب ایسی ہیں جن میں حسن احادیث بہت زیادہ ہیں ان میں سے چند مشہور کتب درج ذیل ہیں۔

### ا......جامع ترمذی:

یہ کتاب سنن ترمذی کے نام سے مشہور ہے حدیث حسن کی معرفت میں یہ کتاب اصل ہے امام ترمذی وہ شخصیت ہیں جنہوں نے اس کتاب میں اس (حدیث حسن) کو شہرت دی اور اس کا ذکر کثرت سے کیا۔

لیکن اس بات سے آگاہ رہنا چاہیے کہ لفظ "حسن صحیح" وغیرہ کے سلسلے میں اس کے نسخے مختلف ہیں طالب کو چاہیے کہ وہ کسی ایسے نسخے کو اختیار کرے جس کی تحقیق اور تقابل اصل نسخے کے ساتھ کیا گیا ہو۔

### ۲......سنن ابی داؤد:

امام ابوداؤد نے اہل مکہ کی طرف اپنے رسالہ میں ذکر کیا ہے کہ انہوں نے اس

(کتاب) میں صحیح، اس کے مشابہ اور متقارب احادیث ذکر کی ہیں اور جن میں زیادہ کمزوری تھی اسے واضح کر دیا اور جس میں کچھ ذکر نہ کیا وہ استدلال کے لائق ہے۔

اس بنیاد پر جب ہم ایک ایسی حدیث پاتے ہیں جس کا ضعف انہوں نے بیان نہیں کیا اور معتمد ائمہ نے اسے صحیح قرار نہیں دیا وہ حضرت امام ابوداؤد رحمہ اللہ کے نزدیک حسن ہے۔

## سنن دار قطنی:

حضرت امام دار قطنی رحمہ اللہ نے اس کتاب میں بہت سی احادیث کے حسن ہونے کو واضح طور پر بیان کیا ہے۔

## صحیح لغیرہ:

تعریف..... جب حسن لذاتہ کو کسی دوسرے طریق (سند) کے ساتھ روایت کیا جائے جو اس کی مثل یا اس سے زیادہ قوی ہو تو یہ صحیح لغیرہ ہے اس کو صحیح لغیرہ کہنے کی وجہ یہ ہے کہ اس کی صحت سند کی ذات سے نہیں آتی بلکہ اس کے غیر کو اس سے ملانے کی وجہ سے آتی ہے۔

## مرتبہ:

صحیح لغیرہ کا مرتبہ، حسن لذاتہ کے مرتبہ سے اعلیٰ اور صحیح لذاتہ سے کم ہے۔

## مثال:

حدیث شریف......محمد بن عمرو عن ابی سلمۃ عن ابی ھریرۃ (رضی اللہ عنہ) ان رسول اللہ ﷺ قال لولا ان اشق علیٰ امتی لامرتھم

Marfat.com

بالسواك عند كل صلوة ۔(۱)

ترجمہ: حضرت محمد بن عمرو، حضرت ابی سلمہ سے اور وہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اکرم ﷺ نے فرمایا: اگر میں اپنی امت پر مشقت نہ سمجھتا تو ان کو ہر نماز کے وقت مسواک کا حکم دیتا۔

محمد بن عمرو بن علقمہ صدق اور حفاظت میں مشہور لوگوں میں سے ہیں لیکن مضبوط لوگوں میں سے نہیں حتی کہ بعض حضرات نے ان کو حافظے کی کمزوری کی وجہ سے ضعیف قرار دیا اور بعض نے ان کی صداقت اور جلالت کی بنیاد پر ان کو ثقہ قرار دیا۔

اس جہت سے ان کی حدیث حسن ہے لیکن جب اس کے ساتھ حدیث کے دوسرے طرق سے مروی ہونے کو ملایا گیا تو ہمیں ان کے حافظے کی کمزوری کا جو ڈر تھا وہ زائل ہو گیا اور یہ معمولی نقصان پورا ہو گیا لہذا یہ سند صحیح قرار پانے کی وجہ سے حدیث صحیح کے درجہ کو پہنچ گئی۔(۲)

## حسن لغیرہ:

تعریف...... وہ ضعیف حدیث کہ جب اس کی اسناد متعدد ہوں اور اس کا ضعف راوی کے فسق یا جھوٹ کی وجہ سے نہ ہو۔ (تو وہ حسن لغیرہ کہلاتی ہے) اس سے معلوم ہوا کہ ضعیف حدیث دو باتوں کی وجہ سے حسن لغیرہ کے درجہ تک پہنچ جاتی ہے۔

ا...... دوسرے طریق سے کثرت سے مروی ہو یہاں تک کہ دوسرا طریق اس کی مثل یا اس سے زیادہ قوی ہو۔

(۱)......جامع ترمذی ابواب الطہارۃ باب ما جاء فی السواک ا/ا۱۰۱
(۲)......علوم الحدیث (مقدمہ ابن صلاح) ص: ۳۶،۳۱

Marfat.com

۲......ضعف حدیث کا سبب یا تو راوی کے حفظ میں خرابی ہو یا سند میں انقطاع کے سبب سے ہو یا اس کے راویوں میں جہالت ہو۔

**مرتبہ:**

حسن لغیرہ کا مرتبہ، حسن لذاتہ کے مرتبہ سے کم ہوتا ہے اس بنیاد پر مناسب ہے کہ اگر حسن لذاتہ اور حسن لغیرہ میں تعارض ہو تو حسن لذاتہ کو مقدم کیا جائے۔

**حکم:**

یہ مقبول حدیث ہے جس سے استدلال کیا جا سکتا ہے۔

**مثال:**

وہ حدیث جسے امام ترمذی نے روایت کرتے ہوئے حسن قرار دیا جو حضرت شعبہ کی سند سے مروی ہے وہ حضرت عاصم بن عبید اللہ سے وہ عبد اللہ بن عامر بن ربیعہ سے اور وہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں کہ:

بنو فزارہ قبیلہ کی ایک عورت نے دو جوتوں کے بدلے نکاح کیا، رسول اکرم ﷺ نے فرمایا کیا تو اپنے نفس اور مال کے بدلے میں دو جوتوں پر راضی ہے؟ اس نے عرض کیا جی ہاں تو آپ نے یہ نکاح جائز قرار دیا۔(۱)

حضرت امام ترمذی فرماتے ہیں: اس باب میں حضرت عمر (فاروق) حضرت ابو ہریرہ، حضرت عائشہ (صدیقہ) اور حضرت ابو درداء رضی اللہ عنہم سے بھی روایات

(۱)......احناف کے نزدیک کم از کم مہر دس درہم ہے لہذا یہ مہر معجل تھا بعد میں پورا کر دیا گیا۔۱۲ ہزاروی

آئی ہیں۔(۱)

پس عاصم اپنے حفظ کی کمزوری کی وجہ سے ضعیف ہیں لیکن حضرت امام ترمذی رحمہ اللہ نے دوسرے طرق سے مروی ہونے کی وجہ سے اس حدیث کو حسن قرار دیا۔

## قرائن سے ملی ہوئی مقبول خبر احاد

تمہید...... مقبول کی اقسام کے آخر میں، اس مقبول حدیث کے بارے میں بحث کروں گا جو "محتف بالقرائن" ہے اور "محتف بالقرائن" سے مراد یہ ہے کہ حدیث مقبول کی شرائط سے زائد امور اس سے ملے ہوئے ہوں اور یہ زائد امور جو خبر مقبول سے ملے ہوتے ہیں، اس حدیث کی قوت کو بڑھاتے ہیں اور اسے ان دیگر اخبار مقبول سے جو ان زائد امور سے خالی ہوتی ہیں، ممتاز کرتے اور ان پر ترجیح دیتے ہیں۔

### انواع:

جس خبر میں زائد قرائن موجود ہوں اس کی کئی انواع ہیں جن میں سے چند مشہور یہ ہیں:

ا...... جس خبر مقبول کو شیخین نے اپنی صحیحین میں نقل کیا جب تک حد تواتر کو نہ پہنچے وہ قرائن میں گھری ہوتی ہے وہ قرائن یہ ہیں۔

ا...... ان دونوں (صحیحین) کی جلالت شان

۲...... ان دونوں کا صحیح حدیث کی تمیز میں دوسری کتب پر مقدم ہونا۔

۳...... ان دونوں کی کتابوں کو علماء کا قبولیت کے ساتھ حاصل کرنا۔

---

(۱)...... جامع ترمذی ابواب النکاح باب ما جاء فی مہور النساء ۱/۲۳۹

Marfat.com

اور صرف یہ تلقی بالقبول علم کا فائدہ پہنچانے میں ان کثرت طرق سے زیادہ قوی ہے جو تواتر سے خالی ہیں۔

ب...... جب حدیث مشہور کے کئی طرق ایک دوسرے سے مختلف ہوں اور وہ تمام راویوں کے ضعف اور علل سے خالی ہوں۔

ج...... وہ خبر جسے مسلسل ایسے ائمہ نقل کریں جو حفظ واتقان سے موصوف ہیں یعنی وہ حدیث غریب نہ ہو۔

جیسے وہ حدیث جسے حضرت امام احمد رحمہ اللہ نے حضرت امام شافعی رحمہ اللہ سے اور امام شافعی رحمہ اللہ نے حضرت امام مالک سے روایت کیا اور امام شافعی رحمہ اللہ سے روایت میں امام احمد رحمہ اللہ کے ساتھ کوئی اور بھی شریک ہو اسی طرح حضرت امام مالک رحمہ اللہ کی روایت میں حضرت امام شافعی رحمہ اللہ کے ساتھ کوئی اور بھی شریک ہو۔

## حکم:

یہ روایت اخبار احاد کی کسی بھی مقبول حدیث سے راجح ہوتی ہے اگر ایسی خبر مقبول جس میں قرائن پائے جاتے ہیں، کا ٹکراؤ دیگر اخبار مقبولہ سے ہو تو جس میں قرائن پائے جاتے ہیں وہ مقدم ہوگی۔

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

Marfat.com

# دوسری بحث......خبر مقبول معمول بہ اور غیر معمول بہ

خبر مقبول کی دو قسمیں ہیں:

ا......معمول بہ۔ ۲......غیر معمول بہ۔

پھران دونوں سے علوم حدیث کی انواع میں سے دو قسمیں نکلتی ہیں۔

ا......محکم ومختلف الحدیث۔ ۲......ناسخ ومنسوخ۔

## محکم ومختلف الحدیث:

محکم کی تعریف...... لغت میں یہ اسم مفعول کا صیغہ ہے جو "احکم" سے بنا ہے مضبوط کو کہتے ہیں (اتقن کے معنی میں ہے)

اصطلاحاً...... محکم وہ مقبول حدیث ہے جو اپنی مثل کے معارضہ سے محفوظ ہو۔

اکثر احادیث اسی انواع سے متعلق ہیں اور وہ احادیث جو ایک دوسرے کی معارض اور مختلف ہیں تو تمام احادیث کی نسبت سے وہ کم ہیں۔

## تعریف مختلف الحدیث:

لغت میں یہ لفظ اختلاف سے اسم فاعل ہے جو اتفاق کی ضد ہے اور مختلف الحدیث کا معنی یہ ہے کہ جو احادیث ہم تک پہنچتی ہیں وہ معنی میں ایک دوسری کے خلاف ہوں یعنی معنوی طور پر ایک دوسری کی ضد ہوں۔

اصطلاحاً......وہ حدیث مقبول جو اپنی مثل کی مخالف ہو اگر چہ ان کو جمع کرنا ممکن ہو۔

یعنی وہ حدیث صحیح یا حسن کہ مرتبہ اور قوت میں اس کی مثل دوسری حدیث ہو لیکن

Marfat.com

ظاہری طور پر معنی میں اس کی مخالف ہو اور اہل علم اور روشن فہم والے لوگوں کے لئے ان کے مدلول کو مقبول شکل میں جمع کرنا ممکن ہو۔

## مختلف کی مثال:

حدیث شریف ہے: لا عدوی ولا طیرۃ۔ (۱) ترجمہ: بیماری کا متعدی ہونا اور بدفالی کچھ نہیں۔

اس حدیث شریف کو امام مسلم رحمہ اللہ نے نقل کیا۔ اس کے ساتھ دوسری حدیث ہے: فرّ من المجذوم کما تفر من الاسد۔ (۲) (کوڑھ والے سے اس طرح بھاگو جس طرح شیر سے بھاگتے ہو)

اس حدیث کو حضرت امام بخاری رحمہ اللہ نے روایت کیا ہے۔ یہ دونوں احادیث صحیح ہیں اور بظاہر دونوں میں تعارض ہے کیونکہ پہلی حدیث بیماری کے متعدی ہونے کی نفی کرتی ہے اور دوسری اسے ثابت کرتی ہے۔ لیکن علماء نے ان کو جمع کیا اور متعدد طریقوں پر ان کے معنی کو باہم موافق قرار دیا۔ میں یہاں وہ بات ذکر کروں گا جسے امام ابن حجر رحمہ اللہ نے اختیار کیا اور جس کا حاصل یہ ہے۔

## کیفیت جمع:

ان دونوں حدیثوں کو جمع کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ کہا جائے کہ بیماری کے تعدیہ (متعدی ہونے) کی نفی ہے اور یہ ثابت نہیں ہے کیونکہ حضور ﷺ نے فرمایا:

لا یعدی شئ شیئا۔ کوئی چیز دوسری چیز کی طرف متعدی

---

(۱)...... مشکوۃ المصابیح باب الفال والطیرۃ ص:۳۹۱

(۲)...... مشکوۃ المصابیح باب الفال والطیرۃ ص:۳۹۱

نہیں ہوتی۔(۱)

اور جس شخص نے معارضہ کرتے ہوئے کہا کہ خارشی اونٹ جب صحیح اونٹوں کے درمیان ہوتا ہے تو اس سے ملنے کی وجہ سے وہ بھی خارشی ہوجاتے ہیں اسے آپ نے یوں جواب دیا۔

فمن اعدی الاول۔(۲) پہلے اونٹ تک (خارش) کس نے پہنچائی ہے؟

یعنی اللہ تعالیٰ نے ہی یہ مرض دوسرے (اونٹ) تک پہنچائی ہے جس نے پہلے تک پہنچائی ہے۔

اور جہاں تک کوڑھ کے مریض سے بھاگنے کا مسئلہ ہے تو اس کا تعلق "سد ذرائع" سے ہے۔ یعنی تا کہ اس شخص کو جو کوڑھی کے ساتھ میل جول رکھتا ہے اللہ تعالیٰ کی تقدیر کے ساتھ یہ مرض ابتداءً لاحق ہوجائے دوسرے سے متعدی نہ ہو جس کی نفی کی گئی ہے۔

(اگر یہ دور نہیں رہے گا) تو اسے یہ خیال ہوگا کہ اس کا سبب اس شخص کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا ہے لہٰذا وہ بیماری کے تجاوز کرنے کا عقیدہ رکھنے کی وجہ سے گناہ گار ہوگا۔

اس لئے آپ ﷺ نے کوڑھی سے دور رہنے کا حکم دیا تا کہ وہ اس اعتقاد کو اختیار کر کے گناہ میں نہ پڑے۔

## دو متعارض احادیث کی صورت میں کیا کرنا ضروری ہے:

ایسی صورت میں لازم ہے کہ درج ذیل مراحل کو اختیار کرے:

(۱)......جامع الترمذی کتاب القدر باب ماجاء لاعدوی (۲۱۴۳) دارالکتب العلمیہ بیروت ص:۵۱۷

(۲)......مشکوۃ المصابیح باب الفال والطیرۃ ص:۳۹۱

Marfat.com

ا......جب دونوں کو جمع کرنا ممکن ہو تو جمع کرنا متعین ہوگا اور دونوں پر عمل واجب ہوگا۔

۲......اور اگر کسی وجہ سے جمع کرنا ممکن نہ ہو تو:

ا......اگر ان میں سے ایک کا ناسخ ہونا معلوم ہو تو ہم اسے مقدم کر کے اس پر عمل کریں گے اور منسوخ کو چھوڑ دیں گے۔

ب......اگر اس بات کا علم نہ ہو سکے تو ترجیح کی وجوہ جو پچاس بلکہ اس سے زائد ہیں، میں سے کسی وجہ کے ساتھ ایک کو دوسری حدیث پر ترجیح دیں گے پھر راجح پر عمل کریں گے۔

ج......اگر ایک کو دوسری پر ترجیح نہ ہو اور ایسا بہت کم ہوتا ہے تو جب تک کوئی ترجیح دینے والی بات ظاہر نہ ہو دونوں پر عمل سے رک جائیں گے۔

## اس کی اہمیت اور اس میں کامل کون ہے:

یہ فن (جمع بین الحدیثین) علوم حدیث میں اہم فن (علم) ہے کیونکہ اس کی معرفت تمام علماء کی مجبوری ہے اس میں کامل اور ماہر صرف وہ علماء ہیں جو حدیث اور فقہ کے جامع ہیں اور وہ اصولی جو دقیق معانی میں غوطہ زن ہوتے ہیں اور ان لوگوں پر شاذ و نادر مقام کے علاوہ کچھ مشکل (مخفی) نہیں ہوتا۔

دلائل کے تعارض نے علماء کو مشغول رکھا اور اسی میں ان کی خداداد قابلیت دقت فہم اور حسن اختیار ظاہر ہوتا ہے جس طرح اس میں بعض ایسے لوگوں کے قدم پھسل گئے جنہوں نے علماء کرام کے طفیلی بن کر غوطہ لگایا (یعنی ان کو یہ صلاحیت حاصل نہ تھی)

Marfat.com

## مشہور تصنیفات:

اس فن کی چند مشہور تصانیف درج ذیل ہیں:

ا......اختلاف الحدیث۔ یہ امام شافعی رحمہ اللہ کی تصنیف ہے اور سب سے پہلے آپ ہی نے اس مسئلہ میں کلام کیا اور کتاب لکھی۔

۲......تاویل مختلف الحدیث۔ یہ ابن قتیبہ عبداللہ بن مسلم کی تصنیف ہے۔

۳......مشکل الآ ثار۔ امام طحاوی ابوجعفر احمد بن سلامہ کی کتاب ہے۔

## ناسخ و منسوخ حدیث:

نسخ کی تعریف...... لغت میں اس کے دو معنی ہیں۔

(ا) ازالہ، اسی سے ہے: نسخت الشمس الظل۔ (سورج نے سائے کو زائل کر دیا۔)

(۲) نقل: اسی سے ہے نسخت الکتاب، جب تحریر کو دوسری جگہ نقل کرے۔

گویا ناسخ، منسوخ کو زائل کرتا ہے یا اسے دوسرے حکم کی طرف منتقل کرتا ہے۔

اصطلاحاً...... شارع کا پہلے حکم کو دوسرے حکم کے ذریعے اٹھا دینا۔

## اہمیت، مشکلات اور اس میں مشہور علماء:

ناسخ و منسوخ کی پہچان ایک اہم اور مشکل فن ہے حضرت زہری فرماتے ہیں:

اعیا الفقہاء، واعجزھم أن یعرفوا ناسخ الحدیث من منسوخہ۔

ناسخ و منسوخ حدیث کی پہچان نے فقہاء کو تھکا دیا اور عاجز کر دیا۔

Marfat.com

ناسخ ومنسوخ کو ظاہر کرنے والوں میں حضرت امام شافعی رحمہ اللہ سب سے زیادہ مشہور ہیں آپ کو اس فن میں ید طولیٰ اور سبقت اُولیٰ حاصل تھی جب ابن وارہ مصر میں آئے تو حضرت امام احمد رحمہ اللہ نے ان سے پوچھا تم نے امام شافعی رحمہ اللہ کی کتب لکھی ہیں؟ کہا نہیں۔

آپ نے فرمایا تم نے کوتاہی کی ہمیں مجمل ومفسر اور ناسخ ومنسوخ کا علم اس وقت حاصل ہوا جب ہم نے حضرت امام شافعی رحمہ اللہ کی صحبت اختیار کی۔

## ناسخ ومنسوخ کی پہچان کیسے حاصل ہو؟

درج ذیل امور میں سے کسی ایک کے ذریعے ناسخ ومنسوخ حدیث کی پہچان حاصل ہوتی ہے۔

۱......رسول اکرم ﷺ کے واضح بیان سے، جیسے صحیح مسلم میں حضرت بریدہ رضی اللہ عنہ کی روایت ہے:

رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

**کنت نھیتکم عن زیارۃ القبور فزوروھا فانھا تزھد فی الدنیا وتذکر الآخرۃ۔(۱)**

ترجمہ: میں تمہیں قبور کی زیارت سے منع کرتا تھا پس اب تم ان کی زیارت کرسکتے ہو یہ دنیا سے بے رغبت کرتی اور آخرت کی یاد دلاتی ہیں۔

۲......کسی صحابی رضی اللہ عنہ کے قول سے۔

جیسے حضرت جابر رضی اللہ عنہ کا قول ہے:

(۱)......سنن ابن ماجہ ابواب ماجاء فی الجنائز باب ماجاء فی زیارۃ القبور ص:۱۱۲،۱۱۳

Marfat.com

**کان آخر الامرین من رسول اللہ ﷺ ترک الوضوء مما مست النار۔(۱)**

ترجمہ: رسول اکرم ﷺ کا آخری عمل یہ تھا کہ آپ نے آگ پر پکی ہوئی چیز (کھانے) سے وضو کو ترک کردیا (یعنی آگ پر پکی ہوئی چیز کھانے سے وضو نہیں ٹوٹتا)

۳......معرفت تاریخ۔

جس طرح حضرت شداد بن اوس رضی اللہ عنہ کی حدیث۔

**افطر الحاجم والمحجوم۔(۲)**

ترجمہ: سینگی لگانے والے اور سینگی لگوانے والے کا روزہ ٹوٹ گیا۔

یہ حدیث حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما کی اس حدیث سے منسوخ ہوگئی:

**ان النبی ﷺ احتجم وھو محرم صائم ۔(۳)**

ترجمہ: رسول اکرم ﷺ نے سینگی لگوائی اور آپ نے احرام باندھا ہوا تھا اور روزہ دار بھی تھے۔

حضرت شداد رضی اللہ عنہ کی حدیث کی بعض اسناد میں ہے کہ رسول اکرم ﷺ نے فتح مکہ کے موقع پر یہ ارشاد فرمایا اور حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما کو آپ کی صحبت حجۃ الوداع کے موقعہ پر بھی حاصل تھی۔

۴......دلالت اجماع۔ جس طرح یہ حدیث ہے۔

---

(۱)......سنن ابی داؤد کتاب الطہارۃ باب ترک الوضوء مما مست النار ۱/۲۷

(۲)......صحیح بخاری باب الحجامۃ والقئی للصائم ۱/۲۶۰

(۳)......صحیح بخاری باب الحجامۃ والقئی للصائم ۱/۲۶۰

Marfat.com

من شرب الخمر فاجلدوه فان عاد فی الرابعة فاقتلوه۔(۱)

ترجمہ: جو آدمی شراب پیئے اسے کوڑے مارو اگر چوتھی مرتبہ بھی پیئے تو اسے قتل کردو۔

حضرت امام نووی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

اس حدیث کے منسوخ ہونے پر اجماع ہے۔

اور اجماع نہ تو ناسخ ہے اور نہ ہی منسوخ البتہ ناسخ پر دلالت کرتا ہے۔

## ناسخ ومنسوخ سے متعلق مشہور تصانیف:

۱......الاعتبار فی الناسخ والمنسوخ من الآثار، تصنیف ابو بکر محمد ابن موسیٰ حازمی۔

۲......الناسخ والمنسوخ تصنیف حضرت امام احمد رحمہ اللہ

۳......تجرید الاحادیث المنسوخۃ تصنیف ابن جوزی

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

(۱)......جامع الترمذی کتاب الحدود باب ماجاء من شرب الخمر رقم الحدیث ۱۴۴۴ دار الکتب العلمیہ بیروت

Marfat.com

# تیسری فصل......خبر مردود

پہلی بحث......حدیث ضعیف

دوسری بحث......سند میں سقوط کی وجہ سے مردود

تیسری بحث......راوی پر طعن کی وجہ سے مردود

## خبر مردود اور ردّ کے اسباب:

تعریف...... خبر مردود وہ خبر (حدیث) ہے جس میں مخبر بہ (جس بات کی خبر دی گئی) کا صدق راجح نہ ہو۔

اور اس کی وجہ خبر مقبول کی ایک یا زیادہ شرائط کا نہ پایا جانا ہے جن شرائط کا ذکر صحیح حدیث کی بحث میں ہو چکا ہے۔

## خبر مردود کی اقسام اور اسباب ردّ:

علماء کرام نے خبر مردود کو کئی اقسام میں تقسیم کیا ہے۔(۱)

اور ان میں سے بہت سی اقسام کو خاص نام دیئے ہیں۔اور کچھ اقسام کے لئے خاص نام استعمال نہیں کئے بلکہ عام یعنی "ضعیف حدیث" ہی ذکر کیا ہے۔

حدیث کو ردّ کرنے کے اسباب بہت زیادہ ہیں لیکن بنیادی طور پر دو بڑے اسباب میں سے کسی ایک کا پایا جانا ہے اور وہ دو سبب یہ ہیں۔

۱......اسناد میں سقوط۔ ۲......راوی میں طعن۔

(۱)......ان میں سے بعض چالیس سے بھی زیادہ ہیں۔

ان دونوں اسباب کے تحت متعدد اقسام ہیں ان شاء اللہ ان کے بارے میں عنقریب مستقل مفصل گفتگو کروں گا اور آغاز حدیث ضعیف سے ہوگا کیونکہ مردود کی نوع کے لئے عام نام یہی ہے۔

## پہلی بحث......حدیث ضعیف

تعریف...... لغت میں لفظ ضعیف، لفظ قوی کی ضد ہے اور ضعف حسی بھی ہوتا ہے اور معنوی بھی اور یہاں ضعف معنوی مراد ہے۔

اصطلاحاً ...... حدیث ضعیف وہ ہے جس میں حدیث حسن کی صفات جمع نہ ہوں کیونکہ اس میں شرائط حسن میں سے کوئی شرط مفقود ہوتی ہے۔

البیقونی نے اپنے منظوم کلام میں کہا ہے:

وَ كُلُّ مَا عَنْ رُتْبَةِ الْحَسَنِ قَصُرَ...... فَهُوَ الضَّعِيفُ وَ هُوَ اَقْسَامٌ كَثُرْ

ہر وہ حدیث جو حسن کے مرتبے سے کم ہو وہ ضعیف ہے اور اس کی اقسام بہت زیادہ ہیں۔

### تفاوت:

اس کے راویوں کے ضعف کے زیادہ اور کم ہونے کی وجہ سے اس کے ضعف میں تفاوت (فرق) ہوتا ہے جس طرح صحیح میں تفاوت ہوتا ہے پس کوئی حدیث (محض) ضعیف اور کوئی زیادہ ضعیف ہوتی ہے اور بعض کمزور ترین اور کچھ منکر ہوتی ہیں۔ اور اس کی بدترین قسم موضوع حدیث ہے۔(۱)

---

(۱)......علوم الحدیث بحث معرفۃ الموضوع ص:۸۹

## کمزور ترین سند:

جس طرح صحیح کے بیان میں اصح الاسانید کا ذکر گزر چکا ہے اسی طرح علماء کرام نے ضعیف کی بحث میں "اوھی الاسانید" (کمزور ترین سند) کا ذکر کیا ہے۔

حاکم نیشاپوری نے بعض صحابہ کرام یا بعض جہات اور بعض شہروں کی طرف نسبت کرتے ہوئے "اوھی الاسانید" کا بڑا مجموعہ ذکر کیا ہے۔(۱) میں امام حاکم وغیرہ کی کتب سے بعض مثالیں ذکر کرتا ہوں۔

۱......حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ کی نسبت سے "اوھی الاسانید" صدقہ بن موسیٰ الدقیقی عن فرقد السبخی عن مرۃ الطیب عن ابی بکر (رضی اللہ عنہ) ہے۔(۲)

۲......شامیوں کی کمزور ترین سند (اوھی الاسانید)

محمد بن قیس المصلوب عن عبید اللہ بن زحر عن علی بن یزید عن القاسم عن ابی امامۃ (رضی اللہ عنہ) ہے۔(۳)

۳......حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے "اوھی الاسانید" السّدی الصغیر محمد بن مروان عن الکلبی عن ابی صالح عن ابن عباس (رضی اللہ عنہما) ہے

حضرت ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں یہ سلسلۃ الکذب ہے "سلسلۃ الذھب" نہیں ہے۔(۴)

---

(۱)......معرفۃ علوم الحدیث ص:۷۱،۷۲
(۲)......معرفۃ علوم الحدیث ص:۷۱،۷۲
(۳)......معرفۃ علوم الحدیث ص:۷۱،۷۲
(۴)......تدریب الراوی ۱/۱۸۱

## ضعیف کی مثال:

امام ترمذی رحمہ اللہ نے حکیم اثرم کے طریق سے ابو تمیمہ الھجیمی سے اور انہوں نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا وہ رسول اکرم ﷺ سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا:

من اتی حائضًا او امراۃ فی دبرھا او کاھنا فقد کفر بما انزل علی محمد۔(۱)

ترجمہ: جو شخص حائضہ عورت سے جماع کرے یا کسی عورت سے غیر فطری فعل کرے یا کاہن کے پاس جائے اس نے حضرت محمد ﷺ پر نازل کردہ دین کا انکار کیا۔

اس حدیث کو ذکر کرنے کے بعد امام ترمذی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

ہم اس حدیث کو صرف حکیم اثرم کی روایت سے جانتے ہیں وہ ابو تمیمہ الھجیمی سے اور وہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں۔

اس کے بعد امام ترمذی فرماتے ہیں: اس حدیث کو محمد بن اسماعیل (امام بخاری رحمہ اللہ) نے سند کے اعتبار سے بہت ضعیف قرار دیا ہے۔(۲)

میں کہتا ہوں اس کی وجہ یہ ہے کہ اس سند میں حکیم اثرم ہے اور علماء نے اسے ضعیف قرار دیا ہے حضرت ابن حجر رحمہ اللہ اس کے بارے میں "تقریب التھذیب" میں فرماتے ہیں کہ اس (راوی) میں ضعف ہے۔

(۱)......جامع ترمذی ابواب الطہارۃ باب ماجاء فی کراھیۃ اتیان الحائض ۱۳۲/۱

(۲)......امام ترمذی کا قول یہ ہے وضعف محمد (بن اسماعیل البخاری) ہذا الحدیث من قبل اسنادہ۔(حوالہ مذکورہ بالا)

Marfat.com

## اس کی روایت کا حکم:

ائمہ حدیث اور دوسرے حضرات کے نزدیک ضعیف احادیث اور جن احادیث کی اسناد میں تساہل ہے ان کا ضعف بیان کئے بغیر ان کی روایت جائز ہے بخلاف موضوع احادیث کے، ان کی روایت جائز نہیں ہے البتہ ان کا موضوع ہونا بیان کیا جائے تو دو شرطوں کے ساتھ روایت کر سکتے ہیں۔

(۱) یہ حدیث عقائد سے متعلق نہ ہو جیسے اللہ تعالیٰ کی صفات۔

(۲) حلال وحرام سے متعلق احکام شرعیہ کے بیان میں نہ ہو۔

یعنی ضعیف حدیث کی روایت وعظ ونصیحت، ترغیب وترہیب اور واقعات وغیرہ کے بارے میں جائز ہے۔

ضعیف حدیث کی روایت میں جن ائمہ سے تساہل منقول ہے ان میں سفیان ثوری، عبدالرحمٰن بن مہدی اور احمد بن حنبل رحمہم اللہ ہیں۔(۱)

اور اس بات سے آگاہ رہنا چاہیے کہ جب تم سند کے بغیر روایت کرو تو اس میں یوں نہ کہو کہ "قال رسول اللہ ﷺ کذا" آپ نے اس طرح فرمایا بلکہ تم یوں کہو "روی عن رسول اللہ ﷺ کذا" حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے اسی طرح مروی ہے یا کہو "بلغنا عنہ کذا" حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے ہمیں اس طرح پہنچی ہے یا اس قسم کے دیگر الفاظ کہو تا کہ تم اس حدیث کو قطعی طور پر نبی اکرم ﷺ کی طرف منسوب نہ کرو جبکہ تمہیں اس کے ضعف کا علم ہے۔

(۱)......علوم الحدیث ص:۹۳
ایضا......الکفایہ باب التشدد فی احادیث الاحکام والتجوز فی فضائل الاعمال ص: ۱۳۳،۱۳۴

## اس پر عمل کا حکم:

ضعیف حدیث پر عمل کے بارے میں علماء کا اختلاف ہے جمہور علماء کا مذہب یہ ہے کہ فضائل اعمال میں اس پر تین شرائط کے ساتھ عمل کیا جا سکتا ہے۔ ان شرائط کو حافظ ابن حجر نے واضح کیا ہے۔(ا)

ا......ضعف زیادہ شدید نہ ہو۔

۲......حدیث ایسے قواعد کے تحت ہو جن پر عمل کیا جاتا ہے۔

۳......عمل کرتے وقت اس کے ثبوت کا عقیدہ نہ رکھے بلکہ احتیاط کا اعتقاد رکھے

## ضعیف احادیث کے بارے میں مشہور تصانیف:

ا......وہ کتب جو ضعیف احادیث کے بارے میں تصنیف کی گئیں جیسے ابن حبان کی کتاب الضعفاء، امام ذہبی کی میزان الاعتدال، ان حضرات نے ضعیف راویوں کی وجہ سے ضعیف قرار پانے والی احادیث کی مثالیں ذکر کی ہیں۔

۲......وہ کتب جو ضعیف کی خاص اقسام کے بارے میں لکھی گئیں۔ جیسے مراسیل علل اور مدرج وغیرہ کی کتب جیسے "مراسیل ابی داؤد" اور امام دارقطنی کی "کتاب العلل"

## دوسری بحث......سند میں سقوط کی وجہ سے مردود

سند میں سے سقوط سے مراد یہ ہے کہ بعض راویوں کی طرف سے جان بوجھ کر یا بغیر قصد کے ایک راوی یا زیادہ کے سقوط کی وجہ سے سلسلہ اسناد کا منقطع ہو جائے سند کے اول سے ہو یا آخر سے یا درمیان سے وہ سقوط ظاہری ہو یا مخفی۔

---

(۲)......تدریب الراوی ۲۹۸/۱، ۲۹۹، فتح المغیث ۲۶۸/۱

Marfat.com

## اقسام سقوط:

ظہور وخفاء کے اعتبار سے اسناد سے سقوط کی دو قسمیں ہیں۔

### الف.....ظاہری سقوط:

سقوط کی اس قسم کی معرفت میں ائمہ اور دیگر لوگ جو علوم حدیث میں مشغول ہوئے ہیں۔ مشترک ہیں۔

اس سقوط کا علم راوی اور اس کے شیخ کے درمیان عدم ملاقات سے ہوتا ہے یا اس لئے (ملاقات نہیں ہوئی) کہ اس (راوی) نے اس (شیخ) کا زمانہ نہیں پایا۔ یا اس کا زمانہ پایا لیکن وہ اکٹھے نہیں ہوئے اور اسے اس کی طرف سے اجازت اور وجادت حاصل نہیں ہوئی۔(۱)

اسی لئے اسانید میں بحث کرنے والا راویوں کی تاریخ جاننے کا محتاج ہوتا ہے کیونکہ اس تاریخ میں ان کی والادت، وفات، طلب علم کے اوقات اور سفر وغیرہ کا بیان شامل ہوتا ہے۔ علمائے حدیث نے ظاہری سقوط پر سقوط کی جگہ اور ساقط ہونے والے راویوں کی تعداد کے اعتبار سے چار ناموں کی اصطلاح بنائی ہے اور وہ اسماء درج ذیل ہیں۔

۱.....معلق۔ ۲.....مرسل۔ ۳.....معضل۔ ۴.....اور منقطع

### ب.....سقوط خفی۔

اس سقوط کا ادراک صرف ماہر ائمہ جو حدیث کے طرق اور اسانید کی علت پر مطلع ہوتے ہیں، کو حاصل ہوتا ہے۔ اور اس کے دو نام ہیں۔

---

(۱) .....الاجازۃ سے مراد راوی کو روایت کی اجازت دینا اور بعض اوقات راوی کو اجازت ایسی شیخ سے حاصل ہوتی ہے جس سے اس نے ملاقات نہیں کی جیسے شیخ کہے کہ میں نے اپنی سنی ہوئی روایات کی اجازت اپنے زمانے کے لوگوں کو دی۔ الوجادہ (واو کے نیچے کسرہ) راوی کسی شیخ کی کتاب پائے جس کے خط کو پہچانتا ہو اور اس شیخ سے وہ احادیث روایت کرے جو اس کتاب میں ہیں۔ (تفصیلی وضاحت آگے آرہی ہے)

Marfat.com

۱......مدلس۔ ۲......مرسل خفی۔

ان چھ ناموں سے متعلق تفصیلی بحث آگے آ رہی ہے۔

## معلق:

تعریف: لغوی اعتبار سے یہ "علّق الشیء بالشیء" سے اسم مفعول ہے یعنی ایک چیز کو دوسری چیز کے ساتھ جوڑا، باندھا اور لٹکایا اور اس سند کو معلق اس لئے کہتے ہیں کہ اس کا اتصال صرف اوپر والی جہت سے ہوتا ہے اور نیچے والی جہت سے انقطاع ہوتا ہے۔

اصطلاحی: طور پر معلق وہ ہے جس کی سند کے آغاز سے ایک یا زیادہ راوی مسلسل حذف ہوں۔

## اس کی صورتیں:

الف......تمام سند کو حذف کر کے کہا جائے "قال رسول الله ﷺ کذا" (رسول اللہ ﷺ نے یوں فرمایا)

ب......صحابی کے علاوہ تمام سند کو حذف کر دیا جائے یا صرف صحابی اور تابعی کا ذکر ہو باقی سند کو حذف کر دیا جائے۔(۱)

## مثال:

امام بخاری رحمہ اللہ نے اپنے مقدمہ میں ران کے بارے میں جو حدیث اس طرح ذکر کی ہے:

وقال ابوموسیٰ (رضی الله عنه) غطی النبی ﷺ رکبتیه حین دخل عثمان۔(۲)

(۱)......شرح نخبۃ الفکر ص:۴۲

(۲)......صحیح بخاری کتاب الصلوٰۃ ۵۳/۱

ترجمہ: نبی اکرم ﷺ نے اپنے گھٹنے ڈھانپ لئے جب حضرت عثمان رضی اللہ عنہ داخل ہوئے۔

یہ حدیث معلق ہے کیونکہ امام بخاری رحمہ اللہ نے صحابی کے علاوہ پوری سند کو حذف کر دیا اور وہ صحابی حضرت ابوموسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ ہیں۔

## حکم:

حدیث معلق مردود ہے کیونکہ اس میں قبولیت کی شرائط میں سے ایک شرط یعنی اتصال سند مفقود ہے اور یہ اس کی سند میں سے ایک یا زیادہ راویوں کا حذف ہے اور ہمیں یہ بھی معلوم نہیں کہ جس راوی کو حذف کیا ہے اس کا حال کیا ہے؟

## صحیحین میں معلقات کا حکم:

یہ حکم یعنی معلق کا مردود ہونا مطلق حدیث کا ہے لیکن جب حدیث معلق ایسی کتاب میں پائی جائے جس کی صحت کا التزام کیا گیا ہے جیسے صحیحین، تو اس کے لئے خاص حکم ہوگا یہ بات صحیح کی بحث میں گزر چکی ہے لیکن یہاں ذکر کرنے میں بھی کوئی حرج نہیں اور وہ یوں ہے۔

الف...... جو قطعی صیغہ کے ساتھ ذکر کی جائے جیسے قال، ذکر، حکیٰ تو وہ مضاف الیہ تک صحیح ہے (یعنی جس کی طرف حدیث کی اضافت ہے اس تک جو سند محذوف ہے وہ صحیح ہے)

ب...... جو کمزور صیغہ کے ساتھ ذکر کی جائے جیسے: قیل، ذکر، حکی، (مجہول کے صیغے) تو اس میں مضاف الیہ کے علاوہ کے لئے صحیح کا حکم نہیں (یعنی جو سند محذوف

Marfat.com

ہے اس پر صحیح کا حکم نہیں ہوگا۔) بلکہ اس میں صحیح، حسن اور ضعیف بھی ہیں لیکن اس میں کوئی بہت ضعیف حدیث نہیں ہے کیونکہ یہ ایسی کتاب میں ہے جسے صحیح کا نام دیا گیا ہے۔

صحیح کو اس کے غیر سے پہچاننے کا طریقہ یہ ہے کہ اس حدیث کی سند پر بحث کی جائے اور اس پر وہ حکم لگایا جائے جو اس کے لائق ہے۔(۱)

## مرسل......(محدثین کے نزدیک):

تعریف...... لغت میں یہ اَرْسَلَ سے مفعول ہے اور اس کا معنیٰ "چھوڑنا" ہے گویا ارسال کرنے والا (مرسِل اسم فاعل) سند کو مطلق چھوڑتا ہے اور کسی معروف راوی کے ساتھ مقید نہیں کرتا۔

اصطلاحًا...... حدیث مرسل وہ ہے جس کے آخر سے یعنی تابعی کے بعد سے سند میں سقوط ہو (یعنی صحابی کا ذکر نہ ہو)(۲)

## اس کی صورت:

اس کی صورت یہ ہے کہ تابعی چاہے وہ چھوٹا ہو یا بڑا کہے: "قال رسول الله ﷺ كذا او فعل كذا او فعل بحضرته كذا" رسول اکرم ﷺ نے یوں فرمایا یا اس طرح کیا یا آپ کی موجودگی میں فلاں کام کیا گیا۔

مرسل کی یہ صورت محدثین کے نزدیک ہے۔

---

(۱)......صحیح بخاری کی معلقات، پر علماء نے بحث کی ہے اور انہوں نے ان کی متصل اسناد ذکر کی ہیں اس سلسلے میں حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کی کتاب "تغلیق التعلیق" نہایت جامع ہے۔

(۲)......نزہۃ النظر ص:۴۳۔

اور تابعی وہ ہے جس نے حالت اسلام میں کسی صحابی سے ملاقات کی اور حالت اسلام میں وفات پائی۔

## مثال:

امام مسلم رحمہ اللہ نے اپنی صحیح میں کتاب البیوع میں حدیث نقل کی فرماتے ہیں:

حدثنی محمد بن رافع حدثنا حُجَین ثنا اللیث عن عقیل عن ابن شھاب عن سعید بن مسیّب ان رسول اللہ ﷺ نھی عن المزابنۃ۔(۲)

ترجمہ: حضرت امام مسلم اپنی سند کے ساتھ حضرت سعید بن میتب رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں: کہ رسول اکرم ﷺ نے مزابنہ سے منع فرمایا۔

حضرت سعید بن میتب رضی اللہ عنہ بڑے تابعی ہیں انہوں نے یہ حدیث نبی اکرم ﷺ سے اس طرح روایت کی کہ ان کے اور آپ ﷺ کے درمیان کوئی واسطہ نہیں تو انہوں نے اس حدیث کی سند کے آخر سے راوی کو ساقط کر دیا اور وہ تابعی کے بعد کے راوی ہیں یہ سقوط کم از کم ایک صحابی کا ہوتا ہے اور یہ بھی احتمال ہے کہ اس کے ساتھ کوئی تابعی بھی ساقط ہو۔

## فقہاء اور اصولیوں کے نزدیک مرسل:

میں نے مرسل کی جو صورت ذکر کی ہے وہ محدثین کے نزدیک مرسل ہے فقہاء اور اصولیوں کے نزدیک مرسل عام ہے ان کے نزدیک ہر منقطع مرسل ہے انقطاع کسی وجہ سے بھی ہو خطیب (بغدادی) کا بھی یہی مذہب ہے۔

---

(۲)......صحیح مسلم کتاب البیوع باب تحریم بیع الرطب بالتمر قدیمی کتب خانہ کراچی ۸/۱

Marfat.com

## مرسل کا حکم:

اصل میں مرسل ضعیف مردود حدیث ہے کیونکہ اس میں مقبول کی شرائط میں سے ایک شرط یعنی اتصال سند مفقود ہوتی ہے۔ نیز محذوف راوی مجہول ہوتا ہے کیونکہ ہوسکتا ہے وہ محذوف غیر صحابی ہو اس حال کی وجہ سے ضعیف ہونے کا احتمال ہے۔

لیکن محدثین اور ان کے علاوہ علماء نے مرسل کے حکم اور اس سے استدلال کے سلسلے میں اختلاف کیا ہے کیونکہ انقطاع کی یہ قسم سند میں کسی بھی دوسرے انقطاع سے مختلف ہوتی ہے کیونکہ اس میں ساقط راوی غالب طور پر صحابی ہوتا ہے اور تمام صحابہ عدول ہیں ان کی عدم معرفت سے کوئی نقصان نہیں ہوتا۔

## مرسل کے بارے میں اقول علماء:

مرسل کے بارے میں اجمالی طور پر علماء کے تین اقوال ہیں۔

۱...... ضعیف مردود۔ یہ جمہور محدثین اور کثیر اصولیین اور فقہاء کے نزدیک ہے ان کی دلیل محذوف راوی کی حالت کا مجہول ہونا ہے۔ کیونکہ ہوسکتا ہے وہ غیر صحابی ہو۔

۲...... یہ حدیث صحیح ہے اس سے استدلال ہوسکتا ہے۔

یہ تین ائمہ حضرات امام ابوحنیفہ، حضرت امام مالک اور حضرت امام احمد رحمہم اللہ کے نزدیک ہے حضرت امام احمد کا مشہور قول یہی ہے علماء کی ایک اور جماعت کا بھی یہی نقطۂ نظر ہے لیکن شرط یہ ہے کہ مرسِل (ارسال کرنے والا) ثقہ ہو اور وہ صرف ثقہ سے ارسال کرتا ہو۔

ان حضرات کی دلیل یہ ہے کہ ثقہ تابعی کے لئے یہ کہنا جائز نہیں کہ "قال رسول اللہ ﷺ" مگر جب کہ اس نے ثقہ سے سنا ہو۔

## مُعضل:

تعریف...... لغت میں یہ اَعۡضَلَ سے اسم مفعول ہے جس کا معنی ہے تھکا دیا۔

اصطلاحاً...... جس حدیث کی سند سے دو یا زیادہ راوی مسلسل (ایک ہی جگہ سے) ساقط ہوں وہ معضل ہے۔

## مثال:

امام حاکم نے "معرفۃ علوم الحدیث" میں اپنی سند کے ساتھ حضرت قعنبی تک اور انہوں نے حضرت امام مالک سے روایت کیا کہ ان کو یہ بات پہنچی ہے کہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا:

**قال رسول الله ﷺ للمملوك طعام وكسوته بالمعروف ولا يكلف من العمل الا مايطيق -(۱)**

ترجمہ رسول اکرم ﷺ نے فرمایا غلام کے لئے اس کا کھانا اور لباس معروف طریقے سے ہے اور اسے اسی کام کی تکلیف دی جائے جس کی وہ طاقت رکھتا ہے۔

امام حاکم فرماتے ہیں یہ حدیث معضل ہے امام مالک نے اپنے مؤطا میں اسی طرح معضل ذکر کیا۔(۲)

لہذا یہ حدیث معضل ہے کیونکہ اس میں حضرت امام مالک اور حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کے درمیان دو راوی مسلسل ساقط ہیں۔ اور ہمیں معلوم ہے کہ موطا کے

---

(۱)...... مشکوۃ المصابیح باب النفقات وحق المملوک ص:۲۹۰

(۲)...... معرفۃ علوم الحدیث ص:۳۶ موطا امام مالک

Marfat.com

علاوہ میں مذکور اس حدیث کی روایت میں دوراوی مسلسل ساقط ہیں وہ یوں ہے۔

عن مالك عن محمد بن عجلان عن ابيه عن ابی هريرة۔

## معضل کا حکم:

معضل حدیث ضعیف ہے اور اس کا حال مرسل اور منقطع سے بھی خستہ ہے (۱) کیونکہ سند میں سے زیادہ لوگ محذوف ہوتے ہیں معضل کے اس حکم پر علماء کا اتفاق ہے۔

## معلق کی بعض صورتوں کے ساتھ اس کا جمع ہونا:

معضل اور معلق کے درمیان عموم وخصوص من وجہ کی نسبت ہے۔

ا......پس ایک صورت میں معضل، معلق کے ساتھ جمع ہوتی ہے اور وہ صورت یہ ہے کہ جب سند کے شروع سے دوراوی مسلسل حذف ہوں (ساقط ہوں) وہ ایک ہی وقت میں معضل بھی ہے اور معلق بھی۔

۲......دوصورتوں میں معضل، معلق سے جدا ہوتی ہے۔

الف......جب سند کے درمیان میں سے راوی مسلسل ساقط ہوں تو یہ معضل ہے معلق نہیں۔

ب......اور جب سند کے شروع سے ایک راوی ساقط ہو تو یہ معلق ہے معضل نہیں۔

---

(۱)......الکفایۃ ص:۲۱ / التدریب ۱/۲۹۵

Marfat.com

## معضل کے مقامات:

حضرت امام سیوطی رحمہ اللہ فرماتے ہیں :(۱) معضل ، منقطع اور مرسل کے مقامات یہ ہیں:

۱......سعید بن منصور کی ''کتاب السنن''

۲......ابن ابی الدنیا کی ''مؤلفات''۔

## المنقطع:

تعریف...... لغت میں یہ "الانقطاع" سے اسم فاعل ہے جو اتصال کی ضد ہے۔

اصطلاحًا...... جس حدیث کی سند متصل نہ ہو وہ منقطع ہے انقطاع کسی بھی وجہ سے ہو۔

## تعریف کی وضاحت:

یعنی جس سند میں انقطاع ہو وہ جس مقام پر بھی ہو چاہے انقطاع سند کے شروع سے ہو یا آخر سے یا درمیان میں سے وہ منقطع ہے۔

اس بنیاد پر مرسل، معلق اور معضل اس میں داخل ہیں لیکن متاخرین علمائے اصطلاحات نے منقطع کو ایسی تعریف کے ساتھ خاص کیا جس پر مرسل یا معلق یا معضل کی صورت صادق نہیں آتی متقدمین کا غالب استعمال بھی اسی طرح تھا۔

اسی لئے حضرت امام نووی رحمہ اللہ نے فرمایا:

منقطع کا اکثر استعمال اس شخص کی روایت پر ہوتا ہے جو تابعی سے نچلے درجہ میں

---

(۱)......تدریب الراوی ۱/۲۱۴

Marfat.com

ہو اور صحابی سے روایت کرے جس طرح حضرت مالک کی حضرت ابن عمر (رضی اللہ عنہما) سے روایت ہے۔(۱)

## متاخرین علماء حدیث کے نزدیک حدیث منقطع:

متاخرین علمائے حدیث کے نزدیک حدیث منقطع وہ حدیث ہے جس کی سند متصل نہ ہو اور اس پر مرسل یا معلق یا معضل کا نام بولا نہ جاتا ہو، گویا منقطع وہ عام نام ہے جو ان تینوں کے علاوہ ہر اس حدیث پر بولا جاتا ہے جس کی سند میں انقطاع ہو اور وہ سند کے شروع سے حذف ہو یا اس کے آخر سے حذف ہو یا دو راوی مسلسل محذوف ہوں جس جگہ سے بھی ہوں حضرت ابن حجر رحمہ اللہ نے نخبۃ الفکر اور اس کی شرح میں اسی بات کو اختیار کیا ہے۔(۲)

پھر بعض اوقات سند کے ایک مقام میں انقطاع ہوتا ہے اور کبھی ایک سے زیادہ جگہوں میں ہوتا ہے مثلاً دو جگہوں یا تین مقامات میں انقطاع ہوتا ہے۔

## مثال:

عبدالرزاق نے ثوری سے انہوں نے ابو اسحاق سے انہوں نے زید بن یثیع سے انہوں نے حضرت حذیفہ (رضی اللہ عنہ) سے مرفوعا روایت کیا:

ان ولیتموها ابابکر فقوی امین۔(۳)

ترجمہ: اگر تم اس بات کی نگرانی حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ کے سپرد کرو گے تو وہ مضبوط (اور) امانت دار ہیں۔

---

(۱)......التقریب مع التدریب ۲۰۸/۱
(۲)......نخبۃ الفکر مع شرح نخبہ ص:۴۳
(۳)......مجمع الزوائد ۱۷۶/۵

Marfat.com

اس سند کے درمیان سے ایک شخص ساقط ہوگیا اور وہ حضرت شریک ہیں یہ حضرت ثوری اور حضرت ابواسحاق کے درمیان سے ساقط ہوئے کیونکہ حضرت ثوری نے حضرت ابواسحٰق سے بالمشافہ حدیث نہیں سنی انہوں نے یہ حدیث حضرت شریک سے سنی ہے اور حضرت شریک نے حضرت ابواسحاق سے سنی ہے۔

اس انقطاع پر مرسل یا معلق یا معضل کا نام صادق نہیں آتا لہذا منقطع ہے۔

## حکم:

حدیث منقطع کے ضعیف ہونے پر علماء کرام کا اتفاق ہے اور اس کی وجہ محذوف راوی کی حالت کا مجہول ہونا ہے۔

## مدلّس:

تعریف...... لغوی اعتبار سے مدلَّس، تدلیس سے اسم مفعول کا صیغہ ہے اور لغت میں تدلیس، مشتری سے مبیع کا عیب چھپانا ہے اور اصل میں تدلیس، دَلَس سے مشتق ہے اور وہ اندھیرا ہے یا اندھیروں کا مل جل جانا ہے جس طرح قاموس میں ہے۔(۱)

گویا مُدَلِّس (تدلیس کرنیوالا) حدیث سے واقف شخص ہر اپنے معاملے کو اندھیرے میں رکھتا ہے پس اس کی حدیث کو مُدَلَّس کہا جاتا ہے۔

اصطلاحاً...... سند کے عیب کو چھپانا اور اس کے ظاہر کی تحسین کرنا (تدلیس ہے)

## اقسام تدلیس:

تدلیس کی دو بڑی قسمیں ہیں۔

(۱)......القاموس ۲۲۳/۲

Marfat.com

۱......تدلیس الاسناد۔ ۲......تدلیس الشیوخ۔

## تدلیس الاسناد:

علماء حدیث نے تدلیس کی اس قسم کی مختلف تعریفیں بیان کی ہیں۔ میں اسے اختیار کرتا ہوں جو میری نظر میں سب سے زیادہ اصح اور دقیق ترین ہے اور دو اماموں ابو احمد بن عمر والبزار اور ابوالحسن بن قطان (رحمہما اللہ) نے یہی تعریف کی ہے۔

وہ تعریف یہ ہے:

راوی اس شیخ سے روایت کرے جس سے اس کو احادیث کی سماعت حاصل ہے لیکن یہ حدیث اس سے نہیں سنی اور یہ بھی ذکر نہ کرے کہ اس نے اس سے سنی ہے (۱)

## تعریف کی وضاحت:

اس تعریف کا مفہوم یہ ہے کہ تدلیس الاسناد یہ ہے کہ کوئی راوی اس شیخ سے روایت کرے جس سے اس نے بعض احادیث سنی ہیں لیکن یہ حدیث جس میں تدلیس کی ہے اس سے نہیں سنی اس نے اسے کسی دوسرے شیخ سے سنا ہے جس کو اس نے حذف کر دیا اور ایسے الفاظ کے ساتھ روایت کی جس میں سماع اور غیر سماع دونوں کا احتمال ہے جس طرح لفظ "قال" یا لفظ "عن" تا کہ دوسرے آدمی کو وہم میں ڈالے کہ اس نے اس سے سنی ہے لیکن صراحت نہیں کرتا کہ اس نے اس سے یہ حدیث سنی ہے پس وہ سمعتُ (میں نے سنا) یا حدثنی (اس نے مجھ سے بیان کیا) نہیں کہتا تا کہ اس طرح وہ جھوٹا قرار نہ پائے۔

پھر جس راوی کو ساقط کیا وہ ایک یا اس سے زائد بھی ہو سکتے ہیں۔

---

(۱)......شرح الفیۃ العراقی ۱/۱۸۰

Marfat.com

## تدلیس الاسناد اور ارسال الخفی میں فرق:

حضرت ابوالحسن بن قطان نے سابق تعریف ذکر کرنے کے بعد فرمایا:
تدلیس الاسناد اور ارسال خفی میں فرق یہ ہے کہ ارسال اس سے روایت کرنا ہے جس سے سنا نہیں۔

اس کی وضاحت یہ ہے کہ مدلِّس اور ارسال خفی کرنے والا مرسِل دونوں ایسے شیخ سے روایت کرتے ہیں جس سے ان کو سماعت حاصل نہیں اور ایسے لفظ کے ساتھ روایت کرتے ہیں جس میں سماع اور غیر سماع دونوں کا احتمال ہے لیکن مدلِّس بعض اوقات اس شیخ سے اس مدلَّس حدیث کے علاوہ احادیث سنتا ہے لیکن ارسال خفی کرنے والا اس شیخ سے کبھی بھی نہیں سنتا نہ وہ احادیث جن میں ارسال کیا اور نہ ان کے علاوہ لیکن وہ اس شیخ کا ہم عصر ہوتا ہے یا اسے اس سے ملاقات حاصل ہوتی ہے۔

## مثال:

امام حاکم نے اپنی سند کے ساتھ علی بن خشرم سے روایت کیا (۱) وہ فرماتے ہیں ہم سے ابن عیینہ نے فرمایا انہوں نے حضرت زہری سے روایت کیا۔ ان سے پوچھا گیا کہ کیا آپ نے حضرت زہری سے سنا ہے؟ فرمایا نہیں اور نہ ہی اس سے سنا جس نے یہ حدیث حضرت زہری سے سنی مجھ سے حضرت عبدالرزاق نے بیان کیا انہوں نے حضرت معمر سے اور انہوں نے حضرت زہری سے روایت کیا تو اس مثال میں حضرت ابن عیینہ نے دو راویوں کو ساقط کیا جو ان کے اور حضرت زہری کے درمیان ہیں۔

---

(۱)......معرفۃ علوم الحدیث ص:۱۳۰

Marfat.com

## تدلیس التسویۃ:

تدلیس کی یہ قسم حقیقت میں تدلیس الاسناد کی اقسام میں سے ایک قسم ہے۔

تعریف...... یہ راوی کا اپنے شیخ سے روایت کرنا پھر دو ثقہ راویوں کے درمیان ضعیف راوی کو ساقط کرنا ہے جن دونوں نے ایک دوسرے سے ملاقات کی اس کی صورت یہ ہے۔

کوئی راوی کسی ثقہ شیخ سے حدیث روایت کرے اور وہ ثقہ ضعیف راوی سے اور وہ ضعیف، ثقہ راوی سے روایت کرے اور ان دونوں ثقہ نے ایک دوسرے سے ملاقات کی ہو۔

پس وہ مدلس جس نے پہلے ثقہ سے حدیث سنی تھی اس ضعیف کو ساقط کر دے جو سند میں ہے اور سند کو اپنے ثقہ شیخ سے بنا دے اور وہ دوسرے ثقہ سے ایسے لفظ کے ساتھ روایت کرے جس میں (سماعت اور غیر سماعت) دونوں کا احتمال ہو اس طرح وہ پوری سند کو برابر ثقہ راویوں سے روایت کرے۔

تدلیس کی یہ قسم بدترین قسم ہے کیونکہ پہلا ثقہ بعض اوقات تدلیس کے ساتھ مشہور نہیں ہوتا اور سند پر واقف شخص اسے تسویہ کے بعد اس طرح پاتا ہے کہ اس نے دوسرے ثقہ سے روایت کی پس اس پر صحت کا حکم لگاتا ہے اور اس میں بہت دھوکہ ہے۔

## اس تدلیس میں مشہور راوی:

ا...... بقیہ بن ولید۔ ابو مسہر کہتے ہیں:

"احادیث بقیہ لیست نقیۃ فکن منہا علی تقیۃ۔

Marfat.com

ترجمہ: بقیہ کی احادیث صاف نہیں لہذا تم ان سے بچو۔(۱)

۲......ولید بن مسلم

## مثال:

ابن ابی حاتم نے "العلل" میں حدیث روایت کی:

قال سمعت ابی ۔(میں نے اپنے باپ سے سنا)۔

اور وہ حدیث ذکر کی جسے اسحاق بن راھویہ نے بقیہ سے روایت کیا وہ کہتے ہیں مجھ سے ابووہب اسدی نے بیان کیا وہ حضرت نافع سے اور وہ حضرت ابن عمر (رضی اللہ عنہما) سے یہ حدیث روایت کرتے ہیں:

لا تحمدوا اسلام المرء حتی تعرفوا عقدۃ رایہ۔

کسی انسان کے اسلام کی تعریف نہ کرو جب تک اس کی رائے کی گرہ معلوم نہ کرلو۔

فرماتے ہیں میرے والد کہتے ہیں اس حدیث کو سمجھنے والے لوگ بہت کم ہیں اس حدیث کو عبید اللہ بن عمرو نے، اسحاق بن ابی فروہ سے انہوں نے حضرت نافع سے انہوں نے حضرت ابن عمر (رضی اللہ عنہما) سے اور انہوں نے نبی اکرم ﷺ سے روایت کی ہے۔ اس میں عبید اللہ بن عمرو ثقہ ہیں اور اسحاق بن ابی فروہ ضعیف ہیں۔

عبید اللہ بن عمرو (ثقہ راوی) کی کنیت ابووہب ہے اور وہ اسدی ہیں تو بقیہ نے ان کی کنیت بیان کی اور بنو اسد کی طرف منسوب کیا تاکہ اسے کوئی سمجھ نہ سکے۔ یہاں تک کہ جب وہ درمیان میں سے اسحاق بن ابی فروہ کو چھوڑ دے گا تو اس تک رسائی نہ ہوسکے گی۔(۲)

---

(۱)......میزان الاعتدال ۳۳۲/۱

(۲)......شرح الفیہ عراقی ۱۹۰/۱ ......التدریب ۲۲۵/۱

Marfat.com

## تدلیس شیوخ:

تدلیس شیوخ یہ ہے کہ کوئی راوی کسی شیخ سے ایسی حدیث روایت کرے جو اس نے اس شیخ سے سنی ہے پھر وہ اس کا نام لے یا کنیت ذکر کرے یا نسبت یا ایسا وصف بیان کرے جس کے ساتھ وہ معروف نہ ہوتا کہ وہ معروف ہو جائے۔(۱)

## مثال:

ابوبکر بن مجاہد جو ائمہ قراء میں سے ایک ہیں ان کا قول:

حدثنا عبدالله بن ابی عبدالله، اور وہ اس سے ابوبکر بن ابوداؤد سجستانی مراد لیتے ہیں۔

## تدلیس کا حکم:

۱......تدلیس اسناد بہت مکروہ ہے اکثر علماء نے اس کی مذمت کی ہے اور حضرت شعبہ ان میں سے سب سے زیادہ مذمت کرنے والے ہیں اس سلسلے میں ان کے کئی اقوال ہیں جن میں سے ایک یہ ہے۔

"التدليس اخو الكذب" (تدلیس جھوٹ کا بھائی ہے)

۲......تدليس التسويه...... یہ تدلیس اسناد سے بھی زیادہ ناپسندیدہ ہے حتی کہ عراقی نے کہا: انه قادح فيمن تعمد فعله" جو شخص جان بوجھ کر اس کا ارتکاب کرے تو یہ اس میں عیب کا سبب ہے۔

تدلیس الشیوخ......اس کی کراہت، تدلیس اسناد کی کراہت سے ہلکی اور کم ہے

---

(۱)......علوم الحدیث ص:۶۶

Marfat.com

کیونکہ مدلِّس کسی راوی کو ساقط نہیں کرتا اس میں کراہت اس سے مروی حدیث کے ضائع کرنے اور سامع پر اس کی معرفت کے راستے کو دشوار کرنے کے سبب سے ہوتی ہے اور تدلیس پر ابھارنے والی غرض کے اعتبار سے اس کی کراہت کا حال مختلف ہوتا ہے۔

## تدلیس پر ابھارنے والی اغراض:

الف......تدلیس شیوخ پر ابھارنے والی اغراض چار ہیں۔

۱......شیخ کا ضعیف یا غیر ثقہ ہونا۔

۲......اس کی وفات میں تاخیر جس وجہ سے اس سے سماعت میں اس (مدلِّس) کے ساتھ کم درجہ کی جماعت کا شریک ہونا۔

۳......اس (شیخ) کا روایت کرنے والے راوی سے کم عمر ہونا۔

۴......اس سے زیادہ روایات بیان کرتا ہے اس لئے ایک ہی صورت میں اس کے نام کو بار بار ذکر کرنا پسند نہیں کرتا۔

ب......تدلیس اسناد پر ابھارنے والی اغراض پانچ ہیں جو درج ذیل ہیں:

۱......سند کے عالی ہونے کا وہم ڈالنا۔

۲......شیخ سے طویل حدیث سنی اور اس میں سے کچھ حصہ فوت ہو گیا۔

۳، ۴، ۵......تدلیس شیوخ کے سلسلہ میں بیان کردہ پہلی تین اغراض۔

## مدلِّس کی مذمت کے اسباب:

مدلِّس کی مذمت کے درج ذیل تین اسباب ہیں۔

۱......جس سے حدیث نہیں سنی اس سے سننے کا وہم ڈالنا۔

۲......واضح بات سے احتمال کی طرف پھر جانا۔

۳......وہ جانتا ہے کہ اگر اس راوی کا نام لے گا جس سے تدلیس کر رہا ہے تو یہ پسندیدہ نہ ہوگا۔(۱)

## مدلّس کی روایت کا حکم:

مدلّس کی روایت کو قبول کرنے کے بارے میں علماء کے مختلف اقوال ہیں۔جن میں سے دو مشہور ہیں۔

۱......مدلّس کی روایت کو مطلقاً رد کر دیا جائے اگرچہ سماع کی وضاحت کرے کیونکہ تدلیس ذاتی طور پر جرح ہے(یہ قول غیر معتبر ہے)

۲......اس میں تفصیل ہے اور یہی بات صحیح ہے۔

۱......اگر وہ سماعت کا ذکر واضح طور پر کرے تو اس کی روایت کو قبول کیا جائے یعنی وہ "سمعت" وغیرہ کہے تو اس کی حدیث قبول کی جائے۔

۲......اور اگر وہ صراحتاً سماعت کا ذکر نہ کرے تو اس کی حدیث کو قبول نہ کیا جائے یعنی اگر وہ "عن" وغیرہ کے ساتھ ذکر کرے تو اس کی حدیث قبول نہ کی جائے۔(۲)

## تدلیس کی پہچان کس بات سے ہوگی؟:

تدلیس دو باتوں میں سے ایک کے ساتھ جانی جاتی ہے۔

۱......مدلّس خود بتائے مثلاً جب اس سے پوچھا جائے جس طرح ابن عیینہ کا طریقہ تھا۔

---

(۱)......الکفایۃ ص:۳۵۸

(۲)......علوم الحدیث ص:۶۷،۶۸

۲......اس فن کے ائمہ میں سے کوئی امام اس بنیاد پر وضاحت کرے کہ وہ بحث وتحقیق کی وجہ سے اس کی معرفت رکھتا ہے۔

## تدلیس اور مدلِّس کے بارے میں مشہورترین تصنیفات:

تدلیس اور مدلِّسین کے بارے میں کثیر تصانیف ہیں جن میں زیادہ مشہور درج ذیل ہیں:

الف......خطیب بغدادی کی تین تصانیف ہیں ایک مدلِّسین کے ناموں کے بارے میں ہے، اس کا نام "التبیین لاسماء المدلِّسین "(۱)

اور دوسری دو تدلیس کی انواع میں سے کسی ایک ایک نوع سے متعلق ہیں(۲)

ب......"التبیین لاسماء المدلِّسین" یہ کتاب برہان الدین حلبی کی ہے اور یہ مطبوعہ ہے۔

ج......"تعریف اھل التقدیس بمراتب الموصوفین بالتدلیس" یہ کتاب حافظ ابن حجر کی تصنیف ہے اور یہ بھی چھپ چکی ہے۔

## مرسل خفی:

تعریف...... مرسل لفظ ارسال سے اسم مفعول ہے جس کا معنی چھوڑنا ہے۔ گویا مُرسِل سند کو اتصال کے بغیر چھوڑ دیتا ہے اور خفی جلی کی ضد ہے کیونکہ ارسال کی یہ نوع ظاہر نہیں ہے پس بحث کے بغیر اس کا ادارک نہیں ہوتا۔

اصطلاحاً...... کوئی راوی اس شخص سے جس سے اس کی ملاقات ہے یا وہ اس

(۱)......الکفایۃ ص:۳۶۱

(۲)......الکفایۃ ص:۳۵۷

Marfat.com

کا ہم عصر ہے کوئی حدیث جسے اس سے سنا نہیں ایسے الفاظ کے ساتھ روایت کرے جس میں سماع اور غیر سماع دونوں کا احتمال ہے جیسے .قَالَ

## مثال:

ابن ماجہ نے عمر بن عبدالعزیز کے طریق سے روایت کیا وہ حضرت عقبہ بن عامر رضی اللہ عنہ سے مرفوعاً روایت کرتے ہیں (یعنی حضور علیہ السلام نے فرمایا)

رحم اللہ حارس الحرس۔(۱)

مسلمان کی چوکیداری کرنے والوں پر اللہ تعالیٰ رحم فرمائے۔

تو حضرت عمر بن عبدالعزیز نے حضرت عقبہ بن عامر سے ملاقات نہیں کی جس طرح امام المزی نے "الاطراف" میں بیان کیا ہے۔

## مرسل خفی کی پہچان کیسے ہو؟

مرسل خفی کی پہچان درج ذیل تین طریقوں میں سے کسی ایک طریقے سے ہوئی ہے۔

الف...... بعض ائمہ وضاحت کریں کہ اس راوی کی اس شیخ سے ملاقات نہیں ہے جس سے یہ روایت کر رہا ہے یا یہ کہ اس نے اس سے مطلقاً کچھ نہیں سنا۔

ب...... وہ خود بتائے کہ اسے اس شیخ سے ملاقات حاصل نہیں جس سے روایت کر رہا ہے یا اس نے اُس سے کچھ نہیں سنا۔

ج...... یہ حدیث کسی دوسرے طریق سے بھی مروی ہو جس میں اس راوی

(۱)...... سنن ابن ماجہ کتاب الجہاد رقم الحدیث:۹۲۵

Marfat.com

اور مروی عنہ کے درمیان کسی راوی کا اضافہ ہو۔

اس تیسری صورت کے بارے میں علماء کا اختلاف ہے کیونکہ بعض اوقات اس نوع کا تعلق "المزید فی متصل الاسانید" سے ہوتا ہے (یعنی متصل الاسانید میں راوی کا اضافہ)

## حکم:

یہ حدیث (مرسل خفی) ضعیف ہے کیونکہ یہ منقطع کی ایک قسم ہے پس جب اس کا انقطاع ظاہر ہوا تو اس کا حکم وہی ہے جو منقطع کا ہے۔

## اس میں مشہور تصانیف:

مرسل خفی کے بارے میں مشہور ترین کتاب خطیب بغدادی کی تصنیف "کتاب التفصیل لمبہم المراسیل" ہے

## المعنعن اور المؤنَّن:

تمہید...... مردود حدیث کی ان چھ اقسام کا بیان مکمل ہو گیا جن کے رد کا سبب سند میں سے (راوی یا راویوں کا) سقوط ہے لیکن جب معنعن اور مؤنّن میں اختلاف ہے تو کیا یہ دونوں بھی منقطع یا متصل کی ایک قسم ہیں؟ تو اس وجہ سے میں نے اس مردود کے ساتھ ان کا الحاق مناسب سمجھا جن کے رد کا سبب سند میں راوی کا سقوط ہے۔

## معنعن کی تعریف:

یہ لفظ "معنعن" سے اسم مفعول ہے اور اس کا لغوی معنی ہے "عن، عن" کہا۔

اصطلاحاً...... راوی کا یہ قول "فلاں عن فلاں" معنعن ہے۔

Marfat.com

## مثال:

ابن ماجہ نے روایت کرتے ہوئے فرمایا:

حدثنا عثمان بن ابی شیبة ثنا معاویة بن هشام حدثنا سفیان عن اسامة بن زید عن عثمان بن عروة عن عروة عن عائشة (رضی اللہ عنهم)قالت قال رسول اللہ ﷺ ان اللہ وملائکته یصلون علی میامن الصفوف۔(۱)

ترجمہ: رسول اکرم ﷺ نے فرمایا: بے شک اللہ تعالیٰ اور اس کے فرشتے صفوں کی دائیں جانب کھڑے ہونے والوں پر رحمت بھیجتے اور رحمت کی دعا کرتے ہیں۔ (اللہ تعالیٰ رحمت بھیجتا ہے اور فرشتے رحمت کی دعا کرتے ہیں)

## کیا یہ متصل ہے یا منقطع؟

حدیث معنعن کے بارے میں علماء کرام کے دو قول ہیں:

الف...... یہ منقطع ہوگی جب تک اس کا اتصال واضح نہ ہو جائے۔

ب...... صحیح قول جس پر عمل ہے اور جمہور علماء حدیث، فقہاء اور اصولیین فرماتے ہیں کہ یہ حدیث کچھ شرائط کے ساتھ متصل ہے جن میں دو شرطوں پر اتفاق ہے اور باقی میں اختلاف ہے۔

جن شرائط کے بارے میں اتفاق ہے کہ ان کا پایا جانا ضروری ہے اور امام مسلم نے ان دو پر ہی اکتفاء کیا ہے، یہ ہیں:

(۱)...... سنن ابن ماجہ    کتاب اقامۃ الصلوٰۃ، والسنۃ فیہا    رقم الحدیث:۱۰۰۵

Marfat.com

ا......معنعِن (اسم فاعل) مُدلِّس نہ ہو۔

۲......بعض کی بعض سے ملاقات ممکن ہو یعنی معنعن کی ملاقات اس سے جس سے وہ عنعن کر رہا ہے۔

اور جن شرائط میں اختلاف ہے اور وہ ان پہلی دو شرطوں سے زائد ہیں وہ درج ذیل ہیں۔

ا......ملاقات کا ثبوت۔ یہ امام بخاری، ابن مدینی اور دیگر محققین کا قول ہے۔

۲......طویل صحبت۔ یہ ابو مظفر سمعانی کا قول ہے۔

۳......وہ اس سے روایت کرنے میں معروف ہو، یہ ابوعمرو الدانی کا قول ہے۔

## مؤنّن کی تعریف:

لغت کے اعتبار سے یہ اَنَّ سے بنا ہے اور اس کا معنی ہے فلاں نے اَنَّ اَنَّ کہا۔

اصطلاحًا......راوی کا یہ کہنا کہ "حدثنا فلان ان فلانا قال" مؤنّن ہے۔

## مؤنّن کا حکم:

الف......حضرت امام احمد رحمہ اللہ اور ایک جماعت نے فرمایا کہ یہ منقطع ہے جب تک اس کا اتصال واضح نہ ہو۔

ب......جمہور فرماتے ہیں: اَنَّ عَنْ کی طرح ہے اور یہ مطلق ہو تو گزشتہ شرائط کے ساتھ سماع پر محمول ہوگی۔

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

## تیسری بحث......

# راوی پر طعن کے سبب مردود

## راوی پر طعن سے مراد:

راوی پر طعن سے مراد یہ ہے کہ کوئی زبان سے اس پر جرح کرے اور اس کی عدالت (عادل ہونے) اور اس کے دین نیز اس کے ضبط اور حفظ اور بیدار مغز ہونے کے بارے میں گفتگو (جرح) کرنا۔

## راوی پر طعن کے اسباب:

راوی پر طعن کے دس اسباب ہیں جن میں سے پانچ کا تعلق عدالت سے اور پانچ کا تعلق ضبط سے ہے۔

الف......عدالت سے متعلق طعن کے اسباب:

۱......جھوٹ۔۲......جھوٹ کی تہمت۔۳......فسق۔۴......بدعت۔

۵......جہالت

ب......ضبط سے متعلق طعن کے اسباب:

۱......کثرت سے غلطی کرنا۔۲......حافظہ کی کمزوری۔۳......غفلت۔۴......وہم کی کثرت۔۵......ثقہ راویوں کی مخالفت۔

اب میں اس حدیث کی اقسام ترتیب سے ذکر کرتا ہوں، جو ان اسباب میں سے کسی سبب سے مردود ہوتی ہے اور اس سے ابتداء کرتا ہوں جو طعن میں سب سے زیادہ سخت ہے۔

Marfat.com

## موضوع:

جب راوی پر طعن، رسول اکرم ﷺ کی طرف جھوٹی باتیں منسوب کرنے کے سبب سے ہو تو اس کی حدیث کو موضوع کہا جاتا ہے۔

## تعریف:

لغوی اعتبار سے یہ اسم مفعول ہے جو "وضع الشئ" کسی چیز کو نیچے رکھنا (گرانا) ہے اور اس کا یہ نام اس لئے ہے کہ اس کا رتبہ گرا ہوا ہے۔

اصطلاحاً...... وہ جھوٹ جو من گھڑت ہے اور رسول اکرم ﷺ کی طرف منسوب کیا گیا۔

## مرتبہ:

موضوع حدیث، ضعیف احادیث میں سے بدترین اور قبیح تر ہے اور بعض علماء نے اسے ایک مستقل قسم قرار دیا ہے اور ضعیف احادیث کی نوع قرار نہیں دیا۔

## اس کی روایت کا حکم:

اس بات پر علماء کا اتفاق ہے کہ کسی شخص کے لئے اس کی روایت جائز نہیں جو اس کی حالت کو جانتا ہے وہ جس معنی میں بھی ہو البتہ اس کے موضوع ہونے کو بیان کرے تو روایت کر سکتا ہے۔ کیونکہ مسلم شریف کی حدیث ہے رسول اکرم ﷺ نے فرمایا:

من حدث عنی بحدیث یری انہ کذب فھو احد الکاذبین۔(۱)

(۱)...... صحیح مسلم (مقدمہ) قدیمی کتب خانہ کراچی ۶/۱

Marfat.com

ترجمہ: جو شخص مجھ سے منسوب ایسی حدیث روایت کرے جس کے بارے میں وہ جانتا ہے کہ یہ جھوٹ ہے تو وہ جھوٹوں میں سے ایک ہے۔

## حدیث گھڑنے میں وضاعین کے طریقے:

الف......یا تو وضاع (جھوٹی حدیث بنانے والا) اپنی طرف سے کلام بناتا ہے پھر اس کے لئے سند بنا کر اسے روایت کرتا ہے۔

ب......یا بعض دانشمندوں وغیرہ کا کلام لے کر اس کے لئے سند بناتا ہے۔

## موضوع حدیث کی پہچان کیسے ہوتی ہے؟

موضوع حدیث کی پہچان کچھ امور سے ہوتی ہے ان میں سے چند یہ ہیں:

الف......واضع، وضع کا اقرار کرے۔

جس طرح ابو عصمہ نوح بن ابی مریم نے اقرار کیا کہ اس نے ایک ایک سورت کے فضائل کے لئے حدیث گھڑی اور اسے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے نقل کرتا ہے۔

ب......جو بات اقرار کے قائم مقام ہو۔

گویا وہ کسی شیخ سے روایت کرتے ہوئے بیان کرے اور جب اس سے اس کی ولادت کے بارے میں پوچھا جائے تو ایسی تاریخ بیان کرے کہ اس کی ولادت سے پہلے اس شیخ کی وفات ہو چکی ہو اور یہ حدیث صرف اسی کے پاس معروف ہو۔

ج......راوی میں قرینہ کا پایا جانا۔

جیسے راوی رافضی ہو اور حدیث اہل بیت کے فضائل میں ہو۔

د......مروی میں قرینہ پایا جائے۔

جیسے مروی حدیث میں گھٹیا الفاظ ہوں یا وہ عقل یا صریح قرآن کے خلاف ہو۔

Marfat.com

## وضع کی وجوہات اور وضاعین کی اقسام:

ا...... اللہ تعالیٰ کا قرب مقصود ہو۔

یعنی وہ حدیث گھڑ کر اس کے ذریعے لوگوں کو نیک اعمال کی ترغیب دے اور کچھ ایسی احادیث (گھڑے) جن کے ذریعے لوگوں کو برے کاموں سے ڈرائے اور یہ وضاعین زہد اور نیکی کی طرف منسوب ہیں۔ حالانکہ وہ بدتر وضاع ہیں کیونکہ لوگ ان کا اعتبار کر کے ان کی موضوع احادیث کو قبول کرتے ہیں۔

ان لوگوں میں میسرہ بن عبدربہ ہے ابن حبان نے الضعفاء (کتاب) میں ابن مہدی سے نقل کیا وہ لکھتے ہیں: میں نے میسرہ بن عبدربہ سے پوچھا کہ تم یہ احادیث کہاں سے لائے ہو کہ جس نے فلاں (وظیفہ وغیرہ) پڑھا اس کے لئے اس قدر ثواب ہے؟ اس نے کہا میں نے لوگوں کو ترغیب دینے کے لئے یہ احادیث گھڑی ہیں۔(۱)

ب...... مذہب کی مدد کرنا

خاص طور پر سیاسی جماعتوں کی مدد کرنا جب فتنہ ظاہر ہو گیا اور سیاسی فرقے ظاہر ہوئے جیسے خوارج اور شیعہ۔ ہر فرقے نے ایسی احادیث وضع کیں جو اُن کے مذہب کی تائید کرتی ہیں جیسے یہ موضوع حدیث "علی خیر البشر من شك فیه کفر" (حضرت علی رضی اللہ عنہ تمام انسانوں سے بہتر ہیں جو اس بات میں شک کرے وہ کافر ہے)

ج...... اسلام پر طعن کرنا۔

یہ لوگ زندیقوں میں سے تھے وہ اسلام کے خلاف کھلم کھلا مکر و فریب نہ کر سکے

(۱)...... تدریب الراوی ۲۸۳/۱

Marfat.com

تو انہوں نے یہ خبیث طریقہ اختیار کیا چنانچہ انہوں نے اسلام کو بری شکل دینے اور اس پر طعن کرنے کے لئے کچھ احادیث بنائیں۔

ان لوگوں میں محمد بن سعید شامی تھا جسے بے دینی کی وجہ سے پھانسی دی گئی تھی اس نے بواسطہ حمید، حضرت انس رضی اللہ عنہ سے مرفوع حدیث روایت کی۔

انا خاتم النبیین لا نبی بعدی الا ان یشاء اللہ۔(۱)

ترجمہ: میں خاتم النبیین ہوں میرے بعد کوئی نبی نہیں مگر یہ کہ اللہ تعالیٰ چاہے۔

لیکن ماہرین حدیث نے ان احادیث کی حقیقت کو واضح کر دیا پس اللہ تعالیٰ کے لئے تمام تعریفیں اور اس کا احسان ہے۔

## و......حکمرانوں کا قرب حاصل کرنے کے لئے:

یعنی بعض کمزور ایمان والوں نے ایسی احادیث گھڑنے کے ذریعے حکمرانوں کا قرب حاصل کیا جو حکمران کے (دین سے) انحراف سے مناسبت رکھتی ہیں جیسے غیاث بن ابراہیم نخعی کوفی کا امیر المؤمنین مہدی کے ساتھ پیش آمدہ واقعہ ہے جب وہ اس کے پاس گیا اور وہ کبوتر کے ساتھ کھیل رہا تھا تو اس نے نبی اکرم ﷺ تک تسلسل کے ساتھ سند کے ذریعے بیان کیا کہ آپ ﷺ نے فرمایا:

لا سبق الا فی نصل او خف او حافر او جناح۔(۲)

ترجمہ: (مقابلہ نہیں مگر تیر اندازی، اونٹ دوڑانے اور گھوڑے دوڑانے اور کبوتر بازی میں)

جناح سے مراد کبوتر بازی ہے اور حدیث میں یہ نہیں ہے۔

(۱)......تدریب الراوی ۱/۲۸۴

(۲)......اصل حدیث میں جناح کا لفظ نہیں دیکھیے مشکوٰۃ المصابیح باب اعداد آلۃ الجہاد ص: ۳۳۷

Marfat.com

تو اس میں اس نے مہدی کی وجہ سے "او جناح" کا حکم بڑھایا مہدی سمجھ گیا اور اس نے کبوتر کو ذبح کرنے کا حکم دیا اور کہا گویا میں نے اسے اس اضافہ پر ابھارا ہے۔

## ھ......کمائی اور حصول رزق کے لئے:

جس طرح بعض قصہ گو (واعظین وغیرہ) لوگوں کے سامنے بیان کر کے پیسے بٹورتے ہیں اور وہ ان کو تسلی بخش اور عجیب و غریب قصے سناتے ہیں جن کو لوگ بڑے غور سے سن کر انہیں پیسے دیتے ہیں جس طرح ابو سعید مدائنی کرتے تھے۔

## ز......شہرت مقصود ہو:

ایسی عجیب احادیث لانا جو شیوخ حدیث میں سے کسی کے پاس نہیں پائی جاتیں یہ لوگ سند کو پلٹ دیتے ہیں تا کہ عجیب بن جائے اور اس کے سننے میں رغبت ہو جیسے ابن ابی دحیہ اور حماد نصیبی کرتے تھے۔(۱)

## وضع حدیث کے بارے میں کرامیہ کا مذہب:

بدعتی فرقوں میں سے ایک فرقہ جن کو کرامیہ کہا جاتا ہے کے نزدیک صرف ترغیب وترہیب کی غرض سے احادیث گھڑنا جائز ہے اور انہوں نے اس حدیث "من کذب علی متعمدا" میں اس جملہ کے اضافہ "لیضل الناس" سے استدلال کیا (یعنی جو شخص مجھ سے جھوٹی حدیث منسوب کرے تا کہ لوگوں کو گمراہ کرے) لیکن حفاظ حدیث کے ہاں یہ جملہ (لیضل الناس) ثابت نہیں۔

ان میں سے بعض نے یہ بھی کہا کہ ہم تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے حق میں

(۱)......تدریب الراوی ص:۲۸۶

Marfat.com

جھوٹ بولتے ہیں آپ کے خلاف نہیں، تو یہ استدلال نہایت کمزور اور ردی ہے کیونکہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی شریعت جھوٹوں کی محتاج نہیں کہ وہ اس کو رواج دیں۔

اور یہ وہم مسلمانوں کے اجماع کے خلاف ہے حتی کہ شیخ ابومحمد جوینی نے اس حد تک مبالغہ کیا کہ انہوں نے احادیث گھڑنے والے کو قطعی طور پر کافر قرار دیا۔

## موضوع احادیث ذکر کرنے میں بعض مفسرین کی خطاء:

بعض مفسرین سے خطا واقع ہوئی کہ انہوں نے اپنی تفاسیر میں موضوع احادیث بیان کیں اور ان کے موضوع ہونے کو واضح نہیں کیا۔ خصوصا وہ حدیث جو ایک ایک سورت کے حوالے سے فضائل قرآن میں حضرت ابی بن کعب رضی اللہ عنہ سے مروی ہے۔

ان مفسرین میں سے چند نام یہ ہیں:

الف...... الثعلبی۔ ب...... الواحدی۔ ج...... الزمخشری۔ د...... البیضاوی۔

ھ...... الشوکانی۔

## موضوع احادیث کے بارے میں چند مشہور تصانیف:

الف...... کتاب الموضوعات یہ ابن جوزی کی کتاب ہے اور اس فن میں تصنیف کی گئی کتب میں سے یہ سب سے مقدم ہے لیکن ابن جوزی نے حدیث پر وضع کا حکم لگانے میں سستی اختیار کی ہے اسی لئے علماء نے ان پر تنقید کی اور ان کا تعاقب کیا۔

ب...... اللآلی المصنوعة فی الاحادیث الموضوعة: یہ امام سیوطی رحمہ اللہ

کی تصنیف ہے اور ابن جوزی کی کتاب کا خلاصہ اور اس کا تعاقب ہے اور کچھ اضافہ ہے جسے ابن جوزی نے ذکر نہیں کیا۔

ج......تنزیہ الشریعة المرفوعة عن الاحادیث الشنیعة الموضوعة۔ یہ ابن عراق کنانی کی تصنیف ہے اور یہ پہلی دو کتابوں کی تلخیص ہے جو جامع مہذب اور مفید کتاب ہے۔

## حدیث متروک:

جب راوی پر طعن کا ایک سبب جھوٹ کی تہمت ہے اور وہ دوسرا سبب ہے تو اس کی روایت کا نام متروک رکھا گیا۔

### ا......تعریف:

الف......لغوی اعتبار سے یہ لفظ "ترک" سے اسم مفعول ہے اور جب انڈے سے چوزا نکل آئے تو اہل عرب اس انڈے کو "التریکه" کہتے ہیں یعنی چھوڑ دیا گیا جس کا کوئی فائدہ نہیں۔(۱)

ب......اصطلاحاً......حدیث متروک اس حدیث کو کہتے ہیں جس کی سند میں ایسا راوی ہو جس پر جھوٹ کی تہمت ہے۔

### ۲......راوی پر جھوٹ کی تہمت کے اسباب:

راوی پر جھوٹ کی تہمت دو باتوں میں سے ایک کی وجہ سے ہوتی ہے اور وہ درج ذیل ہیں۔

(۱)......القاموس ۳۰۶/۳

Marfat.com

الف...... یہ حدیث صرف اسی (راوی) کی جہت سے مروی ہو اور قواعد معلومہ کے خلاف ہو۔

ب...... وہ اپنی عام گفتگو میں جھوٹا مشہور ہو لیکن حدیث نبوی میں اس سے جھوٹ ظاہر نہ ہو۔

۳...... مثال:

عمرو بن شمر الجعفی کوفی شیعی نے حضرت جابر سے انہوں نے ابوالطفیل سے ورانہوں نے حضرت علی اور حضرت عمار (رضی اللہ عنہم) سے روایت کیا وہ دونوں فرماتے ہیں:

كان النبي ﷺ يقنت في الفجر ويكبر يوم عرفة من صلاة الغداة ويقطع صلاة العصر آخر ايام التشريق۔

ترجمہ: نبی اکرم ﷺ فجر کی نماز میں قنوت پڑھتے تھے اور عرفہ (نو ذوالحج) کی نماز فجر سے (تکبیرات تشریق) شروع کرتے اور ایام تشریق کے آخری دن نماز عصر کے بعد ختم کر دیتے۔

امام نسائی، دارقطنی اور ان کے علاوہ محدثین نے عمرو بن شمر کو متروک الحدیث قرار دیا ہے۔(۱)

۴...... حدیث متروک کا مقام:

یہ بات بیان ہو چکی ہے کہ حدیث ضعیف میں سب سے بری قسم موضوع ہے پھر متروک پھر منکر، پھر معلل، پھر مدرج پھر مقلوب اور پھر مضطرب۔

(۱) میزان الاعتدال ۲۶۸/۳

Marfat.com

حضرت حافظ ابن حجر عسقلانی رحمہ اللہ نے اسی ترتیب سے ذکر فرمایا(۱)

حدیث منکر:

جب راوی میں طعن کا سبب غلطی کا زیادہ ہونا یا کثرت غفلت یا فسق ہو اور وہ تیسرا ، چوتھا اور پانچواں سبب ہے تو اس کی حدیث کو منکر کہا جاتا ہے۔

الف...... تعریف: لغوی اعتبار سے یہ لفظ ''انکار'' سے اسم مفعول ہے اور یہ اقرار کی ضد ہے۔

ب...... اصطلاحاً...... علماء کرام نے حدیث منکر کی متعدد تعریفات کی ہیں۔ ان میں سے زیادہ مشہور دو تعریفیں ہیں جو درج ذیل ہیں۔

ا...... ایسی حدیث جس کی سند میں ایسا راوی ہو جو کثرت سے غلطی کرتا ہو یا اس کی غفلت زیادہ ہو یا اس کا فسق ظاہر ہو۔

اس تعریف کو حافظ ابن حجر نے ذکر کیا اور کسی اور کی طرف منسوب کیا (۲) البیقونی نے اپنے منظوم کلام میں اسی تعریف کو اختیار کیا وہ لکھتے ہیں۔

ومنکر انفرد بہ راو غدا...... تعدیلہ لا یحمل التفردا

۲...... وہ حدیث جسے ضعیف راوی، ثقہ راوی (کی روایت) کے خلاف روایت کرے۔

حافظ ابن حجر نے اس تعریف کو ذکر کرکے اس پر اعتماد کیا اور پہلی تعریف کے مقابلے میں اس میں اضافہ ہے اور وہ ضعیف کی روایت کا ثقہ کی روایت کی مخالفت ہے۔

---

(۱)...... تدریب ۱/۲۹۵ شرح نخبۃ الفکر ص:۳۶

(۲)...... نخبۃ الفکر اور اس کی شرح ص:۴۷

Marfat.com

## منکر اور شاذ میں فرق:

الف......شاذ وہ ہے جسے مقبول راوی (۱) روایت کرے اور وہ اولیٰ کے خلاف ہو۔

ب......اور منکر وہ ہے جسے ضعیف راوی روایت کرے اور وہ ثقہ کے مخالف ہو۔

اس سے معلوم ہوا کہ مخالفت کے معاملہ میں یہ دونوں مشترک ہیں اور اس بات میں مختلف ہیں کہ شاذ، مقبول کی روایت ہے اور منکر کا راوی ضعیف ہوتا ہے۔

حضرت ابن حجر فرماتے ہیں۔ جو لوگ ان دونوں کو برابر قرار دیتے ہیں وہ غفلت کا شکار ہیں۔(۲)

## پہلی تعریف کی مثال:

پہلی تعریف کی مثال وہ حدیث جسے امام نسائی اور ابن ماجہ نے ابن یحییٰ بن محمد بن قیس کی روایت سے نقل کیا وہ ہشام بن عروہ سے وہ اپنے والد سے اور وہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے مرفوعاً روایت کرتے ہیں۔ (یعنی حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا)

كلوا البلح بالتمر فان ابن أدم اذا اكله غضب الشيطان

ترجمہ: تم کچی کھجور خشک کھجور کے ساتھ کھاؤ انسان جب اسے کھاتا ہے تو شیطان کو غصہ آتا ہے۔(۳)

---

(۱)...... یہاں مقبول راوی۔ سے مراد وہ راوی ہے جو صحیح اور حسن کا راوی ہو یعنی عادل اور تام الضبط یا عادل ہو اور ضبط میں کمی ہو۔

(۲)......شرح نخبۃ الفکر ص:۳۷

(۳)......شروع میں کھجور طلع کہلاتی ہے پھر خلال پھر بلح پھر بُسر اس کے بعد رُطب اور پھر تمر (یہ کھجور کے مختلف مراحل میں نام ہیں) ۱۲ ہزاروی

Marfat.com

امام نسائی فرماتے ہیں یہ حدیث منکر ہے اور ابو زُکیر اس میں متفرد ہیں اور وہ صالح شیخ ہیں۔

امام مسلم نے ان کی حدیث متابعات میں ذکر کی لیکن یہ اس مقام تک نہیں پہنچے کہ ان کی متفرد حدیث قبول ہو۔(۱)

## دوسری تعریف کی مثال:

ابن ابی حاتم نے حبیب بن حبیب زیات سے انہوں نے ابی اسحاق سے اور انہوں نے عَیزار بن حُریث سے انہوں نے حضرت ابن عباس (رضی اللہ عنہما) سے روایت کی اور وہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا:

**من اقام الصلوٰة واتی الزکوٰة وحج البیت وقری الضیف دخل الجنة۔**

ترجمہ: جس نے نماز قائم کی اور زکوٰۃ ادا کی اور بیت اللہ شریف کا حج ادا کیا اور مہمان کی مہمان نوازی کی وہ جنت میں داخل ہوگا۔

ابن ابی حاتم کہتے ہیں یہ منکر حدیث ہے کیونکہ دوسرے ثقہ راویوں نے اسے ابو اسحاق سے موقوف روایت کیا ہے اور وہ معروف حدیث ہے۔

## حدیث منکر کا مرتبہ:

حدیث منکر کی جو دو تعریفیں ابھی گزری ہیں ان سے واضح ہوتا ہے کہ منکر انتہائی ضعیف احادیث کی اقسام میں سے ہے کیونکہ یا تو یہ ایسے ضعیف راوی کی روایت ہوگی جو بہت زیادہ خطا یا کثرت غفلت یا فسق سے موصوف ہے یا ایسے ضعیف راوی کی

---

(۱)......التدریب ۱/۲۴۰

Marfat.com

روایت ہوگی جو اس روایت میں ثقہ راویوں کی مخالفت کرتا ہے اوران دونوں قسموں میں شدید ضعف ہے۔اسی لئے متروک کی بحث میں یہ بات گزرگئی ہے کہ متروک کے مقام کے بعد شدید ضعف منکر حدیث میں ہوتا ہے۔

## معروف حدیث:

تعریف......الف...... لغت میں یہ عَرَفَ سے اسم مفعول ہے۔

اصطلاحاً......ب...... وہ حدیث جسے ثقہ راوی، ضعیف راوی کی روایت کے خلاف روایت کرے۔

اس معنی کے اعتبار سے یہ منکر کے مقابل ہے یادقیق تعبیر کے اعتبار سے یہ منکر کی اس تعریف کے مقابلے میں ہے جس پر حافظ ابن حجر کا اعتماد ہے۔

## مثال:

اس کی مثال وہی ہے جو منکر کی دوسری مثال کے طور پر گزر چکی ہے لیکن وہ روایت ثقہ راویوں کے طریق سے مروی ہے اور انہوں نے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے موقوف روایت کی ہے کیونکہ ابن ابی حاتم نے حبیب کی مرفوع حدیث نقل کرنے کے بعد فرمایا یہ منکر ہے کیونکہ ان کے علاوہ ثقہ راویوں نے اسے ابواسحاق سے موقوف روایت کیا اور وہ معروف ہے۔

## حدیث معلل:

جب راوی پر طعن کا سبب ''وہم'' ہو تو اس کی حدیث کو معلل کہا جاتا ہے اور یہ چھٹا سبب ہے۔

تعریف...... (الف) لغت میں یہ اَعلّہ بکذا فھو مُعَلٌّ سے اسم مفعول ہے اور یہ مشہور صرفی قیاس ہے اور یہ لغت فصیح ہے لیکن علماء حدیث کا اسے معلّل سے تعبیر کرنا لغت میں غیر مشہور ہے۔

بعض محدثین نے اسے ''المعلول'' سے تعبیر کیا ہے اور یہ تعبیر عربی اور لغت کے علماء کے ہاں نہایت کمزور اور گھٹیا ہے۔(۱)

ب...... اصطلاحًا...... وہ حدیث جس میں ایسی علت پر اطلاع پائی گئی جو اس کی صحت میں ضعف کا سبب ہو حالانکہ ظاہر میں وہ اس سے محفوظ ہوتی ہے۔

## علّت کی تعریف:

یہ نہایت پوشیدہ سبب ہوتا ہے جو صحت حدیث میں خرابی پیدا کرتا ہے۔

پس علت کی اس تعریف سے معلوم ہوا کہ علماء حدیث کے نزدیک علت کی تعریف میں دو شرطوں کا پایا جانا ضروری ہے۔

۱...... پوشیدگی۔۲...... صحت حدیث میں خرابی پیدا کرنا۔

اگر ان دونوں میں سے کوئی ایک نہ پائی جائے جیسے علت کا ظاہر ہونا یا عیب پیدا نہ کرنا تو اس وقت اصطلاحًا اسے علت نہیں کہتے۔

## اصطلاحی معنی کے علاوہ پر علت کا اطلاق:

میں نے گزشتہ جملہ میں علت کی جو تعریف ذکر کی ہے اصطلاح محدثین میں علت سے یہی مراد ہے۔

لیکن بعض اوقات علت کا اطلاق ہر اس طعن پر کیا جاتا ہے جو حدیث کی طرف

(۱)...... کیونکہ ثلاثی مزید فیہ سے اسم مفعول کا وزن مَفْعُوْل نہیں آتا۔۱۲ہزاروی

Marfat.com

متوجہ ہوتا ہے اگرچہ وہ طعن پوشیدہ یا عیب پیدا کرنے والا (قادح) نہ ہو۔

## پہلی نوع:

راوی کے جھوٹ یا اس کی غفلت یا اس کے حافظہ کی کمزوری وغیرہ کو علت قرار دیا جاتا ہے حتی کہ امام ترمذی رحمہ اللہ نے نسخ کو بھی علت قرار دیا ہے۔

## دوسری نوع:

ایسی مخالفت کو علت قرار دینا جو صحت حدیث میں خرابی پیدا نہ کرے جیسے ثقہ کی متصل حدیث کو مرسل بیان کرنا۔ اس بنیاد پر بعض حضرات نے فرمایا کہ صحیح معلل بھی صحیح حدیث سے ہے۔

## معرفت علل کی جلالت ودقت اور کون اس پر قادر ہے؟

علل حدیث کی معرفت علوم حدیث میں سے نہایت جلیل القدر اور باریک ترین ہے کیونکہ اس میں ان پوشیدہ علتوں کو ظاہر کرنے کی ضرورت ہوتی ہے جو علوم حدیث کے ماہرین پر ہی ظاہر ہوتی ہیں اور اس پر قدرت اور معرفت کی طاقت ان ہی لوگوں کو حاصل ہوتی ہے جو حافظ، دوراندیش اور روشن فہم کے مالک ہیں۔

اسی لئے اس کی گہرائی میں غوطہ لگانے والے صرف چند ائمہ ہیں جیسے ابن مدینی، امام احمد، امام بخاری، ابوحاتم اور دارقطنی (رحمہم اللہ)

## تعلیل کس سند میں داخل ہوتی ہے؟

تعلیل اس سند میں ہوسکتی ہے جو ظاہری طور پر صحت کی تمام شرائط کی جامع ہو کیونکہ ضعیف حدیث علتوں سے بحث کی محتاج نہیں ہوتی کیونکہ وہ مردود ہے اور اس پر عمل نہیں ہوتا۔

Marfat.com

## علت کے ادراک پر کن امور سے مدد لی جاتی ہے؟

علت کے ادراک پر چند امور سے مدد لی جاتی ہے ان میں سے کچھ یہ ہیں:

الف......راوی کا متفرد ہونا۔

ب......غیر کا اس کی مخالفت کرنا۔

ج......کچھ اور قرائن جو ان پہلے دو (الف اور ب) کے ساتھ مل جاتے ہیں۔

ان امور کی مدد سے اس فن کی پہچان رکھنے والا حدیث کے راوی سے واقع ہونے والے وہم پر آگاہ ہو جاتا ہے یا اس کی بیان کردہ موصول روایت کا ارسال واضح ہو جاتا ہے یا اس کی روایت کردہ مرفوع حدیث کا موقوف ہونا واضح ہو جاتا ہے یا یہ کہ اس نے ایک حدیث کو دوسری حدیث میں داخل کیا یا اس کے علاوہ کوئی اور وہم ظاہر ہو جاتا ہے کہ اسے اس کا غالب گمان ہوتا ہے پس وہ اس حدیث کے صحیح نہ ہونے (اور ضعیف ہونے) کا حکم لگاتا ہے۔

## معلّل کی معرفت کا طریقہ:

اس کی معرفت کا طریقہ یہ ہے کہ حدیث کے تمام طرق کو جمع کیا جائے اور اس کے راویوں کے اختلاف کو دیکھا جائے پھر ان کے ضبط اور اتقان میں موازنہ کیا جائے پھر معلول (یعنی معلل لام اول کا فتح) روایت پر حکم لگایا جائے۔

## علت کہاں واقع ہوتی ہے؟

الف......عام طور پر علت، سند میں واقع ہوتی ہے جس طرح موقوف اور مرسل ہونے کی علت۔

Marfat.com

ب......متن میں علت واقع ہوتی ہے اور یہ بہت کم ہے جس طرح نماز میں بسم اللہ کی قرأت کی نفی کی حدیث۔(۱)

## کیا سند میں علت کا وقوع متن میں خرابی کا سبب ہے؟

الف......بعض اوقات علت، سند میں خرابی پیدا کرنے کے ساتھ ساتھ متن میں بھی کمزوری پیدا کرتی ہے جیسے ارسال کی علت۔

ب......اور کبھی صرف سند میں خرابی پیدا ہوتی ہے اور متن صحیح ہوتا ہے۔ جیسے یعلیٰ بن عبید کی روایت وہ حضرت ثوری سے وہ عمرو بن دینار سے اور وہ حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما سے مرفوعاً روایت کرتے ہیں: "البیّعان بالخیار" (۱) بائع اور مشتری کو اختیار ہوگا (جب تک جدا نہ ہوں) تو حضرت یعلیٰ کو سفیان ثوری کے قول "عمرو بن دینار" میں وہم ہوا حقیقت میں وہ عبداللہ بن دینار ہیں۔

تو یہ متن صحیح ہے اگرچہ سند میں غلطی کی علت پائی جاتی ہے کیونکہ عمرو بن دینار اور عبداللہ بن دینار دونوں ثقہ راوی ہیں اور ایک ثقہ کو دوسرے ثقہ سے بدلنا صحت متن کو نقصان نہیں پہنچاتا اگرچہ سند کے سیاق میں غلطی ہے۔

## معلل سے متعلق مشہور کتب:

اس میں مشہور ترین تصنیفات یہ ہیں:

الف......ابن مدینی کی "کتاب العلل"۔

ب......ابن ابی حاتم کی "علل الحدیث"۔

---

(۱)......سنن ترمذی ابواب الصلوٰۃ باب ما جاء فی ترک الجہر بسم اللہ الرحمن الرحیم ۱/۱۶۰

Marfat.com

ج......امام احمد بن حنبل کی تصنیف"العلل ومعرفة الرجال"۔

د......امام ترمذی کی"العلل الکبیر " اور"العلل الصغیر"۔

ہ......امام دارقطنی کی"العلل الواردۃ فی الاحادیث النبویۃ"۔

یہ کتاب ان سب میں زیادہ جامع اور مفصل ہے۔

## ثقات کی مخالفت:

جب راویوں میں طعن کا سبب ثقات کی مخالفت ہو اور یہ ساتواں سبب ہے تو اس کے نتیجے میں علوم حدیث کی پانچ قسمیں نکلتی ہیں۔ اور وہ......مدرج، مقلوب، المزید فی متصل الاسانید، مضطرب اور مصحّف ہیں۔

۱۔مدرج......اگر مخالفت، سند کے سیاق کو تبدیل کرنے یا موقوف کو مرفوع سے بدلنے کے ساتھ ہو تو اس کا نام مدرج ہے۔

۲۔مقلوب......اگر تقدیم وتاخیر کے ذریعے تبدیلی ہو تو اسے "مقلوب" کہتے ہیں

۳۔المزید فی متصل الاسانید......اگر کسی راوی کے اضافہ کے ذریعے مخالفت ہو تو یہ المزید فی متصل الاسانید کہلاتی ہے۔

۴۔مُضطرِب......اگر کسی راوی کو دوسرے راوی سے بدلنے یا متن میں الفاظ کے اختلاف کے ساتھ مخالفت ہو اور ترجیح کا کوئی سبب بھی نہ ہو تو اسے مضطرِب کہتے ہیں۔

۵۔مُصحَّف......اگر الفاظ کی تبدیلی کے ساتھ مخالفت ہو اور سیاق باقی ہو تو اسے مصحّف کہا جاتا ہے۔(۱)

اس ترتیب سے ساتھ تفصیل درج ذیل ہے۔

(۱)......شرح نخبۃ الفکر ص:۴۸،۴۹

Marfat.com

## حدیثِ مدرَج:

تعریف..... الف.....لغوی اعتبار سے یہ "ادرجتُ الشی فی الشی" سے مفعول ہے جب تم ایک چیز کو دوسری میں داخل کرو اور اسے اس کے ساتھ ملا دو۔

ب..... اصطلاحاً..... جب حدیث کی سند کا سیاق بدل دیا گیا ہو یا اس کے متن میں کسی وضاحت کے بغیر ایسی چیز داخل کی گئی جو اس متن سے نہیں ہے (اسے مدرج کہا جاتا ہے)

## اقسام:

مدرج کی دو قسمیں ہیں۔

مدرج الاسناد..... مدرج المتن۔

الف..... مدرج الاسناد

ا..... تعریف..... جس کی سند کا سیاق بدل دیا گیا۔

### ۲..... اس کی صورتیں

راوی سند چلاتا ہے تو اسے کوئی رکاوٹ پیش آتی ہے پس وہ اپنی طرف سے کلام کہتا ہے اور بعض سننے والے اسے اسی سند کے متن کا کلام خیال کرتے ہیں اور اس سے اسی طرح روایت کرتے ہیں۔

### ۳..... مثال:

ثابت بن موسیٰ زاہد کی روایت میں ان کا قصہ کہ:

من کثرت صلاته باللیل حسن وجهه بالنهار۔

Marfat.com

ترجمہ: جس شخص کی رات کی (نفل) نماز زیادہ ہو دن کے وقت اس کا چہرہ حسین ہوتا ہے۔(۱)

اصل قصہ یہ ہے کہ ثابت بن موسیٰ، شریک بن عبداللہ قاضی کے پاس گئے اور وہ املاء کراتے ہوئے فرمارہے تھے:

حدثنا الاعمش عن ابی سفیان عن جابر قال قال رسول اللہ ﷺ۔

اس کے بعد وہ خاموش ہو گئے تاکہ جسے لکھوار ہے ہیں وہ لکھ لے۔

جب انہوں نے ثابت کو دیکھا تو فرمایا: "من کثرت صلاتہ باللیل حسن وجھہ بالنھار" اور اس سے ان کی مراد حضرت ثابت تھے کیونکہ وہ زاہد اور پرہیزگار تھے۔ تو حضرت ثابت نے گمان کیا کہ اس سند کا متن یہ کلمات ہیں پس وہ اسے بیان کرتے تھے۔

## ب...... مدرج المتن:

ا۔ تعریف...... وہ مدرج حدیث جس کے متن میں کسی وقفہ کے بغیر ایسی چیز داخل کی جائے جو اس سے نہیں ہے۔

۲۔ اقسام...... اس کی تین قسمیں ہیں جو درج ذیل ہیں۔

الف۔ یہ کہ ادراج حدیث کے شروع میں ہو اور یہ بہت کم ہیں البتہ جس کے درمیان میں ادراج ہو اس سے زیادہ ہیں۔

ب۔ ادراج، حدیث کے درمیان میں ہو پہلی قسم کے مقابلے میں یہ بہت کم ہیں۔

(۱)...... سنن ابن ماجہ باب قیام اللیل رقم الحدیث: ۱۳۳۳

Marfat.com

ج......ادراج، حدیث کے آخر میں ہو اور یہ قسم بہت زیادہ پائی جاتی ہے۔

۳......مثالیں:

الف......حدیث کے شروع میں ادراج کی مثال:

اور اس کا سبب یہ ہے کہ راوی کوئی کلام کرتے ہوئے اس پر حدیث سے استدلال کرنا چاہتا ہے اور اسے کسی فصل کے بغیر لاتا ہے اس طرح سننے والے کو وہم ہو جاتا ہے کہ یہ تمام (کلام) حدیث ہے۔

جیسے خطیب (بغدادی) نے ابوقطن اور شبابہ کی روایت سے نقل کرتے ہوئے روایت کیا اور دونوں سے الگ الگ بیان کیا جیسے حضرت شعبہ حضرت محمد بن زیاد سے اور وہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں وہ فرماتے ہیں: رسول اکرم ﷺ نے فرمایا: ''اسبغوا الوضوء'' حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کے کلام سے مدرج ہے جس طرح بخاری کی روایت جو آدم سے ہے وہ حضرت شعبہ سے وہ محمد بن زیاد سے اور وہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں وہ فرماتے ہیں:

اسبغوا الوضوء فان ابا القاسم ﷺ قال ویل للاعقاب من النار۔(۱)

ترجمہ: وضو مکمل کیا کرو بے شک ابوالقاسم ﷺ نے فرمایا ایڑیوں کے لئے جہنم سے خرابی ہے۔

خطیب فرماتے ہیں ابوقطن اور شبابہ کو حضرت شعبہ سے روایت کرتے ہوئے وہم ہو گیا جیسا کہ ہم نے ذکر کیا حضرت شعبہ سے ایک جم غفیر نے آدم کی روایت کی طرح روایت کیا ہے۔(۱)

---

(۱)......صحیح بخاری کتاب الطہارۃ باب غسل الاعقاب ۱/۲۸

Marfat.com

ب......وسط حدیث میں ادراج کی مثال:

بدء الوحی (وحی کا آغاز) کے بارے میں حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کی حدیث ہے:

کان النبی ﷺ کان یخلوا بغار حراء فیتحنث فیه وهو التعبد اللیالی ذوات العدد۔(۲)

ترجمہ: رسول اکرم ﷺ کئی کئی راتیں غار حراء میں عبادت کرتے تھے۔

تو "هو التعبد" کے الفاظ حضرت زہری کے کلام سے مدرج ہیں۔

ج......حدیث کے آخر میں ادراج کی مثال:

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کی مرفوع حدیث ہے:

للعبد المملوك اجران والذی نفسی بیده لولا الجهاد فی سبیل الله والحج وبرّ امی لاحببت ان اموت وانا مملوك۔(۳)

ترجمہ: مملوک غلام کے لئے دو اجر ہیں اس ذات کی قسم جس کے قبضۂ قدرت میں میری جان ہے اگر اللہ کے راستے میں جہاد یا حج اور ماں کے ساتھ حسن سلوک نہ ہوتا تو میں مملوک ہونے کی صورت میں مرنا پسند کرتا۔

تو "والذی نفسی بیده" آخر تک حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کے کلام سے ہے کیونکہ اس کلام کا حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے صادر ہونا محال ہے کیونکہ آپ

---

(۱)......تدریب الراوی ۲۷۰/۱

(۲)......صحیح بخاری باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللہ ﷺ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۱

(۳)......صحیح بخاری کتاب العتق باب العبد اذا احسن عبادة ربه الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۴۶/۱

Marfat.com

کا غلامی کی تمنا کرنا ممکن نہیں نیز آپ کی والدہ موجود نہیں تھیں حتی کہ آپ ان سے بھلائی کرتے۔

### ۳......ادراج کے اسباب:

ادراج کے اسباب متعدد ہیں ان میں سے زیادہ مشہور درج ذیل ہیں:

الف......حکم شرعی بیان کرنا۔

ب......حدیث مکمل ہونے سے پہلے اس سے شرعی حکم نکالنا۔

ج......حدیث میں غریب الفاظ کی تشریح کرنا۔

### ۴......ادراج کا ادراک کیسے ہو؟

ادراج کا ادراک چند امور سے ہوتا ہے ان میں سے کچھ یہ ہیں:

الف......دوسری روایت میں وہ مدرج کلام الگ درج ہو۔

ب......بعض باخبر ائمہ کا اس کی وضاحت کرنا۔

ج......خود راوی کا اقرار کرنا کہ اس نے اس کلام میں ادراج کیا ہے۔

د......اس بات کا رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا قول ہونا محال ہو۔

### ۵......ادراج کا حکم:

محدثین فقہاء اور دیگر علماء کے نزدیک بالاتفاق ادراج حرام ہے اور اس سے وہ ادراج مستثنیٰ ہے جو غریب (یا مشکل) الفاظ کی تشریح کے لئے ہو یہ ممنوع نہیں ہے۔ اسی لئے حضرت زہری اور دیگر ائمہ نے ادراج کیا ہے۔

Marfat.com

## ٦......ادراج سے متعلق مشہور ترین تصنیفات:

الف......الفصل للوصل المدرج فی النقل، یہ خطیب بغدادی کی تصنیف ہے۔

ب......تقریب المنهج بترتیب المدرج، یہ حافظ ابن حجر کی کتاب ہے۔ اور یہ خطیب بغدادی کی کتاب کی تلخیص اور اس پر کچھ اضافہ ہے۔

## حدیث مقلوب:

ا......تعریف: لغت میں یہ، قلب سے اسم مفعول ہے اور اس کا معنی کسی چیز کے ظاہر کو پلٹ دینا ہے۔(ا)

اصطلاحًا: حدیث کی سند یا اس کے متن میں کسی لفظ کو دوسرے لفظ سے تقدیم وتاخیر وغیرہ کے طریقے پر بدلنے کو مقلوب کہتے ہیں۔

### ٢......اقسام:

مقلوب کی بڑی دو قسمیں ہیں۔ ا......مقلوب السند۔ ٢......مقلوب المتن۔

الف......مقلوب السند۔

مقلوب السند یہ ہے کہ تبدیلی سند میں واقع ہو اور اس کی دو صورتیں ہیں۔

ا......راوی کے نام اور اس کے باپ کے نام کو مقدم یا موخر کر دیا جائے جیسے حضرت کعب بن مرہ سے مروی حدیث میں راوی "مرہ بن کعب" سے روایت کرے

٢......راوی کسی شخص کو دوسرے سے بدل دے تاکہ وہ اجنبی ہو جائے جیسے

(ا)......القاموس ١٢٣/١

Marfat.com

حضرت سالم سے مشہور حدیث کو راوی حضرت نافع سے کر دے۔

جو راوی یہ عمل کرتے تھے ان میں حماد بن عمرو نصیبی ہیں اور اس کی مثال یہ ہے:

حدیث جیسے حماد نصیبی اعمش سے انہوں نے ابو صالح سے اور انہوں نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مرفوع روایت کیا:

**اذا لقیتم المشرکین فی طریق فلا تبدءوھم بالسلام۔(۱)**

ترجمہ: جب تم راستے میں مشرکین سے ملو تو اُن سے سلام میں پہل نہ کرو۔

یہ حدیث مقلوب ہے حماد نے قلب کیا اور اسے اعمش سے قرار دیا حالانکہ یہ حدیث "سھیل بن ابی صالح عن ابیہ عن ابی ھریرۃ" سے معروف ہے، امام مسلم نے اسے اپنی صحیح میں اسی طرح نقل کیا ہے مقلوب کی یہی وہ قسم ہے جس کے راوی کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ اس نے حدیث میں چوری کی ہے۔

ب......مقلوب المتن۔

وہ حدیث جس کے متن میں تبدیلی کی گئی ہو اس کی بھی دو صورتیں ہیں۔

ا......راوی حدیث کے بعض متن میں تقدیم کو تاخیر کر دے۔ اس کی مثال حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے جسے امام مسلم نے روایت کیا اور اس میں ان سات افراد کا ذکر ہے جن کو اللہ تعالیٰ اپنا سایہ عطا فرمائے گا جس دن اس کے سائے کے علاوہ کوئی سایہ نہ ہوگا اس حدیث میں ہے:

**ورجل تصدق بصدقة فاخفاها حتى لا تعلم يمينه**

(۱)......مسند امام احمد بن حنبل عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/۵۲۵

Marfat.com

ماتنفق شمالہ "۔

ترجمہ: وہ شخص جو پوشیدہ طور پر صدقہ دیتا ہے حتی کہ دائیں ہاتھ کو پتہ نہیں چلتا کہ بائیں ہاتھ نے کیا خرچ کیا۔

اس روایت میں کسی راوی کی طرف سے قلب ہوا اور وہ یوں ہے:

"حتی لاتعلم شمالہ ماتنفق یمینہ " (حتی کہ بائیں ہاتھ کو معلوم نہ ہو کہ دائیں ہاتھ نے کیا خرچ کیا)(۱)

۲......کوئی راوی ایک حدیث کے متن کو دوسری حدیث کی سند اور اس حدیث کی سند کو اس پہلی حدیث کے متن سے ملادے۔

اور اس کا مقصد امتحان لینا یا اس کے علاوہ ہوتا ہے اس کی مثال وہ عمل ہے جو بغداد والوں نے حضرت امام بخاری کے ساتھ اختیار کیا کہ انہوں نے ایک سو احادیث میں قلب کیا اور ان کے حافظہ کا امتحان لینے کے لئے سوال کیا تو آپ نے وہ احادیث قلب سے پہلے والی حالت کی طرف لوٹادیں۔ اور ان میں سے ایک میں بھی خطا نہیں کی۔(۲)

۳......<u>قلب پر ابھارنے والے اسباب:</u>

وہ اسباب جو بعض راویوں کو قلب پر ابھارتے ہیں وہ مختلف ہیں اور وہ اسباب یہ ہیں:

الف......حدیث کو اجنبی بنادینا تا کہ لوگ اس کی حدیث کو لینے اور روایت کرنے

(۱)......صحیح مسلم شریف کتاب الزکوۃ ۱/۳۳۱ رموطا امام مالک ماجاء فی المتحابین فی اللہ ص:۷۲۳

(۲)......تفصیلی واقعہ تاریخ بغداد جلد۲ ص ۲۰ پر ملاحظہ فرمائیں۔

میں رغبت رکھیں۔

ب......محدث کے حافظہ اور ضبط کا امتحان لینے اور اس کی تاکید کے لئے قلب کیا جاتا ہے۔

ج......کسی ارادے کے بغیر خطاء اور غلطی میں پڑ جانا۔

## ۴......قلب کا حکم:

الف......اگر قلب اِغراب (اجنبی بنانا) کی نیت سے ہو تو بلا شک وشبہ یہ جائز نہیں کیونکہ اس میں حدیث میں تغیر وتبدل کرنا ہے اور یہ احادیث گھڑنے والوں کا عمل ہے۔

ب......اگر امتحان مقصود ہو تو یہ جائز ہے تاکہ محدث کے حفظ میں ثابت قدمی اور اہلیت کا علم ہو جائے لیکن اس میں شرط یہ ہے کہ مجلس ختم سے پہلے صحیح حدیث کی وضاحت کردے۔

ج......اگر خطایا بھول جانے کی وجہ سے ہو تو اس میں کوئی شک نہیں کہ ایسا کرنے والا اپنی خطاء میں معذور ہے لیکن اگر اس کا یہ عمل زیادہ ہو تو اس سے اس کے ضبط میں خلل واقع ہوتا ہے اور اسے ضعیف بنادیتا ہے۔

نوٹ: حدیث مقلوب، ضعیف مردود کی ایک قسم ہے۔ جیسا کہ معلوم ہے۔

## ۵......اس میں مشہور ترین تصنیفات:

خطیب بغدادی کی کتاب ہے نرافع الارتیاب فی المقلوب من الاسماء والالقاب۔ کتاب کے نام سے ظاہر ہے کہ یہ صرف سند میں واقع ہونے والے قلب کے ساتھ خاص ہے۔

Marfat.com

# المزید فی متصل الاسانید:

ا الف۔ تعریف: لغت میں یہ "الزیادۃ" سے اسم مفعول ہے اور متصل منقطع کی ضد ہے جبکہ اسانید، اسناد کی جمع ہے۔

ب۔ اصطلاحاً: ایسی سند جو بظاہر متصل ہو کے درمیان میں کسی راوی کا اضافہ کرنا۔

## ۲.....مثال:

وہ حدیث جو ابن مبارک نے روایت کی ہے (فرماتے ہیں)

حدثنا سفیان عن عبدالرحمن بن یزید حدثنی بسر بن عبداللہ قال سمعت ابا ادریس قال سمعت واثلۃ یقول سمعت ابامرثد یقول سمعت رسول اللہ ﷺ یقول لا تجلسوا علی القبور ولا تصلوا الیھا۔(۱)

ترجمہ: قبروں پر نہ بیٹھو اور نہ اُن کی طرف (رُخ کرکے) نماز پڑھو۔

## ۳.....اس مثال میں اضافہ کی وضاحت:

اس مثال میں دو جگہ اضافہ ہے ایک مقام پر لفظ "سفیان" کا اضافہ ہے اور دوسری جگہ لفظ "ابا ادریس" کا اضافہ ہے۔ اور دونوں جگہ اضافہ کا سبب وہم ہے۔

الف....."سفیان" کا اضافہ عبداللہ بن مبارک سے نیچے والے راوی کا وہم ہے کیونکہ متعدد ثقہ راویوں نے یہ حدیث حضرت ابن مبارک سے روایت کی اور وہ عبدالرحمٰن بن یزید سے روایت کرتے ہیں (یعنی سفیان کا اضافہ کئے بغیر روایت

(۱).....صحیح مسلم شریف کتاب الجنائز فصل فی النہی عن الجلوس علی القبر والصلوٰۃ الیہ ۱/۳۶۲

کرتے ہیں) اوران میں سے بعض نے صراحتًا "اخبرنا" کے ساتھ بیان کیا۔

ب...... "ابا ادریس" کا اضافہ ابن مبارک کی طرف سے وہم ہے کیونکہ متعدد ثقہ راویوں نے اس حدیث کو عبدالرحمٰن بن یزید سے روایت کیا اور انہوں نے ابوادریس کا ذکر نہیں کیا۔ اوران میں سے بعض نے واضح الفاظ میں ذکر کیا کہ بشر کو واثلہ سے سماع حاصل ہے۔

## ۴...... اضافہ کے رد کے لئے شرط:

اضافہ کو رد کرنے اور اسے اضافہ کرنے والے کا وہم قرار دینے کے لئے درج ذیل دو شرائط ہیں۔

الف...... جس نے اضافہ نہیں کیا وہ اضافہ کرنیوالے سے مضبوط ہو۔

ب...... جہاں اضافہ ہے وہاں سماع کی تصریح ہو۔

اگر یہ دونوں یا ان میں سے ایک شرط نہ پائی جائے تو زیادتی کو ترجیح دی جائے گی اور حدیث مقبول ہوگی اور جو سند اس زیادتی سے خالی ہو اسے منقطع شمار کیا جائے گا لیکن انقطاع خفی ہوگا اسی کو مرسل خفی کہا جاتا ہے۔

## وقوع زیادتی کے دعویٰ پر وارد ہونے والے اعتراضات:

اس اضافہ (زیادتی) کے وقوع کے دعویٰ پر دو اعتراض کئے جاتے ہیں۔

الف...... اگر زیادتی کے مقام پر سند حرف "عن" کے اضافہ سے خالی ہو تو مناسب ہے کہ اسے منقطع قرار دیا جائے۔

ب...... اگر اس میں سماع کی صراحت ہو تو اس بات کا احتمال ہے کہ اس راوی

نے اس شیخ سے پہلے کسی دوسرے آدمی کے واسطہ سے سنا ہو پھر بالمشافہ اس سے سنا ہو تو اس کا جواب درج ذیل طریقوں سے دینا ممکن ہے۔

الف...... پہلا اعتراض تو اسی طرح ہے جس طرح معترض نے کہا ہے۔

ب...... جہاں تک دوسرے اعتراض کا تعلق ہے تو یہ احتمال ممکن ہے لیکن علماء زیادتی پر وہم ہونے کا حکم اسی صورت میں لگاتے ہیں جب اس پر دلالت کرنے والا قرینہ موجود ہو۔

## اس میں مشہورترین تصنیف:

المزید فی متصل الاسانید کے بارے میں خطیب بغدادی کی کتاب "تمییز المزید فی متصل الاسانید" ہے۔

## مضطرِب:

تعریف...... لغوی اعتبار سے یہ لفظ "الاضطراب" سے اسم فاعل ہے اور اس کا معنیٰ کسی کام میں خلل واقع ہونا اور اس کے نظام کا فاسد ہونا ہے اور اس کی اصل "اضطراب الموج" سے ہے جب اس کی حرکت زیادہ ہو اور موجیں باہم ٹکرانے لگیں۔

اصطلاحاً...... وہ حدیث جو ایسے مختلف طریقوں سے مروی ہو جو قوت میں مساوی ہوں۔

## تعریف کی تشریح:

یعنی وہ حدیث جو باہم ٹکرانے والی شکلوں میں مروی ہو اس طرح کہ ان میں کبھی بھی موافقت نہ ہو سکے اور تمام طریقوں سے وہ روایات قوت میں اس طرح مساوی

Marfat.com

ہوں کہ ان میں سے ایک کو دوسری پر کسی صورت میں ترجیح نہ دی جا سکے۔

## اضطراب کے ثبوت کے لئے شرائط:

مضطرب کی تعریف اور اس کی تشریح پر غور کرنے سے واضح ہوتا ہے کہ حدیث اسی وقت مضطرب کہلائے گی جب اس میں یہ دو شرطیں پائی جائیں۔

الف......روایات حدیث میں ایسا اختلاف ہو کہ ان کو جمع کرنا ممکن نہ ہو۔

ب......وہ روایات قوت میں اس طرح مساوی ہوں کہ ایک روایت کو دوسری پر ترجیح دینا ممکن نہ ہو۔

لیکن جب ایک روایت کو دوسری پر ترجیح حاصل ہو یا ان کو کسی مقبول شکل میں جمع کرنا ممکن ہو تو حدیث سے اضطراب کی صفت زائل ہو جائے گی اور حالت ترجیح میں راجح روایت پر عمل کریں گے یا جب ان کو جمع کرنا ممکن ہو تو ان سب روایات پر عمل کریں گے۔

## مضطرب کی اقسام:

محل اضطراب کے اعتبار سے مضطرب کی دو قسمیں ہیں۔

۱......مضطرب السند۔ ۲......مضطرب المتن۔

اور سند میں اضطراب زیادہ پایا جاتا ہے۔

### الف......مضطرب السند:

اس کی مثال حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے انہوں نے عرض کیا یارسول اللہ ! اراك شبت قال شَيَّبَتْنِيْ هود واخواتها۔(۱) (یارسول اللہ! میں دیکھتا ہوں کہ آپ ﷺ عمر رسیدہ ہو چکے ہیں، آپ ﷺ نے فرمایا: مجھے سورہ ہود

Marfat.com

اوراس طرح کی دیگر سورتوں نے بوڑھا کردیا ہے۔)

امام دارقطنی فرماتے ہیں: یہ حدیث مضطرب ہے۔کیونکہ یہ صرف ابواسحاق کی سند سے مروی ہے اوراس میں دس طریقوں سے اختلاف کیا گیا ہے ان میں سے بعض نے اسے مرسل روایت کیا اور بعض نے موصول روایت کیا۔ بعض نے اسے مسند ابی بکر سے اور بعض نے مسند سعد سے قرار دیا جبکہ بعض نے مسند عائشہ (رضی اللہ عنہم) سے قرار دیا اوراس کے علاوہ بھی۔اوراس حدیث کے راوی ثقہ ہیں بعض کو بعض پر ترجیح دینا ممکن نہیں۔اور جمع کرنا متعذر ہے (مشکل ہے)۔

**ب...... مضطرب المتن:**

اس کی مثال وہ حدیث ہے جسے امام ترمذی نے شریک سے روایت کیا وہ ابوحمزہ سے وہ شعبی سے وہ فاطمہ بنت قیس رضی اللہ عنہا سے روایت کرتے ہیں وہ فرماتی ہیں کہ رسول اکرم ﷺ سے زکوۃ کے بارے میں سوال کیا گیا تو آپ نے فرمایا: ان فی المال لحقا سوی الزکوٰۃ ، (بے شک مال میں زکوۃ کے علاوہ بھی حق ہے۔)(۲)

امام ابن ماجہ نے اس حدیث کو اسی سند سے ان الفاظ میں نقل کیا "لیس فی المال حق سوی الزکوٰۃ" (مال میں زکوۃ کے علاوہ کوئی حق نہیں)(۳)

عراقی فرماتے ہیں یہ اضطراب ہے جس میں تاویل کا احتمال نہیں۔

(۱)......جامع ترمذی کتاب التفسیر سورہ واقعہ ۶۳۷/۲ (کچھ الفاظ کے اختلاف کے ساتھ)
(۲)......جامع ترمذی باب ماجاء فی المال لحقا سوی الزکوۃ ۲۶۰/۱
(۳)......سنن ابن ماجہ باب ما ادی زکوۃ لیس بکنز قدیمی کتب خانہ کراچی ص:۱۲۸

Marfat.com

## اضطراب کس سے واقع ہوتا ہے؟

الف......کبھی ایک راوی سے اضطراب واقع ہوتا ہے کہ وہ حدیث کو مختلف طریقوں سے رَوایت کرتا ہے۔

ب......بعض اوقات ایک جماعت سے اضطراب واقع ہوتا ہے اس طرح کہ ان میں سے ہر ایک اس طریقے پر حدیث روایت کرتا ہے جو دوسروں کی روایت کے خلاف ہوتا ہے۔

## مضطرب کے ضعف کا سبب:

مضطرب کے ضعف کا سبب یہ ہے کہ اضطراب سے راویوں کے عدم ضبط کا پتہ چلتا ہے۔

## اس کے بارے میں مشہور ترین کتاب

حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے "المقترب فی بیان المضطرب" کے نام سے کتاب لکھی ہے۔

## مُصَحَّف:

تعریف...... لغوی اعتبار سے یہ "التصحیف" سے اسم مفعول ہے اور اس کا معنی صحیفہ میں خطا کرنا ہے (۱) اور ایسا شخص صحیفہ کے پڑھنے میں خطاء کرتا ہے پس قرأت میں خطاء کی وجہ سے اس کے بعض الفاظ کو بدل دیتا ہے۔

ب۔ اصطلاحاً: ثقہ راویوں کی بیان کردہ حدیث کے کسی کلمہ کو لفظاً یا معنیً بدل دینا۔

(۱)......القاموس ۱۶۶/۳

Marfat.com

## اہمیت اور باریکی:

یہ بہت بڑا اور باریک فن ہے اور اس کی اہمیت کا پتہ ان خطاؤں کو واضح کرنے سے ہوتا ہے جو اس میں بعض راویوں کی طرف سے واقع ہوتی ہیں اس اہم کو امام دار قطنی جیسے ماہر حفاظ حدیث ہی سر کر سکتے ہیں۔

## تقسیمات:

علماء کرام نے مصحف کو تین تقسیموں میں تقسیم کیا ہے ہر تقسیم الگ اعتبار سے ہے اور وہ تقسیمات یہ ہیں:

الف.....موقع کے اعتبار سے۔

اپنے موقع ومحل کے اعتبار سے اس کی دو قسمیں ہیں۔

ا.....تصحیف فی الاسناد:

اس کی مثال حضرت شعبہ رضی اللہ عنہ کی روایت ہے جو عوام بن مُراجم سے مروی ہے ابن معین نے اس میں تصحیف کی ہے اور اسے عوام بن مراجم سے قرار دیا۔

۲.....تصحیف فی المتن:

اس کی مثال حضرت زید بن ثابت رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے کہ نبی اکرم ﷺ نے "احتجر في المسجد "(آپ نے مسجد میں حجرہ بنایا) ابن لہیعہ نے اس میں تصحیف کرتے ہوئے "احتجم في المسجد" فرمایا (یعنی مسجد میں سینگی لگوائی)

ب.....منشاء کے اعتبار سے:

اور منشاء کے اعتبار سے بھی اس کی دو قسمیں ہیں۔

ا......تصحیف بصر: (اور یہ زیادہ ہے)

یعنی قاری کی نظر میں خط مشتبہ ہو جائے یا تو خط کے ناقص ہونے کی وجہ سے یا نقطہ نہ ہونے کی وجہ سے۔

اس کی مثال: من صام رمضان ثم اتبعه ستا من شوال،(۱)

(جس نے رمضان مبارک پھر اس کے بعد شوال کے چھ روزے رکھے)

ابوبکر الصولی نے اس میں تصحیف کرتے ہوئے اسے یوں پڑھا۔"من صام رمضان واتبعه شيئا من شوال" انہوں نے ستا میں تصحیف کرتے ہوئے شیئا کر دیا۔

۲......تصحیف السمع:

ایسی تصحیف جس کا منشاء سننے کی خرابی یا سننے والے کا دور بیٹھا ہونا ہے یا اس طرح کا کوئی دوسرا سبب ہوتا ہے۔

تو اس پر بعض کلمات مشتبہ ہو جاتے ہیں کیونکہ وہ ایک ہی صرفی وزن پر ہوتے ہیں۔اس کی مثال وہ حدیث ہے جو حضرت عاصم الاحول سے مروی ہے اس میں بعض نے تصحیف کرتے ہوئے "عن واصل الاحدب" کہا ہے۔

ج......اس کے لفظ یا معنی کے اعتبار سے۔

اپنے لفظ اور معنی کے اعتبار سے بھی تصحیف کی دو قسمیں ہیں۔

ا......تصحیف فی اللفظ۔(یہ زیادہ ہے)......یہ گذشتہ مثالوں کی طرح ہے۔

۲......تصحیف فی المعنی۔

(۱)......جامع ترمذی ابواب الصوم باب ماجاء فی صیام ستة من شوال ۱/۱۴۸

Marfat.com

یعنی تصحیف کرنے والا راوی لفظ کو اپنی حالت پر چھوڑے لیکن اس کی ایسی تفسیر کرے جو اس بات پر دلالت کرتی ہو کہ اس نے اس کا وہ معنیٰ سمجھا ہے جو مراد نہیں۔

اس کی مثال ابوموسیٰ عنزی کا قول ہے "نحن لنا شرف نحن من عنزة صلی الینا رسول اللہ ﷺ۔ (ہمارے لئے عزت ہے ہم عنزہ (قبیلہ) سے ہیں رسول اکرم ﷺ نے ہماری طرف منہ کر کے نماز پڑھی ہے۔)

اس کی مراد یہ حدیث ہے "ان النبی ﷺ صلی الی عنزة" (نبی اکرم ﷺ نے عنزہ کی طرف رُخ کر کے نماز پڑھی) اس نے عنزہ قبیلہ مراد لیا ہے۔ حالانکہ اس سے چھوٹا نیزہ مراد ہے جو رسول اکرم ﷺ کے سامنے گاڑا جاتا تھا۔

## حافظ ابن حجر کی تقسیم:

حضرت ابن حجر رحمہ اللہ نے اس کی ایک اور تقسیم بھی کی ہے اور اس کی دو قسمیں کی ہیں۔

الف...... المصحف: یعنی لفظوں کے اعتبار سے تبدیلی ہو اور خط کی صورت باقی رہے۔

ب...... محرف: حروف کی شکل میں تبدیلی ہو لیکن خط کی صورت باقی رہے۔

## کیا راوی کی تصحیف عیب ہے؟

الف...... جب تصحیف راوی سے کبھی کبھی ہو تو اس کے ضبط میں عیب قرار نہیں دیا جائے گا۔ کیونکہ کوئی شخص بھی خطا اور قلیل تصحیف سے محفوظ نہیں۔

ب...... جب تصحیف زیادہ ہو تو اس کے ضبط میں خرابی ہے اور اس کے ہلکا پن پر

Marfat.com

دلالت کرتی ہے اور یہ کہ یہ راوی اس شان کا آدمی نہیں ہے۔

## راوی سے زیادہ تصحیف کا سبب:

عام طور پر راوی کے تصحیف میں پڑنے کا سبب کتب اور صحیفوں سے حدیث کو لینا اور شیوخ الحدیث اور مدرسین سے علم حدیث نہ لینا ہے۔ اسی لئے ائمہ نے ایسے لوگوں سے حدیث لینے سے بچنے کی تلقین کی ہے اور فرمایا "لا یوخذ الحدیث من صَحَفِیٍّ" یعنی ان لوگوں سے حدیث نہ لی جائے جو صحیفوں سے لیتے ہیں۔

## اس میں مشہور ترین تصانیف:

الف...... امام دارقطنی کی کتاب...... التصحیف

ب...... امام خطابی کی تصنیف ...... اصلاح خطاء المحدثین

ج...... ابواحمد العسکری کی کتاب...... تصحیفات المحدثین

## شاذ اور محفوظ:

شاذ کی تعریف...... لغت میں یہ "شذ" سے اسم فاعل ہے اس کا معنی ہے "انفرد" وہ الگ ہوا، تو شاذ کا معنی ہے "جمہور سے الگ ہونے والا"۔

اصطلاحاً...... وہ حدیث جسے مقبول راوی اپنے سے اولیٰ کی مخالفت کرتے ہوئے روایت کرے۔

## تعریف کی وضاحت:

مقبول وہ عادل راوی ہے جس کا ضبط تام ہو یا ایسا عادل راوی جس کا ضبط خفیف ہو۔ اور اس سے اولیٰ سے مراد وہ راوی ہے جس کو اس پر ترجیح حاصل ہو، یہ ترجیح زیادہ

Marfat.com

ضبط یا کثرت عدد یا وجوہ ترجیح میں سے کسی اور وجہ سے ہو۔

اس کے علاوہ شاذ کی تعریف میں علماء کے متعدد اختلافی اقوال ہیں لیکن اس تعریف کو حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے اختیار کیا اور فرمایا اصطلاح کے اعتبار سے شاذ کی تعریف میں اسی پر اعتماد ہے۔(۱)

## شذوذ کہاں واقع ہوتا ہے؟

شذوذ سند اور متن دونوں میں واقع ہوتا ہے۔

الف.....سند میں شذوذ کی مثال۔

امام ترمذی، نسائی اور ابن ماجہ (رحمہم اللہ) نے ابن عیینہ کی سند سے بیان کیا۔

عن عمرو بن دینار عن عوسجة عن ابن عباس قال مات رجل على عهد رسول الله ﷺ ولم يدع له وارثا الا عبدًا هو اعتقه ـ

ترجمہ: رسول اکرم ﷺ کے زمانے میں ایک شخص کا انتقال ہو گیا اور اس نے کوئی وارث نہ چھوڑا سوائے اس غلام کے جسے اس نے آزاد کیا۔(۲)

اس حدیث کے موصول ہونے پر ابن عیینہ کی متابعت ابن جریج وغیرہ نے کی اور حماد بن زید نے ان سب کی مخالفت کرتے ہوئے یوں روایت کیا "عن عمرو بن دینار عن عوسجه" اور حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما کا ذکر نہیں کیا۔

اس لئے ابوحاتم نے کہا کہ ابن عیینہ کی حدیث ہی محفوظ ہے پس حماد بن زید عدل

---

(۱).....شرح نخبۃ الفکر ص:۳۷

(۲).....جامع ترمذی کتاب الفرائض باب فی میراث المولی الاسفل (۲۱۰) دارالکتب العلمیۃ بیروت ص: ۵۰۷

Marfat.com

وضبط والوں میں سے ہیں اس کے ساتھ ساتھ ابوحاتم نے ان کی حدیث کو ترجیح دی جن کی تعداد زیادہ ہے۔

ب...... متن میں شذوذ کی مثال

وہ حدیث جسے امام ابوداؤد اور امام ترمذی نے عبدالواحد ابن زیاد کی حدیث سے بیان کیا۔

**عن الاعمش عن ابی صالح عن ابی هريرة مرفوعاً" اذا صلى احدكم الفجر فليضطجع على يمينه (۱)**

ترجمہ: جب تم میں سے کوئی ایک فجر کی نماز پڑھ چکے تو اپنے دائیں پہلو پر لیٹ جائے۔

امام بیہقی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: اس حدیث میں عبدالواحد نے بہت سے لوگوں کی مخالفت کی کیونکہ ان حضرات نے نبی اکرم ﷺ کا عمل بیان کیا ہے آپ کا قول نہیں اور ان الفاظ کے ساتھ حضرت اعمش کے ثقہ شاگردوں میں عبدالواحد متفرد ہیں۔

**محفوظ:**

شاذ کے مقابلے میں حدیث محفوظ ہے اور محفوظ وہ حدیث ہے جسے ثقہ راوی کے مقابلے میں زیادہ ثقہ روایت کرے۔

مثال...... شاذ کے بیان میں جن دو مثالوں کا ذکر کیا گیا ہے یہ دونوں محفوظ کی مثالیں ہیں۔

(۱)...... جامع ترمذی ابواب الصلوٰۃ باب ماجاء فی الاضطجاع بعد الفجر ۲۰۵/۱

Marfat.com

## شاذ اور محفوظ کا حکم:

یہ بات معلوم ہے کہ حدیث شاذ مردود ہے اور حدیث محفوظ مقبول ہے۔

## راوی کا مجہول ہونا:

الف...... تعریف......لغوی اعتبار سے "جہل" علم کے مقابلے میں ہے اور راوی کے مجہول ہونے سے مراد اس کی عدم معرفت ہے۔

ب...... اصطلاحاً......راوی کی ذات یا اس کی حالت کی عدم پہچان کو "جہالۃ بالراوی" کہا جاتا ہے۔

## اس کے اسباب:

راوی کی پہچان نہ ہونے کے تین اسباب ہیں۔

الف......راوی کی صفات کا زیادہ ہونا۔یعنی نام یا کنیت یا لقب یا صفت یا پیشہ یا نسب، وہ ان میں سے کسی ایک کے ساتھ مشہور ہوتا ہے اور کسی غرض کے لئے اسے غیر مشہور نام کے ساتھ ذکر کیا جاتا ہے جس سے یہ گمان ہوتا ہے کہ یہ کوئی دوسرا راوی ہے پس اس کی حالت مجہول رہتی ہے۔

ب......روایت کی قلت۔اس سے روایت کی قلت کی وجہ سے اس سے زیادہ احادیث نہیں لی جاتیں پس بعض اوقات اس سے ایک راوی روایت کرتا ہے۔

ج......نام کی صراحت نہ کرنا۔اختصار وغیرہ کی وجہ سے بعض اوقات راوی اس کے نام کی صراحت نہیں کرتا اور اسے مبہم رکھتا ہے۔

## مثالیں......راوی کی کثرت صفات:

الف......محمد بن سائب بن بشر کلبی کو بعض حضرات نے ان کے دادا کی طرف

Marfat.com

منسوب کرتے ہوئے کہا "محمد بن بشر" بعض نے ان کو حماد بن سائب کہا اور بعض نے ان کی کنیت "ابو النصر" ذکر کی، کچھ حضرات نے "ابو سعید" اور بعض نے "ابو ہشام" ذکر کی اس طرح گمان کیا گیا کہ یہ ایک جماعت ہے حالانکہ وہ ایک شخصیت ہیں۔

ب......راوی کی روایت اور مروی عنہ کی قلت۔

ابو العشراء دارمی تابعین میں سے ہیں ان سے حماد بن سلمہ کے علاوہ کسی نے روایت نہیں کیا۔

ج......نام کی عدم صراحت۔

مثلاً۔راوی کا قول "اخبرنی فلان یا اخبرنی شیخ یا اخبرنی رجل" وغیرہ

## مجہول کی تعریف:

وہ راوی جس کی ذات یا صفات کی معرفت حاصل نہ ہو وہ مجہول ہے۔

اس کا مطلب یہ ہے کہ مجہول وہ راوی ہے جس کی ذات یا شخصیت کی پہچان نہ ہو یا اس کی شخصیت تو جانی پہچانی ہو لیکن اس کی صفت مثلاً عادل اور ضابط ہونے کے بارے میں کچھ علم نہ ہو۔

## مجہول کی اقسام:

مجہول کی تین اقسام ہو سکتی ہیں:

### الف......مجہول العین:

تعریف..... وہ راوی جس کا نام ذکر کیا جائے لیکن اس سے صرف ایک راوی روایت کرے۔

Marfat.com

### اس کی روایت کا حکم:

اسے قبول نہ کیا جائے مگر یہ کہ اس کی توثیق کی جائے۔

### توثیق کیسے ہو؟

اس کی توثیق دو میں سے ایک بات کے ساتھ ہوتی ہے۔

الف......جس سے یہ روایت کر رہا ہے اس کے علاوہ کوئی اس کی توثیق کرے۔

ب......یا وہ توثیق کرے جس سے یہ روایت کرتا ہے بشرطیکہ وہ اہل جرح وتعدیل سے ہو۔

### کیا اس کی حدیث کا کوئی خاص نام ہے؟

اس کی حدیث کا کوئی خاص نام نہیں اس کی حدیث ضعیف حدیث کی ایک قسم ہے۔

### ب......مجہول الحال:

اسے مستور الحال بھی کہتے ہیں۔

تعریف......جس سے دو یا زیادہ راوی روایت کریں لیکن اس کی توثیق نہ ہو۔

### اس کی روایت کا حکم:

صحیح قول کے مطابق جمہور محدثین کے نزدیک اس کی روایت کو رد کیا جائے گا۔

### کیا اس کی حدیث کا کوئی خاص نام ہے؟

مجہول الحال کی حدیث کا کوئی خاص نام نہیں اس کی روایت کردہ حدیث ضعیف کی ایک قسم ہے۔

Marfat.com

## ج...... مبہم:

مبہم کو مجہول کی اقسام میں شمار کیا جا سکتا ہے۔ اگرچہ علمائے حدیث نے اس پر خاص نام کا اطلاق کیا ہے لیکن اس کی حقیقت مجہول کی حقیقت کے مشابہ ہے۔

تعریف...... مبہم وہ راوی ہے جس کا نام حدیث میں صراحتاً نہ آیا ہو۔

## اس کی روایت کا حکم:

اس کی روایت مقبول نہیں جب تک اس سے روایت کرنے والا راوی اس کے نام کی صراحت نہ کرے یا کسی دوسری سند سے جس سے اس کا نام صراحتاً ہو، وضاحت ہو جائے۔ (تو اس کی روایت مقبول ہوگی)

اس کی روایت کو رد کرنے کا سبب اس کی ذات کا مجہول ہونا ہے کیونکہ جس کے نام میں ابہام ہو اس کی ذات مجہول ہوتی ہے۔ اور اس کی عدالت بدرجہ اولیٰ مجہول ہوگی لہذا اس کی روایت مقبول نہ ہوگی۔

## اگر تعدیل کے لفظ کے ساتھ ابہام کرے تو کیا اس کی روایت قبول ہوگی؟

مثلاً اس سے روایت کرنے والا کہے "اخبرنی الثقة" (ثقہ راوی نے مجھے خبر دی)

جواب یہ ہے کہ اصح قول کے مطابق اس کی روایت بھی قبول نہیں کی جائے گی کیونکہ بسا اوقات وہ اس کے نزدیک ثقہ ہوتا ہے دوسروں کے نزدیک ثقہ نہیں ہوتا۔

## کیا اس کی حدیث کا کوئی خاص نام ہے؟

ہاں اس کی حدیث کا خاص نام ہے اور وہ "حدیث مبہم" ہے تو حدیث مبہم وہ حدیث ہے جس کی سند میں ایسا راوی ہو جس کو ثقہ قرار نہ دیا گیا ہو، امام بیقونی نے

Marfat.com

اپنے منظوم کلام میں کہا ہے:

ومبھم مافیہ راو لم یسم ...... مبہم وہ حدیث ہے جس میں کوئی ایسا راوی ہو جس کا نام نہیں لیا گیا۔

## اسباب جہالت سے متعلق مشہور ترین کتب:

ا......راوی کی صفات کی کثرت......اس سلسلے میں خطیب بغدادی نے "موضح اوھام الجمع والتفریق" نامی کتاب لکھی ہے۔

۲......راوی کا بہت کم روایت کرنا......اس سے متعلق بہت سی کتب لکھی گئی ہیں جن کا نام "کتب الوحدان" ہے۔ یعنی وہ کتب جوان راویوں کے ذکر پر مشتمل ہیں جن سے صرف ایک راوی نے روایت کی۔ ان کتب میں حضرت امام مسلم رحمہ اللہ کی کتاب "الوحدان" بھی ہے۔

ج......راوی کے نام کی عدم تصریح:

اس سلسلے میں مبہمات کے نام سے کتب تصنیف کی گئی ہیں جیسے خطیب بغدادی کی تصنیف "الاسماء المبھمة فی الانباء المحکمة" اورولی الدین عراقی کی تصنیف "المستفاد من مبھمات المتن والاسناد"۔

## بدعت......راوی پر طعن کا نواں سبب

تعریف۔ لغت میں یہ "بدع" کا مصدر ہے اس کا معنی ہے انشاء (کوئی چیز پیدا کی) جیسے ابتدعہ (نئی چیز کو وجود میں لایا) قاموس (لغت کی کتاب) میں اسی طرح ہے۔

Marfat.com

اصطلاحاً..... دین کے کامل ہونے کے بعد اس میں کوئی نئی بات پیدا کرنا یا رسول اللہ ﷺ کے وصال کے بعد خواہشات اور اعمال میں کوئی نیا کام جاری کرنا۔ (جس کا دین سے کوئی تعلق نہ ہو)

## اقسام:

بدعت کی دو قسمیں ہیں:

ا..... بدعة مکفِرہ..... یعنی جس بدعت کے مرتکب کو کافر قرار دیا جائے جیسے وہ ایسا عقیدہ رکھے جس سے کفر لازم آتا ہے۔

اور قابل اعتماد بات یہ ہے کہ جس بدعتی کی روایت رد کی جاتی ہے یہ وہ شخص ہے جو شریعت کے ایسے امر متواتر کا انکار کرے۔ جس کا ضروریات دین میں سے ہونا معلوم ہو یا اس کے برعکس عقیدہ رکھے۔ (۱)

ب..... بدعة مفسِقہ..... یعنی جس بدعت کے مرتکب کو اس بدعت کی وجہ سے فاسق قرار دیا جائے یہ وہ شخص ہے جس کی بدعت سے کفر بالکل لازم نہیں آتا۔

## بدعتی کی روایت کا حکم:

الف..... اگر اس کی بدعت سے کفر لازم آتا ہے تو اس کی روایت کو رد کیا جائے گا۔

ب..... اگر اس بدعت کے مرتکب کو فاسق قرار دیا جاتا ہے تو صحیح بات جو جمہور کا مؤقف ہے، یہ ہے کہ اس کی روایت دو شرطوں کے ساتھ قبول ہے۔

---

(۱)..... شرح نخبۃ الفکر ص:۵۲

Marfat.com

ا......وہ روایت اس کی بدعت کی طرف دعوت دینے والی نہ ہو۔

۲......وہ ایسی روایت بیان نہ کرے جو اس کی بدعت کو رواج دے۔

## کیا بدعتی کی روایت کا کوئی خاص نام ہے؟

بدعتی کی روایت کا کوئی خاص نام نہیں اس کی روایت حدیث مردود کی ایک قسم ہے جیسا کہ تم جان چکے ہو اور اس کی روایت ان شرائط کے ساتھ قبول ہوگی جن کا ابھی ذکر ہو چکا ہے۔

## سوء حفظ......(یہ راوی پر طعن کا دسواں سبب ہے)

تعریف...... وہ راوی سوء حفظ (حفظ میں کمزوری) والا ہوتا ہے جس کی درستگی والی حالت کو خطاء والی حالت پر ترجیح نہ ہو۔

## اقسام:

اس کی دو قسمیں ہیں۔

الف......یا تو سوء حفظ اس کی زندگی کے شروع سے ہو اور تمام حالات میں اسے لازم ہو اور اس شخص کی حدیث کو بعض علماء حدیث کی رائے میں شاذ کہا جاتا ہے۔

ب......یا سوء حفظ اس پر بعد میں طاری ہوا اور اس کی وجہ بڑھاپا یا بینائی کا چلا جانا یا کتب کا جل جانا ہے تو اسے مختلط کہا جاتا ہے۔

## اس کی روایت کا حکم:

الف...... پہلا یعنی جو پیدائشی طور پر سوء حفظ کا شکار ہو اس کی روایت مردود ہے۔

Marfat.com

ب......اور دوسرا یعنی مختلط، تو اس کی روایت کا حکم درج ذیل کے مطابق تفصیلی ہے۔

ا......جو کچھ وہ اختلاط سے پہلے بیان کرے اور وہ ممتاز ہو تو وہ مقبول ہے۔

۲......اختلاط کے بعد جو کچھ روایت کیا وہ مردود ہے۔

۳......اور جس میں امتیاز نہ ہو سکے کہ وہ اختلاط سے پہلے کی حدیث ہے یا بعد کی تو جب تک امتیاز نہ ہو اس میں توقف ہوگا۔

## چوتھی فصل......مقبول و مردود کے درمیان مشترک حدیث

### پہلی بحث:

مسند الیہ کی طرف نسبت کے اعتبار سے خبر کی تقسیم۔

### دوسری بحث:

مقبول و مردود کے درمیان مشترک انواع۔

### پہلی بحث......مسند الیہ کی طرف نسبت کے اعتبار سے خبر کی تقسیم:

مسند الیہ کی طرف نسبت کے اعتبار سے خبر کی چار قسمیں ہیں۔

حدیث قدسی، مرفوع، موقوف اور مقطوع۔ ان تمام اقسام کی تفصیلی بحث آ رہی ہے۔

### حدیث قدسی:

تعریف...... (الف): لفظ قدسی، قدس سے بنا ہے اور لغت میں قدس کا معنی

Marfat.com

پاکیزگی ہے جس طرح قاموس میں ہے (۱) یعنی وہ حدیث جو ذات قدسیہ کی طرف منسوب ہے اور وہ اللہ تعالیٰ کی ذات ہے۔

ب...... اصطلاحاً...... وہ حدیث جو نبی اکرم ﷺ سے ہماری طرف اس طرح نقل ہوتی کہ آپ نے اس کی سند (نسبت) اللہ تعالیٰ کی طرف فرمائی۔

## حدیث قدسی اور قرآن میں فرق:

ان دونوں میں کئی اعتبار سے فرق ہے مشہور ترین صورتیں درج ذیل ہیں۔

الف...... قرآن پاک لفظاً و معنیً اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہے اور حدیث قدسی کا معنیٰ اللہ تعالیٰ کی طرف سے اور الفاظ نبی اکرم ﷺ کی طرف سے ہوتے ہیں۔

ب...... قرآن پاک کی تلاوت بطور عبادت کی جاتی ہے اور حدیث قدسی کی تلاوت بطور عبادت نہیں ہوتی۔

ج...... قرآن پاک کے ثبوت کے لئے تواتر شرط ہے اور حدیث قدسی کے ثبوت کے لئے تواتر شرط نہیں ہے۔

## احادیث قدسیہ کی تعداد:

احادیث نبویہ کی نسبت سے احادیث قدسیہ زیادہ نہیں ہیں البتہ ان کی تعداد دو سو سے زیادہ ہے۔

## مثال:

امام مسلم نے اپنی صحیح میں حضرت ابوذر رضی اللہ عنہ سے روایت کیا وہ حضور علیہ

---

(۱)...... القاموس ص:۶۳۸

Marfat.com

الصلوٰۃ والسلام سے روایت کرتے ہیں آپ ﷺ اللہ تعالیٰ سے نقل کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

یا عبادی انی حرّمت الظلم علی نفسی وجعلته بینکم محرّما فلا تظالموا (آخر تک)(۱)

ترجمہ: اے میرے بندو! میں نے اپنے اوپر ظلم کو حرام کیا اور اُسے تمہارے درمیان بھی حرام قرار دیا پس تم ایک دوسرے پر ظلم نہ کرو۔

## حدیث قدسی کی روایت کے صیغے:

حدیث قدسی کے راوی کے لئے دو صیغے ہیں ان میں سے جس کے ساتھ چاہے روایت کرے۔

۱.....قال رسول اللہ ﷺ فیما یرویه عن ربه عز وجل۔

۲.....قال اللہ تعالیٰ فیما رواہ عنه رسوله ﷺ۔

## اس کے بارے مشہور ترین تصنیف:

"الاتحاف السنیه بالاحادیث القدسیه"۔ یہ کتاب عبدالرؤف مناوی کی ہے انہوں نے اس میں ۲۷۲ احادیث جمع کی ہیں۔

## مرفوع:

تعریف.....(الف) لغوی اعتبار سے یہ کلمہ رفع سے اسم مفعول ہے جو وضع کی ضد ہے گویا اس کا یہ نام اس لئے رکھا گیا کہ اس کی نسبت رفیع (بلند) مقام والی

(۱).....صحیح مسلم باب تحریم الظلم حدیث:۲۵۷۷،جلد۴ مکتبہ غزالی دمشق

شخصیت کی طرف ہے اور وہ نبی اکرم ﷺ ہیں۔

ب...... اصطلاحاً...... وہ قول یا فعل یا تقریر یا صفت جس کی اضافت رسول اکرم ﷺ کی طرف ہو (وہ حدیث مرفوع ہے)

## تعریف کی شرح:

یعنی وہ حدیث جس کی نسبت یا سند حضور ﷺ تک پہنچتی ہو گویا یہ مضاف نبی اکرم ﷺ کا قول یا فعل یا تقریر یا صفت ہے چاہے اضافت کرنے والا کوئی صحابی ہو یا اس سے کم درجہ کا راوی ہو اس کی سند متصل ہو یا منقطع پس مرفوع میں موصول مرسل، متصل اور منقطع سب داخل ہیں۔ اس کی حقیقت کے بارے میں یہی مشہور ہے اگرچہ اس کی حقیقت اور تعریف کے بارے میں دیگر کئی اقوال ہیں۔

## مرفوع کی اقسام:

اس تعریف سے واضح ہوا کہ مرفوع کی درج ذیل چار اقسام ہیں:

الف...... مرفوع قولی۔ ب...... مرفوع فعلی۔ ج...... مرفوع تقریری۔

د...... مرفوع وصفی۔

## مثالیں:

الف...... مرفوع قولی کی مثال:

صحابی یا غیر صحابی کہے "قال رسول اللہ ﷺ کذا" (رسول اللہ ﷺ نے یوں فرمایا۔)

ب...... مرفوع فعلی کی مثال:

Marfat.com

صحابی یا غیر صحابی کہے "فعل رسول اللہ ﷺ کذا" (رسول اللہ ﷺ نے یوں کیا۔)

ج......مرفوع تقریری کی مثال:

صحابی یا غیر صحابی کہے کہ "فُعِل بحضرۃ النبی ﷺ کذا" (رسول اکرم ﷺ کے سامنے فلاں کام کیا گیا۔) اور آپ سے انکار منقول نہ ہو۔

د......مرفوع وصفی کی مثال:

صحابی یا غیر صحابی کہے "کان رسول اللہ ﷺ احسن الناس خلقا" (حضور ﷺ سب لوگوں سے زیادہ اچھے اخلاق والے تھے۔)

## موقوف:

تعریف...... لغوی اعتبار سے یہ وَقَفَ سے اسم مفعول کا صیغہ ہے گویا راوی حدیث کو صحابی پر ٹھہرا دیتا ہے اور باقی سلسلہ سند کو نہیں چلاتا۔

اصطلاحی...... طور پر وہ قول، فعل یا سکوت جس کی اضافت صحابی کی طرف ہو۔

## تعریف کی وضاحت:

وہ چیز جو ایک صحابی کی طرف یا صحابہ کرام کی ایک جماعت کی طرف منسوب یا مضاف ہو چاہے ان کی طرف منسوب چیز قول یا فعل یا سکوت ہو اور برابر ہے کہ وہ متصل ہو یا منقطع۔ وہ موقوف ہے۔

## مثالیں:

الف......موقوف قولی کی مثال:

Marfat.com

راوی کا یہ قول کہ حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ نے فرمایا:

حدثوا الناس بما یعرفون اتریدون ان یکذب اللہ ورسولہ۔

ترجمہ: لوگوں سے وہ باتیں بیان کرو جن کو وہ پہچان سکیں کیا تم چاہتے ہو کہ اللہ اور اس کے رسول کو جھٹلایا جائے۔(۱)

ب...... موقوف فعلی کی مثال:

امام بخاری رحمہ اللہ کا قول۔

ام ابن عباس وھو متیمم۔ (حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما نے امامت کرائی اور آپ حالت تیمم میں تھے۔(۲)

ج...... موقوف تقریری کی مثال:

مثلاً کوئی تابعی کہے: فعلت کذا امام احد الصحابۃ ولم ینکر علی۔

ترجمہ: میں نے ایک صحابی کے سامنے فلاں کام کیا اور انہوں نے مجھ پر اعتراض نہیں کیا۔

## موقوف کا ایک اور استعمال:

اسم موقوف کو صحابہ کرام کے علاوہ کسی اور کی طرف سے منقول خبر پر بھی استعمال کیا جاتا ہے لیکن اس کے ساتھ قید لگائی جاتی ہے۔ جیسے کہا جائے: ھذا حدیث وقفہ فلان علی الزھری اوعلی عطاء اونحو ذلک۔ (اس حدیث کو فلاں نے زہری یا عطاء (بن ابی رباح) وغیرہ پر موقوف کیا (اور یہ دونوں تابعین میں سے ہیں)

(۱)...... صحیح بخاری شریف کتاب العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۴/۱
(۲)...... صحیح بخاری شریف کتاب التیمم قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۹/۱

Marfat.com

## فقہاء خراسان کی اصطلاح:

خراسان کے فقہاء مرفوع کو خبر اور موقوف کو اثر کہتے ہیں جبکہ محدثین کرام ان دونوں کو اثر کہتے ہیں جو "اثرت الشیء" سے ماخوذ ہے جس کا معنی ہے میں نے اسے روایت کیا۔

## وہ فروع جو حکماً مرفوع سے تعلق رکھتی ہیں:

چند صورتیں الفاظ اور شکل میں موقوف نظر آتی ہیں لیکن باریک بین شخص جب ان کی حقیقت کو دیکھتا ہے تو خیال کرتا ہے کہ یہ مرفوع حدیث کے معنی میں ہے اس لئے علماء نے ان پر مرفوع حکمی کا اطلاق کیا ہے یعنی وہ لفظاً موقوف اور حکماً مرفوع ہیں۔

## اس کی چند صورتیں:

الف......ایسا صحابی جو اہل کتاب سے روایت نہیں لیتا وہ ایسی بات بیان کرے جس میں اجتہاد کی گنجائش اور اس کا دخل نہ ہو اور نہ ہی وہ لغت یا غریب الفاظ کی تشریح سے متعلق ہو تو اس کا یہ قول مرفوع ہے جیسے مثال کے طور پر۔

۱......گزشتہ امور کے بارے میں خبریں دینا اور مخلوق کی پیدائش کی خبریں وغیرہ

۲......آنے والے امور سے متعلق خبریں دینا جیسے لڑائیاں اور فتنے وغیرہ یا قیامت کے حالات وغیرہ بیان کرنا۔

۳......ان اعمال کی خبریں دینا جن کے کرنے پر خاص ثواب حاصل ہوتا ہے یا خاص عقاب وسزا کی وعید ہو جیسے وہ کہے "من فعل کذا فله کذا" جس نے فلاں

کام کیا اس کے لئے اتنا ثواب ہے۔

ب......یا صحابی ایسا کام کرے جس میں اجتہاد اور رائے کی گنجائش نہ ہو جیسے حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ کا نماز کسوف کو ہر رکعت میں دو رکوع سے زیادہ کے ساتھ ادا کرنا۔

ج......یا صحابی خبر دے کہ وہ (صحابہ کرام رضی اللہ عنہم) فلاں بات کہتے یا فلاں کام کرتے تھے یا فلاں چیز میں کوئی حرج محسوس نہیں کرتے تھے۔

ا......اگر وہ اس چیز کو نبی اکرم ﷺ کی طرف منسوب کرتا ہے تو صحیح قول کے مطابق یہ مرفوع ہے جیسے حضرت جابر رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں:

كنا نعزل على عهد رسول الله ﷺ (۱)

ترجمہ: ہم نبی اکرم ﷺ کے زمانے میں عزل کیا کرتے تھے۔

۲......اگر وہ اسے نبی اکرم ﷺ کے زمانے کی طرف منسوب نہ کرے تو وہ جمہور محدثین کے نزدیک موقوف ہے۔ جیسے حضرت جابر رضی اللہ عنہ کا فرمانا:

كنا اذا صعدنا كبرنا واذا نزلنا سبحنا۔(۲)

ترجمہ: جب ہم بلندی پر چڑھتے تو اللہ اکبر کہتے اور جب ہم اترتے تو "سبحان اللہ" پڑھتے۔

د......یا صحابی یہ کہے کہ ہمیں فلاں کام کرنے کا حکم دیا گیا یا فلاں کام کرنے سے

---

(۱)......صحیح بخاری کتاب النکاح باب العزل ۷۸۴/۲

(۲)......صحیح بخاری کتاب الجہاد باب التسبیح ۴۲۰/۱

Marfat.com

منع کیا گیا یا فلاں کام سنت ہے جیسے ایک صحابی (یعنی حضرت انس رضی اللہ عنہ) کا فرمان ہے: أمر بلال ان یشفع اذان وان یوتر الاقامۃ ۔(۱)

ترجمہ: حضرت بلال رضی اللہ عنہ کو حکم دیا گیا کہ وہ اذان کے کلمات دو دو بار اور اقامت کے کلمات ایک ایک بار کہیں۔

(احناف کے نزدیک اذان اور اقامت دونوں کے کلمات دو دو مرتبہ ہیں اس پر احادیث موجود ہیں بیان کی گنجائش نہیں۔۱۲ ہزاری)

حضرت ام عطیہ رضی اللہ عنہا کا فرمان ہے:

نھینا عن اتباع الجنازۃ ولم یعزم علینا۔(۲)

ترجمہ: ہمیں (خواتین کو) جنازوں کے ساتھ جانے سے منع کیا گیا مگر تاکیدی حکم نہیں دیا گیا۔

یا حضرت ابو قلابہ رضی اللہ عنہ کا قول ہے حضرت انس رضی اللہ عنہ بیان کرتے ہیں:

من السنۃ اذا تزوج البکر علی الثیب اقام عندھا سبعا۔(۳)

ترجمہ: یہ بات سنت سے ہے کہ جب آدمی ثیبہ کی موجودگی میں کنواری سے نکاح کرے تو اس کے پاس سات دن ٹھہرے۔

ہ......راوی، حدیث کے بیان میں صحابی کا ذکر کر کے ان چار کلمات میں سے

(۱)......صحیح بخاری کتاب الاذان باب الاقامۃ ۸۵/۱
(۲)......صحیح بخاری باب اتباع النساء الجنازۃ ۱۷۰/۱
(۳)......صحیح بخاری کتاب النکاح باب اذا تزوج البکر علی الثیب ۷۸۵/۲

Marfat.com

کوئی کلمہ ذکر کرے۔ "یرفعه" "ینمیه" "یبلغ به" ، روایة، جیسے حضرت اعرج کی حدیث وہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں تلا تقوم الساعة حتی تقاتلوا الترك صغار الاعين ۔(۱) (تم چھوٹی آنکھوں والوں سے لڑو گے۔)

و......یا صحابی ایسی تفسیر کرے جس کا آیت کے نزول کے ساتھ تعلق ہو جیسے حضرت جابر رضی اللہ عنہ کا فرمان ہے:

کانت الیهود تقول من اتی امراته فی قبلها من دبرها جاء الولد احول (۲) فانزل الله تعالیٰ: "نساء کم حرث لکم"۔(۳)

ترجمہ: یہودی کہا کرتے تھے کہ جو شخص اپنی بیوی کی پچھلی جانب سے ہو کر اگلی جانب دخول کرتا ہے تو بچہ بھینگا پیدا ہوتا ہے۔ اس پر اللہ تعالیٰ نے یہ آیت نازل فرمائی "عورتیں تمہاری کھیتیاں ہیں۔ (اپنی کھیتیوں میں جیسے چاہو داخل ہو)

## کیا موقوف حدیث حجت بن سکتی ہے؟

جیسا کہ معلوم ہے موقوف حدیث کبھی صحیح ہوتی ہے کبھی حسن اور کبھی ضعیف ہوتی ہے اگر وہ صحیح ثابت ہو جائے تو کیا اس سے استدلال درست ہے۔

جواب......موقوف میں اصول یہ ہے کہ اس سے استدلال نہ کیا جائے کیونکہ وہ صحابہ کرام کے اقوال وافعال ہیں لیکن اگر وہ صحیح ثابت ہوں تو بعض ضعیف احادیث کو قوی بناتی ہیں جیسا کہ مرسل میں بیان ہوا۔

(۱)......صحیح بخاری کتاب الجہاد باب قتال الترک قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۱۰
(۲)......جامع ترمذی کتاب التفسیر ۵۹۳/۲
(۳)......سورۃ بقرہ آیت: ۲۲۳

Marfat.com

کیونکہ صحابہ کرام کی اصل حالت یہی ہے کہ وہ سنت کے مطابق عمل کرتے تھے اور یہ اس وقت ہے جب صحابی کا قول مرفوع کے حکم میں نہ ہو اور جب وہ مرفوع کے حکم میں ہو تو وہ مرفوع کی طرح حجت اور دلیل قطعی ہے۔

## مقطوع:

تعریف..... لغوی اعتبار سے یہ قَطَعَ سے اسم مفعول ہے اور قطع، وصل کی ضد ہے (قطع کا معنی کاٹنا)

اصطلاحاً..... وہ قول یا فعل جو تابعی یا اس سے نیچے والے طبقے والے کی طرف منسوب ہو۔

## تعریف کی تشریح:

وہ قول یا فعل جس کی نسبت کی گئی یا سند تابعی یا تبع تابعی یا کسی نچلے طبقے کے راوی کی طرف بیان کی گئی، (وہ مقطوع حدیث ہے)

مقطوع، منقطع کا غیر ہے کیونکہ مقطوع، متن کی صفات میں سے ہے اور منقطع سند کی صفات میں سے ہے۔ یعنی مقطوع حدیث تابعی یا اس سے نیچے والے کا کلام ہوتا ہے کبھی اس تابعی تک اس کی سند متصل ہوتی ہے جبکہ منقطع کا معنی یہ ہے کہ اس حدیث کی سند متصل نہیں ہے لہذا اس (منقطع) کا متن سے کوئی تعلق نہیں۔

## مثالیں:

مقطوع قولی کی مثال..... بدعتی کے پیچھے نماز پڑھنے سے متعلق حضرت حسن بصری رحمہ اللہ کا فرمان: صل وعلیہ بدعتہ" (تم اس کے پیچھے نماز پڑھو اس کی

Marfat.com

بدعت کا وبال اسی پر ہوگا۔)(۱)

ب...... مقطوع فعلی کی مثال:

ابراہیم بن محمد بن المنتشر کا قول ہے:

كان مسروق يرخي الستر بينه وبين اهله ويقبل على صلاته ويخليهم ودنياهم ـ(۲)

ترجمہ: حضرت مسروق رحمہ اللہ اپنے اور اپنے گھر والوں کے درمیان پردہ لٹکاتے اور اپنی نماز کی طرف متوجہ ہوجاتے اوران (گھر والوں اوران کی دنیا کو چھوڑ دیتے۔

مقطوع حدیث کو حجت بنانا:

احکام شرعیہ میں سے کسی بھی حکم کے لئے مقطوع حدیث سے استدلال نہیں ہوسکتا اگرچہ اس کی سند صحیح ہو کیونکہ یہ مسلمانوں میں سے کسی ایک کا قول یا فعل ہے لیکن اگر وہاں کوئی ایسا قرینہ موجود ہو جو اس کے مرفوع ہونے پر دلالت کرے جیسے تابعی کے ذکر کے وقت راوی یوں کہے "رفعہ" تو اس وقت اس کا حکم مرفوع مرسل کا ہوگا۔

مقطوع پر منقطع کا اطلاق:

بعض محدثین لفظ مقطوع بول کر منقطع مراد لیتے ہیں جیسے امام شافعی اور طبرانی

(۱)..... جو کام سنت کے خلاف ہو یا شریعت میں اسکی اصل نہ ہو وہ بدعت سیئہ ہے اگر شریعت میں اس کی اصل ہے یا سنت کے خلاف نہیں تو وہ بدعت حسنہ ہے۔۱۲ہزاروی۔

(۲)..... حلیۃ الاولیاء ۹۶/۲

Marfat.com

رحمہا اللہ۔ ان کے نزدیک منقطع سے مراد وہ روایت ہے جس کی سند متصل نہ ہو۔ اور یہ غیر معروف اصطلاح ہے۔

امام شافعی رحمہ اللہ کی جانب سے یہ عذر پیش کیا جاتا ہے کہ انہوں نے اس اصطلاح (یعنی مقطوع) کے مقرر ہونے سے پہلے اس کا استعمال کیا تھا لیکن طبرانی نے اس کا استعمال عام اصطلاح سے ہٹ کر کیا ہے۔

## موقوف اور مقطوع کے مقامات:

الف...... مصنف ابن ابی شیبہ۔ ب...... مصنف عبدالرزاق۔

ج...... ابن جریر ابن ابی حاتم اور ابن المنذر کی تفسیریں۔

## دوسری بحث...... مقبول اور مردود کے درمیان دوسری مشترک انواع:

## مُسند:

تعریف...... لغوی اعتبار سے یہ "اسند" سے اسم مفعول کا صیغہ ہے یعنی اس نے اسے منسوب کیا اور اس کی اضافت کی۔

اصطلاحاً...... وہ حدیث جس کی سند نبی اکرم ﷺ تک مرفوع متصل ہو۔

یہ وہ تعریف ہے جس کو امام حاکم نے قطعی قرار دیا اور ابن حجر نے اسے نخبۃ الفکر میں جزم (قطعیت) کے ساتھ بیان کیا جب کہ اس کے بارے میں دیگر کئی تعریفیں بھی ہیں۔

## مثال:

وہ حدیث جسے امام بخاری رحمہ اللہ نے بیان کیا وہ فرماتے ہیں:

حدثنا عبداللہ بن یوسف عن مالک عن ابی الزناد عن

Marfat.com

الاعرج عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ قال ان رسول اللہ ﷺ قال اذا شرب الکلب فی اناء احدکم فلیغسلہ سبعا۔(۱)

ترجمہ: حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں بے شک رسول اکرم ﷺ نے فرمایا: جب تم میں سے کسی ایک کے برتن سے کتا پی لے تو اسے سات مرتبہ دھونا چاہیے۔

اس حدیث کی سند اول سے آخر تک متصل ہے اور نبی اکرم ﷺ تک مرفوع بھی ہے۔

## متصل:

تعریف...... لغوی اعتبار سے یہ "اتصل" سے اسم فاعل ہے اور یہ "انقطع" کی ضد ہے اس کو موصول بھی کہتے ہیں۔

اصطلاحاً...... وہ مرفوع یا موقوف حدیث جس کی سند متصل ہو۔

## مرفوع متصل کی مثال:

مالك عن ابن شھاب عن سالم بن عبداللہ عن ابیہ عن رسول اللہ انہ قال کذا۔

## موقوف متصل کی مثال:

مالك عن نافع عن ابن عمر انہ قال کذا۔

(۱)...... صحیح بخاری ۲۹/۱

Marfat.com

## کیا تابعی کے قول کا نام متصل رکھا جاسکتا ہے؟

حافظ عراقی فرماتے ہیں کہ تابعین کے اقوال کی اسناد جب متصل ہوں تو انہیں مطلقاً متصل کا نام نہیں دیا جاسکتا البتہ قید کے ساتھ جائز ہے جو علماء کے کلام میں موجود ہے۔وہ کہتے ہیں کہ یہ روایت سعید بن مسیب تک متصل ہے یا امام زہری تک یا یہ امام مالک وغیرہ تک متصل ہے۔

اس میں نکتہ یا باریک فرق یہ ہے کہ ان کا نام مقاطیع (مقطوع کی جمع) رکھا جاتا ہے اوران پر متصل کا عام اطلاق کرنا اسی طرح ہے جیسے ایک چیز کے لغوی اعتبار سے دو متضاد وصف بیان کیے جائیں۔

## زیادات ثقات

### زیادات ثقات کا مفہوم:

زیادات ،زیادۃ کی اور ثقات ، ثقہ کی جمع ہے ثقہ سے مراد عادل وضابط ہے اور ثقہ کی زیادتی سے مراد کسی ثقہ راوی کی روایت میں موجود زائد الفاظ ہیں جو دوسرے ثقات نے اس حدیث میں بیان نہیں کیے۔

### زائد الفاظ کو جمع کرنے والے مشہور ترین ائمہ:

بعض احادیث میں بعض ثقہ راویوں سے ثابت ان زیادات نے علماء کی نظروں کو متوجہ کیا تو انہوں نے ان کی تحقیق کی نیز ان کو جمع کرنے اور ان کی معرفت کا اہتمام کیا،اس سلسلے میں مشہور ترین ائمہ یہ ہیں:

۱۔ابوبکر عبداللہ بن محمد بن زیاد نیشاپوری ۔۲۔ابونعیم جرجانی ۔۳۔ابوالولید حسان بن محمد قرشی۔

## ان زائد الفاظ کا محل وقوع:

ا......متن میں: متن میں ایک کلمہ یا ایک جملہ کا اضافہ ہوتا ہے۔

۲......اسناد میں: موقوف کو مرفوع یا مرسل کو موصول بیان کرنا۔

## متن میں زیادتی کا حکم:

متن میں زیادتی کے حکم کے بارے میں علماء کے درمیان اختلاف ہے۔

الف......بعض نے اس زیادتی کو مطلقاً قبول کیا۔

ب......بعض نے اس کو مطلقاً ردّ کیا۔

ج......بعض نے اس راوی سے زیادتی کو ردّ کیا جس نے اس زیادتی کو پہلے پہل ذکر کیا اور دوسرے راویوں سے اسے قبول کیا ہے۔(۱)

ابن صلاح نے زیادتی کو قبول وردّ کے اعتبار سے تین قسموں میں تقسیم کیا ہے اور یہ اچھی تقسیم ہے امام نووی وغیرہ نے اس میں ان کی موافقت کی ہے اور وہ تقسیم درج ذیل ہے۔

الف......ایسی زیادتی جس میں ثقات یا اوثق (زیادہ ثقہ) کی روایات کی نفی اور مخالفت نہ ہو اس کا حکم قبول کرنا ہے کیونکہ یہ اس حدیث کی طرح ہے جسے ایک ثقہ راوی نے بیان کیا ہے۔

ب......ایسی زیادتی جو ثقہ یا اوثق کی روایت کے منافی اور مخالف ہو اس کا حکم یہ ہے کہ وہ مردود ہے جیسا کہ شاذ میں گزر چکا ہے۔

---

(۱)......علوم الحدیث ص:۷۷ / الکفایۃ :۴۲۴

ج......ایسی زیادتی جس میں ثقات یا اوثق کی روایات سے مخالفت یا نفی کی ایک نوع موجود ہو یہ زیادتی جو دو امور میں منحصر ہے۔

ا......مطلق کو مقید کرنا۔۲......عام کو خاص کرنا۔

اس قسم کے حکم سے ابن الصلاح خاموش رہے ہیں۔ اور امام نووی فرماتے ہیں صحیح یہ ہے کہ زیادتی کی قسم یہ بھی مقبول ہے۔(۱)

## متن میں زیادتی کی مثالیں:

ا......وہ زیادتی جس میں (ثقہ یا اوثق کی روایت کی) مخالفت نہیں ہے اس کی مثال امام مسلم کی وہ روایت ہے جو علی بن مسہر کے طریق سے مروی ہے وہ اعمش سے وہ ابورزین سے، وہ ابوصالح سے اور وہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں اس میں "فلیرقہ" کی زیادتی ہے اور ولوغ الکلب (کتے کا چاٹنا) کی حدیث میں اعمش کے تمام شاگرد اس زیادتی کو ذکر نہیں کرتے بلکہ وہ اس طرح بیان کرتے ہیں:

اذا ولغ الکلب فی اناء احدکم فلیغسلہ سبع مرارا۔(۲)

ترجمہ: جب کتا تم میں سے کسی ایک کے برتن کو چاٹے تو وہ اسے سات مرتبہ دھوئے۔

اور یہ زیادتی (فلیرقہ) ایک مستقل حدیث اور خبر کی طرح ہے جسے حضرت علی بن مسہر اکیلے بیان کرتے ہیں اور وہ ثقہ ہیں تو یہ زیادتی مقبول ہے۔

---

(۱)......التدریب مع التقریب ۱/۲۴۷

(۲)......صحیح مسلم ۱۸۲/۳ حدیث نمبر ۲۷۹ مکتبہ غزالی دمشق

Marfat.com

ب......مخالفت اور منافی والی زیادتی۔

الفاظ "یوم عرفہ" کی زیادتی جو اس حدیث میں بیان ہوئی ہے:

یوم عرفہ ویوم النحر وایام التشریق عندنا اهل

الاسلام وهی ایام اکل وشرب۔(۱)

یہ حدیث اپنے تمام طرق میں "یوم عرفہ" کی زیادتی کے بغیر بیان ہوتی ہے اس زیادتی کو صرف موسیٰ بن علی نے بیان کیا ہے۔

"موسی بن علی بن رباح عن ابیه عن عقبة بن عامر"۔

اس حدیث کو امام ترمذی اور ابوداؤد وغیرہ نے بیان کیا ہے (یہ زیادتی، ثقات کی مخالفت میں ہونے کی وجہ سے مقبول نہیں)

ج......وہ زیادتی جس میں مخالفت اور نفی کی ایک نوع موجود ہو۔اس کی مثال وہ حدیث ہے جسے امام مسلم نے بیان کیا ہے:

ابومالك الاشجعی عن ربعی عن حذیفة قال قال رسول

الله ﷺ وجعلت لنا الارض كلها مسجدا وجعلت

تربتها لنا طهورا۔(۲)

ترجمہ: اس میں "تربتھا" کی جو زیادتی ہے اسے صرف مالک اشجعی نے بیان کیا ہے جب کہ دوسروں نے بیان نہیں کیا باقی اس طرح بیان کرتے ہیں۔

وجعلت لنا الارض مسجدا وطهورا۔

---

(۱)......سنن ابی داؤد کتاب الصوم رقم الحدیث ۲۴۱۹ دارارقم بیروت ص:۵۶۲

(۲)......صحیح مسلم شریف کتاب المساجد ومواضع الصلوٰۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۹۹/۱

Marfat.com

## سند میں زیادتی کا حکم:

یہاں اسناد میں زیادتی دو مسئلوں پر موقوف ہے جو اکثر واقع ہوتے ہیں۔

۱......وصل کا ارسال کے ساتھ تعارض (یعنی اکثر راوی ایک حدیث کو مرسل بیان کرتے ہیں جب کہ ایک راوی اسے موصول بیان کرتا ہے)

۲......مرفوع کا موقوف کے ساتھ تعارض (یعنی تمام راوی اسے موقوف بیان کریں اور ایک راوی مرفوع بیان کرے۔)

نوٹ: اسناد میں زیادتی کی باقی جتنی صورتیں ہیں ان کے لئے علماء نے الگ الگ مستقل بحثیں کی ہیں اور کتابیں لکھی ہیں۔ جیسے المزید فی متصل الاسانید۔

مذکورہ بالا زیادتی کے قبول اور ردّ کرنے میں علماء نے چار اقوال پر اختلاف کیا ہے۔

الف......حکم اور فیصلہ اس کے حق میں ہو جو اسے موصول یا مرفوع بیان کرتا ہے یعنی زیادتی مقبول ہے۔ یہ جمہور فقہاء اور اصولیوں کا قول ہے خطیب بغدادی نے الکفایہ ص:۴۱۱) میں اسے صحیح قرار دیا ہے۔

ب......حکم اس کے حق میں ہو جو اسے مرسل یا موقوف بیان کرتا ہے یعنی زیادتی مردود ہے۔ اور یہ اکثر محدثین کا قول ہے۔

ج......فیصلہ اکثریت کے حق میں ہوگا، یہ بعض محدثین کا قول ہے۔

د......زیادہ حافظ و ضابط راوی کے حق میں فیصلہ ہوگا۔ یہ بھی بعض محدثین کا قول ہے۔

## مثال:

حدیث "لا نکاح الا بولی" ولی کے بغیر نکاح صحیح نہیں۔

Marfat.com

اس حدیث کو یونس بن ابی اسحٰق سبیعی اور ان کے بیٹے اسرائیل اور قیس بن ربیع نے ابواسحاق سے مسند متصل کے ساتھ بیان کیا جب کہ سفیان ثوری اور شعبہ بن حجاج نے اسے ابواسحاق سے مرسل بیان کیا ہے۔

## اعتبار، متابع اور شاہد:

### اعتبار:

تعریف...... لغوی اعتبار سے یہ مصدر ہے اور اس کا معنی امور اور اشیاء میں غور کرنا ہے تاکہ ان کی جنس کی دوسری چیزیں معلوم ہو جائیں۔

اصطلاحاً...... منفرد راوی کی حدیث کے طرق اور اس کی سندوں کی تحقیق اور تلاش تاکہ معلوم ہو جائے کہ اس روایت میں کوئی اور بھی شریک ہے یا نہیں۔

### متابع......

تعریف...... لغوی اعتبار سے تَابَعَ سے اسم فاعل کا صیغہ ہے جس کا معنی وافق ہے یعنی اس نے اس کی موافقت کی اور شریک ہوا۔

اصطلاحاً...... غریب اور منفرد حدیث کے راوی لفظ اور معنی میں یا صرف معنی میں دوسرے راوی کی موافقت یا اس سے مشارکت کریں جبکہ صحابی ایک ہو تو اسے متابع کہا جاتا ہے۔ (یعنی دونوں ایک ہی صحابی سے روایت کریں)

### شاہد:

تعریف...... لغت میں یہ لفظ شہادۃ سے اسم فاعل کا صیغہ ہے اس کو شاہد اس لئے کہتے ہیں کہ یہ اس حدیث کی اصل کی گواہی دیتا ہے اور اسے محفوظ اور قوی بناتا ہے

جس طرح گواہ مدعی کی بات کو مضبوط کرتا اور اس کا سہارا بنتا ہے۔

اصطلاحاً...... غریب اور منفرد حدیث کے راوی کی لفظاً اور معنیً یا صرف معنیً میں دوسرے راوی کی موافقت کرنا اور اس سے مشارکت کرنا بشرطیکہ صحابی مختلف ہوں (تو اسے شاہد کہتے ہیں یعنی جب دونوں الگ الگ صحابی سے روایت کریں)

## اعتبار تابع اور شاہد، کی قسیم نہیں ہے:

بعض اوقات کسی شخص کو وہم ہوتا ہے کہ اعتبار، تابع اور شاہد کی قسیم ہے لیکن اس طرح نہیں ہے بلکہ اعتبار تابع اور شاہد تک پہنچنے کی کیفیت اور حالت کو کہتے ہیں یعنی تابع اور شاہد کے متعلق بحث اور تحقیق کے طریقے کو اعتبار کہا جاتا ہے۔

## تابع اور شاہد کے لئے ایک اور اصطلاح:

تابع اور شاہد کی گذشتہ تعریف اکثر علماء کے نزدیک اور معروف تعریف ہے اس کے علاوہ بھی اس کی درج ذیل تعریفیں ہیں۔

الف...... تابع ...... غریب حدیث کے راویوں کو جب لفظی مشارکت حاصل ہو خواہ صحابی ایک ہو یا مختلف تو یہ تابع ہے۔

ب...... شاہد...... غریب حدیث کے راویوں کو معنوی مشارکت حاصل ہو خواہ صحابی ایک ہو یا مختلف ہوں۔

بعض اوقات ان میں سے کام ایک کا اطلاق دوسری پر کرتے ہیں اس طرح شاہد کا اطلاق تابع پر اور تابع کا اطلاق شاہد پر کیا جاتا ہے اور یہ معاملہ وسیع اور آسان ہے جیسا کہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں۔(۱)

---

(۱) شرح نخبۃ الفکر ص ۴۸

Marfat.com

کیونکہ ان دونوں سے ایک ہی بات مقصود ہے کہ حدیث کی دوسری روایات پر اطلاع پا کر اور خبر دے کر اسے قوت پہنچانا ہے۔

## متابعت:

لغوی اعتبار سے یہ تَابَعَ کا مصدر ہے جو وافق کے ہم معنی ہے اور متابعت سے مراد موافقت ہے۔

اصطلاحاً......روایت حدیث میں کوئی اور راوی اس راوی کی مشارکت اور موافقت کرے۔

## اقسام:

متابعت کی دو قسمیں ہیں۔

۱......متابعت تامہ...... جب راوی کی مشارکت آغاز سند سے ہو۔

۲......متابعت قاصرہ...... جب راوی کی مشارکت درمیان سند سے ہو۔

## مثالیں:

ایک مثال بیان کی جاتی ہے جسے حافظ ابن حجر نے بیان کیا ہے اور اس میں متابعت تامہ، متابعت قاصرہ اور شاہد بھی موجود ہے وہ حدیث جسے امام شافعی رحمہ اللہ نے اپنی کتاب ''الام'' میں ذکر کیا ہے:

عن مالك عن عبداللّٰه بن دينار عن ابن عمر انّ رسول اللّٰه ﷺ قال الشهر تسع وعشرون فلاتصوموا حتى تروا الهلال ولا تفطروا حتى تروه فان غم

Marfat.com

علیکم فاکملوا العدۃ ثلاثین -(۱)

ترجمہ: مہینہ انتیس دن کا بھی ہوتا ہے پس جب تک تم چاند نہ دیکھو روزہ نہ رکھو اور روزہ رکھنا ترک نہ کرو حتی کہ چاند دیکھ لو پس اگر تم پر چاند چھپ جائے تو تیس کی گنتی پوری کرو۔

اس حدیث کے بارے میں ایک گروہ کا خیال ہے کہ ان الفاظ کے ساتھ اسے بیان کرنے میں امام شافعی متفرد ہیں انہوں نے اسے غرائب میں شمار کیا ہے کیونکہ امام مالک کے دو شاگردوں نے یہ حدیث اسی سند سے ان الفاظ کے ساتھ بیان کی ہے۔

"فان غم علیکم فاقدروا لہ"(۲) (اگر چاند (بادلوں وغیرہ کی وجہ سے) چھپ جائے تو اس کے لئے (تیس دن) شمار کرلو۔

لیکن اعتبار (تحقیق) کے بعد ہم نے امام شافعی رحمہ اللہ کے لئے متابعت تامہ اور متابعت قاصرہ اور ایک شاہد پایا۔

متابعت تامہ:

جسے امام بخاری رحمہ اللہ نے روایت کیا:

عن عبد اللہ بن مسلمہ القعنبی عن مالك، پھر وہ اپنی سند سے روایت کرتے ہیں اس میں ہے۔"فان غم علیکم فاکملوا العدۃ ثلاثین -(۳)

---

(۱)......کتاب الام کتاب الصیام دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۲۴/۲

(۲)......موطا امام مالک کتاب الصیام ما جاء فی رؤیۃ الہلال ص:۲۲۵

(۳)......صحیح بخاری کتاب الصوم باب قول النبی ﷺ اذا رأیتم الہلال فصوموا ۲۵۶/۱

Marfat.com

## متابعت قاصرہ:

جسے ابن خزیمہ نے عاصم بن محمد کے طریق سے ان الفاظ کے ساتھ روایت کیا

عاصم بن محمد عن ابیہ محمد بن زید عن جدہ عبداللہ بن عمر (رضی اللہ عنہم) فکملوا ثلاثین۔

## شاہد:

جسے امام نسائی رحمہ اللہ نے محمد بن حنین سے اور انہوں نے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے اور انہوں نے نبی اکرم ﷺ سے روایت کیا آپ نے فرمایا:

"فان غم علیکم فاکملوا العدۃ ثلاثین۔

☆☆☆..................☆☆☆..................☆☆☆

Marfat.com

# دوسراباب

## جس کی روایت قبول کی جائے اس کی صفت اور اس سے متعلق جرح وتعدیل

پہلی بحث......راوی اور اس کے مقبول ہونے کی شرائط۔

دوسری بحث......جرح وتعدیل کی کتابوں سے متعلق عام خاکہ

تیسری بحث......جرح وتعدیل کے مراتب۔

## پہلی بحث......راوی اور اس کے مُقبول ہونے کی شرائط۔

تمہید......چونکہ حدیث شریف نبی اکرم ﷺ سے منقول ہوکر راویوں کے واسطہ سے ہم تک پہنچتی ہے اس لئے حدیث کی صحت اور عدم صحت کی پہچان کے لئے سب سے پہلا ہدف یہی راوی ہوتے ہیں۔

یہی وجہ ہے کہ علماء حدیث نے راویوں کے بارے میں اہتمام کیا اور ان کی روایات کو قبول کرنے کے لئے ایسی دقیق اور مضبوط شرائط مقرر کی ہیں جو ان حضرات کی دوراندیشی اور ان کی سوچ کے درست ہونے کی دلیل ہیں نیز ان کے طریقے اور اسلوب کی عمدگی پر دلالت کرتی ہیں جو شرائط انہوں نے راوی پر لگائی ہیں یا وہ شرائط جو انہوں نے حدیث اور اخبار کو قبول کرنے کے لئے مقرر کی ہیں ان تک کوئی امت بھی پہنچ نہ سکی حتیٰ کہ اس زمانے کے لوگ بھی جسے لوگ باریک بینی کا زمانہ کہتے ہیں۔

انہوں نے بھی اخبار وواقعات کے ناقلین میں ان شروط کا التزام نہیں کیا جو علماء اصول حدیث نے راوی کے لئے مقرر کی ہیں بلکہ ان شرائط سے کم بھی نہیں۔

Marfat.com

پس بہت سی ایسی خبریں ہیں جنہیں سرکاری خبر رساں ایجنسیاں نقل کرتی ہیں اوران کی اشاعت کرتی ہیں بس ان کی توثیق نہیں کی جاتی اور نہ ہی ان کی سچائی کی طرف میلان ہوتا ہےاور یہ اس لئے کہ ان کے راوی مجہول ہوتے ہیں جب کہ خبروں کی آفت اوران کے فساد کو قبول کرنا اور ردی قرار پانا ان کے راویوں کی وجہ سے ہوتا ہے عام طور پر کچھ عرصہ بعد ہی ان خبروں کی عدم صحت اور ضعف کا ظہور ہوجاتا ہے۔

## راوی کی قبولیت کے لئے شرائط:

حدیث اور فقہ کے جمہور علماء اس بات پر متفق ہیں کہ راوی کے لئے شرائط بنیادی طور پر دو شرطوں میں بند ہیں۔

الف......عدالت......اس سے مراد یہ ہے کہ راوی مسلمان، بالغ اور عاقل ہو۔فسق کی علامات سے بھی محفوظ ہو نیز خلاف انسانیت عادات سے سلامت ہو۔

ب......ضبط......اس سے مراد یہ ہے کہ راوی ثقہ راویوں کی مخالفت نہ کرتا ہو نہ اس کے حافظہ میں خرابی ہو اور نہ ہی زیادہ غلطیاں کرنے والا ہو نیز غافل اور زیادہ وہم کرنے والا بھی نہ ہو۔

## عدالت کیسے ثابت ہوتی ہے؟

عدالت دو باتوں میں سے ایک کے ساتھ ثابت ہوتی ہے۔

الف......عدالت بیان کرنے والے واضح الفاظ میں بتائیں یعنی تمام علماء تعدیل یا ان میں سے ایک صراحت کے ساتھ بتائے (کہ یہ راوی عادل ہے)

Marfat.com

ب...... یا اس (راوی) کے مشہور ہونے کی وجہ سے عدالت مشہور ہو اور اس پر اس کی تعریف عام ہو تو یہ کافی ہے۔

اس کے بعد کسی تعدیل کرنے والے کی حاجت نہیں جو صراحتاً بیان کرے اس کی مثال مشہور ائمہ ہیں جیسے چاروں امام (امام ابوحنیفہ، امام مالک، امام شافعی، امام احمد بن حنبل رحمہم اللہ) اور دو سفیان (سفیان ثوری اور سفیان بن عیینہ) اور امام اوزاعی وغیرہ رحمہم اللہ۔

## ثبوتِ عدالت کے بارے میں ابن عبدالبر کا مذہب:

ابن عبدالبر کا خیال یہ ہے کہ ہر وہ شخص جو حامل علم ہے اور اس کے اہتمام میں معروف ہے اس کا معاملہ عدالت پر محمول کیا جائے گا جب تک اس کی جرح واضح نہ ہو۔

انہوں نے اس حدیث سے استدلال کیا ہے:

**یحمل هذا من کل خلف عدوله ینفون عنه تحریف الغالین او انتحال المبطلین و تاویل الجاهلین۔**

ترجمہ: اس علم کو ہر آنے والے سے عادل لوگ حاصل کریں گے وہ اس میں حد سے بڑھنے کی تحریف، اہل باطل کے افتراء اور جاہلوں کی تاویل کو دور کریں گے۔(۱)

ابن عبدالبر کا یہ قول علماء کے نزدیک پسندیدہ نہیں کیونکہ یہ حدیث صحیح نہیں۔

اور اگر فرض کریں کہ یہ صحیح ہے تو اس کا معنی یہ ہے کہ چاہیے کہ اس علم کو آئندہ

(۱)......تدریب ۱/۳۰۱، ۳۰۲

Marfat.com

لوگوں سے عادل لوگ حاصل کریں۔ اس کی دلیل یہ ہے کہ بہت سے ایسے لوگ ہیں جو حامل علم تو ہیں لیکن عادل نہیں ہیں۔

## راوی کا ضبط کیسے معلوم ہو؟

راوی کے ضبط کی پہچان اس وقت ہوتی ہے جب وہ روایت میں ثقہ متقن (۲) راویوں کے موافق ہو، اگر وہ اکثر ان کی روایت میں ان کی موافقت کرتا ہے تو وہ ضابط ہے اور کبھی کبھار ان کی مخالفت (اس کے ضبط کے لئے) نقصان دہ نہیں اگر ان کی مخالفت زیادہ ہوگی تو اس کے ضبط میں خلل ہوگا اور اس سے استدلال نہیں کیا جائے گا۔

## کیا وضاحت کے بغیر جرح و تعدیل کو قبول کیا جاسکتا ہے؟

الف..... صحیح مشہور قول کے مطابق تعدیل ذکر سبب کے بغیر بھی قبول ہو جاتی ہے کیونکہ اس کے اسباب بہت زیادہ ہیں جن کو شمار کرنا مشکل ہے کیونکہ تعدیل کرنے ... یہ الفاظ کہنے کا محتاج ہوتا ہے۔
... نے فلاں گناہ نہیں کیا اس نے فلاں گناہ کا ارتکاب نہیں کیا یا وہ کہتا ہے وہ ایسا ... (یعنی نیکی) کرتا ہے اور فلاں فلاں اچھے کام کرتا ہے۔
... جرح اس وقت تک قبول نہیں ہوتی جب تک وضاحت نہ کی جائے ... ذکر مشکل نہیں اس لئے کہ جرح کے اسباب میں لوگوں کا اختلاف ہے ... ایک شخص ایسی جرح بیان کرتا ہے جو حقیقت میں جرح نہیں۔

---

... سے مراد حدیث میں مضبوط راوی ہے۔

Marfat.com

ابن الصلاح فرماتے ہیں:

یہ بات فقہ اور اصول فقہ میں ظاہر مقرر ہے۔ اور خطیب حافظ نے ذکر کیا کہ نقادین حفاظ حدیث کا بھی یہی مذہب ہے جیسے امام بخاری اور امام مسلم وغیرہ رحمہم اللہ اس لئے امام بخاری رحمہ اللہ نے ایک ایسی جماعت سے استدلال کیا جن پر دوسرے حضرات نے جرح کی تھی جس طرح عکرمہ اور عمرو بن مرزوق ہیں۔ اور امام مسلم رحمہ اللہ نے سوید بن سعید اور ایک جماعت سے استدلال کیا جن پر طعن مشہور ہے۔

حضرت امام ابوداؤد رحمہ اللہ نے بھی اسی طرح کیا ہے اور یہ اس بات کی دلیل ہے کہ ان لوگوں کا موقف یہ ہے کہ جرح اس وقت تک ثابت نہیں ہوتی جب تک اس کے سبب کی وضاحت نہ کی جائے۔(۱)

## کیا ایک آدمی سے جرح اور تعدیل ثابت ہوتی ہے؟

الف...... صحیح یہ ہے کہ ایک آدمی سے جرح اور تعدیل ثابت ہو جاتی ہے۔

ب...... یہ بھی کہا گیا ہے کہ (اس مقصد کے لئے) دو آدمیوں کا ہونا ضروری ہے۔

## راوی میں جرح اور تعدیل کا اجتماع:

جب راوی میں جرح و تعدیل جمع ہوں:

الف...... تو معتبر بات یہ ہے کہ جرح کو مقدم کیا جائے جب اس کی وضاحت کی گئی ہو۔

(۱)...... علوم الحدیث ص:۹۶

Marfat.com

ب...... یہ بھی کہا گیا ہے کہ اگر تعدیل کرنے والوں کی تعداد جرح کرنے والوں سے زیادہ ہو تو تعدیل کو مقدم کیا جائے۔

لیکن یہ قول ضعیف ہے اور اس پر اعتماد نہیں۔

## عادل راوی کی ایک شخص سے روایت:

الف......کوئی عادل آدمی کسی شخص سے روایت کرے تو اکثر حضرات کے نزدیک یہ اس شخص کی تعدیل کے طور پر معتبر نہیں یہی صحیح قول ہے ایک قول کے مطابق یہ تعدیل ہے۔

ب...... کسی عالم کا کسی حدیث کے مطابق عمل یا اس پر فتویٰ اس حدیث کی صحت کا حکم نہیں اور نہ ہی اس کی مخالفت اس حدیث اور اس کے راویوں کی صحت پر جرح ہے کہا گیا ہے کہ یہ اس کی صحت کا حکم ہے اس بات کو آمدی وغیرہ اصولیوں نے صحیح قرار دیا ہے اور اس مسئلہ میں طویل کلام ہے۔

## فسق سے توبہ کرنے والے کی روایت کا حکم:

الف...... فسق سے توبہ کرنے والے کی روایت قبول کی جائے۔

ب...... رسول اللہ ﷺ کی حدیث میں غلط بیانی کرنے سے توبہ کرنے والے کی روایت قبول نہیں کی جائے گی۔

## حدیث بیان کرنے پر اجرت لینے والے کی روایت کا حکم:

الف...... بعض علماء جیسے امام احمد، اسحٰق اور ابو حاتم رحمہم اللہ کے نزدیک یہ روایت قبول نہ کی جائے۔

Marfat.com

ب......دوسرے بعض حضرات جیسے ابوالنعیم ابوالفضل بن دکین رحمہ اللہ کے نزدیک قبول کی جائے۔

ج......ابواسحٰق شیرازی رحمہ اللہ نے فتویٰ دیا کہ جو شخص حدیث بیان کرنے کی وجہ سے اپنے اہل وعیال کے لئے مال کمانے سے رُک جائے اس کے لئے اس پر اجرت لینا جائز ہے۔(لہٰذا اس کی روایت قابل قبول ہے)

## جو شخص سستی، دوسروں سے تلقین قبول کرنے یا زیادہ بھولنے میں معروف ہو

## اس کی روایت کا حکم:

الف......جو شخص خود سننے یا دوسروں کو سنانے میں سہل پسندی میں معروف ہو جیسے سماع کے وقت سونے کی پروانہ کرے (یعنی سویا رہے) یا ایسی اصل سے بیان کرے جس کی تصحیح نہیں کی گئی اس کی روایت قبول نہ کی جائے۔

ب......جو شخص حدیث میں تلقین قبول کرتا ہو اس کی روایت قبول نہ کی جائے مثلاً کوئی شخص اسے کوئی بات بتائے اور وہ اسے یہ جاننے کے بغیر بیان کرے کہ یہ اس کی حدیث سے ہے۔

ج......جو شخص اپنی روایت میں زیادہ بھولنے میں معروف ہو اس کی روایت قبول نہ کی جائے۔

## جو شخص بیان کرکے بھول جائے اس سے روایت کا حکم:

تعریف...... جو شخص بیان کرنے کے بعد بھول جائے اس سے مراد یہ ہے کہ شیخ کے شاگرد نے اس سے روایت کرکے جو حدیث بیان کی وہ شیخ کو یاد نہ رہے۔

Marfat.com

## ب......اس کی روایت کاحکم:

ا......ردّ کرنا......یعنی قطعی طور پر نفی کردے مثلاً وہ کہے کہ میں نے یہ حدیث روایت نہیں کی یا یہ کہ یہ شخص مجھ پر جھوٹ بولتا ہے وغیرہ وغیرہ (تو اس کو ردّ کردیا جائے)۔

۲......قبول کرنا...... جب اسے نفی میں تردد ہو مثلاً وہ کہے میں اس کو نہیں جانتا یا مجھے یاد نہیں وغیرہ وغیرہ (تو اس کی روایت کو قبول کیا جائے)

## حدیث کے ردّ ہونے کو ان دونوں میں طعن کا سبب قرار دیا جائے یا نہ؟

حدیث کا ردّ ہونا ان دونوں (راوی اور مروی عنہ) میں طعن کا سبب نہیں ہے کیونکہ ان میں سے ایک طعن کے ساتھ دوسرے سے اولیٰ نہیں ہے۔

## مثال:

وہ حدیث جسے امام ابوداؤد، امام ترمذی اور ابن ماجہ نے ربیعہ بن ابوعبدالرحمٰن کی روایت سے نقل کیا وہ سہیل بن ابی صالح سے وہ اپنے باپ سے اور وہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے قسم اور گواہ کے ساتھ فیصلہ فرمایا۔

عبدالعزیز بن محمد دراوردی فرماتے ہیں: مجھ سے یہ حدیث ربیعہ بن ابی عبدالرحمٰن نے حضرت سہیل سے روایت کرتے ہوئے بیان کی، میں نے حضرت سہیل سے ملاقات کرکے اس کے بارے میں پوچھا تو ان کو علم نہ تھا۔

میں نے کہا مجھ سے حضرت ربیعہ نے آپ سے روایت کرتے ہوئے اس طرح بیان کیا ہے۔

اس کے بعد حضرت سہیل فرماتے تھے مجھ سے عبدالعزیز نے ربیعہ سے روایت

Marfat.com

کرتے ہوئے بیان کیا اور ربیعہ نے مجھ سے روایت کیا کہ میں نے ان سے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہوئے مرفوع حدیث ان الفاظ کے ساتھ بیان کی ہے۔

## اس میں مشہور ترین تصنیف:

اس مسئلہ میں خطیب بغدادی کی کتاب اس نام سے ہے "کتاب اخبار من حدث ونسی"

## دوسری بحث

### جرح وتعدیل سے متعلق کتب کے بارے میں عام رائے:

چونکہ حدیث کے صحیح اور ضعیف ہونے کا حکم کچھ امور پر مبنی ہے جیسے راویوں کی عدالت اور ضبط یا ان کی عدالت اور ضبط پر طعن، تو اس لئے علماء کرام نے ایسی کتب لکھنے کا اہتمام کیا جن میں راویوں کی عدالت اور ضبط کا بیان ایسے ائمہ سے منقول ہے جو قابل اعتماد تعدیل کرنیوالے ہیں اسی کو تعدیل کہتے ہیں۔

جس طرح ان کتب میں طعن کا ذکر جو بعض راویوں کی عدالت یا ان کے ضبط پر کیا جاتا ہے یہ بھی غیر متعصب ائمہ سے منقول ہے اس کو جرح کہتے ہیں۔

اسی وجہ سے ان کتب کو "کتب الجرح والتعدیل" کہا جاتا ہے یہ کتب کثیر تعداد میں ہیں اور مختلف اقسام کی ہیں۔

ان میں سے بعض میں صرف ثقہ راویوں کا بیان ہے اور بعض میں ضعیف مجروح راویوں کا بیان ہے اور دوسری جہت سے بعض کتب میں راویوں کا عمومی ذکر ہے قطع

نظر اس کے کہ وہ کسی خاص کتاب کے راویوں سے متعلق ہوں یا خاص کتب حدیث کے راویوں سے متعلق ہوں۔

ان میں سے بعض کسی خاص کتاب کے راویوں کے حالات اور بعض متعین کتب حدیث کے راویوں کے حالات سے متعلق ہیں۔ان کتب کی تصنیف میں علماء جرح وتعدیل کا عمل سب سے عمدہ شمار کیا جاتا ہے کیونکہ انہوں نے پہلے تمام راویوں کے جرح وتعدیل کے حوالے سے حالات کا باریک بینی سے جائزہ لیا۔

پھر اس بات کا بیان کہ انہوں نے کس سے احادیث لی ہیں اور ان سے کس نے لی ہیں۔اور انہوں نے کس کس جگہ کا سفر کیا نیز بعض شیوخ سے کب ملاقات کی؟ حتی کہ ان کے اس زمانے کی حد بندی کی جس میں وہ زندہ رہے اور یہ سب کچھ اس طرح بیان کیا کہ ان سے پہلے کسی نے بیان نہیں کیا۔

بلکہ دور حاضر کے لوگ بھی اس کے قریب تک نہ پہنچ سکے جو علماء حدیث نے حدیث کے راویوں کے حالات سے متعلق بڑی بڑی کتب تصنیف کی ہیں اور طویل عرصہ گزرنے کے باوجود ان راویوں کے کامل تعارف کو محفوظ کیا اور نقل کیا اللہ تعالی ان لوگوں کو ہماری طرف سے جزائے خیر عطا فرمائے ان میں سے بعض کتب کے نام درج ذیل ہیں.

ا......امام بخاری رحمہ اللہ کی ''التاریخ الکبیر'' اس میں ثقہ اور ضعیف راویوں کا عمومی ذکر ہے۔

۲......ابن ابی حاتم کی ''الجرح والتعدیل'' اس میں بھی ثقہ اور ضعیف سب راویوں کا ذکر ہے اور یہ مذکورہ بالا کتاب کے مشابہ ہے۔

Marfat.com

۳......ابن حبان کی کتاب "الثقات" اس میں صرف ثقہ راویوں کے حالات ہیں۔

۴......ابن ابی عدی کی کتاب "الکامل فی الضعفاء" یہ ضعیف راویوں کے حالات کے ساتھ خاص ہے جیسا کہ اس کے نام سے ظاہر ہے۔

۵......"الکمال فی اسماء الرجال" یہ کتاب عبدالغنی مقدسی کی تصنیف ہے اور یہ بھی ثقہ اور ضعیف سب کو شامل ہے البتہ یہ صحاح ستہ کے راویوں کے ساتھ خاص ہے۔

۶......"میزان الاعتدال" یہ امام ذہبی کی تصنیف ہے اور یہ ضعیف اور متروک راویوں کے ساتھ خاص ہے (یعنی ہر وہ راوی جس پر جرح کی گئی اگرچہ اس پر جرح کو قبول نہ کیا گیا ہو۔

۷......تہذیب التہذیب......حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کی کتاب ہے یہ "الکمال فی اسماء الرجال" کی تہذیبات اور مختصرات پر مشتمل ہے۔

## تیسری بحث......مراتب جرح وتعدیل

ابن ابی حاتم نے اپنی کتاب "الجرح والتعدیل" کے مقدمہ میں جرح وتعدیل کے مراتب کو چار مراتب میں تقسیم کیا اور ان میں سے ہر مرتبہ کا حکم بیان فرمایا۔

پھر علماء نے جرح وتعدیل کے تمام مراتب ہر دو مرتبوں کا اضافہ کیا اس طرح جرح وتعدیل کے کل چھ مراتب ہو گئے ان مراتب کا ان کے الفاظ کے ساتھ بیان درج ذیل ہے:

### مراتب تعدیل اور ان کے الفاظ:

الف......وہ مرتبہ جو توثیق یا اَفْعَل کے وزن پر دلالت کرے اور یہ سب سے

Marfat.com

بلند مرتبہ ہے۔ جیسے فلان الیه المنتهی فی التثبت۔ یا فلان اثبت الناس۔

ب...... پھر جس کی تاکید توثیق کی ایک یا دو صفتوں سے کی گئی ہو جیسے "ثقة ثقة" یا "ثقة ثبت"

ج...... پھر جس کی تعبیر ایسی صفت کے ساتھ کی گئی جو توثیق پر دلالت کرے لیکن اس میں تاکید نہیں جیسے "ثقة یا حجة"

د...... جو لفظ تعدیل پر دلالت کرے لیکن ضبط کی طرف اشارہ نہ ہو جیسے "صدوق" یا "محله الصدق" یا "لا باس به" یہ ابن معین کے علاوہ حضرات کے نزدیک ہے جب ابن معین کسی راوی کے بارے میں یہ لفظ "لا باس به" کہتے ہیں تو ان کے نزدیک اس سے ثقہ مراد ہے۔

ھ...... پھر وہ الفاظ جن میں توثیق یا تجریح پر دلالت نہ ہو جیسے "فلان شیخ" یا "روی عنه الناس"۔

و...... پھر وہ الفاظ جو تجریح کے قریب ہیں جیسے "فلان صالح الحدیث" یا "یکتب حدیثه"۔

## ان مراتب کا حکم:

پہلے تین مراتب والے راوی حجت ہیں اگرچہ ان میں سے بعض دوسرے بعض سے قوی ہیں۔

ب...... چوتھے اور پانچویں مرتبہ والے حجت نہیں لیکن ان کی حدیث بطور اعتبار (آزمائش) لکھی جاتی ہے اگرچہ پانچویں مرتبہ والوں کا مقام چوتھے مرتبہ والوں سے

Marfat.com

کم ہے۔

د...... چھٹے مرتبہ والوں سے بطور اعتبار استدلال نہیں کیا جاتا لیکن ان کی احادیث بطور اعتبار لکھی جاتی ہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ عدم ضبط میں ان کا معاملہ ظاہر ہے۔

## جرح کے مراتب اور الفاظ

الف...... وہ الفاظ جو راوی کے لِین (نرمی و آسانی) پر دلالت کرتے ہیں، جرح میں یہ آسان ترین ہیں جیسے "فلان لین الحدیث" یا "فیہ مقال"۔

ب...... پھر وہ جن سے عدم استدلال کی صراحت کی گئی ہو یا اس کے مشابہ ہوں جیسے "فلان لا یحتج بہ" یا "فلان ضعیف" یا "لہ مناکیر"۔

ج...... پھر وہ جس کی حدیث نہ لکھنے کی صراحت ہو یا اس کی مثل جیسے "فلان لا تکتب حدیثہ" یا "لا تحل روایتہ" یا "ضعیف جدا"...... یا "متھم بالوضع" یا "یسرق الحدیث" یا "ساقط" یا "متروک" یا "لیس بثقۃ"۔

د...... پھر وہ الفاظ جو اس کے جھوٹا ہونے وغیرہ پر دلالت کرے جیسے "کذاب" یا "وضّاع" یا "یکذب" یا "یضع"۔

ھ...... پھر وہ الفاظ جو کذب (جھوٹ) کے مبالغہ پر دلالت کرتے ہیں (اور یہ سب سے بدترین مرتبہ ہے) جیسے "فلان اکذب الناس" یا "والیہ المنتھی فی الکذب" یا "ھو رکن الکذب"۔

## ان مراتب کا حکم:

الف...... پہلے دو مرتبوں والے راویوں سے دلیل نہیں پکڑی جائے گی البتہ ان

Marfat.com

کی حدیث صرف اعتبار کے لئے لکھی جائے گی اگر چہ دوسرا ے مرتبہ والے پہلے مرتبہ والوں سے کم درجہ میں ہیں ۔(اعتبار کا معنی گزر چکا ہے اور عبرت پکڑنے کو بھی کہتے ہیں ۔)

ب......آخری چار مراتب والوں کی حدیث سے استدلال نہیں کیا جاتا نہ وہ لکھی جاتی ہے اور نہ اس کا اعتبار کیا جاتا ہے۔

Marfat.com

## تیسرا باب......

# روایت،اس کے آداب اور ضبط کی کیفیت

پہلی فصل......ضبط روایت کی کیفیت

دوسری فصل......آداب روایت

## پہلی فصل......ضبط روایت کی کیفیت اور اس کے حصول کے طریقے:

پہلی بحث......حدیث سننے کا طریقہ اور اسے حاصل کرنا نیز اس کو ضبط کرنے کی

صفت۔

دوسری بحث......تحمل حدیث (حدیث لینے) کے طریقے اور ادائیگی کے صیغے۔

تیسری بحث......حدیث لکھنا اور اسے یاد کرنا اور اس سلسلے میں تصنیف۔

چوتھی بحث......روایت حدیث کا طریقہ۔

### پہلی بحث......سماع حدیث اور اس کے تحمل نیز ضبط کا طریقہ

تمہید......سماع حدیث کی کیفیت سے مراد اس چیز کا بیان ہے جو شیوخ سے حدیث کو سماع روایت کے طور پر سنتا ہے اور اسے لیتا ہے تاکہ اس کے بعد دوسروں تک پہنچائے تو اس شخص کے لئے کیا مناسب ہے اور شرائط کیا ہیں۔

جیسے معین عمر کی شرط بطور وجوب یا بطور استحباب اور اس کے تحمل سے مراد شیوخ سے حدیث لینے اور حاصل کرنے کے طریقوں کا بیان ہے۔

بیان ضبط سے مراد یہ ہے کہ طالب جو حدیث حاصل کرتا ہے اسے کس طرح ضبط

Marfat.com

(یاد یا محفوظ) کرے کہ وہ اسے دوسروں تک اسی طرح پہنچانے کا اہل ہو جائے کہ اطمینان حاصل ہو جائے۔

فن علوم حدیث کے علماء نے اس بات کا اہتمام کیا اور اس کے لئے نہایت باریک اور عمدہ طریقے پر قواعد وضوابط اور شرائط وضع کیں اور حدیث لینے کے طریقوں میں امتیاز کر کے اس کے مراتب مقرر کئے جن میں سے بعض مراتب دوسرے بعض سے قوی ہیں اور اس کی وجہ رسول اکرم ﷺ کی حدیث کا اہتمام تاکیدی طریقے پر کرنا ہے۔ اور وہ ایک شخص سے دوسرے آدمی تک اچھے طریقے سے منتقل ہوتا کہ مسلمان حدیث نبوی تک پہنچنے کے طریقے پر مطمئن ہو اور اسے یقین ہو جائے کہ یہ طریقہ نہایت محفوظ اور دقیق ہے۔

## کیا حدیث حاصل کرنے کے لئے اسلام اور بلوغت شرط ہے؟

صحیح قول کے مطابق حدیث لینے کے لئے اسلام اور بلوغت شرط نہیں البتہ ادائیگی کے لئے شرط ہے جس طرح راوی کی شرائط کے بیان میں گزر چکا ہے اس بنیاد پر مسلمان بالغ کی وہ روایت قبول کی جائے جو اس نے اسلام قبول کرنے یا بالغ ہونے سے پہلے حاصل کی۔ لیکن نابالغ کے لئے تمیز (یعنی اس کا شعور) ضروری ہے۔

یہ بھی کہا گیا ہے کہ حصول حدیث کے لئے بلوغت شرط ہے لیکن یہ قول درست نہیں کیونکہ مسلمانوں نے چھوٹی عمر کے صحابہ جیسے امام حسن اور عبداللہ بن عباس (رضی اللہ عنہم) کی روایت کو قبول کیا اور اس بات میں امتیاز نہیں کیا کہ یہ روایت ان کے بالغ ہونے سے پہلے کی ہے یا بعد کی؟

Marfat.com

## سماعِ حدیث کی ابتداء کب مستحب ہے؟

الف...... کہا گیا ہے کہ تیس سال کی عمر میں سماعِ حدیث کی ابتداء کی جائے اہل شام کا یہی موقف ہے۔

ب...... بعض نے کہا کہ بیس سال کی عمر میں شروع کرے اہل کوفہ یہی لکھتے ہیں۔

ج...... یہ بھی کہا گیا کہ دس سال کی عمر میں شروع کرے اہل بصرہ کا نظریہ یہی ہے۔

د...... بعد کے زمانوں میں درست بات یہ ہے کہ سماعِ حدیث کی ابتداء میں اس وقت جلدی کرے جب اس کی سماعت صحیح ہو کیونکہ احادیث کتب میں ضبط کرلی گئی ہیں۔

## کیا بچے کی سماعت کے لئے کوئی عمر متعین ہے؟

الف...... بعض علماء نے پانچ سال کی عمر مقرر کی ہے علماء حدیث کے ہاں اسی پر عمل ٹھہر گیا۔

ب...... کچھ دوسرے علماء فرماتے ہیں کہ درست بات تمیز کا اعتبار کرنا ہے اگر وہ خطاب کو سمجھ سکے اور جواب دے سکے تو وہ ممیز (امتیاز کرنے والا) کہلائے گا اور اس کا سماع صحیح ہے ورنہ نہیں۔

## دوسری بحث...... حدیث سننے کے طریقے اور ادائیگی کے صیغے

حدیث لینے کے آٹھ طریقے ہیں:

السماع من لفظ الشیخ (شیخ کے الفاظ سے سننا) القراءة علی الشیخ (شیخ پر پڑھنا) اجازت، مناولہ، کتابت، إعلام (خبر دینا) الوصیۃ اور الوجادہ۔

Marfat.com

میں عنقریب اختصار کے ساتھ ان سب کے بارے میں گفتگو کروں گا اور ادائیگی کے الفاظ بھی مختصر طور پر ذکر کروں گا۔

## شیخ کے الفاظ سے سننا:

الف......اس کی صورت یہ ہے کہ شیخ پڑھے اور طالب سنے چاہے شیخ اپنی یاداشت سے پڑھے یا کتاب سے، اور چاہے طالب سنے اور جو کچھ سنا اسے لکھ لے یا صرف سنے اور نہ لکھے۔

ب......جمہور کے نزدیک حدیث لینے کے تمام طریقوں میں سے یہ سب سے اعلیٰ قسم ہے۔

ج......الفاظ اداء

ا......طریق تحمل کی ہر قسم سے مخصوص الفاظ کے عام ہونے سے پہلے سامع کے لئے جائز ہے کہ وہ شیخ کے الفاظ ادا کرتے وقت کہے سمعت (میں نے سنا) حدثنی (مجھ سے بیان کیا) اخبرنی (مجھے خبر دی) انبانی (مجھے خبر دی) قال لی (مجھ سے فرمایا) ذکرلی (میرے لئے ذکر کیا)

۲......جب طرق تحمل کی تمام اقسام کے ساتھ مخصوص الفاظ عام ہو جائیں تو ادائیگی کے الفاظ اس طرح ہوں گے:

سماع کے لئے ...... سمعت یا حدثنی

قرأۃ کے لئے ...... اخبرنی

اجازت کے لئے ...... انبانی

سماع مذاکرہ کے لئے...... قال لی یا ذکرلی

## شیخ کے سامنے پڑھنا (قراۃ علی الشیخ)

اکثر محدثین اسے عرض (پیش کرنا) کہتے ہیں۔

الف......اس کی صورت ......طالب پڑھے اور شیخ سنے۔چاہے وہ طالب خود پڑھے یا دوسرا پڑھے اور یہ سنے اور چاہے یہ پڑھنا یادداشت کی بنیاد پر ہو یا لکھا ہوا پڑھے اور چاہے شیخ اپنے حفظ کی بنیاد پر پڑھنے والے سے سنے یا اپنی تحریر یا کسی دوسرے ثقہ کی تحریر سے سنے۔

ب......اسے روایت کرنے کا حکم ......شیخ کے سامنے قرأت کی صورت میں ان تمام مذکورہ صورتوں میں روایت کرنا بلا اختلاف صحیح ہے البتہ بعض ایسے حضرات جو متشدد ہیں اور ان کا اعتبار نہیں ان سے اس کے خلاف منقول ہے۔

ج......اس کا مرتبہ......اس کے مرتبہ کے بارے میں تین مختلف اقوال ہیں۔

ا......سماع کے مساوی ہے حضرت امام مالک، امام بخاری اور حجاز مقدس اور کوفہ کے جلیل القدر علماء سے یہ بات منقول ہے۔

۲......سماع سے کم درجہ میں ہے یہ بات جمہور اہل مشرق سے منقول ہے اور یہی صحیح بات ہے۔

۳......سماع سے اعلیٰ ہے...... یہ بات حضرت امام ابوحنیفہ اور ابن ابی ذئب رحمہما اللہ سے مروی ہے اور حضرت امام مالک رحمہ اللہ سے بھی ایک روایت اسی طرح ہے۔

د......الفاظ اداء......

ا......زیادہ محتاط......قرأت علی فلان (میں نے فلاں کے سامنے پڑھا) قرئ علیہ وانا اسمع فاقر بہ (فلاں کے سامنے احادیث پڑھی گئیں اور میں سن

Marfat.com

رہا تھا پس اس نے اس کا اقرار کیا)

۲...... جائز صورت...... سماع کی عبارت لفظ قرأت کے ساتھ مقید ہو جیسے "حدثنا قراءة علیه" (انہوں نے ہم سے یوں بیان کیا کہ ان کے سامنے پڑھا گیا)

۳...... اکثر محدثین کے نزدیک معروف لفظ...... صرف لفظ "اخبرنا" ہے اس کے علاوہ نہیں۔

## اجازت دینا (الاجازة):

الف...... تعریف...... لفظاً یا کتابتاً روایت کی اجازت دینا۔

ب...... اس کی صورت یہ ہے کہ شیخ اپنے کسی ایک طالب سے کہے "اجزت لك ان تروی عنی صحیح البخاری"۔ میں تجھے اجازت دیتا ہوں کہ تو میری طرف سے صحیح بخاری (کی احادیث) روایت کرے۔

ج...... اقسام...... کو غیر معیّن کی اجازت دے۔ جیسے میں نے جو احادیث سنی ہیں ان کی روایت کی تجھے اجازت دیتا ہوں۔

۳...... غیر معین کو غیر معین کی اجازت دینا۔ میں زمانے والوں کو اپنے سنی ہوئی احادیث کی روایت کرنے کی اجازت دیتا ہوں۔

۴...... مجہول چیز کی مجہول شخص کو اجازت دینا۔ جیسے میں تجھے کتاب السنن کی اجازت دیتا ہوں اور وہ متعدد سنن کی روایت کرتا ہے...... یا میں نے محمد بن خالد دمشقی کو اجازت دی اور وہاں ایک جماعت کے درمیان اس نام میں اشتراک ہے۔

۵...... معدوم کو اجازت دینا...... یا تو وہ معدوم، موجود کے تابع ہے کہ میں نے فلاں کو اجازت دی اور اسے بھی جو اس کے ہاں پیدا ہوگا۔

یا وہ معدوم مستقل ہوگا جیسے میں فلاں کے ہاں پیدا ہونے والے (بچے)

Marfat.com

کو اجازت دی۔

**اس کا حکم:**

ان میں سے پہلی قسم کے بارے میں صحیح قول جو جمہور کا موقف ہے اور اسی پر عمل بھی ہے وہ یہ ہے کہ اسے روایت کرنا اور اس پر عمل کرنا جائز ہے لیکن علماء کی کئی جماعتوں نے اسے باطل قرار دیا ہے اور حضرت امام شافعی رحمہ اللہ کی دو روایتوں میں سے ایک روایت یہی ہے۔

جبکہ دوسری اقسام کے بارے میں بہت زیادہ اختلاف ہے بہر حال اس طریقے یعنی اجازت کے طریقے پر حدیث حاصل کرنا اور اس کو روایت کرنا کمزور طریقہ ہے اس میں سستی کا مظاہرہ کرنا مناسب نہیں۔

**الفاظ اداء:**

۱......سب سے زیادہ مناسب یہ ہے کہ کہے "اجازلی فلان" (مجھے فلاں نے اجازت دی)

۲......جائز ہے کہ سماع اور قراءۃ کی عبارت ہو لیکن وہ اجازت کے ساتھ مقید ہو جیسے "حدثنا اجازۃ" اور "اخبرنا اجازۃ"

۳......متاخرین کی اصطلاح......"انبانا" (مجھے خبر دی)

کتاب "الوجازۃ" کے مصنف نے اسے اختیار کیا ہے۔(۱)

**مناولہ:(۲)**

الف......اس کی اقسام......مناولہ کی دو قسمیں ہیں۔

---

(۱)......اس کتاب کا مکمل نام الوجازۃ فی تجویز الاجازۃ ہے اور اس کے مصنف کا نام ابو العباس ولید بن بکر العمری ہے۔

(۲)......اس کا لغوی معنی کسی کو کوئی چیز پکڑوانا ہے۔

Marfat.com

ا......مناولہ مع الاجازت۔اور یہ مطلقاً اجازت کی اعلیٰ قسم ہے۔

اس کی صورتوں میں سے ایک یہ ہے کہ شیخ، طالب کو اپنی کتاب دے اور اس سے کہے یہ میری فلاں سے روایت ہے تو اسے مجھ سے روایت کر۔ پھر وہ اسے بطور مالک بنانے یا ادہار کے طور پر اس کے پاس چھوڑ دے تا کہ وہ اسے نقل کرے۔

۲......اجازت سے خالی مناولت......اس کی صورت یہ ہے کہ شیخ اپنی کتاب طالب کو دے اور صرف اتنا کہے کہ یہ میری سنی ہوئی روایات ہیں۔

ب......ان کو روایت کرنے کا حکم:

ا......جو مناولت اجازت سے ملی ہوئی ہو تو ایسی احادیث کو روایت کرنا جائز ہے اور اس کا مرتبہ سماع اور قرأۃ علی الشیخ سے کم ہے۔

۲......اجازت سے خالی مناولت......صحیح قول کے مطابق اسے روایت کرنا جائز نہیں۔

## ج......الفاظ اداء:

ا......احسن (بہترین) طریقہ یہ ہے کہ کہے "ناولنی" مجھے (یہ کتاب) دی یا "ناولنی واجازنی" مجھے یہ کتاب دی اور (روایت کی) اجازت بھی دی۔

یہ اس صورت میں ہے جب مناولت کے ساتھ اجازت بھی ہو۔

۲......سماع اور قرأت کی عبارات جو مناولت کے ساتھ مقید ہوں، جائز ہیں جیسے "حدثنا مناولۃ"۔ ہم سے بطور مناولت بیان کیا، یا "اخبرنا مناولۃ واجازۃ" مناولت اور اجازت کے طریقے سے ہمیں خبر دی۔

Marfat.com

**کتابت:**

الف......صورت......اس کا طریقہ یہ ہے کہ شیخ اپنی سنی ہوئی احادیث کسی حاضر یا غائب کو اپنے خط کے ساتھ یا کسی سے لکھوا کر دے۔

ب......اقسام......اس کی دو قسمیں ہیں۔

۱......کتابت مع الاجازت......جیسے اجزتك ما كتبت لك او اليك وغیرہ (میں نے جو کچھ تیرے لئے یا تیری طرف لکھا اس کی اجازت دے دی)

۲......اجازت سے خالی......مثلاً اس کی طرف کچھ احادیث لکھے اور اس کی طرف بھیج دے اور اسے روایت کی اجازت نہ دے۔

**اسے روایت کرنے کا حکم:**

۱......اجازت کے ساتھ ملی ہوئی کتابت سے روایت کرنا صحیح ہے اور یہ صحت وقوت میں اس مناولہ کی طرح ہے جو اجازت سے ملی ہوتی ہے۔

۲......اجازت سے خالی کتابت:

ایک قوم نے اسے روایت کرنے سے منع کیا جب کہ دوسرے حضرات نے اس کی اجازت دی ہے صحیح بات یہ ہے کہ علمائے حدیث کے نزدیک اسے روایت کرنا جائز ہے کیونکہ یہ اجازت کی خبر دیتی ہے۔

**کیا خط پر اعتماد کرنے کے لئے گواہوں کی ضرورت ہے؟**

۱......بعض علماء نے خط (تحریر) پر گواہوں کی شرط رکھی ہے اور یہ دعویٰ کیا کہ ایک خط، دوسرے خط کے مشابہ ہوتا ہے، یہ ضعیف قول ہے۔

۲.....ان علمائے حدیث میں سے بعض نے فرمایا کہ مکتوب الیہ، کاتب کے خط کی پہچان رکھتا ہو تو یہ بات کافی ہے کیونکہ ایک آدمی کا خط دوسرے کے خط کے مشابہ نہیں ہوتا۔

**الفاظ اداء:**

۱.....لفظ کتابت صراحت ذکر ہو جیسے کہے "کتب الیّ فلان" (فلاں نے میری طرف لکھا)

۲.....سماع اور قرأۃ کے الفاظ قید کے ساتھ لانا۔ جیسے حدثنی فلان کتابۃ یا اخبرنی فلان کتابۃ۔ (فلاں نے مجھ سے کتابت کے طور پر بیان کیا یا خبر دی)

**اعلام (خبر دینا)**

الف.....اس کی صورت:

شیخ، طالب کو خبر دے کہ یہ حدیث یا یہ کتاب اس کی سماع (سنی ہوئی) ہے۔

ب.....اسے روایت کرنا:

بطور اِعلام حاصل ہونے والی احادیث کو روایت کرنے کے بارے میں علماء کے دو قول ہیں۔

۱.....جواز.....بہت سے حدیث، فقہ اور اصول کے علماء کا یہ قول ہے (کہ اسے روایت کرنا جائز ہے)

۲.....عدم جواز.....متعدد محدثین اور دوسرے حضرات کے نزدیک اسے روایت کرنا جائز نہیں اور یہی صحیح قول ہے۔ کیونکہ شیخ کو علم ہے کہ حدیث اس کی روایت کردہ ہے لیکن اس میں خلل کی وجہ سے اسے روایت کرنا جائز نہیں ہاں اگر وہ اسے روایت کی اجازت دے تو جائز ہے۔

الفاظ اداء

ادائیگی کے وقت یوں کہے۔"اعلمنی شیخی بکذا" میرے شیخ نے مجھے اس طرح خبر دی ہے۔

۷......الوصیۃ:

الف......اس کی صورت......شیخ اپنی موت یا سفر کے وقت کسی شخص کو اپنی کتب میں سے کسی ایک کتاب کی روایت کرنے کی وصیت کرے۔

ب......اسے روایت کرنے کا حکم:

۱......جواز......بعض اسلاف کے نزدیک جائز ہے، لیکن یہ غلط ہے کیونکہ اس نے اسے لکھنے کی وصیت کی ہے۔روایت کرنے کی وصیت نہیں کی۔

۲......عدم جواز......یہی درست بات ہے۔

ج......الفاظ اداء

وہ یوں کہے"اوصی اِلَیّ فلان بکذا"فلاں نے مجھے اس کی وصیت کی ہے۔یا "حدثنی فلان وصیة" فلان نے بطور وصیت مجھ سے بیان کیا۔

۸......الوِجادہ:

یہ واؤ کے کسرہ کے ساتھ "وَجَدَ" سے مصدر ہے اور یہ مصدر جدید ہے عربوں سے نہیں سنا گیا۔

الف......اس کی صورت......طالب اپنے شیخ کی تحریر سے کچھ اجازت پائے جنہیں وہ بیان کرتا تھا طالب اسے پہچان لے اور اسے اس شیخ سے سماع یا اجازت

Marfat.com

حاصل نہ ہو۔

ب......اسے روایت کرنے کا حکم......وجادت کے طریقے پر روایت کرنا منقطع کے باب سے ہے لیکن اس میں ایک طرح کا اتصال ہے۔

ج......الفاظ اداء:

واجد کہے "وجدت بخط فلاں کذا" میں نے فلاں کے خط کے ساتھ (احادیث کو) پایایا کہے "قرات بخط فلاں کذا" میں نے فلاں کے خط کے ساتھ اسے پڑھا۔ پھر وہ سند اور متن کو بیان کرے۔

## تیسری بحث

## حدیث کی کتابت، ضبط اور اس میں تصنیف کا بیان:

### کتابتِ حدیث کا حکم:

اسلاف صحابہ کرام اور تابعین کے کتابت حدیث کے بارے میں مختلف اقوال ہیں جو حسب ذیل ہیں:

الف......بعض حضرات نے اسے ناپسندیدہ قرار دیا ان میں حضرت ابن عمر، حضرت ابن مسعود اور حضرت زید بن ثابت رضی اللہ عنہم شامل ہیں۔

ب......کچھ حضرات نے اسے جائز قرار دیا ان میں حضرت عبداللہ بن عمرو حضرت انس، حضرت عمر بن عبدالعزیز اور اکثر صحابہ کرام (رضی اللہ عنہم) شامل ہیں۔

ج......پھر اس کے جواز پر اتفاق ہو گیا اور اختلاف ختم ہو گیا اگر حدیث کو کتب میں مدون نہ کیا جاتا تو پچھلے دور بالخصوص ہمارے زمانے میں یہ ضائع ہو جاتیں۔

## کتابت کے حکم میں اختلاف کا سبب:

کتابتِ حدیث کے حکم میں اختلاف کا سبب یہ ہے کہ اس کے جواز اور ممانعت کے سلسلے میں متعارض روایات وارد ہوئی ہیں۔

الف......حدیث نہی......امام مسلم رحمہ اللہ نے نبی اکرم ﷺ سے روایت کیا آپ نے فرمایا:

لا تکتبوا عنی شیئا الا القرآن ومن کتب عنی شیئا غیر القرآن فلیمحہ۔(۱)

ترجمہ: مجھ سے قرآن کے علاوہ کچھ نہ لکھو اور جس نے قرآن کے علاوہ مجھ سے کچھ لکھا ہے وہ اسے مٹا دے۔

ب......جواز کی حدیث......اس حدیث کو امام بخاری اور امام مسلم رحمہما اللہ دونوں نے نقل کیا ہے نبی اکرم ﷺ نے فرمایا: اکتبوا لابی شاہ۔(۲) (ابوشاہ کو لکھ کر دو)

کتابت کے جواز میں کچھ دیگر احادیث بھی ہیں ان میں سے ایک حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ کو اجازت عطا فرمانا ہے۔(۲)

## جواز اور ممانعت کی احادیث کو جمع کرنا:

علماء کرام نے ممانعت اور جواز کی احادیث کے درمیان کئی طریقوں پر تطبیق دی ہے۔

(۱)......صحیح مسلم کتاب الزہد باب التثبت فی الحدیث قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۱۴/۲
(۲)......صحیح بخاری کتاب العلم ۲۲/۱

Marfat.com

الف.....بعض حضرات نے فرمایا۔

اس شخص کے لئے کتابت کی اجازت ہے جسے حدیث بھول جانے کا ڈر ہو اور نہی (ممانعت) ان لوگوں کے لئے ہے جن کو بھولنے کا خوف نہ ہو البتہ یہ ڈر ہو کہ اگر احادیث لکھی جائیں تو لوگ تحریر پر توکل کر بیٹھیں گے۔

ب.....دوسرے کچھ حضرات فرماتے ہیں:

ممانعت اس وقت تھی جب حدیث کے قرآن مجید کے ساتھ مل جانے کا ڈر تھا۔ پھر جب اس کا ڈر نہ رہا تو لکھنے کی اجازت دی گئی اس بنیاد پر نہی منسوخ ہے۔

## کاتبِ حدیث پر کیا لازم ہے؟

کاتبِ حدیث کے لئے مناسب ہے کہ وہ حدیث کو ضبط کرنے اور اس کی تحقیق کو اس شکل وصورت میں لانے کے لئے ہمت کرے کہ (قرآن مجید سے) التباس (مخلوط ہونے) کا خوف نہ رہے اور مشکل الفاظ خاص طور پر ناموں پر اعراب لگائے کیونکہ ان کو سیاق وسباق سے سمجھا نہیں جاسکتا اور یہ کہ اس کا خط مشہور خط کے قواعد پر واضح ہو۔

نیز وہ اپنی طرف سے خاص اصطلاح نہ بنائے جس میں ایسے اشارے ہوں جن کی لوگوں کو پہچان نہیں۔ اور اس بات کا خاص خیال رکھنا ضروری ہے کہ جب بھی نبی اکرم ﷺ کا ذکر آئے تو صلوٰۃ وسلام ضرور لکھے۔ اور اس کے بار بار لکھنے میں اُکتاہٹ محسوس نہ کرے اور اصل میں موجود کے ساتھ کوئی قید نہ لگائے اگرچہ وہ ناقص ہو اسی طرح اللہ تعالیٰ کی ثناء، جیسے "عزوجل" لکھنے میں اور صحابہ کرام کے نام کے ساتھ رضی اللہ عنہ اور علماء کے ناموں کے ساتھ رحمہ اللہ لکھنے میں اُکتاہٹ

Marfat.com

نہیں ہونی چاہیے۔

صرف درود شریف یا صرف سلام لکھنا مکروہ ہے (دونوں لکھے) جس طرح محض اشارہ جیسے (صلی اللہ علیہ وسلم کی جگہ) ص اور صلعم وغیرہ لکھنا مکروہ ہے بلکہ اس پر لازم ہے کہ دونوں کو مکمل (یعنی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) لکھے۔

## موازنہ اور اس کی کیفیت:

کاتب حدیث پر لازم ہے کہ جب اس کی کتابت سے فارغ ہو جائے تو (اپنے شیخ کے) اصل نسخہ کے ساتھ موازنہ کرے اگرچہ اس سے اجازت کے طریقے پر لیا ہو۔

اور موازنہ کا طریقہ یہ ہے کہ وہ اور اس کا شیخ دونوں اپنی کتابیں سناتے وقت اپنے سامنے رکھیں اور یہ بات بھی کافی ہے کہ اس کے مقابل کوئی دوسرا ثقہ راوی ہو چاہے حالت قرأت کے وقت ہو یا اس کے بعد، جس طرح اس فرع کے ساتھ موازنہ درست ہے جس کا شیخ کے اصل کے ساتھ موازنہ ہو چکا ہو۔

## الفاظ اداء کی کتابت وغیرہ میں اصطلاحات:

متعدد کاتبین حدیث پر یہ بات غالب رہی کہ انہوں نے الفاظ اداء میں رمز واشارہ پر اکتفاء کیا مثلاً وہ

الف...... حدثنا...... کو "ثنا" یا "نا" لکھتے ہیں۔

ب...... اخبرنا...... کو "انا" یا "ارنا" لکھتے ہیں۔

ج...... جب ایک سند کو دوسری سند کی طرف بدلتے ہیں تو "ح" کے ساتھ اشارہ کرتے ہیں۔ (یعنی التحویل) اور قاری اسے "حٰ" پڑھتا ہے۔

Marfat.com

و......اسناد کے رجال (راویوں) کے درمیان کلمہ "قال" وغیرہ کو حذف کرنے کی عادت جاری ہے اور یہ غلط ہے اور اس کا مقصد اختصار ہوتا ہے لیکن قاری کو چاہیے کہ وہ ان کا تلفظ کرے جیسے: "حدثنا عبد الله بن یوسف اخبر مالك" ہے تو قاری کو چاہیے کہ وہ یوں کہے "قال اخبرنا مالك" جس طرح "انه" کو سند کے آخر میں اختصار کی خاطر حذف کرنے کا طریقہ جاری ہے جیسے "عن ابی هريرة قال" تو قاری کے لئے مناسب ہے کہ وہ یوں پڑھے "انه قال"...... کیونکہ اس طرح کلام کو اعراب کے اعتبار سے صحیح کیا جاتا ہے۔

## طلب حدیث کے لئے سفر:

ہمارے اسلاف نے حدیث شریف کے لئے ایسا اہتمام کیا ہے جس کی مثال نہیں ملتی اور احادیث کو جمع کرنے اور ان کو ضبط کرنے کے لئے جس قدر اہتمام اور محنت و مشقت کی اور وقت خرچ کیا ہے عقل اس کی تصدیق کے لئے تیار نہیں ہے۔

ان میں سے ایک جب اپنے شہر کے شیوخ سے احادیث جمع کر لیتا تو وہ دوسرے علاقوں اور شہروں کی طرف سفر کرتا تا کہ ان شہروں کے شیوخ سے احادیث حاصل کرے وہ شہر قریب ہوتے یا دور۔ وہ خوش دلی سے سفر کی مشکلات اور زندگی کے مصائب برداشت کرتے۔

اس سلسلے میں خطیب بغدادی نے ایک کتاب "الرحلة فی طلب الحديث" کے نام سے تصنیف کی ہے اس میں صحابہ کرام، تابعین اور بعد کے لوگوں کے طلب حدیث کے لئے سفر کے سلسلے میں ایسے ایسے واقعات ذکر کیے ہیں جن کو سن کر انسان تعجب میں پڑ جاتا ہے۔ جو شخص ان دلچسپ واقعات کو سننا پسند کرتا ہے اس پر اس

کتاب کا مطالعہ لازم ہے اس کتاب کے پڑھنے سے طالب علم میں چستی پیدا ہوتی ہے۔اوران کی ہمتوں کوجلا ملتی ہے نیز ان کے ارادوں کوقوت حاصل ہوتی ہے۔

## حدیث سے متعلق تصانیف کی اقسام:

جوشخص اپنے آپ میں حدیثوں وغیرہ کی تصنیف کی طاقت پاتا ہے اس پر لازم ہے کہ وہ تصنیف کی راہ اختیار کرے اوراس کی صورت یہ ہے کہ متفرق کوجمع کرے، مشکل کی وضاحت کرے، غیر مرتب کو مرتب کرے اور جن کی فہرست نہیں ان کی فہرست بنائے تاکہ حدیث کے طلباء کے لئے اس سے استفادہ کرنا آسان ہوجائے اوراس کا وقت بھی کم خرچ ہو۔

اوراسے اپنی کتاب کی تہذیب، تحریراورضبط سے پہلے اسے منظرعام پرلانے سے بچنا چاہیے اوراس کی تصنیف ایسی ہو کہ اس کا نفع عام ہواور فائدہ بھی زیادہ ہو۔

علمائے حدیث نے مختلف طریقوں پر کتابیں تصنیف کی ہیں جن میں مشہورترین اقسام درج ذیل ہیں۔

### الف......الجوامع:

جامع وہ کتاب ہے جس میں مؤلف نے تمام ابواب مثلاً عقائد، عبادات ،معاملات، سیَر، مناقب، رقاق، فتن اور قیامت کی خبروں کوجمع کیا۔جیسے امام بخاری رحمہ اللہ کی "الجامع الصحیح (یعنی صحیح بخاری)

### ب......المسانید:

مسند ہروہ کتاب ہے جس میں ہر صحابی سے مروی احادیث الگ الگ جمع کی

Marfat.com

گئیں اس موضوع سے قطع نظر جس سے اس حدیث کا تعلق ہے۔ جیسے "مسند امام احمد بن حنبل"۔

ج......السنن:

وہ کتب جو فقہ کے ابواب کے مطابق تصنیف کی گئیں تاکہ یہ کتب احکام کے استنباط میں فقہاء کے لئے مصدر (بنیاد) بن سکیں اور یہ کتب، جوامع سے مختلف ہیں کیونکہ ان میں عقائد، سیَر اور مناقب وغیرہ سے متعلق احادیث جمع نہیں کی گئیں بلکہ یہ فقہ کے ابواب اور احکام کی احادیث پر مشتمل ہیں جیسے "سنن ابی داؤد"۔

د......المعاجم:

ہر اس کتاب کو مُعْجَم کہا جاتا ہے جس میں مؤلف نے احادیث کو حروفِ تہجی کے اعتبار سے شیوخ کے ناموں کی بنیاد پر مرتب کیا جیسے امام طبرانی کی "المعاجم الثلاثۃ" یعنی المعجم الکبیر، المعجم الاوسط، المعجم الصغیر۔

ھ......العِلَل:

کتب العِلَل وہ کتب ہیں جو معلول احادیث پر مشتمل ہیں اور ان میں ان کی علتوں کا بیان بھی ہے جیسے ابن ابی حاتم کی "العلل" اور امام دارقطنی کی "العلل"۔

و......اجزاء:

جزء وہ چھوٹی کتاب ہوتی ہے جس میں حدیث کے کسی راوی کی مرویات جمع کی گئیں یا کسی ایک موضوع سے متعلق احادیث جمع کی گئیں اور ان کا احاطہ کیا گیا جیسے امام بخاری کی "رفع الیدین فی الصلوٰۃ"۔

Marfat.com

و......اطراف:

ایسی کتاب جس میں مصنف نے کسی حدیث کا ایک کنارہ ذکر کیا جو بقیہ حدیث پر دلالت کرتا ہے پھر متون میں سے ہر متن کی سند کا یا تو بالاستیعاب (مکمل) ذکر کیا یا بعض کتب کی قید کے ساتھ ذکر کیا جیسے المزی کی کتاب "تحفة الاشراف بمعرفة الاطراف"۔

ح......المستدرکات:

مستدرک اس کتاب کو کہا جاتا ہے جس میں مؤلف ان احادیث کو جمع کرتا ہے جن کو دوسرے مصنف کی شرائط پر پاتا ہے اور وہ اس مصنف سے رہ گئیں جیسے ابوعبداللہ حاکم کی "المستدرک علی الصحیحین" (مستدرک حاکم)۔

ط......المستخرجات:

مستخرجہ وہ کتاب ہوتی ہے جس میں مؤلف دیگر مؤلفین کی کتابوں کی احادیث اپنی سند کے ساتھ جمع کرتا ہے اور اس کا طریقہ پہلے مؤلف سے مختلف ہوتا ہے۔
اور بعض اوقات وہ اس میں اپنے شیخ یا اس سے اوپر والے راوی سے مل جاتا ہے۔ جیسے المستخرج علی الصحیحین "یہ ابونعیم اصبہانی کی کتاب ہے۔

## چوتھی بحث......روایت حدیث کا طریقہ

ا......اس عنوان سے کیا مراد ہے؟

اس عنوان سے مراد اس کیفیت کا بیان ہے جس کے مطابق حدیث بیان کی جاتی ہے اور وہ آداب جن کا اپنانا ضروری ہے اور اس سے متعلق امور ہیں ان میں سے کچھ

باتیں گذشتہ بحثوں میں گزر چکی ہیں اور باقی یہ ہیں۔

## کیا راوی اپنی اس کتاب سے روایت کرسکتا ہے جس میں سے اسے کچھ یاد نہیں؟

اس معاملے میں علماء کے درمیان اختلاف ہے بعض نے سختی کی اور افراط سے کام لیا اور بعض نے سستی کی اور تفریط کی راہ اختیار کی اور کچھ حضرات نے اعتدال اختیار کرتے ہوئے درمیانے راستے کا انتخاب کیا۔

الف...... سختی اختیار کرنے والے...... ان حضرات نے کہا کہ دلیل وہی ہے جسے راوی اپنی یاداشت سے روایت کرے یہ بات حضرت امام مالک، امام ابوحنیفہ اور حضرت ابوبکر صیدلانی شافعی رحمہم اللہ سے منقول ہے۔

ب...... سستی کرنے والے...... ایک قوم نے ان نسخوں سے احادیث روایت کی ہیں جن کا ان کے اصول سے موازنہ نہیں کیا گیا ان میں ابن لھیعہ شامل ہیں۔

ج...... اعتدال اور درمیانی راہ والے...... یہ جمہور ہیں وہ فرماتے ہیں جب راوی حدیث لینے اور موازنہ کے سلسلے میں ذکر کی گئی شرائط کو پورا کرے تو کتاب سے روایت جائز ہے۔ اگرچہ کتاب اس سے غائب ہوگئی ہو جب ظن غالب یہ ہو کہ وہ تغیر وتبدل سے محفوظ ہے خصوصا جب وہ ان راویوں سے ہو جن پر عموما تبدیلی مخفی نہیں رہتی۔

## اس نابینا سے روایت کرنا جو اپنی سنی ہوئی روایات کو یاد نہیں رکھتا:

جب وہ نابینا جو سنی ہوئی روایت کو یاد نہیں رکھ سکتا کسی ثقہ سے ان احادیث کی کتابت اور ضبط کے سلسلے میں کسی ثقہ سے مدد حاصل کرے۔ اور اس پر قرأت کے

Marfat.com

وقت احتیاط اختیار کرے اس طرح کہ اس کے غالب گمان کے مطابق وہ تبدیلی سے محفوظ ہے تو اکثر کے نزدیک اس کی روایت صحیح ہے اور یہ اس دیکھنے والے ان پڑھ کی طرح ہے جسے حفظ حاصل نہیں۔

## حدیث کی روایت بالمعنٰی اور اس کی شرائط:

اسلاف نے حدیث کی روایت بالمعنیٰ میں اختلاف کیا ہے ان میں سے بعض نے اسے منع کیا اور بعض نے جائز قرار دیا۔

ا...... محدثین، فقہاء اور اصولیوں کی ایک جماعت نے اسے منع کیا ان حضرات میں ابن سیرین اور ابوبکر رازی رحمہما اللہ شامل ہیں۔

ب...... جمہور سلف وخلف محدثین اور اصحاب فقہ واصول نے اسے جائز قرار دیا ان میں چاروں ائمہ (امام ابوحنیفہ، امام مالک، امام شافعی اور امام احمد بن حنبل رحمہم اللہ) شامل ہیں لیکن (یہ اس وقت ہے) جب معنیٰ کی ادائیگی قطعی طور پر کرے۔

پھر جن لوگوں نے حدیث کو بالمعنیٰ روایت کرنے کی اجازت دی ہے ان کے ہاں کچھ شرائط ہیں جو درج ذیل ہیں۔

ا...... راوی، الفاظ اور ان کے مقاصد کا علم رکھتا ہو۔

۲...... ان باتوں کو جانتا ہو جن کی بنیاد پر معانی کو پھیرا جاتا ہے۔

نوٹ: یہ ان احادیث کے بارے میں ہے جو تصنیف میں نہیں آئیں جب کہ تصنیف کی گئی کتب سے کوئی حدیث بالمعنیٰ روایت کرنا جائز نہیں اسی طرح ان کے الفاظ کو بدلنا بھی جائز نہیں اگرچہ وہ ان کے ہم معنیٰ ہوں۔

کیونکہ روایت بالمعنیٰ ضرورت کے تحت ہے یعنی جب راوی سے کوئی کلمہ غائب

Marfat.com

ہو لیکن جب احادیث کو کتب میں محفوظ کرلیا گیا تو ان کو بالمعنی روایت کی حاجت نہ رہی اس کے بعد راوی کے لئے یہ بھی مناسب ہے کہ وہ حدیث روایت کرنے کے بعد کہے "او کما قال " یا "اونحوہ " یا "اوشبهه " (یعنی یا جیسا کہ آپ ﷺ نے فرمایا یا اس کی مثل یا اس کے مشابہ)

حدیث میں لحن اور اس کا سبب:

لحن سے مراد اس کی قرأت میں غلطی کرنا ہے لحن کے واضح ترین اسباب یہ ہیں:

ا......نحو اور لغت کا نہ سیکھنا......لہذا طالب علم پر لازم ہے کہ وہ نحو اور لغت سیکھے جس کے ذریعے وہ لحن اور تصحیف (غلطی) سے بچے حضرت خلیب بغدادی نے حضرت حماد بن سلمہ سے روایت کیا وہ فرماتے ہیں:

مثل الذی یطلب الحدیث ولا یعرف النحو مثل الحمار علیه مخلاة لاشعیر فیها۔(۱)

ترجمہ: جو شخص حدیث طلب کرتا ہے اور نحو کا علم نہیں رکھتا وہ اس گدھے کی طرح ہے جس کے اوپر بورا ہو جس میں جَو نہ ہوں۔

ب......کتب اور صحیفوں سے لینا اور شیوخ حدیث سے ملاقات نہ کرنا۔ یہ بات گزر چکی ہے کہ شیوخ سے احادیث لینے اور حاصل کرنے کے کئی طریقے ہیں جن میں سے بعض دوسرے بعض کی نسبت زیادہ قوی ہیں۔ اور ان میں سے سب سے زیادہ قوی طریقہ شیخ کے الفاظ سے سننا یا اس کے سامنے پڑھنا (اور اس کا تصدیق کرنا ہے) پس جو شخص حدیث میں مشغول ہوتا ہے اسے چاہیے کہ وہ رسول اکرم ﷺ کی

---

(۱)......تدریب الراوی ۱۰۶/۲

Marfat.com

حدیث اہل معرفت و تحقیق سے حاصل کرے تا کہ وہ تصحیف اور غلطی سے بچے (تصحیف کا معنی بھی غلطی ہے) اور طالب حدیث کے لئے مناسب نہیں کہ وہ کتب اور صحیفوں کا قصد کرے اور ان سے لے کر روایت کرے اور ان کتابوں کو اپنے شیوخ قرار دے ایسے شخص کی خطائیں اور تصحیف زیادہ ہوں گی اسی لئے قدیم علماء کرام نے فرمایا:

لاتاخذ القرآن من مُصْحَفِيٍّ ولا الحديث من صحفي۔(۱)

ترجمہ: قرآن پاک کو اس شخص سے نہ لو جو اسے صحیفہ سے حاصل کرتا ہے اور حدیث کو بھی ایسے شخص سے نہ لو جو اسے صحیفوں سے حاصل کرتا ہے۔

## غریب الحدیث:

تعریف...... لغوی اعتبار سے غریب اسے کہتے ہیں جو اپنے قریبی رشتہ داروں سے دور ہو (مثلاً مسافر ہو)

اور یہاں اس سے مراد وہ الفاظ ہیں جن کا معنی مخفی ہو۔ صاحب قاموس فرماتے ہیں: غَرُبَ، کَرُمَ کی طرح ہے یعنی غمض و خفی (پوشیدہ ہو گیا)(۲)

ب...... اصطلاحاً...... متن حدیث میں ایسا لفظ واقع ہو جو پیچیدہ ہو اور قلتِ استعمال کی وجہ سے فہم (سمجھ) سے دور ہو۔

(۱)...... جو شخص قرآن مجید کو خود قرآن سے پڑھتا ہے قراء اساتذہ سے نہیں پڑھتا وہ مُصْحَفِيٌّ ہے اسی طرح جو شخص احادیث کو کتب سے پڑھتا ہے شیوخ سے حاصل نہیں کرتا وہ صَحَفِيٌّ ہے۔

(۲)...... القاموس ۱۱۵/۱

## اہمیت اور دشوار ہونا:

یہ نہایت اہم فن ہے محدثین کے ہاں اس سے ناواقف ہونا قبیح بات ہے لیکن اس میں غوطہ زن ہونا بھی مشکل ہے لہذا اس میں غوطہ لگانے والے کو چاہیے کہ وہ کوشش کرے اور اللہ تعالی سے ڈرے کہ کہیں اپنے نبی ﷺ کے کلام کی تفسیر محض گمان وخیال کی بنیاد پر نہ کرے اور اسلاف (پہلے بزرگ) اس سلسلے میں نہایت مضبوطی اختیار کرتے تھے۔

## اس کی عمدہ ترین تفسیر:

اس کی عمدہ ترین تفسیر وہ ہے جو دوسری روایت میں وضاحت کے ساتھ موجود ہو جیسے حضرت عمران بن حصین رضی اللہ عنہ کی روایت مریض کی نماز کے بارے میں ہے:

صل قائما فان لم تستطع فقاعدا فان لم تستطع فعلی جنب۔(۱)

ترجمہ: کھڑے ہوکر نماز پڑھو اگر اس کی طاقت نہ ہو تو بیٹھ کر پڑھو اور اگر اس کی طاقت بھی نہ ہو تو پہلو کے بل لیٹ کر پڑھو۔

"فعلی جنب" کی تفسیر حضرت علی المرتضی رضی اللہ عنہ کی حدیث میں یوں ہے:

علی جنبه الایمن مستقبل القبلة بوجهه ۔(۲)

ترجمہ: دائیں پہلو پر قبلہ رُخ ہوکر پڑھے۔

(۱)......صحیح بخاری ابواب تقصیر الصلوۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۵۰

(۲)......فتح الباری شرح صحیح البخاری ابواب تقصیر الصلوۃ رقم الحدیث ۱۱۱۷ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۳/۵۱۰

## اس میں مشہور ترین تصانیف:

غریب الحدیث کے سلسلے میں چند مشہور تصانیف درج ذیل ہیں:

الف...... "غریب الحدیث" یہ ابوعبیدہ القاسم بن سلام کی تصنیف ہے۔

ب...... النهاية في غريب الحديث والاثر، یہ ابن اثیر کی کتاب ہے اور کتب غریب الحدیث میں یہ سب سے عمدہ ہے۔

ج...... "الدر النثير" امام سیوطی کی تصنیف ہے جو النہایہ کی تلخیص ہے۔

د...... "الفائق" زمخشری کی تحریر ہے۔

## دوسری فصل...... آدابِ روایت

| | | |
|---|---|---|
| پہلی بحث | ...... | آدابِ محدِّث |
| دوسری بحث | ...... | آدابِ طالبِ حدیث |

## پہلی بحث...... آدابِ محدِّث:

مقدمہ...... اس وجہ سے کہ حدیث شریف میں مشغول ہونا اللہ تعالیٰ کے قرب کا سب سے افضل ذریعہ اور بہترین فن ہے۔ جو شخص اس میں مشغول ہوتا ہے اور اسے لوگوں میں پھیلاتا ہے اسے اچھے اخلاق اور عمدہ عادات کے زیور سے مزین ہونا چاہیے اور جو کچھ وہ لوگوں کو سکھاتا ہے اس کے لئے عمدہ مثال بنے یعنی دوسروں کو حکم دینے سے پہلے خود عمل کرے۔

## معروف ترین باتیں جنہیں محدِّث اختیار کرے:

ا...... صحیح نیت اور اخلاص کا ہونا، دل کو دنیوی اغراض سے پاک رکھنا جس طرح

Marfat.com

سرداری اور شہرت کی چاہت (کا نہ ہونا)

ب......اس کا سب سے بڑا مقصد حدیث پاک کو پھیلانا اور اجر عظیم کے حصول کی غرض سے رسول اکرم ﷺ کی طرف سے اسے پہنچانا ہے۔

ج......جو شخص اس سے عمر یا علم میں بڑا ہو اس کے سامنے بیان نہ کرے۔

د......اگر کوئی شخص اس سے کسی حدیث کے بارے میں پوچھے اور اسے معلوم ہو کہ وہ حدیث فلاں شخص کے پاس ہے تو وہ اس دوسرے شخص کی طرف اس کی راہنمائی کرے۔

ھ......کسی ایسے شخص کو حدیث بیان کرنے سے انکار نہ کرے جس کی نیت صحیح نہیں کیونکہ اس کی نیت کے صحیح ہونے کی امید کی جاسکتی ہے۔

و......حدیث لکھانے اور سکھانے کے لئے مجلس منعقد کرے جب اس کا اہل ہو کیونکہ یہ روایت کا سب سے اعلیٰ مرتبہ ہے۔

جب مجلس املاء میں حاضری کا ارادہ کرے تو کون کون سے امور مستحب ہیں؟

الف......پاکیزگی حاصل کرے، خوشبو لگائے اور داڑھی میں کنگھی کرے۔

ب......وقار اور ہیبت کے ساتھ بیٹھے کیونکہ اس میں حدیث رسول ﷺ کی تعظیم ہے۔

ج......تمام حاضرین کی طرف متوجہ ہو اور بعض کو چھوڑ کر دوسرے بعض کو اپنی توجہ کے ساتھ خاص نہ کرے۔

د......اپنی مجلس کو اللہ تعالیٰ کی حمد و ثنا اور نبی اکرم ﷺ کی خدمت میں ہدیہ درود

بھیجنے کے ساتھ شروع کرے اور اس حالت کے لائق دعا مانگے۔

ھ......جو بات حاضرین کی سمجھ میں نہ آتی ہو یا جس حدیث کو وہ سمجھ نہ سکیں اس سے اجتناب کرے۔

و......املاء (لکھوانا) کو حکایات اور نادر باتوں کے ساتھ ختم کرے تا کہ دلوں کو سکون ملے اور تھکاوٹ ختم ہو جائے۔

## حدیث شریف میں مشغولیت کے لئے محدِّث کی کتنی عمر ہونی چاہیے؟

اس سلسلے میں اختلاف ہے۔

الف......بعض نے کہا پچاس سال کسی نے چالیس سال کہا اور کسی نے اس کے علاوہ قول کیا۔

ب......صحیح یہ ہے کہ جب وہ اس کا اہل ہو جائے اور جو علم اس کے پاس ہے ،لوگوں کو اس کی حاجت ہو تو وہ بیٹھ جائے کوئی بھی عمر ہو۔

## اس میں مشہور ترین تصنیفات:

الف......"الجامع لاخلاق الراوی وآداب السامع" یہ خطیب بغدادی کی کتاب ہے۔

ب......"جامع بیان العلم وفضله وما ینبغی فی روایته وحمله" یہ کتاب ابن عبدالبر کی تصنیف ہے۔

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

Marfat.com

## دوسری بحث......آدابِ طالب حدیث

مقدمہ: آدابِ طالب حدیث سے مراد طالب حدیث کا ان آدابِ عالیہ اور اخلاق کریمہ سے متصف ہونا ہے جو اس علم کے شرف کے مناسب ہیں جسے وہ حاصل کر رہا ہے۔ اور وہ علم حدیث رسول اللہ ﷺ ہے ان میں سے بعض آداب میں وہ محدث کے ساتھ شریک ہے اور بعض میں تنہا ہے۔

### جن آداب میں محدِّث کے ساتھ شریک ہے:

الف......طلب حدیث میں نیت کا صحیح ہونا اور اخلاص کا پایا جانا۔

ب......اس بات سے بچے کہ اس علم کی طلب سے اس کا مقصود دنیا کی کسی غرض تک پہنچنا ہو حضرت امام ابوداؤد اور امام ابن ماجہ رحمہما اللہ نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کی حدیث نقل کی ہے وہ فرماتے ہیں:

رسول اکرم ﷺ نے فرمایا:

من تعلّم علما مما یبتغی به وجه الله تعالیٰ لا یتعلمه الا لیصیب به غرضًا من الدنیا لم یجد عرف الجنة یوم القیامة۔(۱)

ترجمہ: جو شخص ایسا علم جس کے ذریعے رضائے الٰہی حاصل کی جاتی ہے اس لئے سیکھتا ہے کہ اس کے ذریعے کوئی دنیوی غرض حاصل کرے تو وہ قیامت کے دن جنت کی خوشبو نہیں پائے گا۔

ج......جو احادیث سنی ہیں ان پر عمل کرنا۔

(۱)......مشکوٰۃ المصابیح کتاب العلم ص:۳۴، ۳۵

Marfat.com

## وہ آداب جن میں طالب، محدِّث سے الگ ہے:

الف......حدیث پاک کو یاد رکھنے اور سمجھنے کے سلسلے میں اللہ تعالیٰ سے توفیق، درستگی، آسانی اور مدد کا سوال کرے۔

ب......مکمل طور پر اس کی طرف متوجہ ہو اور اس کے حصول کے لئے اپنی محنت اور کوشش کو خرچ کر دے۔

ج......سماع حدیث کا آغاز اپنے شہر کے شیوخ میں سے اُس شیخ سے کرے جسے سند، علم اور دیانت کے اعتبار سے سب پر ترجیح حاصل ہو۔

د......اپنے شیخ اور جس سے سماع حاصل ہو اس کی تعظیم اور عزت کرے کیونکہ یہ عمل، علم کی بزرگی کو تسلیم کرنا اور حصول نفع کے اسباب سے ہے۔ اپنے شیخ کی رضا حاصل کرنے کی کوشش کرے اور اگر اس کی طرف سے سختی ہو تو اس پر صبر کرے۔

ھ......طلب حدیث کے وقت جو فوائد اس نے حاصل کئے اپنے ساتھیوں اور بھائیوں کی ان کی طرف راہنمائی کرے اور ان سے ان کو نہ چھپائے کیونکہ فوائد علمیہ کو طلباء سے چھپانا نحوست ہے گھٹیا قسم کے جاہل طلباء اس کے مرتکب ہوتے ہیں کیونکہ علم کا مقصود اسے پھیلانا ہے۔

و......احادیث سننے اور حاصل کرنے کی سعی نیز علم کے حصول میں حیاء یا تکبر حائل نہ ہو اگرچہ عمر یا مقام و مرتبہ میں اپنے سے کم شخص سے حاصل کرے۔

ز......محض حدیث سننے اور لکھنے پر اکتفاء نہ کرے کہ اس کی معرفت اور فہم کو ترک کر دے اس طرح بعض اوقات وہ اپنے آپ کو تھکاتا ہے اور کوئی فائدہ حاصل نہیں کرتا۔

Marfat.com

ج.....حدیث سننے، یادرکھنے اور سمجھنے میں صحیحین (صحیح بخاری ومسلم) کومقدم کرے پھر سنن ابی داؤد پھر سنن ترمذی پھر سنن نسائی پھر امام بیہقی کی سنن کبریٰ پھر جن مسانید اور جوامع کی حاجت ہو جیسے مسند امام احمد بن حنبل اور موطا امام مالک۔اور کتبعِللمیں سے عِلَل دارقطنیؒ ......اسماء میں سے امام بخاری کی تاریخ کبیر، ابن ابی حاتم کی الجرح والتعدیل، ضبط اسماء کے لئے ابن ماکولا کی کتاب اور غریب الحدیث کے سلسلے میں ابن کثیر کی النہایۃ (پڑھے)۔

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

Marfat.com

# چوتھا باب......اسناد اور اس کے متعلقات

پہلی فصل ...... لطائف الاسناد

دوسری فصل ...... راویوں کی معرفت

## پہلی فصل......لطائف اسناد:

۱......الاسناد العالی والنازل

۲......المسلسل

۳......اکابر کی اصاغر سے روایت

۴......باپوں کی بیٹوں سے روایت

۵......بیٹوں کی باپوں سے روایت

۶......مُدَبَّج اور اقران (ہم عصر) سے روایت

۷......سابق ولاحق

## اسناد عالی ونازل:

تمہید......اسناد اس امت کی فضیلت سے بھرپور خصوصیت ہے اس کے علاوہ گزشتہ امتوں کو یہ فضیلت حاصل نہ تھی اور یہ نہایت تاکیدی سنت بالغہ ہے پس مسلمان پر لازم ہے کہ حدیث واخبار کو نقل کرنے میں اس پر اعتماد کرے۔

حضرت ابن مبارک رحمہ اللہ فرماتے ہیں: "الاسناد من الدین ولو لا الاسناد لَقَالَ من شاء ما شاء" (اسناد دین سے ہے اگر یہ نہ ہوتی تو جو شخص چاہتا جس طرح چاہتا، کہہ دیتا۔)

Marfat.com

حضرت امام ثوری رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

"الاسناد سلاح المؤمن" اسناد مؤمن کا ہتھیار ہے۔

ایسے ہی اس میں عالی سند کی طلب بھی سنت ہے حضرت امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

"طلب الاسناد العالی سنة عمن سلف" (عالی اسناد کی طلب اسلاف کی سنت ہے۔) کیونکہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کے اصحاب (شاگرد) کوفہ سے مدینہ طیبہ کی طرف سفر کرتے اور حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ سے سیکھتے اور سنتے اسی لئے طلب حدیث کی خاطر سفر کرنا مستحب ہے۔ متعدد صحابہ کرام نے عالی اسناد کی طلب میں سفر کیا ان میں حضرت ابو ایوب اور حضرت جابر رضی اللہ عنہما بھی شامل ہیں۔

تعریف:

الف......لغوی اعتبار سے "العالی" "العلو" سے اسم فاعل ہے جو نزول کی ضد ہے اور نازل، "النزول" سے اسم فاعل ہے۔

ب......اصطلاحاً......عالی سند وہ ہے کہ دوسری سند کی نسبت سے اس کے راویوں کی تعداد کم ہو جس (دوسری) سند کے ساتھ یہ حدیث وارد ہوئی۔

۲......اسناد نازل......وہ اسناد کہ دوسری سند جس کے ساتھ یہ حدیث وارد ہوئی ہے، کے مقابلے میں اس کے راوی زیادہ ہوں۔

علو کی اقسام:

علو کی پانچ قسمیں ہیں ان میں سے ایک علو مطلق ہے اور باقی علو نسبی ہیں۔

(نسبت کے اعتبار سے ہیں) اور وہ درج ذیل ہیں۔

الف...... صحیح اور پاک سند کے ساتھ رسول اکرم ﷺ کے قریب ہونا، یہ علو مطلق ہے اور یہ علو کی سب سے اعلیٰ قسم ہے۔

ب...... ائمہ حدیث میں سے کسی امام کے قریب ہونا۔ اگرچہ اس امام کے بعد رسول اکرم ﷺ تک تعداد زیادہ ہو جائے جیسے اعمش یا ابن جریج یا مالک وغیرہ (رحمہم اللہ) کا قرب حاصل ہو اور اس کے ساتھ ساتھ سند صحیح ہو اور عیوب سے پاک ہو۔

ج...... کتب صحاح ستہ یا دوسری معتمد کتب کی روایت کی نسبت قرب حاصل ہو۔

یہ وہ چیز ہے جس کے سبب سے متاخرین نے موافقت، ابدال، مساوات اور مصافحہ کا اہتمام کیا ہے۔

## موافقت:

اس سے مراد مصنفین میں سے کسی ایک کے شیخ تک اس کی سند کے علاوہ کے ساتھ اتنی تعداد کے ساتھ پہنچنا کہ اگر وہ اس کی سند کے ساتھ روایت کرے تو اس کے مقابلے میں یہ تعداد کم ہو۔

## مثال:

حافظ ابن حجر (رحمہ اللہ) نے شرح نخبۃ الفکر میں فرمایا: ''امام بخاری نے قتیبہ سے انہوں نے حضرت مالک سے ایک حدیث روایت کی ہے اگر ہم ان (امام بخاری) کی سند کے ساتھ اسے روایت کریں تو ہمارے اور حضرت قتیبہ کے درمیان آٹھ واسطے ہوں گے اور اگر ہم اس حدیث کو بعینہ ابو العباس سراج کے واسطے سے

Marfat.com

حضرت قتیبہ سے روایت کریں تو ہمارے اور قتیبہ کے درمیان سات واسطے ہوں گے پس ہمیں امام بخاری کے ساتھ ان کے شیخ (ابوالعباس سراج) میں سند عالی کے ساتھ موافقت حاصل ہو گئی۔

## بدل:

بدل کا مطلب یہ ہے کہ مصنفین میں کسی ایک کے شیخ تک اس کی سندؑ کے علاوہ کے ساتھ اس طرح پہنچنا کہ اس (مصنف) کی سند کے مقابلے میں راویوں کی تعداد کم ہو۔

## مثال:

ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

''گویا یہ سند بعینہ ہم تک پہنچی ہے اور دوسرے طریق سے قعنبی تک پہنچتی ہے اور وہ امام مالک سے روایت کرتے ہیں پس اس میں قتیبہ کی جگہ قعنبی ہیں'' (اور یہ قعنبی امام بخاری کے شیخ ہیں۔)

## مساوات:

راوی کی سند کی تعداد آخر تک مصنفین میں سے کسی ایک کی سند کے مساوی ہو۔

## مثال:

ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں مثلاً امام نسائی رحمہ اللہ ایک حدیث روایت کرتے ہیں اور ان کے اور حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے درمیان گیارہ افراد ہیں پس بعینہ یہ حدیث ہم تک ایک اور سند کے ساتھ اس طرح پہنچتی ہے کہ ہمارے اور حضور ﷺ

Marfat.com

کے درمیان گیارہ واسطے ہیں پس ہم عدد کے اعتبار سے امام نسائی کے برابر ہو گئے۔

**مصافحہ:**

کسی راوی کی سند کی تعداد آخر تک کسی ایک مصنف کے کسی شاگرد کی سند کے برابر ہو۔

اس کو مصافحہ کہنے کی وجہ یہ ہے کہ یہ اسم جاری ہے کہ جب دو شخص ملاقات کرتے ہیں تو وہ مصافحہ کرتے ہیں۔

د......راوی کی وفات کے مقدم ہونے کی وجہ سے علو:

اس کی مثال جو حضرت امام نووی رحمہ اللہ نے فرمایا کہ: ''میں جو کچھ تین واسطوں کے ساتھ امام بیہقی سے روایت کروں وہ اس سے اعلیٰ ہے جسے میں تین واسطوں کے ساتھ ابو بکر بن خلف سے روایت کروں اور وہ حاکم سے روایت کرتے ہیں کیونکہ امام بیہقی کی وفات، ابو بکر بن خلف سے پہلے واقع ہوئی۔''

ھ......شیخ سے سماع پہلے حاصل ہو......یعنی جو شخص شیخ سے پہلے سماع حاصل کرے وہ اس سے مقدم ہوگا جسے اس سے بعد میں سماعت حاصل ہوئی۔

**مثال:**

شیخ سے دو آدمیوں کو سماع حاصل ہو ان میں سے ایک نے (مثلاً) ساٹھ سال پہلے سنا اور دوسرے نے چالیس سال پہلے سنا، دونوں کی سند کے راویوں کی تعداد برابر ہے تو پہلا، دوسرے سے اعلیٰ ہے یعنی پہلے کی سند عالی اور دوسرے کی نازل ہوگی)

اور یہ بات اس وقت مؤکد ہو جائے گی جب شیخ کے ذہن میں اختلاط پیدا ہو گیا یا وہ بڑھاپے کو پہنچ گیا۔

## اقسام نزول:

نزول کی پانچ قسمیں ہیں اور یہ اس کی ضد (علوم) سے پہچانی جاتی ہیں پس علو کی ہر قسم کے مقابلے میں اس کی ضد نزول کی اقسام میں سے ایک قسم ہے۔

## کیا علو افضل ہے یا نزول؟

الف.....صحیح قول جو جمہور کہتے ہیں اس کے مطابق نزول سے علو افضل ہے کیونکہ اس کی وجہ سے حدیث سے خلل کے احتمال کی کثرت دور ہو جاتی ہے۔ اور نزول میں رغبت نہیں ہوتی۔

ابن مدینی کہتے ہیں نزول نحوست ہے.....اور یہ اس صورت میں ہے جب اسناد قوت میں مساوی ہوں۔

ب.....جب نازل کی اسناد کسی فائدہ کے ساتھ ممتاز ہوں تو نزول افضل ہے۔

## اس میں مشہور ترین تصنیفات:

اسانید عالیہ اور نازلہ کے بارے میں عمومی انداز میں کوئی خاص تصنیف نہیں پائی جاتی۔ لیکن علماء نے چند منفرد اجزاء لکھے ہیں جن کو "ثلاثیات" کا نام دیا گیا۔ اس سے ان کی مراد وہ احادیث ہیں کہ مصنف اور رسول اکرم ﷺ کے درمیان صرف تین شخص ہوں اس میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ علماء نے عالی اسانید کا اہتمام کیا ہے ان ثلاثیات میں سے چند یہ ہیں:

الف......"ثلاثیاتِ بخاری"...... یہ حافظ ابن حجر کی تصنیف ہے۔

ب......"ثلاثیات احمد بن حنبل"...... یہ سفارینی کی کتاب ہے۔

## مسلسل:

تعریف...... الف......لغوی اعتبار سے یہ "سلسلۃ" سے اسم مفعول ہے اور اس کا مطلب کسی چیز کا کسی دوسری چیز سے ملنا ہے اسی سے سلسلۃ الحدید (زنجیر) ہے گویا اس کا یہ نام اس لئے رکھا گیا کہ یہ زنجیر کے مشابہ ہے، کیونکہ اس میں اتصال بھی ہے اور اجزاء ایک دوسرے کی شکل بھی ہیں۔

ب......اصطلاحًا......اسناد کے رجال کا ایک صفت یا حالت پر تسلسل سے ہونا اور یہ تسلسل کبھی راویوں کے لئے ہوتا ہے اور کبھی روایت کے لئے۔

## تعریف کی تشریح:

مسلسل اسے کہتے ہیں جس کے راوی درج ذیل کے مطابق تسلسل اختیار کریں اور باہم ساتھی بنیں۔

الف......وہ ایک صفت میں شریک ہوں۔

ب......وہ ایک حالت میں بھی مشترک ہوں۔

ج......یا روایت کی ایک صفت میں ان کا اشتراک ہو۔

## اقسام:

تعریف کی اس وضاحت سے واضح ہوتا ہے کہ مسلسل کی انواع تین ہیں۔

۱......راویوں کے احوال میں مسلسل۔۲......راویوں کی صفات میں مسلسل۔

Marfat.com

۳......روایت کی صفات میں مسلسل۔

الف......راویوں کے احوال میں مسلسل۔

راویوں کے احوال، اقوال یا افعال ہوں گے یا اقوال وافعال دونوں اکٹھے ہوں گے۔

۱......راویوں کے قولی احوال کے ساتھ مسلسل: جیسے حضرت معاذ بن جبل رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے کہ نبی اکرم ﷺ نے ان سے فرمایا: (اے معاذ! میں تم سے محبت کرتا ہوں ہر نماز کے بعد یہ دعا کیا کرو) "اللھم اعنی علی ذکرک وشکرک وحسن عبادتک" (۱)۔ (یا اللہ! اپنے ذکر، اپنے شکر اور اچھی طرح اپنی عبادت پر میری مدد فرما۔) اس میں اس طرح تسلسل ہے کہ ہر راوی نے یہ الفاظ اپنے شاگرد سے کہے "وانا احبك فقل" میں بھی تم سے محبت کرتا ہوں پس تم کہو (یعنی یہ دعا مانگو)

۲......راویوں کے فعلی احوال کے اعتبار سے مسلسل۔

جیسے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے فرماتے ہیں رسول اکرم ﷺ نے میری انگلیوں میں اپنی انگلیاں ڈالتے ہوئے فرمایا: خلق اللّٰہ الارض یوم السبت۔ (۲) اللہ تعالیٰ نے زمین کو ہفتہ کے دن پیدا فرمایا۔

اس حدیث کے ہر راوی نے اپنے شاگرد کی انگلیوں میں انگلیاں ڈالیں اس اعتبار سے یہ مسلسل ہے۔

۳......راویوں کے قولی اور فعلی دونوں احوال کے ساتھ مسلسل جیسے حضرت انس رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے فرماتے ہیں رسول اکرم ﷺ نے فرمایا:

(۱)......سنن ابی داؤد کتاب الوتر باب فی الاستغفار رقم الحدیث ۱۵۲۲ دار ارقم بیروت ص: ۳۵۵

(۲)......معرفۃ علوم الحدیث ص: ۳۳

Marfat.com

لا یجد العبد حلاوۃ الایمان حتی یؤمن بالقدر خیرہ وشرہ حلوہ ومرہ۔(۱)

ترجمہ: بندہ اس وقت تک ایمان کی مٹھاس نہیں پاتا جب تک تقدیر پر یعنی اس کے خیر، شر، مٹھاس اور کڑواہٹ پر ایمان نہ لائے۔

نبی اکرم ﷺ نے اپنی داڑھی مبارک کو مٹھی میں لیا اور فرمایا" امنت بالقدر خیرہ وشرہ حلوہ ومرہ"۔

تو جس راوی نے اسے روایت کیا اس نے اپنی داڑھی کو پکڑنے اور اس قول امنت بالقدر خیرہ وشرہ حلوہ ومرہ" کے ساتھ تسلسل اختیار کیا۔ (تو اس میں قول اور فعل دونوں مسلسل ہیں۔)

ب......راویوں کی صفات کے ساتھ مسلسل:

راویوں کی صفات قولی ہوں گی یا فعلی۔

ا......راویوں کی قولی صفات کے ساتھ مسلسل۔

جیسے سورۃ الصفت کی قرأت کے ساتھ مسلسل حدیث اس میں ہر راوی کا اس قول کے ساتھ تسلسل ہے" فقرا ھا فلان ھکذا" کہ فلاں نے اسے اس طرح پڑھا۔

اس کے ساتھ ساتھ عراقی نے یہ بھی کہا کہ راویوں کی قولی صفات اور قولی احوال ایک دوسرے کے قریب اور ہم مثل ہیں۔

۲......راویوں کی صفات فعلیہ کے ساتھ مسلسل:

جیسے راویوں کے ناموں کا متفق ہونا جس طرح مسلسل محمد بیان ہو۔

(۱)......معرفۃ علوم الحدیث ص:۳۰

Marfat.com

یا ان کی صفات متفق ہوں جس طرح فقہاء یا حفاظ کے ساتھ مسلسل ہو یا ان کی نسبتیں ایک جیسی ہوں جیسے دمشقیین یا مصریین۔

ج......روایت کی صفات کے ساتھ مسلسل:

روایت کی صفات یا تو ادائیگی کے صیغوں سے تعلق رکھتی ہیں یا روایت کے زمانے یا جگہ کے ساتھ۔

ا......ادائیگی کے صیغوں کے ساتھ مسلسل۔

جیسے ہر راوی تسلسل سے کہے "سمعت" یا "اخبرنا"۔

۲......روایت کے زمانے کے ساتھ مسلسل:

جس طرح ایک حدیث کی روایت کا تسلسل عید کے دن کے ساتھ ہو۔

۳......مکان روایت کے ساتھ مسلسل:

جس طرح وہ حدیث مسلسل جس میں ملتزم کے پاس قبولیت دعا کا ذکر ہے۔(۱)

## ان میں سے افضل:

ان میں سے افضل وہ ہے جو سماع میں اتصال پر دلالت کرے اور اس میں تدلیس نہ ہو۔

## فوائد:

راویوں کی طرف ضبط کی زیادتی پر مشتمل ہونا۔

## کیا تمام سند میں تسلسل کا پایا جانا ضروری ہے؟

یہ شرط نہیں درمیان یا آخر سے تسلسل ختم بھی ہو سکتا ہے، لیکن اس میں وہ یوں

(۱)......کتاب الاذکار للنووی کتاب اذکار الحج فصل فی اذکار الطواف مکتبہ دار البیان ص: ۲۵۲

Marfat.com

کہتے ہیں کہ یہ فلاں تک مسلسل ہے۔

**تسلسل اور صحت میں کوئی ربط نہیں:**

بہت کم ایسا ہوتا ہے کہ مسلسل حدیث تسلسل میں خلل یا ضعف سے خالی ہو اگرچہ حدیث کی اصل تسلسل کے علاوہ کسی دوسرے طریق (سند) کے ساتھ صحیح ہو۔

**اس میں مشہور ترین تصانیف:**

الف......المسلسلات الکبرای ...... یہ امام سیوطی رحمہ اللہ کی کتاب ہے۔ جو پچاسی احادیث پر مشتمل ہے۔

ب......"المناھل السلسلة فی الاحادیث المسلسلة"...... یہ محمد عبدالباقی ایوبی کی تصنیف ہے جو دو سو بارہ احادیث پر مشتمل ہے۔

## اکابر کی اصاغر سے روایت:

تعریف......الف...... لغوی اعتبار سے اکابر، اکبر کی اور اصاغر، اصغر کی جمع ہے اور معنی یہ ہے کہ بڑے، چھوٹوں سے روایت کریں۔

ب......اصطلاحاً...... کسی شخص کا اس آدمی سے روایت کرنا جو عمر اور طبقہ یا علم وحفظ میں اس سے چھوٹا یا کم درجہ میں ہو۔

**تعریف کی وضاحت:**

یعنی کوئی راوی ایسے شخص سے روایت کرے جو اس سے عمر میں چھوٹا اور طبقہ میں نچلے درجہ میں ہو یا طبقہ میں اس کے قریب ہو۔ جس طرح صحابہ کرام کا تابعین سے روایت کرنا وغیرہ وغیرہ یا اس سے روایت کرے جو علم اور حفظ میں اس سے کم ہو جیسے

Marfat.com

کوئی عالم اور حافظ کسی شیخ سے روایت کرے اگرچہ وہ شیخ عمر میں اس سے بڑا ہو (لیکن علم میں کم درجہ میں ہو)

اس کے ساتھ ساتھ یہ بات بھی یاد رہے کہ صرف عمر میں بڑا ہونا یا طبقہ کے اعتبار سے مقدم ہونا یعنی جس سے روایت کررہا ہے علم میں اس کے برابر نہ ہونا اس بات کے لئے کافی نہیں کہ اسے اکابر کی اصاغر سے روایت کہا جاسکے۔

آنے والی مثالوں سے اس کی وضاحت ہوجائے گی۔

## اقسام اور مثالیں:

روایت الاکابر عن الاصاغر کو مندرجہ ذیل تین قسموں میں تقسیم کیا جاسکتا ہے۔

الف...... راوی، مروی عنہ سے عمر میں بڑا اور طبقہ میں مقدم ہو (یعنی علم اور حفظ میں بھی مقدم ہو)

ب...... راوی، مروی عنہ سے قدر ومنزلت میں بڑا ہو، عمر میں نہیں، جس طرح حافظ عالم، ایسے شیخ کبیر سے روایت کرے جو غیر حافظ ہے۔ جیسے حضرت امام مالک کی حضرت عبداللہ بن دینار سے روایت۔

نوٹ: امام مالک، امام حافظ ہیں اور عبداللہ بن دینار محض راوی اور شیخ ہیں اگرچہ امام مالک سے عمر میں بڑے نہیں۔

ج...... راوی، مروی عنہ سے عمر اور قدر دونوں میں بڑا ہو یعنی زیادہ عمر اور زیادہ علم والا ہو۔ جیسے امام برقانی کی خطیب بغدادی سے روایت۔

Marfat.com

نوٹ: امام برقانی، عمر میں خطیب بغدادی سے بڑے ہیں اور قدر و منزلت میں بھی ان سے عظیم ہیں کیونکہ خطیب بغدادی کے شیخ اور معلم ہیں۔

## اکابر کی اصاغر سے روایت کی چند صورتیں:

الف...... صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی تابعین سے روایت۔ جیسے عبادلہ(۱) (حضرت عبداللہ بن عمر، عبداللہ بن عباس، عبداللہ بن زبیر اور عبداللہ بن عمرو بن عاص رضی اللہ عنہم) اوران کے علاوہ کی حضرت کعب احبار رضی اللہ عنہ سے روایت۔

ب...... تابعی کی اپنے تابعی (تبع تابعی) سے روایت، جیسے حضرت یحییٰ بن سعید انصاری کی حضرت مالک (رحمہما اللہ) سے روایت۔

## اس علم کے فوائد:(۲)

الف...... تاکہ یہ وہم نہ ہو کہ مروی عنہ، راوی سے افضل اور بڑا ہے کیونکہ اکثر ایسا ہوتا ہے۔

ب...... یہ گمان نہ کیا جائے کہ سند میں انقلاب ہے کیونکہ اصاغر کی اکابر سے روایت کا طریقہ جاری ہے۔

## اس میں مشہور ترین تصنیفات:

ا...... یہ کتاب ہے "ماروا الکبار من الصغار والآباء عن الأبناء"
یہ کتاب ابو یعقوب اسحٰق بن ابراہیم وراق متوفی ۴۰۳ھ کی ہے۔

---

(۱)...... وہ صحابی جن کے نام عبداللہ ہیں عبادلہ کہلاتے ہیں۔
(۲)...... یعنی یہ بات بتانا کہ اکابر نے اصاغر سے روایت کی اس کے یہ دو فائدے ہیں کیونکہ عام طور پر مفضول، افضل سے چھوٹا بڑے سے روایت کرتا ہے تو یہ گمان نہ ہو کہ ہر جگہ راوی سے مروی عنہ افضل یا بڑا ہوگا ۱۲ ہزاروی

Marfat.com

## آباء کی ابناء سے روایت:

تعریف..... سند میں ایسا باپ پایا جائے جو اپنے بیٹے سے روایت کرتا ہے۔

### مثال:

وہ حدیث جسے حضرت عباس بن عبدالمطلب (رضی اللہ عنہما) اپنے صاحبزادے حضرت فضل رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اکرم ﷺ نے مزدلفہ میں دو نمازوں کو جمع کیا۔(۱)

### اس کے فوائد:

اس علم کا فائدہ یہ ہے کہ یہ خیال نہ کیا جائے کہ سند میں تبدیلی آ گئی ہے کیونکہ اصل یہ ہے کہ بیٹا اپنے باپ سے روایت کرتا ہے یہ نوع اور اس پہلی نوع (اکابر کی اصاغر سے) علماء کی تواضع پر اور اس بات پر دلالت کرتی ہے کہ وہ لوگ علم حاصل کرتے تھے وہ شخص جس سے علم حاصل کر رہے ہیں کوئی بھی ہو اگرچہ وہ قدر و منزلت اور عمر میں ان سے چھوٹا ہو۔

### اس میں مشہور ترین تصنیفات:

خطیب بغدادی کی کتاب "روایۃ الآباء عن الابناء" ہے۔

(نوٹ..... جس کتاب کا پہلے ذکر ہو چکا ہے اس میں اکابر کی اصاغر سے اور آباء کی ابناء سے روایات ہیں ۱۲ ہزاروی)

---

(۱)..... اس روایت کی وجہ یہ ہے کہ حضرت فضل بن عباس اس موقع پر حضور ﷺ کے ساتھ تھے۔ ۱۲ ہزاروی

Marfat.com

## ابناء کی آباء سے روایت:

تعریف..... سند حدیث میں ایسا بیٹا پایا جائے جو فقط اپنے باپ یا اپنے باپ سے اور وہ اسکے دادا سے روایت کرتا ہے۔اس میں اہم نوع وہ ہے جس میں باپ یا دادا کا نام ذکر نہ کیا جائے کیونکہ اس صورت میں اس کے نام کی پہچان کے لئے بحث کی ضرورت پڑتی ہے۔

## اقسام:

اس کی دو قسمیں ہیں۔

ا......راوی فقط اپنے باپ سے روایت کرے یعنی دادا سے روایت نہ ہو اور یہ بہت زیادہ ہیں اس کی مثال ابوالعشراء کی اپنے باپ سے روایت ہے۔(ان کے اور ان کے والد کے نام میں مختلف اقوال ہیں زیادہ مشہور اسامہ بن مالک ہے)

ب......راوی اپنے باب سے اور وہ اپنے دادا یا اس سے اوپر والے (دادا) سے روایت کرے۔

## مثال:

حضرت عمرو بن شعیب اپنے والد سے اور وہ اپنے دادا سے روایت کرتے ہیں۔

نوٹ:(تفصیل یہ ہے) عمرو بن شعیب بن محمد بن عبداللہ بن عمرو بن عاص تو عمرو کے دادا محمد ہیں لیکن علماء نے غور وفکر اور تلاش کے بعد یوں بیان کرتے ہیں کہ (عمرو بن شعیب عن ابیہ عن جدہ) میں جدہ کی ضمیر شعیب کی طرف لوٹتی ہے تو مراد عبداللہ بن عمرو صحابی ہیں گویا عمرو اپنے والد شعیب سے اور شعیب اپنے دادا عبداللہ بن عمرو بن عاص سے روایت کرتے ہیں جو مشہور صحابی ہیں۔

Marfat.com

## اس علم کے فوائد:

الف۔ جب باپ یا دادا کا نام صراحتاً ذکر نہ کیا گیا ہو تو اس کی معرفت کے لئے بحث کرنا۔

ب...... ''جد'' (دادا) سے کون مراد ہے وہ ابن کا جد ہے یا اب کا؟ اس کی وضاحت کرنا۔

## اس میں مشہور ترین تصنیفات:

ا...... روایة الابناء عن آبائھم ...... ابونصر عبیداللہ بن سعید الوائلی کی کتاب ہے

ب...... "جزء من روی عن ابیہ عن جدہ" ابن ابی خیثمہ کی تصنیف ہے۔

ج...... "الوشی المعلم فی من روی عن ابیہ عن جدہ عن النبی ﷺ" یہ حافظ العلائی کی کتاب ہے۔

## المدبج وروایة الاقران:

اقـران کـی تـعـریـف...... الف...... لغت میں اقران، قرین کی جمع ہے یعنی مصاحب (ساتھی) قاموس میں اسی طرح ہے۔

ب...... اصطلاحاً...... عمر اور سند میں ایک دوسرے کے قریب حضرات کو اقران کہا جاتا ہے۔

## روایة الاقران کی تعریف:

یعنی ایک قرین دوسرے سے روایت کرے۔ جیسے حضرت سلیمان تیمی کی حضرت مسعر بن کدام (رضی اللہ عنہما) سے روایت، یہ دونوں قرین ہیں لیکن حضرت مسعر کی حضرت تیمی سے روایت کا ہمیں علم نہیں۔

Marfat.com

## مدبّج کی تعریف:

لغوی اعتبار سے یہ تدبیج کا اسم مفعول ہے یعنی تزیین (زینت دینا) تدبیج "دیباجتی الوجه" سے مشتق ہے یعنی دو رُخسار...... گویا مدبّج کی وجہ تسمیہ یہ ہے کہ راوی، مروی عنہ کے مساوی ہوتا ہے جس طرح دونوں رُخسار ایک جیسے ہوتے ہیں۔

ب...... اصطلاحًا...... دو قرینوں میں سے ہر ایک دوسرے سے روایت کرے۔

## مدبّج کی مثالیں:

الف...... صحابہ کرام میں ...... حضرت عائشہ کی حضرت ابو ہریرہ سے یا حضرت ابو ہریرہ کی حضرت عائشہ (رضی اللہ عنہما) سے روایت۔

ب...... تابعین میں ...... حضرت زہری کی حضرت عمر بن عبدالعزیز سے روایت اور حضرت عمر بن عبدالعزیز کی حضرت زہری سے روایت (رحمہما اللہ)

ج...... اتباع تابعین میں ...... حضرت مالک کی حضرت اوزاعی سے روایت اور حضرت اوزاعی کی حضرت مالک سے روایت۔

## اس علم کے فوائد:

الف...... تاکہ سند میں اضافہ کا گمان نہ کیا جائے۔(۱)

ب...... تاکہ یہ خیال نہ کیا جائے کہ "عن فلان" "وفلان" سے بدلا

---

(۱)...... کیونکہ اصل یہ ہے کہ شاگرد اپنے شیخ سے روایت کرتا ہے جب اپنے قرین (ساتھی) سے روایت کرے گا تو جس نے یہ ناسخ نہیں پڑھی تو وہ یہ خیال کرے گا کہ قرین مروی عنہ کا ذکر نقل کرنے والے کی طرف سے اضافہ ہے۔

(۲)...... یعنی سامع یا قاری کو یہ وہم نہ ہو کہ اصل میں "وفلان" تھا اور غلطی سے عن فلان ہو گیا جب اسے علم ہوگا کہ قرین ایک دوسرے سے روایت کرتے ہیں تو یہ وہم نہ ہوگا۔

Marfat.com

ہوا ہے۔(۲)

اس میں مشہور ترین تصنیفات:

الف...... المدبج ...... امام دار قطنی کی تصنیف۔

ب...... روایۃ الاقران...... ابو شیخ اصبہانی کی کتاب ہے۔

سابق ولاحق:

تعریف...... الف...... لغوی اعتبار سے سابق ''السبق'' سے اسم فاعل ہے یعنی آگے ہونے والا اور لاحق ''اللحاق'' سے اسم فاعل ہے یعنی پیچھے رہنے والا اور اس سے مراد وہ راوی ہے جس کی وفات پہلے ہوئی اور وہ راوی جس کی وفات بعد میں ہوتی۔

ب...... اصطلاحًا...... ایک شیخ سے روایت میں دو راوی شریک ہوں لیکن ان کی وفات میں دوری (اور وقفہ) ہو۔

مثال:

الف...... حضرت محمد بن اسحٰق السراج رحمہ اللہ (جن کی ولادت ۲۱۶ھ اور وفات ۳۱۳ھ میں ہوئی اس وقت آپ کی عمر ۹۷ سال تھی) آپ سے روایت میں امام بخاری اور حضرت خفاف (رحمہما اللہ) شریک ہیں اور دونوں کی وفات میں ایک سو سینتیس (۱۳۷) سال یا اس سے بھی زیادہ وقفہ ہے۔ امام بخاری کی وفات ۲۵۶ھ میں ہے اور ابوالحسین احمد بن محمد الخفاف نیشاپوری ۳۹۳ھ میں اور ایک قول کے مطابق ۳۹۴ھ اور ایک قول کے مطابق ۳۹۰ھ میں فوت ہوئے۔

ب......حضرت امام مالک رحمہ اللہ سے روایت میں حضرت زہری اور احمد بن اسماعیل السہمی (رحمہما اللہ) شریک ہیں اور دونوں کی وفات میں ایک سو پینتیس (۱۳۵) سال کا وقفہ ہے کیونکہ امام زہری کی سن وفات ۱۲۴ھ اور حضرت سہمی ۲۵۹ھ میں فوت ہوئے۔

اس کی وضاحت اس طرح ہے کہ حضرت زہری عمر میں حضرت مالک سے بڑے تھے۔ کیونکہ آپ تابعین میں سے ہیں اور حضرت مالک تبع تابعین میں سے ہیں پس حضرت زہری کی حضرت مالک سے روایت اکابر کی اصاغر سے روایت کے باب میں معتبر ہے جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے۔

اور حضرت امام احمد بن اسماعیل سہمی عمر میں حضرت مالک سے چھوٹے ہیں اس کے باوجود کہ حضرت سہمی کو طویل عمر ملی اس طرح کہ آپ نے تقریباً سو سال کی عمر پائی اور اس طرح ان کی وفات اور حضرت زہری کی وفات میں بہت بڑا وقفہ ہے۔

اس سے بھی واضح طریقے پر اس کی تعبیر اس طرح کی جا سکتی ہے کہ سابق راوی اس مروی عنہ کا شیخ ہوتا ہے اور راوی لاحق اس کا شاگرد ہوتا ہے اور یہ شاگرد زمانہ دراز تک زندہ رہتا ہے۔

## اس علم کے فوائد:

اس (یعنی سابق ولاحق) کی تقسیم کے کچھ فوائد ہیں۔

الف......دلوں میں سند کی بلندی کی حلاوت و مٹھاس جاگزیں ہو جاتی ہے۔

ب......نیز یہ گمان نہ کیا جائے کہ لاحق کی سند میں انقطاع ہے (کیونکہ دونوں

Marfat.com

میں کافی وقفہ ہوتا ہے)

اس میں مشہورترین تصنیفات:

اس موضوع پرایک کتاب "السابق واللاحق" ہے جوخطیب بغدادی کی تصنیف ہے۔

## دوسری فصل......راویوں کی پہچان

۱......معرفت صحابہ

۲......معرفت تابعین

۳......بھائیوں اور بہنوں کی پہچان

۴......متفق اور مفترق

۵......مؤتلف (ملے ہوئے) اور مختلف

۶......متشابہ

۷......مہمل

۸......مبہمات کی معرفت

۹......وحدان کی معرفت

۱۰......ان کی معرفت جن کا ذکر مختلف ناموں اور مختلف صفات کے ساتھ کیا گیا۔

۱۱......ناموں، کنیتوں اور القاب میں سے مفردات کی پہچان۔

۱۲......ان راویوں کے ناموں کی پہچان جو اپنی کنیتوں کے ساتھ مشہور ہوئے۔

۱۳......القاب کی معرفت

۱۴......ان راویوں کی پہچان جو اپنے باپ کے غیر کی طرف منسوب ہیں۔

۱۵......اس نسب کی معرفت جو اپنے ظاہر کے خلاف ہے۔

۱۶......راویوں کی تاریخ کی معرفت۔

۱۷......ثقہ راویوں میں سے جن میں اختلاط ہے ان کی پہچان۔

۱۸......علماء اور راویوں کے طبقات کی پہچان۔

۱۹......راویوں اور علماء میں موالی (غلاموں) کی پہچان۔

۲۰......ثقہ اور ضعیف راویوں کی پہچان۔

۲۱......راویوں کے وطن اور شہروں کی پہچان۔

## معرفت صحابہ......(رضوان اللہ علیہم اجمعین)

### تعریف صحابی:

الف......لغوی اعتبار سے "الصحابہ" مصدر ہے جو الصحبۃ کے معنی میں ہے۔ اسی سے الصحابی اور الصاحب کا لفظ بنا ہے۔ اس کی جمع اصحاب اور صحب آتی ہے اور الصحابہ کا اکثر استعمال "اصحاب" کے معنی میں ہوتا ہے۔

ب......اصطلاحاً......جس شخص نے حالتِ اسلام میں نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے ملاقات کی اور حالت اسلام میں ہی وفات پائی اگرچہ درمیان میں ارتداد آ گیا (معاذ اللہ) وہ صحابی ہے۔ زیادہ صحیح قول یہی ہے۔

### معرفت صحابہ کی اہمیت:

معرفت صحابہ بہت بڑا علم ہے اور اس کا فائدہ بھی عظیم ہے اس کے فوائد میں سے

Marfat.com

ایک فائدہ یہ ہے کہ متصل اور مرسل (حدیث) میں امتیاز ہو جاتا ہے۔

## صحبتِ صحابی کی پہچان کس بات کے ساتھ ہوتی ہے؟

صحبت کی پہچان درج ذیل پانچ امور میں سے کسی ایک کے ساتھ ہوتی ہے۔

الف......تواتر......جس طرح حضرت صدیق اکبر، عمر بن خطاب اور باقی عشرہ مبشرہ (جن کو جنت کی خوشخبری دی گئی رضی اللہ عنہم)

ب......شہرت......جس طرح ضمام بن ثعلبہ اور عکاشہ بن محصن (رضی اللہ عنہما)

ج......کسی صحابی کا خبر دینا (یعنی کسی دوسرے صحابی کے بارے میں)

د......کسی ثقہ تابعی کا خبر دینا۔

ھ......خود اس صحابی کا اپنے بارے میں خبر دینا اگر وہ عادل ہو اور اس کا دعویٰ ممکن ہو۔(۱)

## تمام صحابہ کرام کی تعدیل:

تمام صحابہ کرام عدول (بہت عادل ہیں) چاہے انہوں نے فتنوں کا زمانہ پایا یا نہیں اس پر قابل اعتماد لوگوں کا اجماع ہے۔ اور ان کی عدالت کا معنی یہ ہے کہ انہوں نے روایت میں قصداً جھوٹ بولنے سے اجتناب کیا اور اس سلسلے میں انحراف نہیں کیا یعنی کوئی ایسا کام نہیں کیا جس کی وجہ سے ان کی روایت قبول نہ ہو۔

اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ان سب کی روایات مقبول ہیں بغیر اس کے کہ ان کی عدالت

---

۱......وہ اس طرح کہ حضور ﷺ کے وصال کے بعد سو سال گزرنے سے پہلے خبر دے اگر وہ بعد میں خبر دے (میں صحابی ہوں) تو وہ قبول نہیں ہوگی جیسے رتن ہندی نے ہجرت کے چھ سو سال بعد دعویٰ کیا حقیقت میں وہ بوڑھا دجال تھا جس طرح امام ذہبی نے المیزان ۲؍۴۵ پر ذکر کیا۔

Marfat.com

میں بحث کرنے کا تکلف کیا جائے۔ اور ان میں سے جو فتنوں میں مبتلا ہوئے ان کے معاملے کو اجتہاد پر محمول کیا جائے گا جس پر ان سب کو اجر ملے گا کیونکہ ان کے بارے میں حسن ظن رکھا جائے گا کیونکہ صحابہ کرام حاملین شریعت تھے اور یہ بہترین زمانے (خیر القرون) سے تعلق رکھتے تھے۔

## زیادہ احادیث والے صحابی:

چھ صحابہ کرام سب سے زیادہ احادیث روایت کرنے والے ہیں جو درج ذیل ہیں۔

الف...... حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ انہوں نے پانچ ہزار تین سو چوہتر (۵۳۷۴) احادیث روایت کیں اور ان سے تین سو سے زائد راویوں نے احادیث روایت کی ہیں۔

ب...... حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما...... آپ نے دو ہزار چھ سو تیس (۲۶۳۰) احادیث روایت کی ہیں۔

ج...... حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ...... آپ نے دو ہزار دو صد چھیاسی (۲۲۸۶) احادیث روایت کی ہیں۔

د...... ام المؤمنین حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا...... آپ نے دو ہزار دو سو دس (۲۲۱۰) احادیث روایت کی ہیں۔

ہ...... حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما...... آپ سے ایک ہزار چھ سو ساٹھ (۱۶۶۰) احادیث مروی ہیں۔

و...... حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہ...... آپ سے ایک ہزار پانچ سو چالیس

Marfat.com

(۱۵۴۰)احادیث روایت کی گئی ہیں۔

جن صحابہ کرام کے فتاویٰ زیادہ ہیں:

سب سے زیادہ فتاویٰ جس صحابی سے مروی ہیں وہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما ہیں پھر بڑے بڑے علماء کرام صحابہ سے مروی ہیں اور وہ چھ ہیں جس طرح حضرت سروق رحمہ اللہ نے فرمایا:

صحابہ کرام کا علم چھ صحابہ کرام پر ختم ہوتا ہے۔حضرت عمر فاروق،حضرت علی بن ابی طالب،حضرت ابی بن کعب،حضرت زید بن ثابت،حضرت ابودرداء،حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہم۔پھران چھ کا علم حضرت علی المرتضیٰ،اور حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہم تک پہنچتا ہے۔

عبادلہ کون ہیں؟

اصل میں عبادلہ سے مراد وہ صحابہ کرام ہیں جنکا نام عبداللہ ہے اور یہ تقریبا تین سو صحابی ہیں لیکن یہاں ان سے چار صحابہ کرام مراد ہیں ان میں سے ہرایک کا نام عبداللہ ہے۔

۱......عبداللہ بن عمر

۲......عبداللہ بن عباس

۳......عبداللہ بن زبیر

۴......عبداللہ بن عمرو بن عاص (رضی الہ عنہم)

ان کی خصوصیت یہ ہے کہ یہ اُن علماء صحابہ کرام میں سے ہیں جن کی وفات تاخیر

Marfat.com

سے ہوئی حتی کہ لوگ ان کے علم کے محتاج ہوئے پس یہ ان کی فضیلت اور شہرت کا سبب ہے جب یہ کسی فتویٰ پر متفق ہو جائیں تو کہا جاتا ہے یہ عبادلہ (رضی اللہ عنہم) کا قول ہے۔

**صحابہ کرام کی تعداد:**

صحابہ کرام کی تعداد کے حوالے سے کوئی دقیق (گہرا) شمار نہیں ہے لیکن اہل علم کے کچھ اقوال ہیں جن سے استفادہ کیا جاتا ہے کہ ان کی تعداد ایک لاکھ سے زیادہ ہے ان اقوال میں سے مشہور ترین قول ابوزرعہ رازی کا قول ہے اور رسول اکرم ﷺ کی وفات کے وقت ایک لاکھ چودہ ہزار ایسے صحابہ کرام موجود تھے جنہوں نے رسول اکرم ﷺ سے احادیث روایت کرنے اور سننے کا فیض حاصل کیا۔(۱)

**ان کے طبقات کی تعداد:**

صحابہ کرام کے طبقات کی تعداد میں اختلاف ہے بعض حضرات نے سبقت اسلام یا سبقت ہجرت یا بڑے بڑے معرکوں میں شرکت کے اعتبار سے تقسیم کی ہے اور بعض نے کسی اور اعتبار سے تقسیم فرمائی لہذا ہر ایک نے اپنے اپنے اجتہاد سے طبقات بنائے ہیں۔

۱......ابن سعد نے پانچ طبقات میں تقسیم کیا۔

۲......امام حاکم نے بارہ طبقات بنائے۔

**صحابہ کرام میں افضل کون؟**

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم میں مطلقاً افضل حضرت ابوبکر صدیق پھر حضرت عمر

(۱)......تدریب مع التقریب، ۲/۲۲۰

Marfat.com

فاروق (رضی اللہ عنہما) ہیں اور اس پر اہل سنت کا اجماع ہے اور جمہور اہل سنت کے نزدیک ان کے بعد حضرت عثمان غنی اور پھر حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہما ہیں۔

اس کے بعد تمام عشرہ مبشرہ پھر اہل بدر پھر اہل اُحد اور پھر بیت الرضوان والے صحابہ کرام (رضی اللہ عنہم) ہیں۔

**سب سے پہلے اسلام لانے والے:**

الف...... آزاد مردوں میں حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ

ب...... بچوں میں حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ

ج...... خواتین میں ام المؤمنین حضرت خدیجۃ الکبریٰ رضی اللہ عنہا

د...... آزاد کردہ غلاموں میں حضرت بلال بن رباح رضی اللہ عنہ (۱)

**سب سے آخر میں فوت ہونے والے صحابی:**

سب سے آخر میں فوت ہونے والے صحابی حضرت ابوالطفیل بن واثلہ لیثی رضی اللہ عنہ ہیں آپ ۱۰۰ھ میں مکہ مکرمہ میں فوت ہوئے بعض نے کہا کہ اس کے بعد فوت ہوئے پھر ان میں سے سب سے آخر میں حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ ترانوے (۹۳) سال کی عمر میں بصرہ میں فوت ہوئے۔

**صحابہ کرام کے بارے میں مشہور ترین کتب:**

الف...... الاصابہ فی تمیز الصحابہ...... یہ حافظ ابن حجر عسقلانی رحمہ اللہ کی کتاب ہے۔

---

(۱)...... کہا جاتا ہے کہ غلاموں میں سب سے پہلے حضرت زید بن حارثہ رضی اللہ عنہ ایمان لائے۔ ۱۲ ہزاروی

Marfat.com

ب......اُسد الغابة فی معرفة الصحابة......علی بن محمد جزری جو ابن اثیر کے نام سے مشہور ہیں، کی کتاب ہے۔

ج......الاستیعاب فی اسماء الاصحاب......یہ ابن عبدالبر کی تصنیف ہے۔

## تابعین کی معرفت:

**تابعی کی تعریف......** الف......لغت کے اعتبار سے تابعون، تابعی یا تابع کی جمع ہے اور تابع "تَبِعَهٗ" سے اسم فاعل ہے یعنی اس کے پیچھے چلا۔

ب......اصطلاحاً......جس شخص نے حالت اسلام میں کسی صحابی سے ملاقات کی اور اسلام پر ہی فوت ہوا وہ تابعی ہے بعض نے کہا تابعی وہ ہے جس نے کسی صحابی کی صحبت اختیار کی۔

### اس پہچان کے فوائد:

اس کا فائدہ یہ ہے کہ حدیث مرسل اور متصل میں امتیاز ہو جاتا ہے۔

### طبقات تابعین:

ان کے طبقات کی تعداد میں اختلاف ہے ہر عالم نے اپنی پسند کے مطابق تقسیم کی ہے۔

الف......امام مسلم نے ان کو تین طبقات میں تقسیم کیا ہے۔

ب......ابن سعد نے چار طبقات میں تقسیم کیا۔

ج......امام حاکم نے پندرہ طبقات میں تقسیم کیا سب سے پہلا طبقہ وہ ہے جس نے عشرہ مبشرہ کو پایا۔

Marfat.com

## مُخَضرَمون:

مخضرمون کا واحد مُخَضرَم ہے اور مُخَضرَم وہ شخص ہے جس نے دور جاہلیت اور رسول اکرم ﷺ کے زمانہ دونوں کو پایا اور اسلام بھی قبول کیا لیکن آپ کی زیارت نہیں کی اور صحیح قول کے مطابق مخضرمون تابعین میں سے ہیں۔

مخضرمین کی تعداد تقریباً بیس ہے جس طرح امام مسلم نے ان کو شمار کیا صحیح یہ ہے کہ ان کی تعداد اس سے زیادہ ہے ان میں حضرت ابوعثمان النہدی اور اسود بن یزید نخعی (رضی اللہ عنہما) شامل ہیں۔

## سات فقہاء:

بڑے بڑے تابعین میں سے سات فقہاء ہیں اور یہ تابعین علماء میں اکابر ہیں اور ان سب کا تعلق مدینہ طیبہ سے ہے۔ان کے اسماء گرامی یہ ہیں۔

۱......حضرت سعید بن مسیب۔۲......قاسم بن محمد۔۳......عروہ بن زبیر۔

۴......خارجہ بن زید۔۵......ابوسلمہ بن عبدالرحمٰن۔۶......عبیداللہ بن عبداللہ بن عتبہ۔۷......اور سلیمان بن یسار (رحمہم اللہ) (۱)

## تابعین میں سے افضل:

ان میں سے افضل کے بارے میں کئی اقوال ہیں اور مشہور یہ ہے کہ ان میں سے افضل حضرت سعید بن مسیب رحمہ اللہ ہیں ......ابوعبداللہ محمد بن خفیف شیرازی نے فرمایا:

---

(۱)......حضرت ابن مبارک رحمہ اللہ نے ابوسلمہ کی جگہ سالم بن عبداللہ بن عمر کا ذکر کیا اور ابوالزناد نے ان دونوں (سالم اور ابوسلمہ) کی جگہ ابوبکر بن عبدالرحمٰن کو رکھا ہے (حاشیہ کتاب ہذا)

Marfat.com

الف......اہل مدینہ کہتے ہیں کہ سب سے افضل تابعی حضرت سعید بن مسیب رحمہ اللہ ہیں۔

ب......اہل کوفہ کہتے ہیں کہ حضرت اویس قرنی رحمہ اللہ ہیں۔

ج......اہل بصرہ کہتے ہیں کہ حضرت حسن بصری رحمہ اللہ ہیں۔

## تابعیات میں سے افضل:

حضرت ابوبکر بن ابی داؤد فرماتے ہیں:

تابعیات کی سردار حضرت حفصہ بنت سیرین اور عمرہ بنت عبدالرحمٰن ہیں اور ان دونوں کے بعد حضرت ام درداء ہیں (رحمہن اللہ)(۱)

## تابعین کے بارے میں مشہور ترین تصنیف:

"معرفۃ التابعین" نامی کتاب ہے جو ابو مطرف بن فطیس اندلسی کی تصنیف ہے۔(۲)

## بھائیوں اور بہنوں کی پہچان:

تمہید...... یہ علم، علماء حدیث کے معارف میں سے ایک ہے انہوں نے اس کا اہتمام کیا اور اس میں الگ تصنیف کی اور یہ ہر طبقہ کے راویوں میں سے بھائیوں اور بہنوں کی پہچان ہے اس نوع کے لئے الگ بحث اور تصنیف اس بات پر دلالت ہے کہ محدثین نے راویوں کے بارے میں کس قدر اہتمام کیا ہے نیز یہ علم ان کے نسب

(۱)...... یہ ام درداء، ام درداء صغریٰ ہیں ان کا نام جہیمہ ہے جہیمہ بھی کہا گیا ہے یہ ابودرداء کی زوجہ ہیں اور ام درداء کبریٰ بھی حضرت ابودرداء کی زوجہ ہیں ان کا نام خیرہ ہے اور وہ صحابیہ ہیں۔

(۲)......رسالۃ المستطرفۃ ص:۱۰۵

Marfat.com

اور بہن بھائیوں کی پہچان پر دلالت کرتا ہے اور اس کے علاوہ امور بھی ہیں جو آنے والی اقسام میں بیان ہوں گے۔

## اس علم کے فوائد:

اس علم کا فائدہ یہ ہے کہ جو کسی کا بھائی نہیں اسے باپ کے نام سے اشتراک کی وجہ سے بھائی گمان نہ کیا جائے۔

جیسے عبداللہ بن دینار اور عمرو بن دینار ہیں۔ تو جس شخص کو علم نہیں وہ ان دونوں کو ایک دوسرے کا بھائی خیال کرتا ہے حالانکہ یہ دونوں بھائی نہیں ہیں اگرچہ دونوں کے باپ کا نام ایک جیسا ہے۔

## مثالیں:

الف...... صحابہ کرام میں دو بھائیوں کی مثال حضرت عمر اور حضرت زید جو دونوں خطاب کے بیٹے ہیں۔

ب...... صحابہ کرام میں تین کی مثال حضرت علی، حضرت جعفر اور عقیل یہ تینوں ابو طالب کے بیٹے ہیں۔

ج...... تبع تابعین میں چار کی مثال...... سہیل، عبداللہ، محمد اور صالح یہ چاروں ابو صالح کے بیٹے ہیں۔

د...... تبع تابعین میں پانچ کی مثال...... سفیان، آدم، عمران، محمد، ابراہیم یہ سب عیینہ کے بیٹے ہیں۔

Marfat.com

ھ......تابعین میں چھ کی مثال......محمد، انس، یحیٰی، معبد، حفصہ، کریمہ، یہ سب سیرین کی اولاد ہیں۔

و......صحابہ کرام میں سات کی مثال......نعمان، معقل، عقیل، سوید، سنان، عبدالرحمٰن اور عبداللہ یہ مقرن کے بیٹے ہیں۔

یہ سات حضرات سب کے سب صحابہ کرام ہیں اور مہاجر ہیں ان کے اس اعزاز میں کوئی دوسرا شریک نہیں۔ یعنی صحابہ کرام میں ان کے علاوہ کوئی سات بھائی صحابہ نہیں ہیں۔

بعض حضرات نے کہا ہے کہ یہ سب غزوۂ خندق میں شریک ہوئے۔

## اس علم میں مشہور ترین تصنیفات:

الف......کتاب الاخوۃ......یہ کتاب ابوالمطرف بن فطیس اندلسی کی تصنیف ہے۔

ب......کتاب الاخوۃ......ابوالعباس سراج کی تصنیف ہے۔(۱)

## متفق اور مفترق کی معرفت

الف......تعریف...... لغوی اعتبار سے المتفق، لفظ اتفاق سے اسم فاعل ہے اور مفترق، لفظ افتراق سے اسم فاعل ہے اور یہ اتفاق کی ضد ہے۔

ب......اصطلاحاً......راویوں کے نام اور ان کے باپوں کے اوپر تک نام خط اور

(۱)......چراغ بنانے کے عمل کی وجہ سے ان کو سراج کہا جاتا ہے، ان کے آباؤ اجداد میں سے کچھ لوگ یہ عمل کرتے تھے یہ ابوالعباس محمد بن اسحٰق بن ابراہیم ثقفی ہیں نیشاپور میں اپنے زمانے کے محدث تھے ان سے امام بخاری اور مسلم نے احادیث روایت کی ہیں ۳۱۳ھ میں ان کا وصال ہوا۔(حاشیہ مؤلف)

الفاظ میں ایک جیسے ہوں اوران کی شخصیتیں مختلف ہوں ۔اسی سے ہے کہ ان کے نام اور کنیتیں ایک جیسی ہوں یاان کے نام اور نسبتیں متفق ہوں وغیرہ وغیرہ(۱)

## مثالیں:

الف ......خلیل بن احمد ......یہ چھ افراد ہیں جو اس نام میں مشترک ہیں ان میں سے پہلے شیخ سیبویہ ہیں۔

ب......احمد بن جعفر بن حمدان......ایک ہی زمانے میں اس نام کے چار افراد ہوئے ہیں۔

ج......عمر بن خطاب......نام کے چھ حضرات ہیں۔

## اس علم کا فائدہ اور اہمیت:

اس قسم کی معرفت بہت اہم ہے لاعلمی کی وجہ سے بہت سے اکابر علماء کے قدم پھسل گئے اور اس کے فوائد میں سے یہ فائدے ہیں۔

الف......ایک نام میں مشترک جماعت کو ایک خیال نہیں کہا جاسکتا اور یہ مہمل کے برعکس ہے جس کے بارے میں ڈر ہوتا ہے کہ ایک کو دو سمجھ لیا جائے۔(۲)

ب......اسم میں مشترک افراد کے درمیان امتیاز کرنا کیونکہ بعض اوقات ان میں سے ایک ثقہ اور دوسرا ضعیف ہوتا ہے پس صحیح کو ضعیف یا اس کے برعکس قرار دیا جاتا ہے۔

---

(۱)......اگر صرف نام ایک جیسے ہوں تو اس میں اشکال (مغالطہ) بہت کم ہوتا ہے اور تعریف غالب کی بنیاد پر ہوتی ہے جو اشکال کی بنیاد ہے اور اسے معاولات میں ذکر کیا جائے گا جو مہمل کے زیادہ قریب ہے۔

(۲)......شرح نخبۃ الفکر ص ۶۸

Marfat.com

## اس کو لانا کب اچھا سمجھا جاتا ہے؟

جب ایک نام میں دو راوی یا زیادہ مشترک ہوں اور وہ ایک ہی زمانے میں ہوں اور بعض شیوخ حدیث میں یا شاگردوں میں مشترک ہوں تو اس کی مثال بیان کرنا اچھا ہے۔ اور اگر وہ ایسے مختلف راویوں میں ہوں جن میں دوری ہو تو ان کے ناموں میں کوئی اشکال نہیں ہوتا۔

## اس علم کے بارے میں تصانیف:

الف...... کتاب "المتفق والمفترق" یہ خطیب بغدادی کی کتاب ہے۔ جو نہایت عمدہ اور جامع ہے۔

ب...... کتاب "الانساب المتفقه" یہ حافظ محمد بن طاہر (م ۵۰۷ھ) کی کتاب ہے جو متفق کی ایک خاص نوع پر مشتمل ہے۔

## مؤتلِف اور مختلف:

تعریف...... الف...... لغت میں موتلف، ائتلاف سے اسم فاعل ہے اور اس کا معنیٰ جمع ہونا اور ملاقات کرنا ہے اور یہ "نفرۃ" کی ضد ہے اور مختلف، اختلاف سے اسم فاعل ہے جو اتفاق کی ضد ہے۔

ب...... اصطلاحاً...... اسماء اور القاب یا کنیتیں اور انساب، خط میں متفق اور الفاظ میں مختلف ہوں تو اسے موتلف اور مختلف کہا جاتا ہے۔

## مثالیں:

سلام اور سلّام پہلا نام لام کی تخفیف اور دوسرا تشدید لام کے ساتھ ہے۔

ب......مِسْوَر اور مُسَوَّر۔ پہلا میم کے کسرہ سین کے سکون اور واو غیر مشدد کے ساتھ اور دوسرے میں میم پر ضمہ سین پر فتح اور واو مشدد ہے۔

ج......الہزّاز اور الہزّار...... پہلے کے آخر میں زاء ہے اور دوسرے کے آخر میں راء ہے۔

د......الثوری...... اور التوزی...... پہلا ثاء اور زاء کے ساتھ اور دوسرا تاء اور زاء کے ساتھ ہے۔

## کیا اس کے لئے کوئی ضابطہ ہے؟

الف......اکثر میں کوئی ضابطہ نہیں کیونکہ یہ بہت پھیلے ہوئے ہیں ان کو یاد کر کے محفوظ کیا جاتا ہے اور ہر نام کو الگ یاد کیا جاتا ہے۔

ب......بعض کے لئے ضابطہ ہے اور اس کی دو قسمیں ہیں:

ا......وہ جس کے لئے کسی خاص کتاب یا خاص کتب کی نسبت سے ضابطہ ہے مثلاً ہم کہیں کہ جو صحیحین اور موطائین میں "یسار" واقع ہوا ہے اسے یاء اور سین کے ساتھ پڑھا جائے گا سوائے محمد بن "بشار" کے یہ باء اور شین کے ساتھ ہے۔

۲......وہ جس کے لئے عمومی ضابطہ ہے یعنی کسی ایک کتاب یا چند خاص کتب کی طرف نسبت نہیں ہے مثلاً ہم کہتے ہیں کہ پانچ کے علاوہ تمام "سلام" لام کی تشدید کے ساتھ ہیں پھر ہم ان پانچ کا ذکر کریں۔

## اس علم کا فائدہ اور اہمیت:

"علم اسماء الرجال" میں اس نوع کی اہمیت زیادہ ہے کیونکہ حضرت علی بن مدینی

Marfat.com

فرماتے ہیں:

سب سے زیادہ تصحیف (تبدیلی اور غلطی) ناموں میں واقع ہوتی ہے کیونکہ یہ وہ چیز ہے جس میں قیاس کا دخل نہیں ہے اور نہ اس سے پہلے اور بعد کوئی چیز ہوتی ہے جو اس پر دلالت کرے۔(۱)

اس کا فائدہ یہ ہے کہ آدمی غلطی میں پڑنے سے بچ جاتا ہے۔

**اس میں مشہور ترین تصنیفات:**

الف......"المُؤتَلِف والمختلف" ......عبدالغنی بن سعید کی تصنیف ہے۔

ب......"الاکمال"......ابن ماکولا کی کتاب ہے جس پر ابوبکر بن نقطہ کا حاشیہ ہے۔

## متشابہ کی معرفت

الف......تعریف......لغوی اعتبار سے یہ "التشابُہ" سے اسم فاعل ہے اور یہاں متشابہ سے مراد "مُلتَبِس" ہے (یعنی خلط ملط ہونا) اسی سے کہا جاتا ہے کہ یہ قرآن میں سے متشابہ ہے یعنی جس کا معنی واضح نہ ہو۔

ب......اصطلاحاً......راویوں کے نام خط اور الفاظ میں متفق ہوں اور ان کے باپوں کے نام لفظوں میں مختلف ہوں خط میں نہیں یا اس کے برعکس ہو۔

**مثالیں:**

الف......محمد بن عُقَیل ......عین پر ضمہ ہے اور محمد بن عَقِیل عین پر فتح

(۱)......نخبۃ الفکر ص:۶۸

Marfat.com

ہے یہاں راویوں کے نام ایک جیسے (یعنی محمد) ہیں اوران کے باپوں کے نام مختلف ہیں۔

ب......شُرَیح بن النعمان اورسُریح بن النعمان، راویوں کے نام مختلف ہیں اور باپوں کے نام ایک جیسے ہیں (پہلا شین کے ساتھ دوسرا سین کے ساتھ ہے)

## اس علم کا فائدہ:

اس کا فائدہ راویوں کے نام یادرکھنے اوران کو بولنے میں التباس (خلط ملط) نہ ہونے، تصحیف (غلطی) اور وہم میں نہ پڑنے کی صورت میں ظاہر ہوتا ہے۔

## متشابہ کی کچھ اور انواع:

یہاں متشابہ کی کچھ اور انواع ہیں ان میں سے اہم کا ذکر کرتا ہوں۔

الف......راوی اوراس کے باپ کے نام میں ایک یا دو حرفوں کے علاوہ اتفاق ہو۔ جیسے محمد بن حُنین اور محمد بن جبیر۔

ب......راوی کے نام اوراس کے باپ کے نام میں خط اور الفاظ میں اتفاق ہو لیکن تقدیم وتاخیر کے اعتبار سے اختلاف ہو۔

۱......دونوں ناموں میں مکمل تقدیم وتاخیر جیسے اسود بن یزید اور یزید بن اسود۔

۲......بعض حروف میں تقدیم وتاخیر جیسے ایوب بن سیّار اور ایوب ابن یسار

## اس میں مشہورترین تصنیفات:

الف......تلخیص المتشابه فی الرسم وحمایة ما اشکل منه عن بوادر التصحیف والوهم "...... خطیب بغدادی کی تصنیف ہے۔

Marfat.com

ب......"تالی التلخیص"......یہ بھی خطیب بغدادی کی کتاب ہے۔

اور یہ پہلی کتاب کی تکمیل یا حاشیہ ہے یہ دونوں عمدہ کتابیں ہیں اس باب میں ان کی مثل کتب تصنیف نہیں ہوئیں۔

## مُہمَل کی معرفت

الف......لغوی اعتبار سے یہ "الاھمال" سے اسم مفعول ہے یعنی چھوڑ دینا گویا راوی نے نام کو اس طرح چھوڑ دیا کہ اس کے غیر سے اس کی تمیز نہیں ہو سکتی۔

ب......اصطلاحاً......راوی ایسے دو آدمیوں سے روایت کرے جن کے صرف نام ایک جیسے ہیں یا باپوں کے نام بھی ایک جیسے ہیں وغیرہ وغیرہ۔اور دونوں کی خصوصیت کو ممتاز نہیں کیا۔

### اہمال کا نقصان کب ہوتا ہے؟

اگر ان میں سے ایک ثقہ اور دوسرا ضعیف ہو (تو نقصان ہوتا ہے) کیونکہ ہم نہیں جانتے کہ یہاں مروی عنہ کون ہے بعض اوقات ان میں سے ضعیف راوی ہوتا ہے پس حدیث ضعیف ہو جاتی ہے۔

اگر دونوں ثقہ ہوں تو اہمال کی وجہ سے صحت حدیث میں کوئی فرق نہیں پڑتا کیونکہ ان میں سے جو بھی مروی عنہ ہو حدیث صحیح ہو گی۔

### مثال:

الف......جب دونوں ثقہ ہوں......امام بخاری رحمہ اللہ نے "احمد" سے روایت کی جن کی نسبت بیان نہیں کی گئی اور وہ ابن وہب سے روایت کرتے ہیں۔

Marfat.com

اب یہ یا تو احمد بن صالح ہیں یا احمد بن عیسیٰ، اور دونوں ثقہ ہیں۔

ب......جب ان میں سے ایک ثقہ اور دوسرا ضعیف ہو، سلیمان بن داؤد اور سلیمان بن داؤد۔ اگر وہ خولانی ہیں تو ثقہ ہیں اور اگر یمامی ہیں تو ضعیف ہیں۔

## مہمل اور مبہم میں فرق:

ان دونوں میں فرق یہ ہے کہ مہمل میں نام ذکر کیا جاتا ہے اور اس کی تعیین میں التباس ہوتا ہے اور مبہم میں نام ذکر نہیں کیا جاتا۔

## اس میں مشہور ترین تصنیف:

"المُکمل فی بیان المهمل" یہ کتاب خطیب بغدادی کی تصنیف ہے۔

## مبہمات کی معرفت:

تعریف...... الف......لغوی اعتبار سے مبہمات ''مبہم'' کی جمع ہے اور یہ ''الابہام'' سے اسم مفعول ہے جو ایضاح (واضح کرنا) کی ضد ہے۔

ب......اصطلاحاً......وہ راوی یا جس کا روایت سے کوئی بھی تعلق ہو متن یا سند میں اس کے نام کو مبہم چھوڑنا (وضاحت نہ کرنا)

## اس کی بحث کے فوائد:

الف......اگر ابہام سند میں ہو تو اس صورت میں اس بحث کا فائدہ یہ ہے کہ راوی کی معرفت حاصل ہوتی ہے کہ وہ ثقہ ہے یا ضعیف تا کہ حدیث پر صحت یا ضعف کا حکم لگایا جائے۔

ب......اگر ابہام متن میں ہو تو اس کے بہت فائدے ہیں سب سے زیادہ واضح

فائدہ یہ ہے کہ صاحب واقعہ یا سائل کی پہچان حاصل ہوتی ہے حتی کہ اگر حدیث میں اس کی منقبت ہو تو ہم اس کی فضیلت کو جان لیتے ہیں اور اگر اس کے برعکس ہو تو اس کی پہچان سے دوسرے افضل صحابہ کرام کے بارے میں بدگمانی سے بچا جاتا ہے۔

## مبہم کی پہچان کیسے ہو؟

مبہم کی پہچان دو میں سے ایک بات کے ساتھ ہوتی ہے۔

الف...... دوسری بعض روایات میں اس کا نام ذکر کیا گیا ہو۔

ب...... سیرت نگار واضح الفاظ (نص) کے ذریعے اس کی ذات کی وضاحت کریں۔

## اس کی اقسام:

زیادہ ابہام یا کم ابہام کے اعتبار سے مبہم کی چار اقسام ہیں میں اس سے ابتداء کرتا ہوں جس میں ابہام زیادہ شدید ہے۔

الف...... مرد ہو یا عورت ...... جیسے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما کی حدیث میں ہے "ان رجلا قال یارسول اللہ الحج کل عام " یارسول اللہ کیا حج ہر سال فرض ہے۔(۱)

تو یہ رجل (شخص) حضرت اقرع بن حابس رضی اللہ عنہ ہیں۔

ب...... بیٹا یا بیٹی ...... اس کے ساتھ بھائی اور بہن بھی ملحق ہیں اسی طرح بھتیجا

(۱)...... سنن ابن ماجہ باب فرض الحج ص:۲۰۷ (کل عام کی جگہ فی کل عام ہے)

Marfat.com

اور بھانجا، بھتیجی اور بھانجی بھی شامل ہیں جس طرح حضرت ام عطیہ رضی اللہ عنہا کی حدیث رسول اکرم ﷺ کی صاحبزادی کو پانی اور بیری کے پتوں کے ساتھ غسل دینے والی حدیث ہے۔(۲) اور آپ کی وہ صاحبزادی حضرت زینب رضی اللہ عنہا ہیں۔

ج...... چچا اور پھوپھی ......اس میں ماموں، خالہ چچا اور پھوپھی کا بیٹا بیٹی نیز ماموں اور خالہ کا بیٹا اور بیٹی بھی شامل ہیں جس طرح حضرت رافع بن خدیج رضی اللہ عنہ کی اپنے چچا سے روایت ہے جو مخابرہ (مزارعت) سے منع کے بارے میں ہے ان کا نام ظہیر بن رافع ہے اور جیسے حضرت جابر رضی اللہ عنہ کی پھوپھی کی روایت جو اُحد کے دن اپنے والد کی شہادت پر روئی تھیں ان کی پھوپھی کا نام فاطمہ بنت عمرو رضی اللہ عنہا ہے۔

د...... خاوند اور بیوی...... جس طرح حضرت سبیعہ کے خاوند کی وفات سے متعلق صحیح بخاری و مسلم کی حدیث ہے۔

ان کے خاوند کا نام سعد بن خولہ ہے...... اور جس طرح حضرت عبدالرحمٰن بن زبیر کی زوجہ کی حدیث جو حضرت رفاعہ قرظی کے نکاح میں تھیں اور انہوں نے ان کو طلاق دے دی ان کا نام تمیمہ بنت وہب تھا۔

## مبہمات سے متعلق مشہور ترین تصنیفات:

اس نوع سے متعلق متعدد علماء نے کتابیں لکھی ہیں ان میں عبدالغنی بن سعید، خطیب بغدادی اور امام نووی (رحمہم اللہ) شامل ہیں سب سے زیادہ خوبصورت

(۱)...... صحیح مسلم مع حاشیہ نووی حدیث ۹۳۹ مطبوعہ مکتبہ الغزالی دمشق ۳/۷

Marfat.com

اور جامع کتاب ولی الدین عراقی کی تصنیف ''المستفاد من مبهمات المتن والاسناد'' ہے۔

## وُحدان کی معرفت:

الف......تعریف......لغوی اعتبار سے وُحدان واؤ کے ضمہ کے ساتھ واحد کی جمع ہے۔

ب......اصطلاحاً......وہ راوی جن میں سے ہر ایک سے صرف ایک راوی نے روایت کی (وہ وحدان کہلاتے ہیں)

### اس کا فائدہ:

اس مبہم کا فائدہ یہ ہے کہ جو مجہول العین ہے اس کی معرفت حاصل ہو جاتی ہے اور اگر اس کی روایت صحیح نہ ہو تو اسے رد کیا جا سکتا ہے۔

### مثالیں:

الف......صحابہ کرام میں سے......حضرت عروہ بن مضرس رضی اللہ عنہ، ان سے صرف حضرت شعبی روایت کرتے ہیں۔ اور حضرت مسیب بن حزن رضی اللہ عنہ، ان سے ان کے صاحبزادے حضرت سعید (بن مسیب) کے علاوہ کسی نے حدیث روایت نہیں کی۔

ب......تابعین میں سے......حضرت ابوالعشراء رحمہ اللہ سے حضرت حماد بن سلمہ کے علاوہ کسی نے حدیث روایت نہیں کی۔

### کیا شیخین نے اپنی صحیحین میں وُحدان سے روایات لی ہیں؟

الف......حضرت حاکم نے المدخل میں ذکر کیا کہ شیخین (حضرت امام بخاری

Marfat.com

اور امام مسلم رحمہما اللہ) نے اس قسم کی کوئی روایت نہیں لی۔

ب......لیکن جمہور محدثین فرماتے ہیں کہ صحیحین میں وحدان صحابہ کرام سے بہت سی احادیث مروی ہیں ان میں سے درج ذیل ہیں۔

ا......حضرت میسب رضی اللہ عنہ کی حدیث جو ابو طالب کی وفات کے بارے میں ہے اسے شیخین نے نقل کیا۔

۲......حضرت قیس بن حازم کی حدیث وہ مرداس بن سلمی سے روایت کرتے ہیں کہ صالحین لوگ ایک ایک کر کے چلے جائیں گے......حضرت مرداس سے حضرت قیس کے علاوہ کسی نے حدیث روایت نہیں کی اور اس حدیث کا امام بخاری نے ذکر کیا ہے۔

## اس سلسلے میں مشہورترین تصنیفات:

امام مسلم رحمہ اللہ کی تصنیف "المنفردات والوُحدان" ہے۔

## ان راویوں کی معرفت جن کا ذکر ان کے ناموں یا مختلف صفات کے ساتھ ہوا:

تعریف..... یہ وہ راوی ہے جس کا وصف نام یا القاب یا مختلف کنیتوں کے ساتھ بیان کیا گیا۔خواہ وہ ایک آدمی کی طرف سے ہو یا ایک جماعت کی طرف سے۔

## اس کی مثال:

محمد بن سائب کلبی کا نام بعض نے ابو النصر بیان کیا بعض نے حماد بن سائب اور بعض نے ابو سعید ذکر کیا۔

Marfat.com

## اس علم کے فوائد:

الف......اس علم کا فائدہ یہ ہے کہ ایک شخص کے ناموں میں التباس نہ ہو اور یہ خیال نہ کرنا کہ یہ متعدد لوگ ہیں۔

ب......شیوخ کی تدلیس کا کشف و بیان (حاصل ہوتا ہے)

## خطیب کا اپنے شیوخ کے بارے میں اس بات کو کثرت سے استعمال کرنا:

خطیب بغدادی اپنی کتب میں مثلاً ابوالقاسم ازھری عبیداللہ ابن ابوالفتح فارسی، عبیداللہ بن احمد بن عثمان صیرفی سے روایت کرتے ہیں اور یہ ایک ہی شخص ہیں۔

## اس سلسلے میں مشہور ترین تصنیفات:

الف......ایضاح الاشکال......حافظ عبدالغنی بن سعید کی تصنیف ہے۔

ب......موضح اوہام الجمع والتفریق......خطیب بغدادی کی کتاب ہے۔

# ناموں، کنیتوں اور القاب سے مفردات کی پہچان

## مفردات سے مراد:

صحابہ کرام میں سے کسی صحابی یا عام راویوں میں سے کسی راوی یا علماء میں سے کسی ایک کا نام یا کنیت یا لقب ایسا ہو جس میں دوسرے راویوں یا علماء میں سے کوئی ایک اس کے ساتھ شریک نہ ہو۔ تو یہ مفرد ہے اور عام طور پر یہ مفردات نادر نام ہوتے ہیں جن کا تلفظ مشکل ہوتا ہے۔

فائدہ ......ان مفرد اور نادر ناموں میں تصحیف اور تحریف میں پڑنے سے بچنا ہے۔

Marfat.com

## مثالیں

(ا)......نام:

الف......صحابہ کرام میں سے......احمد بن عجیان بروزن سفیان یا عُلیان اور سَنْدَرْ بروز جعفر۔

۲......غیر صحابہ کرام سے......اَوسط بن عمرو اورضُریب ابن نقیر بن سُمیر۔

ب...... کنیتیں :

ا......صحابہ کرام میں سے......ابوالحمراء......یہ رسول اکرم ﷺ کے آزاد کردہ غلام ہیں ان کا نام ہلال بن حارث ہے۔

۲......غیر صحابہ کرام سے......ابو العُبیدَین، ان کا نام معاویہ ابن سبرہ ہے۔

ج...... القاب:

ا......صحابہ کرام میں سے......سفینہ...... یہ رسول اکرم ﷺ کے آزاد کردہ غلام ہیں ان کا نام مہران ہے۔

۲......صحابہ کرام کے غیر سے......مَندل، ان کا نام عمرو بن علی الغزی الکوفی ہے۔

## اس میں مشہورترین تصنیفات:

اس نوع میں الگ تصنیف کرنے والے احمد بن ہارون بردیجی ہیں ان کی کتاب کا نام "الاسماء المفردہ" ہے راویوں کے حالات کے بارے میں لکھی گئی کتب کے آخر میں اس سلسلے میں بہت زیادہ معلومات ہیں جسے ابن حجر عسقلانی کی کتاب "تقریب التھذیب" ہے۔

Marfat.com

# ان راویوں کی پہچان جو اپنی کنیتوں سے مشہور ہیں

## اس بحث سے مراد:

اس بحث سے مراد یہ ہے کہ ان راویوں کے نام تلاش کیے جائیں جو اپنی کنیتوں کے ساتھ مشہور ہیں حتیٰ کہ ہمیں ان سب کے غیر مشہور نام معلوم ہو جائیں۔

## فوائد:

اس بحث کی پہچان کا فائدہ یہ ہے کہ کسی ایک شخص کو دو آدمی گمان نہ کیا جائے کیونکہ بعض اوقات اس شخص کا ذکر اس کے غیر مشہور نام کے ساتھ ہوتا ہے اور کبھی اس کی کنیت کے ساتھ جس کے ساتھ وہ مشہور ہے پس جسے اس کی پہچان نہیں ہوتی اس پر معاملہ مشتبہ ہو جاتا ہے اور وہ اسے دو آدمی گمان کرتا ہے حالانکہ وہ ایک شخص ہے۔

## اس کے بارے میں تصنیف کا طریقہ:

جو مصنف کنیتوں کے بارے یں تصنیف کرتا ہے وہ اپنی تصنیف میں کنیتوں کو حروف تہجی کے طریقے پر بابوں میں لاتا ہے۔ پھر ان لوگوں کے نام ذکر کرتا ہے مثلاً باب ہمزہ میں ابواسحٰق لکھ کر ان کا نام ذکر کرتا ہے اور باء کے باب میں ابوالبشر کا ذکر کر کے ان کا نام ذکر کرتا ہے اسی طرح کرتا رہتا ہے۔

## کنیتوں والوں کی اقسام اور مثالیں:

الف......جس کا نام اور کنیت ایک ہی ہو اس کے علاوہ نام نہ ہو جس طرح ابو بلال اشعری......ان کا نام اور کنیت ایک ہی ہے۔

Marfat.com

ب..... جو اپنی کنیت کے ساتھ معروف ہو..... اور یہ معلوم نہ ہو کہ اس کا کوئی نام بھی ہے یا نہیں جس طرح ابو اناس رضی اللہ عنہ صحابی ہیں۔

ج..... جس کو اس کی کنیت کے ساتھ لقب دیا گیا اور اس کا نام اور کنیت بھی ہو جیسے ابوتراب یہ حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ کا لقب ہے اور آپ کی کنیت ابوالحسن ہے۔

د..... جس کی دو یا زیادہ کنیتیں ہوں..... جیسے ابن جریج ان کی کنیت ابوالولید بھی ہے اور ابو خالد بھی۔

ھ..... جس کی کنیت میں اختلاف ہو..... جس طرح حضرت اسامہ بن زید رضی اللہ عنہ کہا گیا ہے کہ ان کی کنیت ابو محمد ہے یہ بھی کہا گیا کہ ابو عبداللہ ہے اور ابو خارجہ بھی کہا گیا۔

و..... جس کی کنیت معروف ہو لیکن نام میں اختلاف ہو..... جس طرح حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ آپ کے اپنے اور والد کے نام میں تین مختلف اقوال ہیں۔ سب سے زیادہ مشہور عبدالرحمٰن بن صخر ہے۔

ز..... جس کے نام اور کنیت میں اختلاف ہے..... جس طرح حضرت سفینہ رضی اللہ عنہ کہا گیا ہے کہ انکا نام صالح ہے اور بعض نے مہران بتایا اور کنیت ابو عبدالرحمٰن بتائی گئی اور یہ بھی کہا گیا کہ آپ کی کنیت ابوالبختری ہے۔

ح..... جس کا نام اور کنیت معروف ہو اور دونوں کے ساتھ مشہور ہو..... جیسے ابو عبداللہ سفیان ثوری، ابو عبداللہ مالک، ابو عبداللہ محمد بن ادریس شافعی، ابو عبداللہ احمد بن حنبل اور ابو حنیفہ نعمان بن ثابت رحمہم اللہ۔

Marfat.com

ط......جس کی کنیت مشہور ہو اور نام کی پہچان بھی ہو......جیسے ابوادریس خوالانی، ان کا نام عائذ اللہ ہے۔

ی......جو اپنے نام سے مشہور ہو اور کنیت بھی معلوم ہو......جیسے طلحہ بن عبید اللہ تیمی عبدالرحمٰن بن عوف، حسن بن علی بن ابی طالب (رضی اللہ عنہم) ان سب کی کنیت ابو محمد ہے۔

مشہور ترین تصنیفات:

کنیتوں کے بارے میں علماء کرام نے کئی کتب لکھی ہیں ان مصنفین میں علی بن مدینی، امام مسلم اور امام نسائی شامل ہیں۔

اور ان مطبوعہ کتب میں سے مشہور ترین کتاب "الکنی والاسماء" ہے جو دولابی ابو بشر محمد بن احمد متوفی ۳۱۰ھ کی ہے۔

## القاب کی پہچان

لغوی تعریف......القاب، لقب کی جمع ہے اور لقب ہر وہ وصف ہے جو کسی کی بلندی یا پستی کی خبر دے یا مدح یا خدمت پر دلالت کرے۔

اس بحث سے مراد:

اس بحث سے مراد یہ ہے کہ محدثین اور حدیث کے راویوں کے القاب کی چھان بین کی جائے تا کہ ان کی معرفت حاصل کر کے ان کو یاد رکھا جائے۔

فائدہ:......القاب کی معرفت کے دو فائدے ہیں۔

ا......تا کہ القاب کو نام نہ خیال کیا جائے اور جس شخص کو کبھی نام اور لقب سے ذکر

کیا جائے تو اسے دو آدمی نہ سمجھا جائے حالانکہ وہ ایک شخص ہے۔

ب......اس سبب کی پہچان حاصل کی جائے جس کی بنیاد پر اس راوی کو یہ لقب ملا اس وقت اس لقب سے حقیقی مراد کی پہچان ہو جس کا ظاہری معنی اکثر اوقات اس کے مخالف ہوتا ہے۔

## اقسام:

القاب کی دو قسمیں ہیں۔

ا......وہ لقب جس کے ساتھ تشہیر جائز نہیں اس سے مراد وہ لقب ہے جسے صاحب لقب پسند نہیں کرتا۔

۲......جس کے ساتھ تشہیر جائز ہے یعنی وہ لقب جسے صاحب لقب پسند کرتا ہے۔

## مثالیں:

الف......الضال (بھٹکا ہوا)......معاویہ بن عبدالکریم الضال کا لقب ہے ان کو یہ لقب اس لئے ملا کہ یہ مکہ مکرمہ کے راستے میں بھٹک گئے تھے۔

ب......الضعیف (کمزور)......عبداللہ بن محمد ضعیف کا لقب ہے آپ کو یہ لقب اس لئے دیا گیا کہ آپ جسمانی طور پر کمزور تھے، حدیث میں نہیں۔ حضرت عبدالغنی ابن سعید فرماتے ہیں: دو ایسے شخص جو جلیل القدر ہیں لیکن ان کو قبیح لقب ملے ایک ''ضال'' اور دوسرا ''ضعیف''۔

ج......غُندَر......لغت اہل حجاز میں اس کا معنی شور کرنے والا ہے اور یہ محمد بن جعفر بصری کا لقب ہے جو حضرت شعبہ کے شاگرد ہیں ان کو یہ لقب دینے کا سبب یہ

Marfat.com

ہے کہ ابن جریج بصرہ میں آئے اورانہوں نے حضرت حسن بصری رحمہ للہ سے روایت کردہ حدیث بیان کی اس پرلوگوں نے انکارکیااورشورکیااورسب سے زیادہ شور محمد بن جعفر نے کیاتوآپ نے فرمایا''اُسکت یا غندد''(اے شورکرنے والے خاموش ہوجا)

د......غُنجار......یہ حضرت عیسیٰ بن موسیٰ تیمی کالقب ہے۔ان کوغُنجاراس لئے کہا گیا کہ ان کے رُخسار سرخ تھے(غنجار سرخ رخساروں والا)

ھ......صاعقہ(بجلی)......محمد بن ابراہیم حافظ کالقب ہے ان سے حضرت امام بخاری رحمہ اللہ نے احادیث روایت کی ہیں ان کے اس لقب کی وجہ ان کے حافظہ کی تیزی اورشدتِ مذاکرہ ہے۔(زیادہ یادرکھنایاتکرارکرنا)

و......مشکدانہ(خوشبورکھنے کی جگہ)......عبداللہ بن عمراموی کالقب ہے فارسی میں اس کامعنی کستوری کادانہ(ٹکڑا)یاکستوری کابرتن ہے۔

ز......مُطَیّن......ابوجعفرحضرمی کالقب ہےان کویہ لقب اس لئے ملاکہ وہ بچپن میں بچوں کے ساتھ پانی میں کھیلتے تھےاوروہ ان کی پیٹھ پرکیچڑمَل دیتے توابونعیم نے ان سے کہا''یامطین لم لاتحضر مجلس العلم''اے کیچڑوالے!تم مجلس علم میں کیوں نہیں آتے۔

## مشہورترین تصنیفات:

اس موضوع سے متعلق متقدمین اورمتاخرین علماءکی ایک جماعت نے کتابیں لکھی ہیں ان میں سے سب سے زیادہ بہتراورمختصرکتاب حافظ ابن حجرکی تصنیف ''نزھۃ الالباب''ہے۔

Marfat.com

## ان لوگوں کی پہچان جو اپنے باپوں کے غیر کی طرف منسوب ہیں

### اس بحث سے مراد:

ان لوگوں کی پہچان حاصل کرنا ہے جو اپنے باپ کے غیر کی طرف منسوب ہیں چاہے وہ قریبی ہوں جیسے ماں یا دادا (کی طرف کوئی منسوب ہو) یا اجنبی ہو جیسے پرورش کرنے والا، پھر اس کے باپ کی نام کی پہچان حاصل کرنا۔

فائدہ...... جب ان راویوں کی نسبت ان کے باپ کی طرف ہو تو متعدد ہونے کا وہم نہ ہوتا۔

### اقسام اور مثالیں:

الف...... جو ماں کی طرف منسوب ہیں......

جس طرح حضرت معاذ، معوذ اور عوذ جو حضرت عفراء کے بیٹے ہیں اور ان کے والد کا نام حارث ہے۔ اور جیسے بلال بن حمامہ، ان کے باپ کا نام رباح ہے۔ اور محمد بن حنیفہ ان کے والد حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ ہیں۔

ب...... جو دادی کی طرف منسوب ہیں وہ دادی دور کی ہو یا قریب کی۔

جیسے یعلی بن منیہ، یہ منیہ ان کی دادی ہیں ان کے والد امیہ ہیں...... اور بشیر بن خصاصیہ یہ ان کے تیسرے دادا کی ماں ہیں ان کے باپ کا نام معبد ہے (یعنی بشیر بن معبد)

ج...... جو اپنے دادا کی طرف منسوب ہیں......

جیسے ابو عبیدہ بن جراح ان کا نام عامر بن عبداللہ بن جراح ہے، احمد بن حنبل، یہ احمد بن محمد بن حنبل ہیں۔

Marfat.com

د......جو کسی سبب سے اجنبی کی طرف منسوب ہو......

جیسے مقداد بن عمرو الکندی، ان کو مقداد بن اسود کہا جاتا ہے کیونکہ یہ اسود بن اسود بن عبد یغوث کی پرورش میں تھے اور اس نے ان کو متبنّٰی بنایا تھا۔

## مشہور ترین تصنیفات:

مجھے اس باب میں خاص تصنیف کا علم نہیں لیکن عام کتب سوانح میں ہر راوی کا نسب ذکر کیا گیا ہے خاص طور پر سوانح کی بڑی اور وسیع کتب میں۔

## ان نسبتوں کی پہچان جو اپنے ظاہر کے خلاف ہیں

تمہید......بہت سے ایسے راوی موجود ہیں جو کسی جگہ یا غزوہ یا قبیلہ یا صنعت کی طرف منسوب ہیں لیکن ان نسبتوں سے جو معنی بظاہر ذہن کی طرف لوٹتا ہے وہ مراد نہیں ہوتا بلکہ اصل واقعہ یہ ہے کہ وہ کسی خاص عارضہ کی وجہ سے جو ان کو پیش آیا ان کی طرف منسوب کیے گئے ہیں جیسے وہ اس جگہ ٹھہرے یا اس صنعت والوں سے ان کا میل جول تھا۔

## اس بحث کا فائدہ:

اس بحث کا فائدہ اِس بات کی معرفت حاصل کرنا ہے کہ یہ نسبتیں حقیقی نہیں ہیں بلکہ اس شخص کو یہ نسبت کسی سبب سے حاصل ہوئی ہے نیز اس عارض اور سبب کی پہچان بھی حاصل ہو جاتی ہے جس کی وجہ سے اس شخص کو یہ نسبت حاصل ہوتی ہے۔

## مثالیں:

الف......ابو مسعود بدری رضی اللہ عنہ ......آپ (غزوہ) بدر میں حاضر

نہیں ہوئے بلکہ وہاں اترے پس اس کی طرف منسوب ہو گئے۔

ب...... یزید الفقیر ...... آپ فقیر نہیں تھے بلکہ آپ کی ریڑھ کی ہڈی میں زخم آیا تھا اور ریڑھ کی ہڈی کو "فقار" کہا جاتا ہے اس لئے آپ کو فقیر کہا گیا۔

ج...... خالد الحذّاء ...... آپ جوتیاں بنانے والے نہیں تھے بلکہ آپ موچیوں کے پاس اٹھتے بیٹھتے تھے (حذاء موچی کو کہتے ہیں)

## مشہور ترین تصنیفات:

اس سلسلے میں سمعانی کی کتاب "الانساب" ہے۔ جس کی تلخیص ابن اثیر نے "اللباب فی تھذیب الاسماء" کے نام سے کی ہے۔ اور اس تلخیص کی تلخیص امام سیوطی رحمہ اللہ نے کی اور اس کا نام "لُبُّ اللُّباب" رکھا۔

## راویوں کی تاریخوں کی معرفت

الف...... تعریف...... لغوی اعتبار سے تواریخ، تاریخ کی جمع ہے اور یہ "اَدَّخ" کا مصدر ہے اس میں ہمزہ کی تسہیل کی گئی (یعنی اسے الف سے بدل کر آسان کر دیا گیا)

ب...... اصطلاحاً...... اس وقت کی پہچان کو کہتے ہیں جس کے ذریعے ولادت وفات اور دیگر واقعات پر مشتمل حالات محفوظ ہوں۔

## یہاں کیا مراد ہے؟

اس فن میں مراد یہ ہے کہ راویوں کی تاریخ پیدائش شیوخ سے ان کی سماعت اور بعض شہروں میں ان کی آمد نیز ان کی وفات کی تاریخیں معلوم ہو جائیں۔

Marfat.com

## اس کی اہمیت اور فائدہ:

یہ اہم فن ہے حضرت سفیان ثوری رحمہ اللہ فرماتے ہیں: جب راویوں نے جھوٹ کا استعمال کیا تو ہم نے ان کے لئے تاریخ کا استعمال کیا اور اس کے فوائد میں سے یہ بات بھی ہے کہ سند کے اتصال اور انقطاع کا علم ہو جاتا ہے۔ایک جماعت نے دوسری جماعت سے روایت کا دعویٰ کیا جب تاریخ پر نظر ڈالی تو ظاہر ہوا کہ انہوں نے روایت کا دعویٰ ان (جن سے روایت کا دعویٰ کیا) کی وفات کے کئی سال بعد کیا۔

## تاریخ کی مثالیں:

الف...... ہمارے آقا حضرت محمد ﷺ اور آپ کے دونوں ساتھیوں حضرت ابوبکر اور حضرت عمر رضی اللہ عنہما کی مبارک عمر صحیح قول کے مطابق تریسٹھ سال تھی۔

۱......اور نبی اکرم ﷺ نے (مشہور قول کے مطابق) ۱۲ ربیع الاول ۱۱ھ بروز سوموار چاشت کے وقت وصال فرمایا۔

۲......حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نے جمادی الاولیٰ ۱۳ھ میں وفات پائی۔(۱)

۳......حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کا وصال ذوالحجہ ۲۳ھ میں ہوا۔

۴......حضرت عثمان غنی رضی اللہ عنہ کی شہادت ذوالحجہ ۳۵ھ میں ہوئی، اس وقت آپ کی عمر بیاسی (۸۲) سال تھی بعض نے نوے (۹۰) سال بتائی ہے۔

۵......اور حضرت علی کرم اللہ وجہہ رمضان المبارک ۴۰ھ میں شہید کئے گئے اس وقت آپ کی عمر تریسٹھ (۶۳) سال تھی۔

(۱)......معروف یہ ہے کہ آپ کا وصال ۲۲ جمادی الاخری کو ہوا۔۱۲ ہزاروی

Marfat.com

ب......وہ صحابی جنہوں نے ساٹھ سال دور جاہلیت میں اور ساٹھ سال اسلام میں گزارے اور مدینہ طیبہ میں ۵۴ھ میں انتقال فرمایا یہ ہیں۔

ا......حضرت حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ

۲......حضرت حسان بن ثابت رضی اللہ عنہ

ج......وہ ائمہ جن کے (فقہی) مذاہب کی پیروی کی جاتی ہے۔

ا......حضرت نعمان بن ثابت (ابوحنیفہ) رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۸۰ھ اور وصال ۱۵۰ھ میں ہوا۔

۲......حضرت مالک بن انس رضی اللہ عنہ

آپ کی ولادت ۹۳ھ اور وصال ۱۷۹ھ میں ہوا۔

۳......حضرت محمد بن ادریس شافعی رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۱۵۰ھ میں اور وصال ۲۰۴ھ میں ہوا۔

۴......حضرت احمد بن حنبل رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۱۶۴ھ اور وصال ۲۴۱ھ میں ہوا۔

د......معتبر کتب حدیث کے مصنفین:

ا......محمد بن اسماعیل بخاری رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۱۹۴ھ اور وصال ۲۵۶ھ میں ہوا۔

۲......مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۲۰۴ھ میں اور وصال ۲۶۱ھ میں ہوا۔

Marfat.com

۳......ابوداؤد سجستانی رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۲۰۲ھ میں اور وصال ۲۷۵ھ میں ہوا۔

۴......ابوعیسیٰ ترمذی رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۲۰۹ھ میں اور وصال ۲۷۹ھ میں ہوا۔(۱)

۵......احمد بن شعیب نسائی رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۲۱۴ھ میں اور وصال ۳۰۳ھ میں ہوا۔

۶......ابن ماجہ القزوینی رحمہ اللہ

آپ کی ولادت ۲۰۷ھ میں اور وصال ۲۷۵ھ میں ہوا۔

## اس موضوع سے متعلق مشہور ترین کتب:

الف......''کتاب الوفیات'' یہ ابن زبیر محمد بن عبید اللہ الربعی محدث دمشق متوفّٰی ۳۷۹ھ کی کتاب ہے۔اور یہ سن (سالوں) کے اعتبار سے مرتب ہے۔

ب......اسی مذکور کتاب کا حاشیہ کتانی نے لکھا پھر اکفانی نے پھر عراقی اور دوسرے لوگوں نے لکھے۔

## ثقہ راویوں میں سے اختلاط والے راویوں کی پہچان

## اختلاط کی تعریف:

الف......لغوی اعتبار سے فسادِ عقل کو اختلاط کہتے ہیں کہا جاتا ہے'' اختلط

(۱)......آپ کی سن ولادت میں اختلاف ہے اس لئے اکثر مورخین اس کا ذکر نہیں کرتے لیکن بعض متاخرین نے ذکر کیا کہ آپ ۲۰۹ھ میں پیدا ہوئے۔ان میں شارح الشمائل محمد بن قاسم جسوس بھی شامل ہیں انہوں نے اپنی اس کتاب کی جلد اول ص:۳ پر اس کا ذکر کیا ہے۔

Marfat.com

فلاں" فلاں کی عقل میں فساد (خرابی) ہے۔ قاموس میں اسی طرح ہے۔

ب...... اصطلاحاً...... بڑھاپے یا نابینا پن یا کتابوں کے جل جانے وغیرہ کی وجہ سے عقل کا خراب ہو جانا اختلاط ہے۔

## مختلطین کی اقسام:

الف...... جس کا اختلاط بڑھاپے کی وجہ سے ہو...... جیسے عطاء بن سائب ثقفی کوفی۔

ب...... بینائی جانے کی وجہ سے اختلاط...... جیسے عبدالرزاق بن ہمام صنعانی، ان کے نابینا ہونے کے بعد ان کو تلقین کی جاتی (بتایا جاتا) تو وہ اسے قبول کرتے۔

ج...... دیگر اسباب کی وجہ سے اختلاط...... جیسے کتب کا جل جانا اس کی مثال عبداللہ بن لھیعہ مصری ہیں۔

## مختلط کی روایت کا حکم:

الف...... اس کی جو روایات اختلاط سے پہلے کی ہیں ان کو قبول کیا جائے۔

ب...... جو روایات اختلاط کے بعد کی ہیں ان کو قبول نہ کیا جائے اسی طرح اختلاط سے پہلے یا بعد کی جن روایات میں شک ہو ان کو بھی قبول نہ کیا جائے۔

## اس فن کی اہمیت اور فائدہ:

یہ بہت اہم فن ہے اس کا فائدہ ثقہ راوی کی وہ احادیث جو اختلاط کے بعد روایت کی ہیں ان کو الگ کر کے رد کرنے اور قبول نہ کرنے میں پوشیدہ ہے۔

Marfat.com

## کیا شیخین نے اپنی صحیحین میں ان ثقہ راویوں کی روایات لی ہیں جو اختلاط میں مبتلا ہوئے؟

جی ہاں ایسی احادیث ہیں لیکن ان احادیث سے (لی ہیں) جس کے بارے میں معلوم تھا کہ انہوں نے یہ احادیث اختلاط سے پہلے بیان کی ہیں۔

### اس فن میں مشہور ترین تصنیفات:

اس فن میں متعدد علماء نے کتابیں لکھی ہیں جیسے العلائی، اور حازمی ہیں، ان تصنیفات میں "الاغتباط بمن رُمی بالاختلاط" نامی کتاب ہے جو حافظ ابراہیم ابن محمد سبط ابن عجمی متوفی ۸۴۱ھ کی کتاب ہے۔

## علماء اور راویوں کے طبقات

**طبقہ کی تعریف......**

الف......لغت میں طبقہ ایک دوسرے کے مشابہ لوگوں کو کہتے ہیں۔

ب......اصطلاحاً......وہ لوگ جو عمر اور اسناد یا فقط اسناد میں ایک دوسرے کے قریب قریب ہوں۔(۱)

اسناد میں متقارب (قریب قریب ہونے) کا معنی یہ ہے کہ ایک کے اساتذہ دوسرے کے اساتذہ ہوں یا دوسرے کے اساتذہ کے قریب قریب ہوں۔

### اس فن کی معرفت کے فوائد:

اس فن کی معرفت کا فائدہ یہ ہے کہ نام یا کنیت وغیرہ میں متشابہ راویوں کے درمیان

(۱)......تدریب الراوی ۳۸۱/۲

Marfat.com

تداخل اور التباس (خلط ملط ہونے) سے امن حاصل ہو کیونکہ بعض اوقات دو نام ایک لفظ میں متفق ہو جاتے ہیں اور گمان کیا جاتا ہے کہ یہ دونوں ایک ہی شخص ہیں۔

پس ان کے طبقات کی معرفت سے ان میں امتیاز اور فرق کیا جاسکتا ہے۔

ب..... حدیث معنعن سے حقیقی مراد پر واقفیت حاصل ہوتی ہے۔

## بعض اوقات دو راوی ایک اعتبار سے ایک ہی طبقہ سے ہوتے ہیں اور دوسرے اعتبار سے دو طبقوں میں شمار ہوتے ہیں

جیسے حضرت انس بن مالک اور ان جیسے اصاغر صحابہ کرام (رضی اللہ عنہم) اس اعتبار سے کہ یہ تمام صحابہ کرام ہیں یہ عشرہ مبشرہ کے ساتھ ایک ہی طبقہ میں ہیں تو اس طرح تمام صحابہ کرام ایک ہی طبقہ ہیں۔

اور اسلام میں داخل ہونے میں اولیت کے اعتبار سے صحابہ کرام کے دس سے زیادہ طبقات ہیں جس طرح "نوع الصحابہ" کی نوع میں گزر چکا ہے پس حضرت انس بن مالک اور ان جیسے دوسرے صحابہ کرام عشرہ مبشرہ کے طبقہ میں داخل نہیں ہوں گے۔

## اس میں غور کرنے والے کو کیا کرنا چاہیے؟

علم طبقات میں غور کرنے والے کے لئے ضروری کہ وہ راویوں کی تاریخ ولادت ان کی وفات کی تاریخ انہوں نے کس سے روایت کیا اور ان سے کن کن لوگوں نے روایت کیا (یعنی ان کے اساتذہ اور ان کے شاگردوں) کی معرفت رکھتا ہو۔

## مشہور ترین تصنیف:

اس فن میں مشہور ترین تصنیفات درج ذیل ہیں۔

الف......"الطبقات الکبرٰی"...... یہ ابن سعد کی تصنیف ہے۔

ب......"طبقات القراء"......ابوعمرو دانی کی کتاب ہے۔

ج......"طبقات الشافعیہ الکبرٰی"...... یہ عبدالوہاب سبکی کی کتاب ہے۔

د......"تذکرۃ الحفاظ"......امام ذہبی کی کتاب ہے۔

## راویوں اور علماء میں سے موالی

**مولیٰ کی تعریف**...... الف......لغت میں موالی، مولیٰ کی جمع ہے اور (لفظ) مولی، اضداد (۱) میں سے ہے اس لئے اس کا اطلاق مالک اور غلام پر اور مُعتِق (آزاد کرنے والے) اور مُعتَق (آزاد کئے گئے) دونوں پر ہوتا ہے۔

ب...... **اصطلاحًا**......وہ شخص جس سے عہد و پیمان کیا گیا یا وہ جسے آزاد کیا گیا یا وہ جس نے کسی دوسرے آدمی کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا۔

### موالی کی اقسام:

موالی کی درج ذیل تین اقسام ہیں۔

الف......**مولی الحِلف**...... جیسے حضرت مالک بن انس اصبحی تیمی رحمہ اللہ، آپ نسلی اعتبار سے اصبحی ہیں (اصبح قوم سے ہیں) عہد و پیمان کی ولاء (۲) کی وجہ سے تیمی ہیں کیونکہ آپ کی قوم اصبح نے قریش کی شاخ تیم (قبیلہ) سے معاہدہ کیا (لہذا آپ مولی الحلف ہوئے)

(۱)......ایک لفظ کے جب دو معنی ایک دوسرے کے خلاف ہوں تو ایسے الفاظ کو اضداد کہتے ہیں جیسے تعزیر کا معنی سزا اور تعظیم ہے۔۱۲ ہزاروی

(۲)......جب مولی اپنے غلام کو آزاد کرے اور وہ ایک دوسرے کے وارث بنیں تو یہ ولاء ہے۔۱۲ ہزاروی

ب.....مولی العتاقہ......جیسے ابوالبختری الطائی التابعی ہیں۔

آپ کا نام سعید بن فیروز ہے اور آپ قبیلہ طی کے آزاد کردہ غلام میں کیونکہ آپ کا مالک طی قبیلہ سے تھا اس نے آپ کو آزاد کیا۔

ج......مولیٰ الاسلام......جیسے محمد بن اسماعیل بخاری جعفی رحمہ اللہ،

کیونکہ آپ کے دادا مغیرہ مجوسی تھے پھر وہ یمان بن اخنس جعفی کے ہاتھ پر مسلمان ہوئے تو ان کی طرف منسوب ہو گئے۔

## اس کی معرفت کے فوائد:

اس معرفت کا فائدہ التباس (شک وشبہ) سے بچنا ہے اور ان لوگوں کی پہچان حاصل کرنا ہے جو کسی قبیلہ کی طرف نسبی طور پر یا ولاء کے اعتبار سے منسوب ہیں اسی سے اس راوی کا جو کسی قبیلے کی طرف منسوب ہے اس راوی سے امتیاز حاصل ہو جاتا ہے جو اس قبیلے کی طرف نسبی طور پر منسوب ہے اور دونوں کا نام ایک ہے۔

## اس میں مشہور ترین تصنیفات

اس سلسلے میں ابوعمر کندی نے صرف ان لوگوں کے بارے میں کتاب لکھی ہے جو مصریوں کی طرف منسوب ہیں۔

# ثقہ اور ضعیف راویوں کی پہچان

## ثقہ اور ضعیف کی تعریف:

الف.....لغوی اعتبار سے ثقہ، امین شخص کو کہتے ہیں (جس پر اعتماد ہو) اور ضعیف، قوی کی ضد ہے اور ضعف حسی بھی ہوتا ہے اور معنوی بھی۔

Marfat.com

ب......اصطلاحاً...... ثقہ عادل اور ضابطہ (یادرکھنے والے) راوی کو کہا جاتا ہے اور ضعیف عام نام ہے جوان لوگوں کو بھی شامل ہے جن کے ضبط میں طعن کیا گیا اور ان کو بھی جن کے عدل پر طعن کیا گیا۔

اہمیت اور فائدہ:

علوم حدیث میں سے یہ علم (ثقہ اور ضعیف کا علم) بڑے بڑے علوم میں سے ہے کیونکہ اس کے ذریعے حدیث صحیح اور حدیث ضعیف کی پہچان حاصل ہوتی ہے۔

اس میں مشہور ترین صفات اور ان کی انواع:

الف......جو کتب صرف ثقہ راویوں کے بارے میں ہیں۔

جیسے ابن حبان کی کتاب ''الثقات'' اور العجلی کی کتاب الثقات۔

ب......وہ کتب جو صرف ضعیف راویوں سے متعلق ہیں یہ کتب بہت زیادہ ہیں۔جیسے امام بخاری، امام نسائی، عقیلی اور دارقطنی کی کتب "الضعفاء" اور ان ہی کتب میں سے ابن عدی کی تصنیف ''الکامل فی الضعفاء'' اور امام ذہبی کی المغنی فی الضعفاء ہے۔

ج......وہ کتب جو ثقہ اور ضعیف دونوں قسم کے راویوں کے بارے میں ہیں یہ بھی بہت زیادہ ہیں۔ان میں سے امام بخاری کی تاریخ کبیر اور ابن ابی حاتم کی ''الجرح والتعدیل'' ہے یہ کتب عام راویوں کے بارے میں ہیں۔

ان میں سے بعض کتب احادیث کے ساتھ خاص ہیں جیسے عبدالغنی مقدسی کی ''الکمال فی اسماء الرجال'' ہے۔پھر اس کی متعدد تہذیبات ہیں جو مزی، ذہبی، ابن حجر اور خزرجی (رحمہم اللہ) کی تصنیفات ہیں۔

Marfat.com

# راویوں کے وطن اور شہروں کی پہچان

## اس بحث سے مراد:

اوطان، وطن کی جمع ہے اس سے مراد وہ صوبہ یا علاقہ ہے جہاں انسان پیدا ہوتا ہے یا رہائش پذیر ہوتا ہے اور بلدان، بلد کی جمع ہے اس سے مراد وہ شہر یا بستی ہوتی ہے جہاں انسان پیدا ہوا یا رہائش اختیار کی اس بحث سے مراد یہ ہے کہ راویوں کے ان علاقوں اور شہروں کی پہچان حاصل کی جائے جہاں وہ پیدا ہوئے یا وہ رہائش پذیر ہوئے۔

## اس معرفت کے فوائد:

اس کے فوائد میں سے یہ فائدہ بھی ہے کہ ایسے دونوں ناموں کے درمیان امتیاز کیا جائے جو لفظی اعتبار سے ایک جیسے ہیں جب وہ دو مختلف شہروں سے تعلق رکھتے ہوں۔

حفاظ حدیث کو اپنے تصرفات اور تصانیف میں اس علم کی ضرورت پڑتی ہے۔

## عرب و عجم والے کس کی طرف نسبت کرتے تھے:

الف......قدیم عرب اپنے قبیلوں کی طرف نسبت کرتے تھے کیونکہ ان کی اکثریت خانہ بدوش تھی لہذا ان کا قبیلے کے ساتھ ربط و تعلق زمین کے ساتھ تعلق سے زیادہ مضبوط تھا۔

جب اسلام آیا اور ان پر شہروں اور دیہاتوں کی رہائش غالب آ گئی تو وہ اپنے شہروں اور بستیوں کی طرف منسوب ہو گئے۔

ب......لیکن عجمی قدیم زمانے سے ہی اپنے شہروں اور بستیوں کی طرف منسوب چلے آ رہے ہیں۔

Marfat.com

## جو شخص اپنے شہر سے منتقل ہو جائے اس کی نسبت کس طرح ہوگی؟

الف...... جب دونوں شہروں کو جمع کرنا چاہے تو پہلے شہر سے ابتداء کرے پھر دوسرے کا ذکر کرے جس کی طرف منتقل ہوا۔

اور بہتر یہ ہے کہ دوسرے پر حرف ''ثم'' داخل کرے تو اس شخص کے بارے میں جو حلب میں پیدا ہوا اور پھر مدینہ طیبہ منتقل ہوا، یوں کہے ''فلان الحلبی ثم المدنی ''......اس پر اکثر لوگوں کا عمل ہے۔

ب...... اگر دونوں کو جمع کرنے کا ارادہ نہ ہو تو دونوں میں سے جس شہر کی طرف چاہے نسبت کرے اور ایسا کم ہوتا ہے۔

## جو شخص کسی شہر کے تابع بستی میں رہتا ہے وہ کیسے منسوب ہو؟

الف......وہ اس بستی کی طرف بھی منسوب ہوتا ہے۔

ب......وہ چاہے تو اس شہر کی طرف منسوب ہو جس کے تابع بستی میں رہتا ہے۔

ج......وہ اس علاقہ (مثلاً ضلع وغیرہ) کی طرف بھی منسوب ہو سکتا ہے جس میں یہ شہر واقع ہے۔

اس کی مثال یہ ہے...... ایک شخص ''الباب'' کا رہنے والا ہے اور یہ جگہ حلب شہر کے تابع ہے اور حلب شام میں واقع ہے تو اس کی نسبت کے سلسلے میں یوں کہہ سکتے ہیں ''فلان البابی یا فلان الحلبی یا فلان الشامی''

## کسی شہر میں کتنی مدت رہائش پذیر ہو تو اس شہر کی طرف منسوب ہو سکتا ہے؟

حضرت عبداللہ بن مبارک رحمہ اللہ کے قول کے مطابق چار سال وہاں رہے

Marfat.com

تو اس کی طرف منسوب ہو سکتا ہے۔

اس میں مشہور ترین تصانیف:

الف.....سمعانی کی کتاب ''الانساب'' جس کا ذکر پہلے ہو چکا ہے اس کتاب کو اس نوع کی تصانیف میں شمار کیا جا سکتا ہے۔ کیونکہ وہ وطن وغیرہ کی طرف نسبت کا ذکر کرتے ہیں۔

ب.....راویوں کے وطن اور شہروں کے بارے میں ابن سعد کی کتاب ''الطبقات الکبریٰ'' بھی ہے۔

یہ اس کتاب کی آخری بحث ہے جو اللہ تعالیٰ نے میرے لئے آسان فرمائی اور ہمارے آقا اور ہمارے نبی حضرت محمد ﷺ اور آپ کی آل واصحاب پر رحمت ہو اور تمام تعریفیں تمام جہانوں کے رب کے لئے ہیں۔

☆☆☆.................☆☆☆.................☆☆☆

الحمد للہ! آج مورخہ ۲۴ شوال المکرم ۱۴۳۳ھ/۱۲ ستمبر ۲۰۱۲ء بروز بدھ بعد نماز ظہر اس کتاب مستطاب کا ترجمہ مکمل ہوا۔

والحمد للہ والصلوٰۃ علی رسول اللہ۔

محمد صدیق ہزاروی

استاذ الحدیث جامعہ ہجویریہ مرکز معارف اولیاء

دربار عالیہ حضرت داتا گنج بخش رحمہ اللہ لاہور

Marfat.com

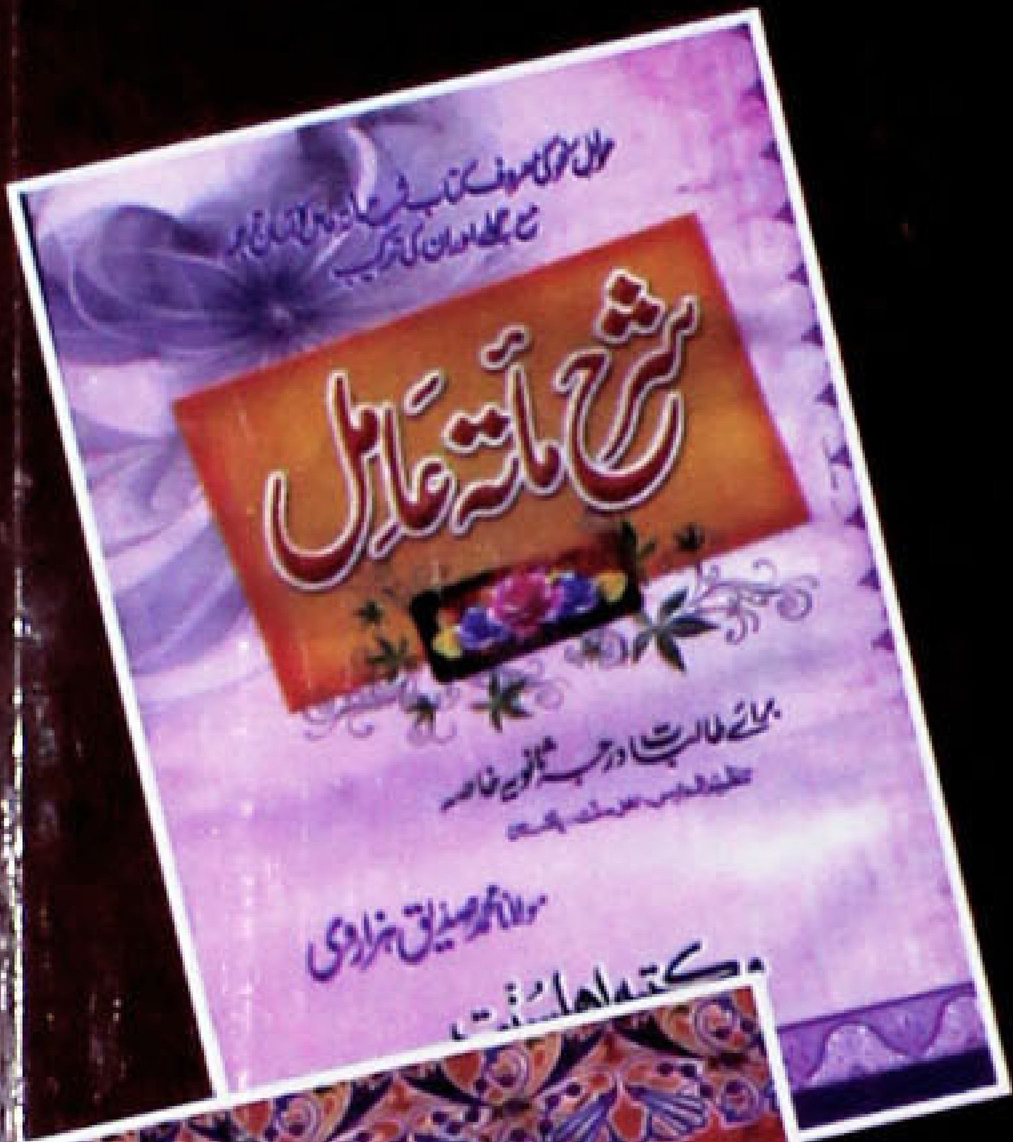


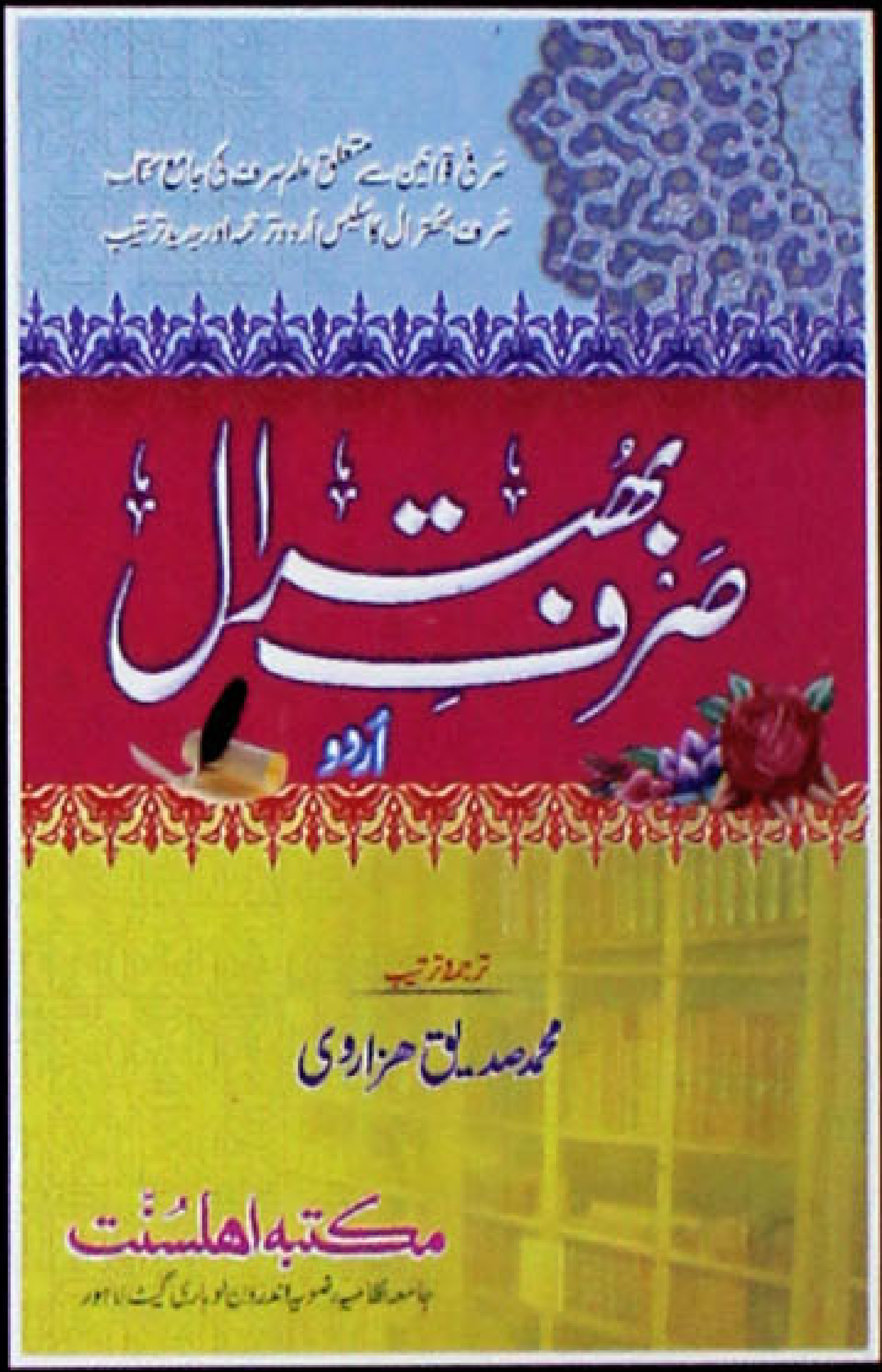


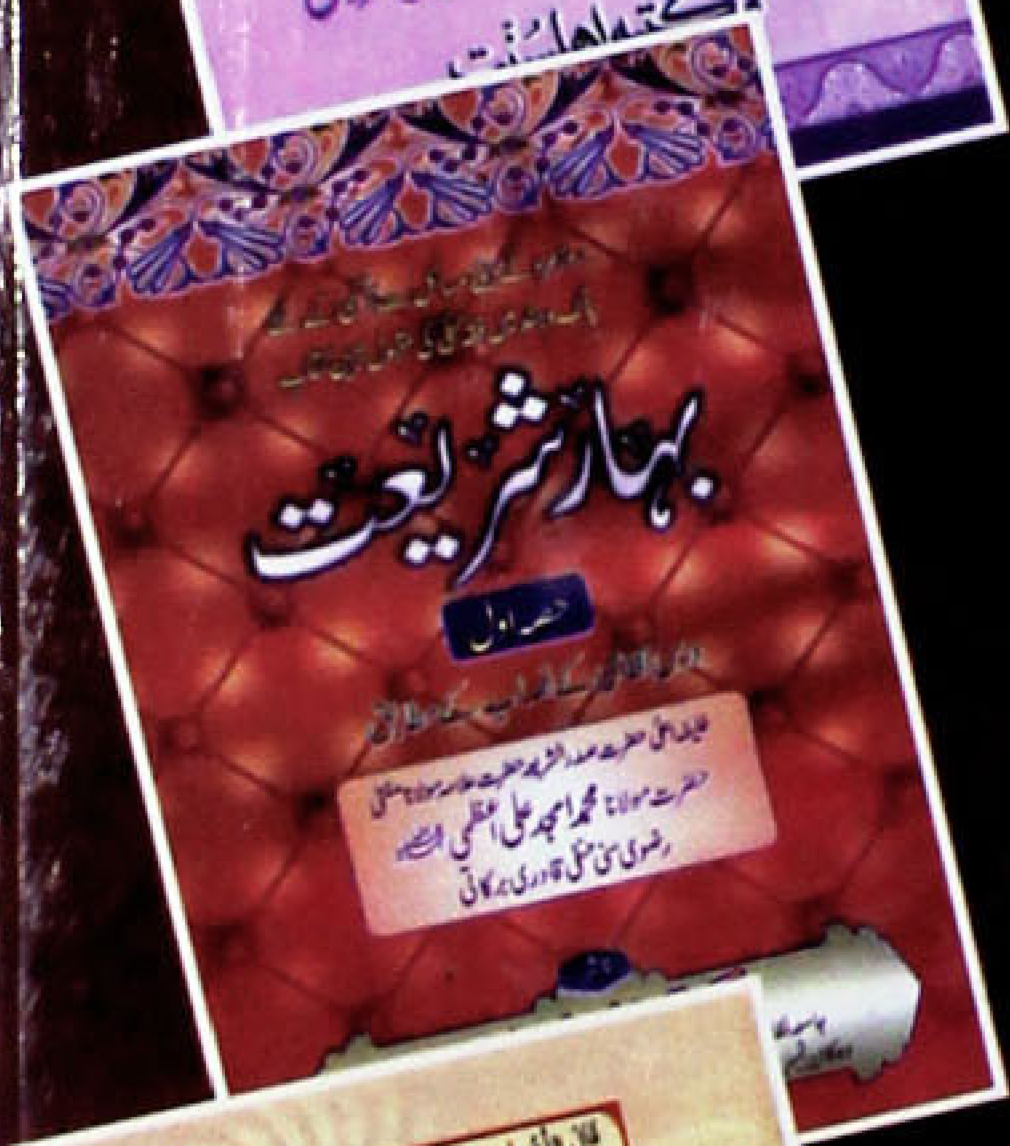


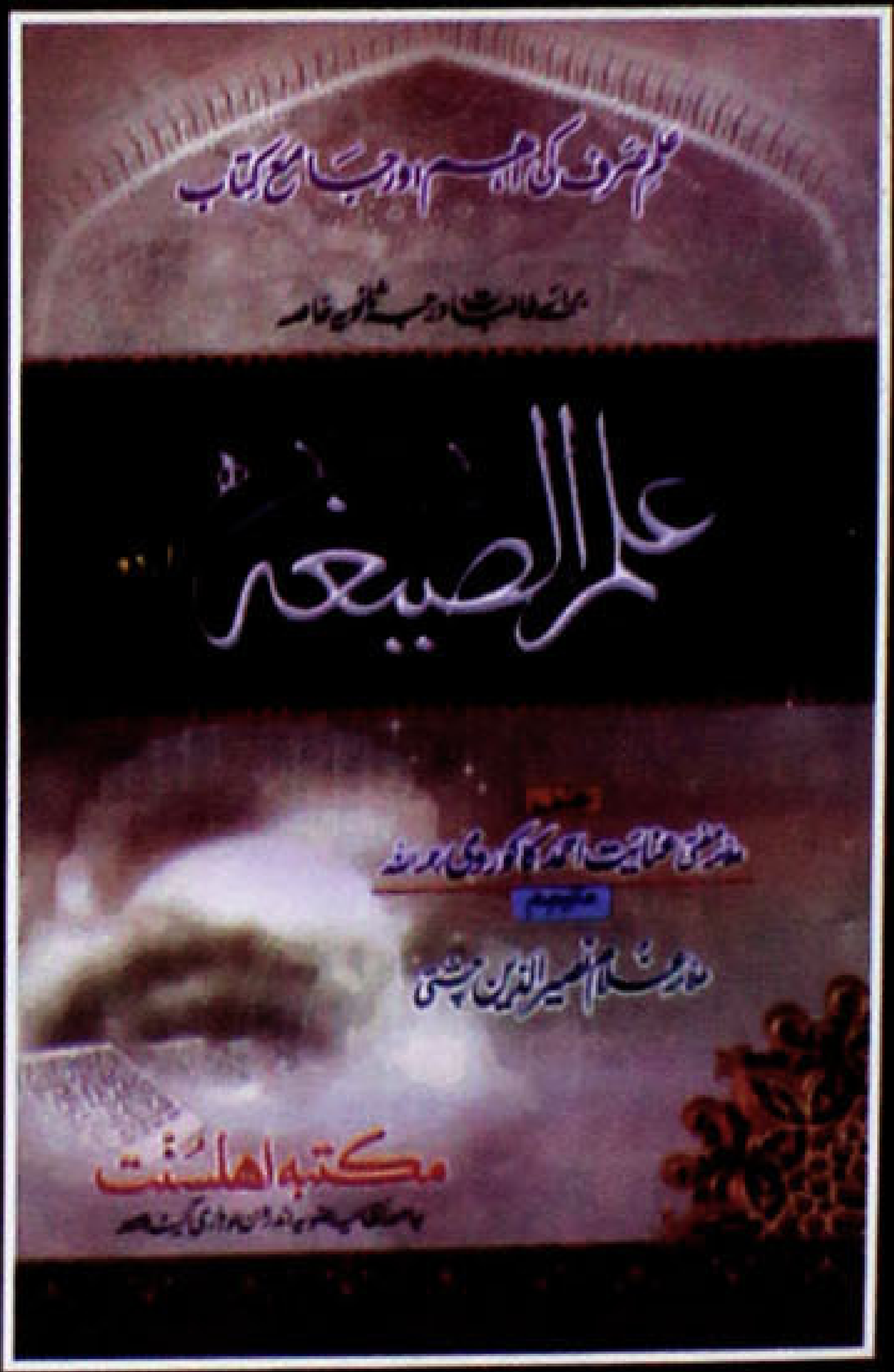

SHABBIR 0322-7202212

مکتبہ اھلسنت

مکہ سنٹر دوکان نمبر 3 بیسمنٹ نزد لوئر مال تھانہ اردو بازار لاہور

0345-2011235, 0333-4584252

Marfat.com